

XAVIER LIFE VOLUMES



St. Xavier's, Patna

1971-81

MEMORIES

Of Xavier Life

Photos fade away, but memories always remain fresh. Ten years have passed, and the sad time has come when you'll part from us.....

We wish you good luck

As we wave you goodbye ;

Give us a smile

Which we can keep alive

When you are away.

YOUR MEMORY WILL REMAIN ALWAYS FRESH
IN THE HEARTS OF XAVERIANS.

Xavier's
SX
1981



Seniors enjoy the comforts of the staff room on "Students' Day".



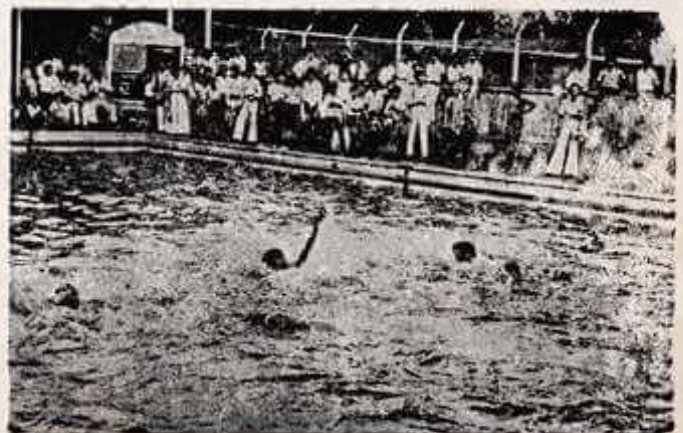
Mrs. Meena Singh got the "Lucky Dip" prize from Vinay Sood on "Teachers' Day".



Rajesh Verma, as vice-principal, signs the diaries on "Students' Day".



Karate became very popular in Xavier's in 1981.



But the pool continued to be the main attraction in the hot summer months.

Seniors

*You take with you our prayers and hopes
for a bright future. You leave with us the
memories of good times together, shared
struggles and friendship.*



Vinay Sood



Abhas Jha



Abhay Kanoria



Abhijit Som



Abraham Alexander



Aftab Karim



Ajay Kumar (A)



Ajay Kumar (B)



Akash Rukhaiyar



Alok



Alok Jha



Amitabh Sharma



Amresh Dhari Singh



Amresh Kumar



Amikar Dayal



Anant Pd. Singh



Anil Dhandhanian



Anjani Kumar



Anwar Ahmad



Ashok Bhaskar
Pandey



Ashok Kumar



Ashok Kumar
Jaiswal



Ashis Das



Aviram Keshava



Barun Kumar



Bimal Lakra



Daveshe Kumar

Seniors

*You take with you our prayers and hopes
for a bright future, You leave with us the
memories of good times together, shared
struggles and friendship.*



Vinay Sood



Abhas Jha



Abhay Kanoria



Abhijit Som



Abraham Alexander



Aftab Karim



Ajay Kumar (A)



Ajay Kumar (B)



Akash Rukhaiyar



Alok



Alok Jha



Amitabh Sharma



Amresh Dhari Singh



Amresh Kumar



Amikar Dayal



Anant Pd. Singh



Anil Dhandhanian



Anjani Kumar



Anwar Ahmad



Ashok Bhaskar
Pandey



Ashok Kumar



Ashok Kumar
Jaiswal



Ashis Das



Aviram Keshava



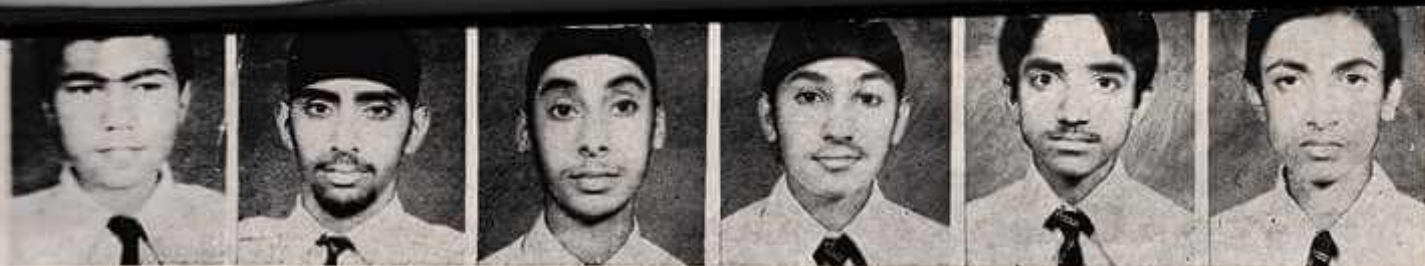
Barun Kumar



Bimal Lakra



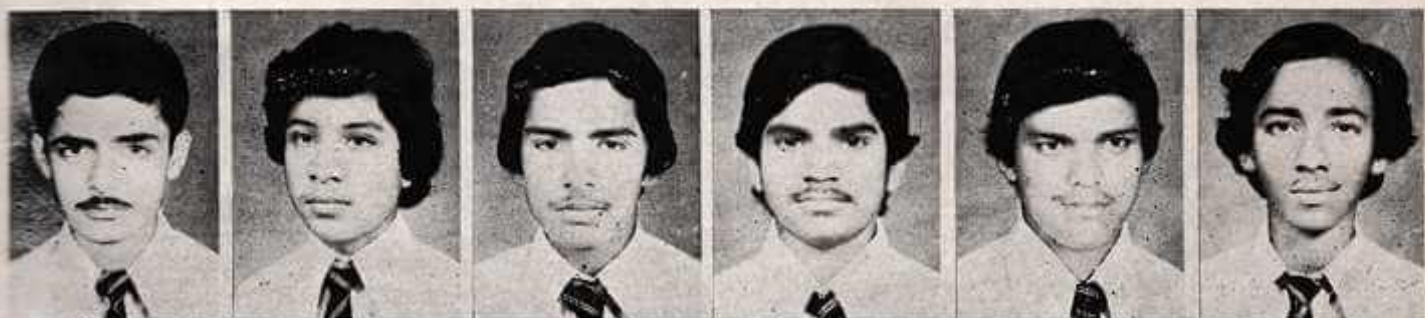
Davesh Kumar



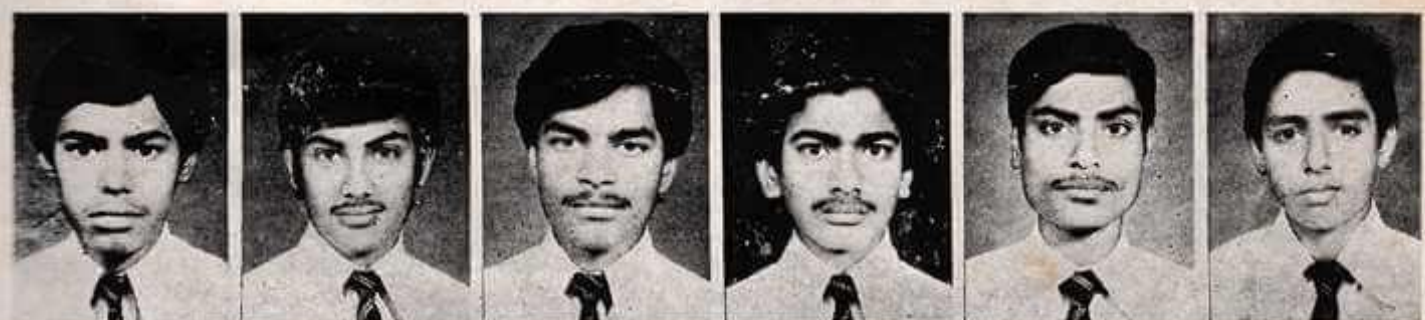
Deepak Sharma Gurmeet Singh Gurvinder Singh Herpuneet Singh Indra Pratap Jamal Ahmad



Kalyan Shankar Kaushal Jha Kaushik Das Lawrence Paschal Mahtab Khan Manish Sharan



Md. Ali Hussain Mohit Saraf Mritunjay Narendra Nath Nazir Haider Nikhil Kumar



Pankaj Kumar (B) Pankaj Kumar (A) Prabhat Kumar Pranay Sinha Prashant Kashyap Praveen Kumar



Rajeev Rai Rajesh Sinha Rajesh Verma Rajmani Sinha Rakesh Choudhary Rakesh Kumar



Ranjeev Sinha Ravi Agrawal Sah Ajay Ram Sandeep Tandon Sanjay Jha Sanjay Gupta



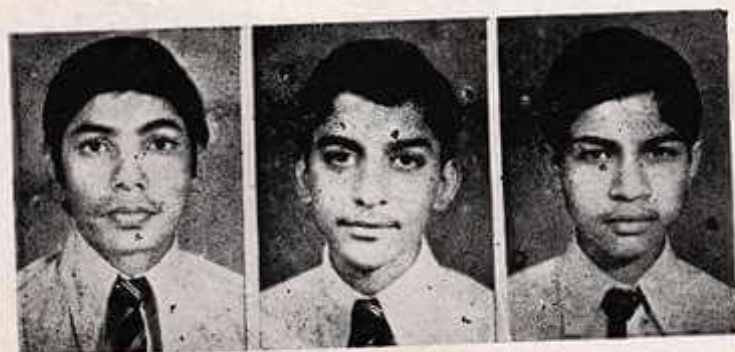
Sanjay Sinha Sanjiv Srivastav Santosh Kumar Sd. Shahid Imam Shailendra Kumar Shakti Singh



Shishir Rajan Subodh Gautam Sudipto Mukherjee Suheb Raza Khan Sujay Sinha Suryakant Rajan



Suveer Verma Sd. Anjum Abdin Sd. Karar Hussain



Ved Prakash Vijay Gupta Vijay Pandey

Xavier Life

Editors : (1981—seated) Amresh Dhari Singh
and Rajiv Rai; (1982—standing) Braj Kishore
Mishra and Kshitij Mohan.

संत जेवियर में स्वतंत्रता-दिवस समारोह

हमारे विद्यालय के प्रांगण में १४ अगस्त को, स्वतंत्रता-दिवस की २४वीं वर्षगांठ मनाई गई। मुख्य अतिथि के आसन पर विराजमान थे फादर रोजनफेल्डर। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रीय-गान गाया गया। तथा मुख्य-अतिथि ने उच्च वर्गों के परेड की सलामी ली। परेड का नेतृत्व श्री सर्वदेव मिश्र कर रहे थे। तत्पश्चात् स्कूल हॉल में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। स्वतंत्रता दिवस के महात्म्य पर उच्च वर्गों के तीन छात्रों ने अपना भाषण दिया। भाषण के बाद, दो वाक् प्रतियोगिताएँ हुईं। पहली प्रतियोगिता में मध्यम वर्ग के छात्रों ने अपनी-अपनी टीम के प्रतिनिधि बनकर, इसमें भाग लिया। सर्वाधिक अंक एवं पुरस्कार लायन्स को मिला। दूसरी प्रतियोगिता तृतीय तथा चतुर्थ वर्ग के छात्रों के बीच हुई। इसमें, छात्र अपनी टीम के प्रतिनिधि नहीं थे। पुरस्कार सभी विजताओं को दिया गया। अब आया, कार्यक्रम का सबसे मनोरंजक भाग—कक्षा १ से ४ तक के छात्रों के बीच एक "फैन्सी-ड्रेस" प्रतियोगिता। सभी ने विचित्र कपड़े पहन रखे थे—कोई दुल्हन व्याह कर ला रहा था तो कोई चांद पर जाने की तैयारी में था। उन्होंने अपना अपना रोल बहुत अच्छी तरह अदा किया। दर्शकों का बहुत मनोरंजन हुआ। निस्संदेह जजों को सर्वश्रेष्ठ को चुनने में बहुत कठिनाई हुई। तत्पश्चात् मुख्य-अतिथि ने उठ कर अपने कुछ चुने हुए शब्दों में भाग लेने वाले छात्रों को तथा आयोजकों को कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी तथा ऐसे कार्यक्रमों का भविष्य में भी आयोजन करने की प्रेरणा दी। फादर रोजनफेल्डर ने छात्रों से अनुरोध किया कि वे जहाँ तक हो सके ऐसे व्यक्तियों की मदद अवश्य करें जो अच्छी स्थिति में नहीं हैं। उदाहरण के लिये, उन्होंने बांग्ला देश के शरणार्थियों का नाम लिया।

ST. XAVIER'S PATNA

Vol. 2, No. 2

September 2, 1971

xavier
LIFE

Class VII By Jeep to N&R

Just to show that not all the nice things in the school happen to the senior boys, I want to describe a trip which Class VII took

recently. Not all the boys, but as many as could fit into a small Jeep, with jovial Fr. Gomes in the driver's seat as our guide. The destination was Nalanda and Rajgir.

Red Cross Society Comes to Life

Ready and waiting for the big challenge, the Xavier Red Cross unit went to work recently and collected Rs. 250 from the boys' hard-earned pocket money. This sum was then presented to the Sisters working in the refugee camps near Gaya. The society also collected a considerable amount of clothes, medicine, and money and presented it to Fr. William Goudreau for distribution among flood victims at Fatuah. Closer to home, they distributed milk among the children of the neighbouring Golghar School.

In promoting its own education, the society learned some things that should prove useful in the future. Two doctors from the Medical College Hospital were kind enough to come and instruct the members in the methods of elementary First Aid. On another occasion they picked up some techniques on Traffic Control.

Thus far the Xavier Red Cross unit has shown an excellent and generous spirit. If it continues, many people will be helped out of distress and suffering.

कार्यक्रम आशांतीत रूप से सफल रहा इसकी सफलता के लिये हम निम्न कक्षाओं की अध्यापिकाओं को धन्यवाद देते हैं। विशेष धन्यवाद फादर गोमेज को है जिन्होंने समारोह को अत्यन्त सफल बनाने तथा इसके आयोजन करने में अथक परिश्रम किया।

Once out of Patna, we traveled for miles with water on both sides of the road. We could hardly believe what we saw. Whole villages surrounded by water. In some places all you could see were the rooftops. We pitied the people and felt that they must be suffering immense hardship because of this flood. Coming to one railway crossing, we stopped to allow a passenger train to go by. It was not going fast, being heavily burdened with flood victims desperate to escape the rising waters. This part of our trip we will not forget easily.

Soon we arrived at the Nalanda museum. Being pretty hungry by now, we called a halt to everything and had breakfast. Then we entered the museum and walked about admiring such things as the ancient relic and some huge pots. Outside again, we found the ground very slippery and all the boys except one were fortunate not to slip and fall. At first I thought my back was broken, but it got well quickly, and the next thing you know we were visiting the ancient university of Nalanda and the place where Huen Tsang wrote his memoirs of India.

Coming home, there was more excitement. Our poor jeep, panting for breath, got a flat tire and had to stop. As you can see, nice things happen not only to boys in the senior class.

Prafull Kumar VII

चार सितम्बर को. . .

वापसी ! मैं तो कहूँगा कि यह एक वापसी ही है। क्या यह हमारा सीमावर्ती नहीं कि पुराने संस्मरणों की याद को पुनः ताजा करने के लिये हमें एक स्वर्णिम अवसर मिल रहा है? कितना उल्लास और उमंग से भरा हुआ वह दिन होगा जब हम ४ सितम्बर को अपने चिर परिचित "स्कूल-फ़ेस्ट" को मनचाहा रूप देंगे, सभी लोगों को इस सुअवसर पर आमंत्रित करेंगे अपने सपनों के संसार को अपने ही हाथों से तराशेंगे।

लेकिन "फ़ेस्ट" की सफलता का सेहरा केवल हमारे सिर पर तो नहीं बँधेगा। इसका श्रेय तो विद्यालय के उन सभी विद्यार्थियों को मिलेगा जो इसके लिए इसकी सफलता के लिये जागरूक हैं।

सफलता प्राप्त करना कठिन नहीं है। इसके लिये हमें आपका सहयोग चाहिये। इतने बड़े उत्सव को सफल बनाने की शक्ति केवल सहयोग में ही है। आप अपने ग्रुप-लीडर की बात मानें तथा अपने उत्तरदायित्व को पूरा करें, यही आपका इस अवसर पर सबसे बड़ा सहयोग है। "फ़ेस्ट" के विषय में आपके महत्वपूर्ण सुझाव, प्रार्थनीय ह। "फ़ेस्ट" के लिये छात्र-संघ के सदस्य जो

कर रहे हैं, वह निश्चय ही अनुकरणीय है। इससे विभिन्न विभागों के लिये विभिन्न कमिटियों का निर्माण कर इन्होंने निश्चय ही इसे एक व्यवस्थित रूप दे दिया है। अब यह कमिटी के सदस्यों का उत्तरदायित्व है कि वे अपनी कमिटी के कार्यों को सफल बनायें। इतना ही नहीं, दूसरे विद्यार्थियों का यह कर्तव्य है कि वे "फ़ेस्ट" के विषय में दूसरों को बतायें। हमें पूरी आशा है कि सदस्यगण अपने उत्तरदायित्व को समझेंगे तथा अपने कार्यों को गम्भीरतापूर्वक कर, "फ़ेस्ट" में अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

"जेवियर लाइफ" का यह अंक, "स्कूल-फ़ेस्ट पर एक विशेष अंक है। इस अंक को प्रकाशित करने में अपार हर्ष हो रहा है। आशा है, आप को यह रोचक लगा होगा। हमें दुःख है कि छात्रों की ओर से "जेवियर लाइफ" के लिये अधिक रचनाएँ नहीं आ रही हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि उच्च-वर्गों के लगभग ३०० छात्र, "जेवियर-लाइफ" के लिये प्रति पक्ष २० रचनाएँ तक लिखने में असमर्थ हैं। आप से, हम सम्पादक-गण, सदा सहयोग की आशा करते हैं। आइये, हम सब एक साथ मिलकर प्रगति के पथ पर कदम बढ़ायें।

एक कहानी

चार सौ उन्नीस

हम लोगों के लिये, जिन में बाजीमियाँ, प्रोफ़ेसर पीनेतीन और खाँ ऐतवार खाँ के सिवाय मैं यानी... शामिल हैं, "नीलामी कॉफी हाउस" साथ बैठने का बड़ा आसरा है। कॉफी पूरे ग्यारह आने की आती है और चाय सिर्फ पाँच आने की। अब कौन छः आने अधिक देकर कॉफी पिये।

हम चारों अपना चुनी हुई मेज पर बैठे टमाटर सैंडविच उड़ा रहे थे कि दूसरे द्वार से एक हीरो किस्म के साहब तशरीफ लाए और एक खाली मेज पर बैठकर मुड़-मुड़ कर हर आने-जानेवालों को देखने लगे। पक्का हो गया कि हजरत एकदम नये हैं। पीने-

तीन की रंग फड़की, बाजीमियाँ से बोले—इत हजरत को कॉफी हाउस से मगा दो तो मैं पूरी कम्पनी को पाँच रुपए का चमचम खिलाऊँगा। मैंने भी जवान हिला दी। बाजीमियाँ हिदायतें दे-लेकर अपने मिशन पर चले।

हीरो साहब दोनों हाथों की उंगलियों के सिरों को एक दूसरे से मिलाकर तोते का पिजरा बना रहे थे। "क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ?" "अवश्य" हीरो साहब चौंक गये। "हाँ, आपका एंडमिशन कार्ड?" वह समझे बाजीमियाँ को उनके पासपोर्ट की जरूरत है। "हजरत, आप शायद यहाँ नये आये हैं।" बाजीमियाँ ने पैतरा बदला।

"जी हाँ! लेकिन..." "खामोश! किसी ने सुन लिया तो आपको अभी यहाँ से निकाल दिया जायेगा।" बाजीमियाँ ने धमकी दी। "जी, मैं तो इस शहर में नया हूँ, अब आप ही बताइये मैं क्या करूँ।" हीरो साहब घबड़ा रहे थे। "देखिये यहाँ आने वाले सब के पास एक एंडमिशन कार्ड होता है। जिनके पास कार्ड नहीं होता उन्हें बँरे धक्के देकर निकाल देते हैं।" उन्होंने मुड़ कर बँरे को आवाज दी। साहब नजदीक खिसक आये। "नहीं, नहीं, डरते क्यों हैं, मैं तो आपके लिए बँरे को बुला रहा हूँ।" "लेकिन मैं तो ऑर्डर दे चुका हूँ।" नैरा जब साहब के लिये कॉफी ले आया तो उन्होंने बाजीमियाँ के लिए भी कॉफी मँगवाई। बाजीमियाँ ने कहा—"अगर आकर कोई आप से पूछे कि आपका नम्बर क्या है तो बेधड़क कह दीजियेगा, "चार सौ उन्नीस।"

इतने में प्रोग्राम के अनुसार पीनेतीन पास आकर रुके और हीरो साहब की ओर संकेत किया—"आपका नम्बर?" "जी! वह... चार सौ उन्नीस।" पीनेतीन चले गये। हाँ, जाने के पहले हीरो साहब से तीन पीस के और दो प्याली कॉफी जरूर गटक गये। बाजीमियाँ कभी पेस्ट्री तो कभी चिप्स पर हाथ मारते। बिल शायद दस रुपए का हो गया था। उन्होंने हाथ खींच लिया। बाजीमियाँ बोले—"चलिये, आप का एंडमिशन कार्ड बनवा दूँ।" हीरो साहब बोले—"अवश्य! लेकिन जरा बाथरूम किधर है, जरा हाथ तो धो लें।" "इधर सामने किचन के पास ही है, दूसरे द्वार से चले जाइये। बँरा ग्यारह रुपये चालीस पैसे का बिल दे गया। हीरो साहब छः बजे हाथ धोने गये थे। सात बजे गये तो बाजीमियाँ का रंग सफ़ेद होने लगा। उठ कर बाथरूम की ओर भागे तो पता चला कि एक सज्जन कुछ देर हुई किचन के रास्ते बाहर गये हैं। बाजीमियाँ धम से वहीं बैठ गये। बँरा पैसे लेने आया तो हाथ में एक पर्चा था। लिखा था—कॉफी और पेस्ट्री के लिये धन्यवाद। आपका ४१९।

(संकलित)

(संकलन कर्ता—अभयशंकर)

Club Readies Experiments

• • • • •
• FRAGMENTSFRAGMENTS •

• AGMENTSFRAGMENTSFR •

• FRAGMENTSFRAGMENTS •

WATER ART

The Student Council organized a Swimming Acrobatics Exhibition in late July. Mr. Ratan Ram of Lohardaga demonstrated some very difficult swimming tricks and techniques. The boys greatly appreciated the exhibition, especially the moment when Mr. Ram swam the whole perimeter of the pool with his hands and feet tied!

PHOTO ART

The Camera Club was just treated to two instructive films, compliments of the German embassy. The topics centered on the "Foto-kina" exhibition in Cologne. Studying the excellent selection of photographs, the Xavier club hopes to improve its own picture taking.

NEEDLING ART

Xavierites are indebted to the Sisters and staff at Holy family Hospital who recently donated their services in order to inoculate the campus against typhoid, cholera, and tetanus. Parents will soon receive (if they have not already) details about these inoculations.

PARENTS' P(ART)

Two get-together meetings between parents and teachers were held in mid-August. The principal and school staff were heavily disappointed by the small number of parents or guardians who attended these meetings. They hope for a much better response in future, feeling that only by parents and teachers working in close cooperation can a boy's education really succeed.

GOOD NEWS!

Xavier Principal, Fr. Scaria, just announced that the Dusshera holidays will begin one week ahead of schedule and that nothing will be subtracted from the other end. Thus, school will close after tests on Saturday, September 18, and resume again on Monday, Oct. 11

The Science Club had two important meetings already this term. In the first, Mr. Arun Rai spoke of his experiences at the Summer Institute of Physics in Ajmer. He went on to demonstrate some experiments mostly related to the properties of light, and showed a number of important phenomena of light using the most simple apparatus. He stressed the need for personal ingenuity in setting up experiments. He remarked that many people will abandon an experiment suggested in a textbook if they do not have every piece of equip-

ment referred to. By contrast, he said, the serious science student will devise his own apparatus from whatever simple materials are at hand.

The club's second meeting was devoted to preparing for the Science Exhibition which will take place during the School Fete. Each member was allotted some project or other and asked to have it ready for the grand exhibition. This will be the club's biggest undertaking of the year.

Subir Sen X

Tigers Chew Up Opponents

Cheered on by fellow house members, the TIGERS came out No. 1 in the Table Tennis finals last Saturday. First-place winners for the TIGERS were Vineet Singh and Chandrika Rai (Senior Division) and Jagjit Singh and Ehtashamuddin (Junior Division). For the PANTHERS, Niraj Sinha captured 1st place in singles (Intermed.) and along with Raj Kumar Bhawnani did the same in doubles. It wasn't enough, however, to beat out the LEOPARDS whose overall scoring (including 3rd & 4th positions) put them in second place. The LEOPARDS' only "first" was won by Debajit Talpatra (Junior Division). The PANTHERS and LIONS tied for third place.

Rain, Rain, Go Away!

*"How beautiful is the rain!
After the dust and heat
In the broad and fiery street,
In the narrow lane,
How beautiful is the rain."*

These lines of Longfellow seemed so apt a few months ago. After the scorching heat of April and May and the dusty, incessant hot winds, rain is a beautiful thing in India. The monsoon begins and little by little the soil's terrible thirst is quenched. Dark clouds hover for several months, rain falls, and the farmer knows he can now hope for a new harvest.

But this time the rain overstayed its welcome in N. India. What began as a blessing turned

into a nightmarish ordeal. The Ganges, the Poon-Poon, and countless other rivers could not manage the huge downpour. Hence, overnight, thousands of villages went under water. Millions of villagers, with a few precious belongings, fled to higher ground. The citizens of Patna were spared a complete deluge, but they still suffered many hardships.

At St Xavier's the boys gained an extra holiday or two, thanks to the rain's havoc. The free days were welcome, no doubt, but they were purchased at a stiff price. If Longfellow paid us a visit just now, surely he would write another poem—a different kind of poem—about the rain.

Dilip Srivastava X

Announcing the spectacular event of the year

GRAND FETE

Saturday, September 4th

3:00 - 8:00 pm

ST. XAVIER'S SCHOOL CAMPUS

Unwind. Relax after a year of study, exams, homework, marching, and memorizing.

- ★ *Bring your Mum and Dad. Invite your friends, brothers, sisters, cousins, the whole clan.*

Enjoy the carnival spirit.

- ★ *Rs 10 door prize (save your entry tickets.)*

Somosas, ice cream, hamburgers, Coca-Cola, Fanta, and pastries from the cafeteria.

- ★ *Every kind of fun and entertainment [Housie, Lucky Dip, Hooplah, 9 - Pins, Bombing the Target, etc.]*

Science and Fine Arts Exhibition.

- ★ *All this PLUS cartoon movies.*

A galloping lucky, and delicious way to spend a Saturday afternoon.

- ★ *See you at the GRAND FETE !!!*

Red Cross

One place where the recent flood's effects are noticeable is the little town of Khagaul. Hundreds of people have temporarily moved there for the sake of higher ground and a little food. Hearing of this, a team of Xavier Red Cross volunteers spent last Saturday there helping out in a feeding program, and particularly in the preparation and distribution of powdered milk. The trip to and from gave them a jeep's-eye view of what water does when it has no place to go.

Tickets Please!

Destination Kashmir

For thirty boys and their four escorts, the Assam Mail leaving Patna September 18th will sound the beginning of twenty-three days of excitement and new experiences. After some two months of careful planning by the escorts—Fr. Scaria, Br. George, Mr. S.D. Mishra, and Mr. S. Pathak—the coast is clear for a successful and fun-packed tour.

The enchanting sight of the confluence of the Ganges, Yamuna,

and the Saraswati at the holy city of Allahabad is the first of a long string of side excursions that have been arranged. The boys will also visit Anand Bhawan and the Bharadwaj Temple at Allahabad.

The next stop on the map is Agra, the city famous for its glorious Taj Mahal, the seventh wonder of the world. Directly across the Yamuna from the Taj Mahal is the Agra Fort, built by Akbar. Twenty-three miles from Agra is Fatehpur-Sikri, the town abandoned by Akbar with all its splendid palaces and lovely gardens.

After Agra comes Jaipur, a city world famous for its Jantar Mantar and the Hawa Mahal (Palace of the Winds).

From Jaipur the tourists move on to the nation's capital. Here the Red Fort and the Qutab Minar are "musts" on the sight-seeing list. Raj Ghat, Shantivan and Vijay Ghat are spots sacred to the memory of Gandhiji, Nehru, and Shastri respectively. The Jama Masjid, Chandni Chowk, and the Purana Kila add to the attractions of Delhi. The Zoological Gardens are on their map, too.

From Delhi the next lap will take them to one of the most beautiful cities of northern India, Chandigarh—planned by the French architect, Le Corbusier. From Chandigarh the boys will proceed to Jullunder and from there to Amritsar, city of the Golden Temple. (Continued on p. 4)

xavier LIFE

Vol. 20, No. 3, ST XAVIER'S PATNA September 18, 1971

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

'मित्रम्बर' शिक्षक-दिवस के रूप में 'एन. एंलो संस्कृत स्कूल' में मनाया गया। बिहार के शिक्षा मंत्री उसकी अध्यक्षता कर रहे थे। उसी दिन एक वाद-विवाद प्रतियोगिता में बिहार के अन्य लगभग १५-२० माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के साथ इस स्कूल के भी चार विद्यार्थी-को ने भाग लिया:- शशांक शेखर (नवम वर्ग), मोरम दास (अष्टम वर्ग), अशोक सिन्हा (अष्टम वर्ग) तथा सुधीर खन्ना (अष्टम वर्ग)। वाद-विवाद का विषय था 'कानून की राय में "आज की परिस्थिति में मानव मनुष्य का सही मार्ग दर्शन करने में कठिनाई है।" इस विद्यालय का नाम जब-जब लिया जाता था-श्रोता-मंडली उत्साह से तालियाँ पीटने लगती थी, तथ्यपूर्ण तर्किक विवाद सुनने के लिये पुलकित हो प्रतीक्षा करने लगती थी। प्रतियोगियों को निम्नलिखित स्वेद-प्रकल्प मिश्रित आतंक में इतर जाती थी।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

Inside

- Men & Islands, p. 2
- Readers React, p. 3
- Football Champs, p. 4

Xavier to host other schools in art competition

Xavier artists have big plans for the holidays as they get ready for the inter-school Drawing and Painting Competition to be held here October 16. The aim of the contest is to encourage artistic skill among the boys and girls of Patna and its vicinity. Such competitions being rare in Patna, the coming occasion should be an excellent opportunity for young people to show their talent and have it compared with others of their same age.

Last year a similar competition

was organized by the Xavier Fine Arts Club. The turnout was large and enthusiastic.

The contest this year will be on Saturday, October 16, from 1:00 to 3:00 pm. The brush and pencil works will be done on the spot, and not prepared in advance. As a big incentive, 19 prizes have been set aside—six for each of the three age groups, and a "first prize" for the boy or girl showing the greatest talent in the competition.

No Man Is An Island

How right was the poet who once concluded that "No man is an island"! No man can ever be completely isolated from the rest of humanity. We all are part of one another and, to a very large extent, are dependent on one another. And because we are dependent on one another, it is essential for us to exchange ideas. As a matter of fact, we cannot but help the give and take of ideas, for this is an essential part of being human; this is what distinguishes a man from other animals and makes him supreme. At every conscious moment of his life a man gives his views and ideas to others, and, in turn, either accepts or rejects what other people have to say.

But it is very difficult to get one's views across to each person individually. For that reason we fall back on other media through which our ideas can reach a much greater number of people. The radio, television, books, plays, films, magazines, newspapers—all of these carry and present to us ideas or viewpoints in one form or another. It is our privilege to examine these ideas, then

accept or discard them as we please.

Now, at school, is the time to train ourselves to express our ideas coherently and logically, and to critically analyse other people's opinions—seeing the good and the bad in them. Furthermore, it is as important to express our ideas now at school as it will be to do so later on. For there are many aspects of life at school that he can improve, that can be given a new dimension. But frequently these opportunities are lost because we are unable to get our ideas to reach everybody at school.

With these reflections plus the realization that XAVIER LIFE is possibly the best way by which you can voice your opinion to the whole school, we are re-introducing something in this issue, a special "opinion page." Currently it takes the form of a "Readers React" column for which various people were invited to submit their answers to a particular question. It is also the page where your "Letters to the Editor" will appear, if and when you write them.

Without doubt, Shailesh Verma and Mahesh Verma drew the most laughs throughout the evening. But they were ably supported by the rest of the cast all well chosen and working hard at their roles. Cast and director, Fr. Allan Starr, both deserve credit for the brisk pace at which the play moved. At times this was far from easy, where players had to chase in and out of the room with perfect precision in pursuit of one another!

No doubt about it, we were treated to a delightful show. And in these days of international strife and every sort of crisis, a comedy such as this can be a great tonic. The pre-seniors of St Michael's are to be thanked for providing it so well.

हमारे वैज्ञानिक

चार सितम्बर को फेट के दिन, विद्यालय के पुराने पुस्तकालय भवन में विज्ञान की एक प्रदर्शनी हुई। इसे विज्ञान क्लब के सदस्यों ने प्रस्तुत किया था तथा इसके आयोजक थे फादर थोड्टूबेलिल जो विज्ञान-क्लब के व्यवस्थापक हैं। स्मरण रहे, फादर थोड्टूबेलिल ने ही विज्ञान-क्लब बनाने की प्रेरणा दी थी।

मध्य से लेकर उच्च-वर्ग की कक्षाओं के छात्रों ने अपने-अपने मनपसन्द मॉडलों को इस प्रदर्शनी के लिये बनाया। कुछ मॉडल, जो दर्शकों को बहुत पसन्द आये, वे थे, नवम वर्ग के विनीत सिंह द्वारा निर्मित एक जल विद्युत शक्ति यंत्र, अष्टम वर्ग के नीरज सिन्हा द्वारा निर्मित, एक ट्रांसिस्टर-रेडियो, सप्तम वर्ग के अनिल कपान द्वारा बनाया गया एक मछली-चरतया बैटरी द्वारा चलित एक छोटा-सा पंखा जो नवम वर्ग के अमरेन्द्र द्वारा बनाया गया था।

फेट के अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण दशम वर्ग के विद्यार्थियों ने कोई मॉडल प्रस्तुत नहीं किया, लेकिन सारी सजावटें उनके द्वारा ही की गई थी।

प्रदर्शनी प्रारम्भ हुई साढ़े तीन बजे। दर्शकों को मॉडलों के विषय में बताने के लिये खड़े थे, विज्ञान-क्लब के कुछ सदस्य, जीव-विज्ञान के अध्यापक, श्री प्रेमशंकर ठाकुर, तथा विज्ञान-क्लब के व्यवस्थापक फादर थोड्टूबेलिल।

मेरा अनुमान है कि यदि दूसरे सदस्यों ने भी इस में सक्रिय रूप से भाग लिया होता तो यह प्रदर्शनी और भी अच्छी होती। बीस पन्द्रह-सोलह मॉडलों की यह प्रदर्शनी आशातीत रूप से सफल हुई। दीवारों पर लगे चार्टों ने प्रदर्शनी में एक नया रंग दिया था। विज्ञान-क्लब के सदस्यों का प्रयास सराहनीय है। हम आशा करते कि अगले वर्ष हम इस विज्ञान-प्रदर्शनी एक भव्य रूप दे सकेंगे।

अमय शंकर

XL Reviews :

SIMPLE SPYMEN

Although there seem to be a lot of one-act comedies floating around, it's not too often we have a chance to see this kind of drama in three acts. St Michael's gave us that opportunity last Saturday and Sunday evenings, and although no one was actually seen to be rolling in the aisles, it lived up to its billing as a play that would "make you laugh and laugh" and cure your melancholia.

After the usual over-long prologue, the play gets off to a hilarious start in the office of Colonel Gray-Balding and his tea drinking cohorts. They have a spy job to cover and the whole story revolves around the way they almost don't bring it off.

Readers React

QUESTION : After the Grand Fete was over two weeks ago, some were heard to say that it was a failure, and that the best way to avoid a repeat performance would be to drop the idea of a Fete next year. How do you feel about this?

CHANDRIKA RAI (IX) : In a city like Patna, with its limited amount of entertainment, the school fete has an importance of its own. It is a way a school like ours can provide a nice evening of family fun and entertainment. Never mind about the money. As I see it, the fete is not only to make a profit, but it is to bring the people from the different corners of Patna and give them a chance to mix with friendly people. There are many families who look forward to the chance of going to a fete. And they don't mind spending a few chips in order to have a pleasant evening.

DILIP SRIVASTAVA : A certain misconception may exist in the minds of some boys that the Fete was a flop. I would like to set down the reasons why I think it was quite the opposite.

1) It was a maiden venture that called for much cooperation and teamwork. Although it was a project of the Student Council, everybody worked together on it—boys, parents, and teachers. The response was tremendous.

2) Thanks to the generosity of many parents and friends, quite a few gifts were donated as prizes for the stalls. Many of the games themselves were generously loaned by St. Michael's.

3) The promotion committee worked long hours painting attractive posters to send around town. Helped by their teachers, the boys decorated the booths with real skill and enthusiasm.

4) Every detail apparently was taken care of, except one over which we had no control—the weather. The heavy rain the day before and on the morning of the Fete gave us a big jolt we hadn't counted on. The grassy yard became a big mud puddle, so that

the plans of a fortnight had to be reshaped and all the stalls squeezed into the school building. Hardly ideal, but a lot of people showed up, spent freely, and most importantly, seemed to have a very good time. It may not have been the most successful Fete in the history of St Xavier's. But I wager that no Fete has ever done better against odds such as we have had this year. Next year the odds will be different and the Fete will be twice as much fun!

NIKESH PRASAD (IX) : The fete flopped this year. This does not mean, of course, that we should not have another one next year. It is by trial and practice that we learn the trades of being a salesman or a journalist or an engineer or a doctor.

According to the proverb "Failures are pillars of success," we must look for ways and means of improving the fete. We should try to solve the difficulties we had this year before the next fete comes around. And these difficulties should not only be thrown open to the fete committee, but also to the three senior classes of the school.

Both Hands

...of the Student Council are extended in gratitude to several shops which supplied goods for the fete at nominal or reduced rates. Especially the following: Janta Bedding Stores (Bankipore), Patna Electric Works (Dak Bungalow Rd), Eve's Corner (Patna City), Kohli Sports (Bakergunj), and Kinsway (Dak Bungalow Rd).

ARUN KUMAR (IX) : An important undertaking like the school fete can be judged as a success or failure only by what the visitors think about it. And many seemed to think we had it in the wrong season. Some said it when they came; others said it by not even coming. My personal opinion, though, is that those who *did* come ended up by having a good time and that they went home satisfied. The cartoon show was certainly one of the highlights.

A FETE-FUL REPLY

"We should remember that wisdom comes from experience, and experience comes from foolery on our part." **Ashok Mitra IX**

Stamp Collectors pay large sum (for a cause)

In the recent Grand Fete not all the stalls were equally successful. Some made a decent profit, while others struggled to break even. All of the stall managers could look with envy, though, at the ingenuity of Xavier Rector, Fr. Rai. With nothing but a tiny veranda crudely marked off with classroom chairs, and the slogan "Help Yourself and Help the Flood Victims", he invented a game which netted Rs 100 in a matter of two hours. Using his now famous Frisbie flying saucers, he allowed each player three tries in order to cover one of the many packets of stamps on a table hardly ten feet away. The Frisbies, however, must have known what a good cause it was since they strayed off target far more often than on. The result was not only a successful stall, but one with a harvest that will be put to immediate and consoling use.

Delhi Express

A train leaves Patna for Delhi an hour before a train leaves Delhi for Patna. The train from Patna travels at a speed of 60 miles per hour. The train from Delhi travels at 50 miles per hour. As the two trains are passing each other, which train is nearer Delhi? (A prize awaits the first boy of Class VI who reports the correct answer on paper to the editor.)

प्रतियोगिता . . .

(पृष्ठ १ से आगे)

हुआ भी वही। सम्भवतः औरों के वक्तव्य का उतना स्पष्ट प्रभाव निर्णायकों के हृदय-मस्तिष्क पर तो नहीं पड़ा वरन् सौरभ दास को आदरणीय शिक्षा-मंत्री के कर कमलों से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उक्त विद्यालय परिवार तथा उपस्थित सज्जनों के हृदय में हमारा एक अलग स्थान बन गया।

अनील पाठक (दशम वर्ग)

XL Profile-4

Fr. Thottuvelil, S. J.

A genial and priestly man, with a wealth of scientific knowledge and experience. Such is Fr. Francis Thottuvelil, S.J. who last January joined the St. Xavier science department.

Just prior to coming here, Father was on the science staff at St. Xavier's in Jaipur for nine years.

Much could be said on Father's behalf, but possibly the most striking is the cool way in which he hides his scientific depths. Not all the boys have discovered this as yet, nor seem aware of how much they can be helped. Gradually word is getting out, though, as Father's patient and painstaking example in the lab is observed more and more. This, plus the fascinating experiments he sets up, make him a valuable teacher to have at St. Xavier's.

Niraj Sinha VIII

STAMPEDE

Fr. Ziebert reports a noon-period stampede in the library. Besides the quiet atmosphere, there seem to be other incentives. Like the 500 new books acquired since last May dealing with science, novels, and travel topics. A good many vernacular books have been added for those in 5th and 6th standards. "Sport and Pastime" is an easy favourite, with bound copies available back to 1966.

Soapy Secret Revealed

Hindustan-Lever and the Tata Oil Mills probably will not approve of this, but I would like to let you in on a little secret. I call it a "soapy secret" because it has to do with how you can go about making your own soap. Making soap at home can be a lot of fun if you have the basic ingredients. The first step is to mix some caustic soda in water. You will notice that it gradually becomes hot. At this point you should pour in some oil. Be careful NOT to use an inflammable type of oil, such as petrol or kerosene. It may be your last experiment! Stir this solution until it reaches a uniform consistency. Next add perfumes or colour, if you like. As for shape, you can give it any form you like. One way is to get a small cardboard box and use that as a mold. Be sure, though, to leave it alone for at least two days, so that it becomes hard. (If not hard after one week's time, add one or more teaspoons of ordinary cement.)

Anil Bhawnani VIII

Class IX Rolls on to Championship

If Class IX achieves as much in the classroom as on the football field, they will go far. In the recent Inter-Class Football Tournament, they were crowned champions by first routing Class VII 14-0, then trimming Class VIII 4-0 and their seniors in Class X 2-1.

In two matches played against Xavier Hall, the school team came out short both times, with scores of 1-0 and 3-1 respectively. The Inter-House Football

Tournament is now underway. As this issue goes to press, we do not yet have the results. The TIGERS hope to continue their success shown in table tennis. But they will get little encouragement from three other houses!

Some Words-Worth

—thinking about—

The boy who doesn't read has no advantage over the one who can't.

School Tour

(Continued from page 1)

Finally, via Pathankot the thirty explorers will aim for Srinagar. Many people have tried to depict Kashmir. Some have called it the Switzerland of India; others (less modest) have called it Paradise on Earth. Those who have been there, though, seem agreed on one thing: it is impossible to describe Kashmir and do it justice with mere words. Only those who actually see it can fully appreciate its feminine beauty of river and valley and lake and graceful trees, contrasted by the rough masculinity of hard mountains and precipices, and snow-capped peaks and glaciers, along with cruel and fierce torrents rushing down to the valley below.

To those lucky ones who are to visit this "paradise", who will be dazzled by the splendour and sheer loveliness of northern India, we say: BON VOYAGE!

SANJIVAN PRESS, PATNA-11

xavier LIFE

Vol. II, No. 4, ST XAVIER'S PATNA November 11, 1971

Small Olympics: November 13

Sports Day 1971 will have a different form and colour. Fr. Abraham and his assistants, Mr. Sebastian, Fr. Gomez, and Mr. S.D. Mishra have devised a program whereby Xaverians will be able to celebrate Sports Day on several days.

Due to the large number of participants, and in order to make the whole affair more "eventful" elimination contests will take place during the two or three days preceding Saturday November 13.

With the help of Br. George's arbitrary scales and measuring equipment, the height, weight (and muscle power?) of all the boys has been tabulated. On the basis of this information, Classes V-X have been divided into four sections—beginners, intermediates, juniors, and sub-juniors. And Classes I-IV will

compete in the midget section.

Each of these groups, in turn, has been divided up according to those well known species of Tigers, Leopards, Panthers, and Lions.

Captains of the four teams, assisted by their house-masters, are planning their strategy. It will be something of a small "olympics" again this year, with javelin throwing, relay races, shot putting, broad and high jumping, discus, and tug-of-war events to test the athletic skill of the various houses.

The organizers feel that the teams are well matched, and that the two main factors in who wins the shield will be "desire" and the amount of "practice" each team puts in beforehand.

Art Contest Draws 200 Young Picassos to SX

If you chanced to drop in to the Xavier library on the afternoon of 23rd October, you might have thought the place a little overcrowded. You might have gone on to wonder what in all of Patna could attract 200 hopping, restless teenagers (and younger) to such concentrated work in a library on a Saturday afternoon. A little browsing, though, would have produced the answer. These were not casual visitors, but young artists eager to express themselves by drawing and hopeful of sharing in the attractive prizes set aside for those with the most talent. This was the Inter-School Drawing and Painting Competition which the Xavier Fine Arts Club was sponsoring for the second year in a row.

The contest began thirty minutes late due to some late entries and the problem of finding sufficient seats for everybody. Student Coun-

(Contd. on page 4)

अपराध निरोध सप्ताह

१५ अक्टूबर की शाम को गांधी मैदान में 'अपराध निरोध सप्ताह' मनाया गया। 'अपराध-निरोध सप्ताह' समारोह के अन्तर्गत गांधी मैदान में एक साइकिल-रेस भी हुई। पटना के विभिन्न विद्यालयों से लगभग ४० लड़कों ने इसमें भाग लिया। अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व यहाँ के २५ छात्रों ने किया। इनमें से १५ छात्रों ने साइकिल-रेस में भाग लिया, अन्य चार छात्रों ने किसी दुर्घटना के पश्चात् प्राथमिक चिकित्सा देने की विधि का प्रदर्शन किया तथा शेष छः छात्रों ने यातायात-नियंत्रण की विधि को दिखलाया।

साइकिल-रेस में मिलर स्कूल के अजीत कुमार सिन्हा विजेता घोषित किये गये। दुर्भाग्यवश अपने विद्यालय का, साइकिल-रेस में कोई विशिष्ट स्थान न रहा। साइकिल-रेस के बाद अपने विद्यालय के 'रेड-क्रॉस समूह' ने दर्शकों के समक्ष एक दुर्घटना का प्रदर्शन किया और दिखलाया कि ऐसे समयों पर यातायात नियंत्रण करने वाले सिपाही का क्या कर्तव्य होता है। कार्यक्रम के अनुसार सड़क की मोड़ पर दो टेम्पो टकराये जिससे एक टेम्पो

(शेष पृष्ठ ३ पर)



Members of the St Xavier's fine arts team, along with their coach: Left to Right: Amarendra Narayan IX, Sourendu Gupta VII, Mrs. Mehrotra, Sudipto Roy VII, Dipankar Sarkar VI, and (holding the shield) Aftab Ahmed V, and Sidhartha Banerji V.

पुस्तक पुस्तकालय में

खरीदी कौड़ियों के मोल

पुस्तकालय के कोने में पड़ी 'खरीदी कौड़ियों के मोल' के दोनों खंडों पर आप की दृष्टि अवश्य पड़ी होगी। सम्भवतः ११०० पृष्ठों के इस ग्रंथ को पढ़ने का मन भी नहीं हुआ होगा आपका। मन न होना स्वाभाविक भी है। पुस्तक का बाहरी रूप अस्वच्छ अवश्य है परन्तु उपन्यास की दृष्टि से यह बीसवीं शताब्दी के महानतम उपन्यासों में से है। विमल मित्र बंगला साहित्य के जाने-माने साहित्यकारों में से हैं। 'खरीदी कौड़ियों के मोल' उन्हीं की रचना, 'कड़ी दिये कीनलाम' का हिन्दी रूपान्तर है। लेखक ने भूमिका में ही कहा है कि उन्होंने और कुछ नहीं, रामचरितमानस को अपने शब्दों में लिखा है। सच है, आधुनिक युग में भी यह पृथ्वी अनेकानेक रावणों, रामों, शूर्पणखाओं से भरी है। इन्हीं पात्रों का विस्तृत वर्णन लेखक ने अपनी पुस्तक में किया है। पापों से भरे इस संसार में पापों से ही लड़ता नायक पाठक के मन में आधुनिक राम बनकर खड़ा हो जाता है। वह संसार से अकेला लड़ना चाहता है। लेकिन, लोग उससे नफरत करते हैं क्योंकि वह उनके पाप का सहयोगी नहीं बनता और अपने आप को हमेशा पापों से अलग रखता है।

कुछ ऐसी ही भावना को विमल मित्र ने अपने उपन्यास के संचे में डाला है। विमल मित्र की रोचक शैली में उदासी का भाव भरा है। लगता है लेखक स्वयं ही संसार की विडम्बनाओं की देखते-देखते ऊब गया है, और उसने अपने दिल की बात को इस उपन्यास में लिख डाला है। कोई आश्चर्य नहीं कि लेखक को इस पुस्तक के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कई ऐसे भी उपन्यास होते हैं जिन्हें एक बार पढ़कर मुलाया जा सकता है। परन्तु, 'खरीदी कौड़ियों के मोल' पाठक के हृदय में हमेशा-हमेशा के लिए घर कर जाती है। मनुष्य मृगतृष्णात्मक मिथ्या को

भूल सकता है, पर कटु सत्य को भुलाना उसके वश की बात नहीं है। 'खरीदी कौड़ियों के मोल' एक कटु सत्य है और उसे भुलाना मनुष्य के वश की बात नहीं है। विमल मित्र ने इस उपन्यास के लिए मधुर भाषा का प्रयोग किया है। लेखनी के जादू ने पात्रों को सजीव कर दिया है, इतना सजीव कि पाठक अपने आप को पात्रों के बीच बैठता हुआ पाता है। कहानी जनसाधारण के बीच से ही ली गई है। अतः इसमें सत्यता का भास होता है। 'खरीदी कौड़ियों के मोल' पढ़ने के बाद हरेक पाठक अपने हृदय को कौड़ियों के मोल इस पुस्तक को समर्पित कर देता है, फिर उसे वापस खरीदना उसके वश की बात नहीं रह जाती।

अमय शंकर, (दशम वर्ग)

(Contd. from P. 1)

ART COMPETITION

cil volunteers helped to solve this in a hurry. In fact SC members did valuable work all afternoon with their helpers—ushering, luging chairs, and preparing the tea.

The artists began in earnest, knowing that they had only two hours in which to complete both a water-colour and pen drawing. Mr. Remy Osta and Mr. Samuel David moved about assigning code numbers to each artist.

Finally, at 3:30 the signal was given to stop, and the artists were ushered into the cinema hall for two Hindi films. Meanwhile the two judges, Mr. Nripen Roy and Mrs. Kumud Sharma, were left to pore over the 400 works of art and decide which peices had the most merit. Their task was not easy.

The judging took a good three hours to complete. The contestants were not impatient, though, being well occupied by the "films division" and later at 5:00 by a generous tea.

The big moment finally cam, as everyone assembled in the hall and the judges took their place on the stage. Mrs. Mehrotra began

by explaining the way in which the contest was conducted. Fr. Puthumana then announced the names of the winners. Three prizes in each of the were groups awarded. There were also many consolation prizes. Xavier's Sourendu Gupta (Std VII) won the 1st Prize in Group B, and was judged the best artist over-all in the competition. St Xavier's was lucky enough to win the Dr. S. Sen Drawing and Painting Shield with eleven points, followed closely by St. Joseph's Convent with ten points, and Central School (Anisabad) with nine points. Last year the shield was awarded for the first time to Aghore Prakash Shishu Sadan.

After the prizes were awarded, Fr. Rector encouraged and congratulated the contestants. He expressed the hope that they would return next year. Mr. Suresh Pathak had the final words as he thanked and dismissed the audience. Not on the stage, but very much "on hand" was Xavier Principal, Fr. Scaria. Any insider can tell you how much the competition owed to his initiative and great interest. Approached afterwards, he seemed very happy about the turnout from thirteen different schools and the enthusiasm shown by all the participants. So much so, that he is already sketching out plans and innovations for 1972!

—A. Mitra, IX P. Srivastava, IX

Who put this on my chair?



Mr. Osta explains the rules.

SPLASH-IN FOR STD. V

Ours is an old school which sees to the all round development of a child. Besides good education, different types of extra curricular activities are held. Sometimes there are competitions of essays. Sometimes sports take place. Sometimes boys go out for excursion tour. This time Father Scaria decided to hold a pool-side party. There would be great fun for the young students. All the children of Std V gathered on the school compound at 5 o'clock on September 16.

As we reached the side of the pool, we could hardly resist the temptation to jump into the water. So right away we put on our swimming trunks and jumped into the pool. Some of us are very good swimmers. Arindam and Saroor won prizes in a swimming competition. We didn't want to come out of the pool, but Sir Osta ordered us to come out because it was getting late. After that we had a nice party. We all enjoyed the pool-side party very much. It was over at 8 o'clock.

Sunil Km. Agarwal, V

Nothing 'fishy' about the Panthers

Leopards Take Swimming Title

The LEOPARDS easily took the swimming title in the inter-house meet at St Xaviers, Saturday, Oct. 30th. Scoring a total of 39 points, they were comfortably ahead of their nearest rival, the LIONS, who chalked up 27 points. TIGERS came in third with 15 points, and the PANTHERS nearly drowned with 1 point!

The meet started at 11 a.m. sharp with the 50 meters free-style in the senior division. The LIONS Joseph Nagaroor grabbed first place in this event, Thomas Perumalil took second, and two boys tied for third, Amar Sinha and Sandeep Choudhari. As it turned out, Sandeep's efforts in this event saved the PANTHERS from complete disgrace. It earned them 1 point, at least. Following are the winners of the various events and their timings:

Seniors 50 Meters

- I Joseph Nagaroor-47.5 sec.
- II T. Perumalil
- III Amar Sinha
Sandeep Choudhari

Seniors 25 Meters

- I Joseph Nagaroor-20 sec.
- II Thomas Perumalil
- III Amar Sinha

Inters 25 Meters

- I Joydeep Gupta-18.75 sec.
- II Nikesh Prasad
- III Iftaquer Anzum

Inters 10 M. Back Stroke

- I Nikesh Prasad-8.25 sec.
- II Sanjay Sharan
- III Iftaquer Anzum

Juniors 25 Meters

- I Debjit Talpatra-27.75 sec.
- II Tamal Sarkar
- III Rajesh Sinha

Juniors 10 Meters

- I Debjit Talpatra-7.75
- II Tamal Sarkar
- III Rajiv Ranjan

Sub-Juniors 10 Meters

- I Saroor Afzal-6.5 sec.
- II Arindam Shahi
- III Partho Sarthi

Relay 4 x 25 Meters

- I Leopards
- II Lions
- III Tigers

(Reported by Gautam Chatterji)

HIMMAT FOR 4 ANNAS

With the price of newspaper and magazine subscriptions going up every day, the literate boy has to dream up new ways to stay financially alive. One of the best schemes heard of by XL comes from Std IX. They have undertaken a class-lottery in order to pay for a year's subscription to **Himmat**, the weekly news magazine edited by Raj Mohan Gandhi. Each ticket sells for only four annas. As soon as Rs. 15.00 are obtained, the lottery will be closed. By the time you read this, it will surely be closed, since the prize is a donated pair of cricket boots! Arun Kumar reports that "The magazine will be **exclusive** for the use of Std IX, but we won't mind if others come and take a look at it."

A look at the HOUSE POINTS up to 30th October

			I LIONS	II LEOPARDS	III TIGERS	IV PANTHERS
Weekly tests (18-9-71)	211	184	205	191
March past (30-10-71)	43	54	40	53
Football	16	20	12	8
Table Tennis	12	16	20	12
Independence day recital	4	5	2	3
Swimming	27	39	15	1
Last term's total	344	333	355	345
GRAND TOTAL	657	651	649	613

Three New Teachers & a PA

St Xavier's recently welcomed four new additions to the staff. In order of their arrival, they are Miss Rekha Prasad, Mr. I. S. Verma, Mr. Anjani Kumar, and Miss Sheela Shah.

MISS R. PRASAD appeared on the scene about two months back, as some of the more observant chaps may have noticed. Miss Prasad graduated last year from St Xavier's College, Bombay (she too is a Xaverian) and then did a course in advertising and public relations, also at Bombay. She is very fond of dramatics, dancing, and swimming. And her artistic skills were amply manifested by the posters she produced for the school fete.

MR. VERMA is the newly appointed assistant to the Principal. The military bearing and great neatness he brings to his work has a reason. He is an ex-army man (with a Raksha Medal to his credit) and is one of the more widely traveled persons on campus. He has seen India all the way from Bhutan in the northeast to Belgaon in Mysore State. Besides his duties as P.A., Mr. Verma looks after the library at the Catholic Information Centre. He is very much impressed by the discipline and friendly at-

mosphere at St Xavier's but at the same time he feels more can be done by the boys in showing greater respect for their teachers.

MR. ANJANI KUMAR, as the physics teacher for Stds. VII and IX has quite a tough job ahead of him. An amiable and quietly disposed person, he comes with previous experience, having been a lecturer and temporary teacher at IIT in Delhi. This experience will, of course, help him tackle his task here with efficiency and success. At present he is doing research work and hopes to complete it by 1972.

In MISS S. SHAH we have a full-fledged Patna product. She graduated from B.S. College, Dinapore, after which she did her B.Ed. training at Patna Training College. Her interests vary from coin collecting to dancing (that makes two dancing enthusiasts among the staff!). Where teaching is concerned, Class IV is her favourite just now.

It is a matter of great pride to us that we have people of such varied talents among us to help and guide us in different aspects of school life, and we sincerely welcome them to St Xavier's.

Jyotirmoy Chatterji, X

DELHI EXPRESS (CONCLUDED)

Three "Rajivs" in the same class are certainly confusing. But when two of these are "Rajiv Ranjans", it is confusion compounded. As winner of the 1st prize for the Delhi Express quiz, Rajiv Khaitan was easy enough to locate. But when two boys offered to accept the 2nd prize awarded to Rajiv Ranjan, XL's editor was just about speechless. Was this some kind of stunt? Then (never one to forget a face) he remembered which of the two had entered the contest, and awarded the prize to Rajiv Ranjan Sinha.

खेल के मैदान में शिक्षक

१६ सितम्बर का फुटबॉल मैदान छात्रों से घिरा था, इस वर्ग का सबसे महत्वपूर्ण एवं मनोरंजक मैच जो खेला जाने वाला था। 'टॉस' शिक्षकों ने जीता था। मैच शुरू हुआ। शिक्षकों ने अपनी चपलता तथा बॉल पर नियंत्रण से यह सिद्ध कर दिया कि अपने समय के वे उत्तम कोर्ट के खिलाड़ी थे। परन्तु विद्यार्थियों ने भी शानदार खेल खेला। शिक्षकों की ओर से श्री सर्वदेव मिश्र 'गोलकीपर' थे। नवम् वर्ग के शशांक ने मैच का पहला गोल दागा और छात्रों ने तालियों और सीटियों से शशांक का अभिवादन किया। क्यों न करें, उन्हें पिछले साल की पराजय का प्रतिकार जो करना था। छात्रों की ओर से दो और गोल हुए, खेल की कुशलता से नहीं, शिक्षकों की असावधानी से। "हाफ टाइम" के बाद शिक्षक कुछ ज्यादा सावधान नजर आ रहे थे। विद्यार्थीगण शिथिल हो गए थे और इसका फायदा उठाकर फादर गोम्स ने शिक्षकों की ओर से एक गोल कर ही दिया। अंतिम सीटी बज चुकी थी और विद्यार्थी-दल ने शिक्षक-दल को १-२ से हरा दिया था। सभी विद्यार्थी-दल का अभिनन्दन कर रहे थे। शिक्षकों ने अभ्यास के बिन ही आशातीत अच्छा खेल खेला। खैर, जै भी हो, खेल मनोरंजक एवं रोमांचकारी था।

प्रदीप टंडन (दशम वर्ग)

Good morning, Colonel! ... I mean General !!!

I arrived at Tantalusia's Army HQ with some trepidation, since a friend of mine had warned me that the Tantalusians are acutely rank conscious. He had also explained that the Tantalusians have only two ranks, colonels and generals, and that colonels always tell the truth, whereas generals never do.

"Excuse me," I began, addressing an officer whose badges of rank I could not decipher. Then pointing to a distant pair of officers conversing in a corner, I asked, "Does the taller of those two

gentlemen outrank the other?" "Pish", he replied. "And do you outrank the taller gentleman?" I continued. "Pish", he replied again.

Now "Pish", either means Yes or No. Knowing this much, are you able to discover the ranks of these officers and likewise the meaning of "Pish"? (XL will award a prize to the first boy—from any standard at St X—who correctly solves this quiz on paper and submits it to the Editor. Results will be published in the coming issue.)

Leopards Capture Track Shield

A large crowd was on hand Saturday, November 13, to witness the 29th annual St Xavier's Sports Day. Activities began at 1:30 pm on the Gandhi Maidan, with the impressive march-past of the primary boys.

The first event on the afternoon's programme was the 100 metres sprint of the seniors. This was won easily by George Cyriac, a runner who showed considerable ability during the afternoon and went on to win the "best athlete" award among the seniors.

don't miss

The Great Xperience

pages 4 & 5

This was followed by the 200, 400, 800, and 1500 metres races in which 1st and 2nd place prizes were shared fairly evenly among the four houses. Next came the hurdles and then, time out for the interval.

Earlier elimination heats during the week made it possible for the programme to move along briskly.

The march-past of the Senior boys took place after the interval. For fifteen minutes they surpassed themselves and awed the crowd into silence as they put on their best marching show of the year. The school flag and those of the four houses were then stationed at mid-field and Part II of the programme got underway.

Mr. Zavar Husain, the Bihar State Education Minister, presided as chief guest and spoke to the crowd for a few minutes before distributing the prizes and various cups. He praised in particular the cooperation and involvement of so many of the St Xavier's staff in making Sports Day a success.

The "best athlete" award for the seniors went to Ashok Rai and for the juniors to Shahidur Rahman. The Leopards came out as over-all winners and thus won the Track Shield. Earlier they had won the Fr. Wroblewski Handball Trophy, the Fr. Niesen Football Trophy, and shared with the Lions the Fr. Cleary Cricket Cup.

Motivation Course at NDA This Month

For a select team of Xaverians, six days in December will be of extreme importance. The team comprises boys from the four top classes who will represent St Xavier's at the Student Council Motivation Course to be held at Notre Dame Academy December 12-17.

The course aims to draw out and develop qualities of leadership in boys and girls of high school age so that they may be better leaders during their school years and in later life. It will include talks from various qualified persons on different aspects of leadership. Panel discussions and visits to places where examples of organisation are evident will help the participants to get a

clear idea of how to handle different situations where qualities of leadership and good organisation are necessary.

The Student Council believes that the whole school will profit when the six boys representing Xavier (Dilip Srivastava and Subir Sen, X; Arun Kumar and Shashank Shekhar, IX; Niraj Sinha, VIII; and Sourendu Gupta, VII) come back and put into practice what they have learned at the motivation course. With this in mind, the Council is financing half of the venture, while Fr. Principal has generously agreed to provide the other half.

xavier LIFE

Vol. 20, No. 5,

ST XAVIER'S PATNA

December 2, 1971

Zulus, Painters, and Newlyweds

Children's Day (Nov. 14) was celebrated in a big way at Hardinge Park this year. Some 260 contestants from 15 different schools were invited

to a 2-hour painting competition sponsored by Kishore Dal.

From St Xavier's 18 boys registered and took part, accompanied by Mrs. Mehrotra. They not only enjoyed themselves, but won a few prizes besides. However, the prizes were not distributed until Nov. 17th on the occasion of the Fancy Dress competition staged at the Raj Bhavan Botanical Gardens.

St Xavier's entered the following items in the Fancy Dress series: a marriage party, two Zulus from Africa, a beggar, and a joker. The Zulus did well for themselves and won 1st Prize in their 6-8 years age group.

As for the patient painters from Xavier, their prizes were then announced as follows: Dharmnath Pandey, II (Consolation Prize in Group B), Sunil Kayan, V (2nd Prize in Group C), and Sourendu Gupta, VII (2nd Prize in Group D).

Urgent Call For Bengali Books

Three months back all Xaverians were invited to donate Bengali books to the Red Cross unit of our school with the idea that they would be sent on to the refugees at Gaya. The response has been rather slow and far from Fr. Scaria's expectations. Some boys have responded well and among them Dipankar Sarkar of Sid VI deserves special mention for the 25 books he brought from home.

There is still time (before the holidays) to help this cause. Two or three books from each boy would mean a lot.

एक पैर ऊपर की सीढ़ी पर

कर्म, भाग्य, फल! संघर्ष और परिणाम! जीवन का प्रत्येक क्षेत्र, प्रतिपग संघर्ष-रत। लक्ष्य की ओर दौड़ रहा मानव। हर एक मोड़ पर कुछ देखना चाहता उसका मन। अस्तु, सफलता की ज्योति हमें आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती है। शक्ति भर हाथ पैर मार चुकने के बाद भाग्य पर परिणाम छोड़ हम सुस्ताना चाहते हैं, कुछ देर सांस लेना चाहते हैं।

यह पत्रिका जनवरी से नवम्बर तक के परिश्रम से क्षणिक विश्राम देगी। कसौटी सामने है। हम कसे जा रहे हैं। परिणाम हमारे पैर को उठाकर ऊपर की सीढ़ी पर रखनेवाला है। नीचे की सीढ़ी से हम अपने बोझ को उठा, आगे की ओर झुक गये हैं। बाकी काम प्रगति-पत्र के ऊपर है, गुरुजनों के निर्णय और प्राचार्य महोदय के हस्ताक्षर पर है। यह अँक इस वर्ष की समाप्ति की घोषणा है। अंतिम है।

अभी हम तैयारी में हैं। छात्र-जीवन, मानव-जीवन का प्रमात है। व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शारीरिक तथा मानसिक विकास है। १३ नवम्बर, हमारे शारीरिक विकास की झांकी गांधी मैदान में दे गया था। दिसम्बर में कोई भी तिथि मानसिक विकास बता जायेगी। इस पत्रिका में वृष्टियाँ मिल सकती हैं। कारण, हम सरस्वती की आराधना में लीन हैं। आँखें उठाकर देखने का अवकाश नहीं है। अगले वर्ष का प्रत्येक अँक सम्भवतः विद्यालय विवरण के अतिरिक्त आपकी सेवा में एक-आध साहित्यिक रचना भी प्रस्तुत करेगा; मैं आश्वासन दे सकता हूँ। इसके लिए मैं अपने परिवार के सदस्यों से आग्रह कर रहा हूँ कि वे कुछ लिखकर ही अपनी भ्रान्ति दूर करें। अनुरोध ठुकरा देने से चोट लगती है, दिल बैठ जाने का भय रहता है। आशा ही कर रहा हूँ।

We'll drink a cup of kindness yet!

Panther Invited To Leopards' Den

When I found myself at the local Soda Fountain on a Sunday evening in the midst of a jostling, elbowing crowd and firmly sandwiched between two hulks of mankind, I did not feel very optimistic about the the Leopards' victory party which was shortly to start. But somehow I managed to out elbow the rest as I proceeded from the entrance area to the main hall, and I'm afraid not bothering to apologise to the innumerable people whose toes were squashed (I hope) under my heavy boots. As I entered, the Leopards' captain, Anil Pathak, spotted me and helped me feel welcome in the enemy's camp. As a magnanimous and sporting gesture, the Leopards had invited a few people from outside the clan to help them celebrate this evening.

My position was thus an awkward one. Not exactly a lamb among wolves, but certainly a Panther among Leopards. However, in no time I was seated next to Mr. P.S. Thakur and the party got rolling. Mercifully there were no long speeches which drive you again and again to look at your watch. We simply had a good time shouting and laughing and calling back incidents of the past year. At least when our mouths weren't otherwise engaged. From the standpoint of food, the Leopards know how to keep their guests happy!

Well, that's how the party went. Sorry to see it over, I re-elbowed my way outdoors again, and headed home to another chapter of physics. I guess the Leopards aren't such bad fellows after all. **Subin Sen, X**

चित्र चलते हुए

बहुत दिनों के बाद ११ नवम्बर को विद्यालय के "ऑडिटोरियम" के बाह्य उत्सुक छात्रों का समुदाय उमड़ पड़ा था सम्भवतः पहली बार परी-कथा पर आधारित एक चलचित्र दिखाया जा रहा था अन्दर तो बच्चे और वयस्क सभी तन्मय होकर पर्दे पर देख रहे थे। चलचित्र, "मोची और परियों" वाली परी-कथा पर आधारित थी रात में जब सब सो जाते हैं तो परियाँ सब कामों को करने लगती हैं—कोई कपड़ा साफ करती है तो कोई बड़ा-सा 'केक' बनाकर मेज पर छोड़ जाती है। रात में एक चोर घर में घुसता है तो परियाँ उसे शराब के पीपे में बंद कर देती हैं। इस प्रकार कई मनोरंजक घटनाएँ घटती हैं बच्चों के लिए यह एक अनोखा ही किस्म का चलचित्र था और उन्होंने अपनी जोरदार तालियों और मोली खिलखिलाहटों से इसका स्वागत भी किया।

दूसरा चलचित्र तैराकी से सम्बन्ध रखता था। इसमें तैरने की सरल विधियाँ दिखाई गई थीं। तैराकी में दिलचस्पी लेने वाले छात्रों के लिए यह अनोखा ही आकर्षण था। यह चलचित्र तैराकी-प्रतियोगिता के बाद दिखलाई गई थी, अतः कई दिलचस्प बातें छात्रों की ओर से सुनने को मिलीं। कुछ तो इस चलचित्र और तैराकी प्रतियोगिता के बीच अनेक सम्बन्धों को निकाल रहे थे। चलचित्र के लिये बहुत मोड़ थी, लगता था 'स्विमिंग-क्लब' के सदस्यों की नामावली में वृद्धि होनेवाली है अब देखें गर्मी के मौसम में कितने लोग और आते हैं।

तीसरा चलचित्र 'इण्डो-जर्मन असोसिएशन' से प्राप्त किया गया था। चलचित्र के सभी संवाद-जर्मन से हिन्दी में प्रतिअंकित किये गये थे। स्विटजरलैंड के एक बहरे बड़ई के दो पौत्र अपने 'बाबा' के कारखाने में चुपके से जाते हैं और खेल खेल में कारखाने को चलानेवाले जल-शक्ति कक्ष में फँस जाते हैं। इधर बड़ई अपने कारखाने को चालू कर देता है। किस्

(शेष पृष्ठ ८ पर)

Parade Points

Several surprises came out of this year's march-past on Sports Day. To begin with, the Panthers who were tops in almost all of our Friday march-pasts had to be content with 4th place. While those who have followed the leaping Lions through the year managed to see them pick up 2nd place (10 points) on Nov. 13. A sure sign of what perseverance and hard work can do!

As for the Leopards, there is no doubt about how much their successful march-past contributed to their winning the athletic shield. Point-wise they surely deserved 1st place in the parade. The Tigers, however, are proud of the fact that two of the three judges granted them 1st place, and not the Leopards. The secret of the Leopards' victory was in the total points they gained after the ballots of all three judges had been added up. As George Orwell might have said, "All judges are just; but some are more just than others."

That Time Of Year

Mr. Verma and the office staff are going through one of the busiest periods of the year, with eager guardians besieging the office from early morning till late afternoon registering sons for admission. This is the first step in a series of tests and interviews leading up to full admission into St Xavier's. Realizing that not all are going to make it, we can remind ourselves of how lucky we are to be inside and not knocking on the door. And maybe ask the question: "Do we deserve the privileges which our parents and teachers are giving us in such abundance?"

पुस्तक पुस्तकालय में

मेरी प्रिय कहानियां : निर्मल वर्मा

निर्मल की कहानियों को किसी देश से जोड़ना और कहना—यह कहानी अमेरिका की है, यह चेकोस्लोवाकिया की, यह भारत की—गलत होगा। माया हिन्दी रखते हुए उन्होंने देशी-विदेशी सभी प्रकार की कहानियाँ लिखी हैं। "लन्दन की एक रात" अंग्रेजों की हिन्दी में कहानी है, जिसमें घटी घटनाएँ कभी भी भारतीय नहीं हो सकतीं। फिर भी यह हिन्दी साहित्य में गिनी जायेगी।

इन संग्रहित कहानियों के पात्र सिर्फ भारत से नहीं बल्कि सारी दुनिया से चुने गए हैं, और उनकी जिन्दगी वर्माजी की कहानियाँ हैं। "अन्तर" एक ऐसी ही कहानी

Keep The Flag Flying

Jayprakash Gandhi of Std V has come to realise the hazards of running up and down the maidan with a team flag. On the eve of Sports Day, a placidly grazing cow suddenly gave an angry snort and came thundering towards him, horns down and tail up. If Charlie (from the games room) had not arrived on the scene just in the nick of time, poor Jayprakash, or the flag, or both would have gone into orbit!

Once There Were Two Friends...

Shutup and *Manners* were two great friends. One evening while *Manners* had gone for a swim, *Shutup* cycled down to the market. On the way he pedalled so fast that he accidentally bumped into a policeman. The indignant officer asked him his name. "*Shutup*," he replied. The policeman completely lost his temper and shouted, "Where are your manners?" The boy innocently replied, "*Manners*? Oh, he's at the swimming pool".

Vineet Gupta, V

है। एक चेक पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन को निर्मलजी ने अपनी कहानी बना ली है। "जलती झाड़ी" पढ़कर अर्नेस्ट हेमिंग्वे की लिखी "फूल पर बैठा बूढ़ा आदमी" कहानी याद आ जाती है, उस कहानी का "डेवलपमेंट" बिल्कुल अंग्रेज कथाकारों का रूप है।

हर कहानीकार ने स्त्री-पुरुष के प्रेम की कहानियाँ लिखी हैं, और निर्मल वर्मा कोई अपवाद नहीं। "लवर्स" में उन्होंने प्रेम को अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। "परिदे" में ह्यूबर्ट का लतिका के लिए प्रेम का चित्रण बहुत अच्छा बन पड़ा है।

इस संग्रह में संकलित जैसी कहानियाँ हिन्दी में किसी और ने नहीं लिखी हैं। इसलिये बहुतों को शिकायत है कि निर्मल वर्मा की कहानियाँ "विदेशी-कहानियाँ" हैं। और उनका जवाब है—ग्राहम ग्रीन जिदगी भर इंग्लैंड के बाहर अपने उपन्यासों के कथानक ढूँढ़ते रहे, लेकिन रहे शुरू से आखिर तक ठेठ अंग्रेजी लेखक। क्या लारेंस के कहानियों-उपन्यासों को देशी-विदेशी कटघरे में रखना हास्यास्पद नहीं होगा? इन कहानियों को पढ़ते समय यह बात याद रखना पढ़नेवाले के लिये सहायक हो सकता है।

— चन्द्रशेखर (नवम वर्ग)

Salute To the Gold & Blue

The main entrance to the school building has acquired a new look with the bright new flag fluttering gaily on the newly painted flagstaff which looks very smart and cheerful, even though it is leaning over a bit. We notice, though, that the colours in this flag are reversed. If you remember, the previous one had yellow in the middle with blue on the side, but this one has yellow on the sides with blue in the middle. Now how do you suppose that happened?



moment by moment
The Great Y





nce
ptured

Xavier's 1971



This is it, the last issue of 1971. It comes to you on the eve of the day honouring our school patron—St Francis Xavier. But unfortunately (for those who like to celebrate) it's smack in the middle of final exams.

Knowing how forlorn you would be, we worked to make this issue lighter and brighter. No more yellow paper (!), and even a joke or two.

into the sunset

In case you haven't heard, there won't be a Yearbook this year. Eleventh standard boys won't weep over that since they don't exist yet. But next year, look out !

As a consolation prize, XL is devoting the centre of this issue to a *few* of the highlights of the year. We are very grateful to the following patrons who generously aided us in getting the expensive blocks made :

Mr. Jagannath Khiyalal

Mr. Sujit Gupta

Pataliputra Rubber Mfg. Co.

Dr. Swami Nandan Prasad

M/S Quality Corner, Boring Rd.

Mr. Daroga Prasad Rai

Mr. G. L. Saraf

We don't know about you, but we've enjoyed the year. Nothing left but to wish everybody HIGH marks in the exams and a joyous holiday. And to remind you: *Renew your subscription in '72 !*

YOUR XL STAFF

No Coaching ?

Dear Sir :

In the last issue of *Xavier Life*, Denzil Madhavan wrote that there had been no basketball coaching. Before publishing the letter, the editor or Denzil should have enquired about the coaching. All through the puja holidays about 15 days, mainly from Std VII, came regularly to the coaching under the direction of Fr. Gomez.

We aim to have more coaching during the winter holidays so that we can form basketball teams next year.

Yours sincerely,
Sourendu Gupta, VII

Ed. Note :

XL would like to go on record as favouring any and every sort of coaching in basketball at St Xavier's. However, what Denzil had in mind was the more or less official and publicised coaching started under Br. Sylvester, which somehow was not supported enough by the boys. The other coaching was laudable, but as far as we know, it was not continued beyond 10 days or so in September. Once examinations are over, there will be a grand opportunity to get the programme going again.

Xavier Life

Editor

SUBIR SEN

Asstt. Editors

ABHAY SHANKAR
DENZIL MADHAVAN
DILIP SRIVASTAVA
JYOTIRMOY C.

Photography

A. AJITSARIA
PRABHAT SINGH

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editor of *Xavier Life*, St Xavier's Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjivan Press, Patna-11.

Yellow Journalism

Dear Sir:

The idea of publishing XL in yellow colour does not appeal to me at all. I think that a newspaper's success or failure is judged by the matter it contains and not by its looks.

Moreover, pictures—which are an essential feature for any newspaper—seem hazy, and it is difficult for one to recognise the individuals.

So, I sincerely hope that instead of publishing the school magazine in colour, the editor will follow the old trend and provide the Xaverians with a white shining XL full of enticing articles.

Yours sincerely,
Arun Kumar, IX

Speak Out !

Dear Sir:

The last issue of *Xavier Life* had a new look with a new colour of paper. I do not know if it was economical to use yellow paper, but I am sure that many did not seem to appreciate the block printing. Was that because of the yellow paper?

Yours sincerely
Ashok Mitra, IX

Dear Sir :

When I first received a copy of XL on yellow paper, I was quite impressed by the originality of the idea. Since all the other school papers are printed on white paper, XL stood out among them. The idea itself is excellent, but the staff should work hard and keep the quality of the paper on a par with its outstanding appearance. Many people may think that since this idea entails the breaking of orthodox methods, it is not suitable. But to become modernized we should be unhesitant in leaving certain ideas and adopting more ingenious ones.

Yours sincerely,
Sanjoy Choudhary, X

Dear Sir :

When I first looked at the recent issue of *Xavier Life*, I could not believe it was our school newspaper. The yellow coloured newspaper somehow did not convey the idea of being the school paper. Yellow has a tinge of dullness associated with it (this may very well be strictly my personal opinion) which makes it a bad choice as the colour of XL. Never have I seen any magazine or newspaper whose paper is yellow. The black printed letters look best on white paper. Experimentation is never bad, though, so one issue in yellow colour is tolerable, but it should not be made the accepted colour.

Yours sincerely,
Chandra S. Sharan, X

Credit Where It Is Due

Dear Sir :

In the last issue of *Xavier Life* somebody has written that "Sports Day 1971 will have a fresh form and colour. Fr. Abraham and his assistants, Mr. Sebastian, Fr. Gomez,..."

But as far as I know, Fr. Gomez was the main organiser and not the assistant of Fr. Abraham.

Yours sincerely,
Thomas V., X

Ed. Note :

No doubt you will agree that when Sports Day preparations had just started, it appeared that Fr. Abraham was the main organiser since he was the one who was giving details and instructions about Sports Day in the assembly and during class hours. It was only much later, after this article had been sent to the press, that we discovered that Fr. Abraham and Fr. Gomez were co-ordinating organisers.

Good Morning, Colonel!

Xavier Life is seriously thinking of banning Rajiv Khaitan from its future quizzes. Once again he has solved the riddle and taken 1st prize. For those of you unable to eat, drink, or sleep in expectation of the solution to "Good Morning, Colonel!" the result is as follows: THEY WERE ALL GENERALS. Of the eight possible distributions of rank, four provoke "yes" and four "no" in answer to the first question. But only two provoke "yes" and six "no" in answer to the second. So "Pish" is "yes", which was provoked both times. Clear? (Courtesy of the *New Scientist*, 11 & 18 Feb. 1971)

गीत पसन्द के

विद्यालय में गाने के शौकीन बहुत-से छात्र हैं। हरेक कोने पर एक न एक गर्वया तान छेड़ता हुआ मिल ही जाएगा, मले ही सुर बढ़िया न हो। यह सब देखते हुए, हमलोगों ने सर्वप्रिय गानों के बारे में उच्च कक्षा के छात्रों से मत लिया है। कलाएँ हैं सातवीं से लेकर दसवीं तक। कुछ मनोरंजक 'रिपोर्ट' मिल सकी है, आप भी इसका आनन्द लीजिये। सर्वप्रिय तीन गाने इस प्रकार हैं:—

- (१) जिंदगी एक सफर है सुहाना—अंदाज
- (२) मैंने तेरे लिए ही सात रंग के सपने चुने—आनन्द
- (३) रेखा ओ रेखा—अधिकार

VP's Headquarters

"Hey, don't shout there! The Vice-Principal is in his room," one boy said to another.

"But why should you fear him? He is so nice and helpful," came the reply.

This room is widely known as the "caning room". And even the quieter boys, without any mischief ever in mind, have a terror about the room.

But this room guides many of the activities of the school at the same time. If you are a sportsman, you must expect a call from this room. And if you are interested in other activities, you have to report here.

This room is situated in a central place so that you can see many of the activities of the school from one spot. It is well decorated with canes and registers. There is a rotating chair inside on which sits the V.P., always seen busy with his works.

You must have a school diary, and remarks (good or bad) are checked here. You cannot continue to be bad for a long time, but you can continue to be good without fear.

This room inspires the boys for hard work and studies. Activities in the school have no meaning if you don't read and study. The V.P. is a good teacher, too. His room is a caning as well as a training ground. The V.P. is really a V.I.P. for us. If you want to see what I mean, come to the Vice-Principal's room.

Pravir Krishna, V

चित्र चलते हुए

(पृष्ठ दो से आगे)

तरह एक पौत्र बाहर निकाल कर बाबा को रोकता है तो दूसरे की जान बचती है। बाहर निकाल कर बाबा दोनों की मरम्मत करते हैं। छात्रों ने सभी चलचित्रों का स्वागत किया—उनके चेहरों की मुस्कुराइयें

इस तथ्य की द्योतक थीं। जब देखें '७२ में कैसे चलचित्र दिखाये जायेंगे। आशा है '७२ के चलचित्र नई बहारों की लेकर आएंगे।

अशोक मित्र (नवम वर्ग)



Mark Your Calendar

1971

20 Dec. : Report Cards
21-23 Dec.: Purchase Books for 1972

1972

10 Jan. : School Reopens (full class day)
29 Jan. : Recognition Day



Xavier life

Vol. 21, No. 1

ST XAVIER'S PATNA

February 10, 1972

फादर जीवर्ट से पुरस्कार

आज का पुरस्कार-वितरण दिवस की तिथि २९ जनवरी थी। समारोह शुरू हुआ फादर जीवर्ट से। सुवीर ने आमंत्रितों को कार्यक्रम के विषय में विस्तृत जानकारी दी और फिर प्राचार्य, फादर स्कारिया ने अभिभावकों को विद्यालय के विषय में कुछ विशेष बतलाया। इसके बाद शुरू हुआ पारितोषिकों का वितरण।

सभी विद्यार्थी हमारे भूत-पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष, फादर जीवर्ट। आजकल ये खगोल में

कार्य कर रहे हैं। पुरस्कार "क्राफ्ट" छोड़कर अन्य सभी विषयों के लिये दिये गये थे।

माननीय मुख्य अतिथि ने स्वयं ही पुरस्कार-विजेताओं को 'मेडल' व सर्टिफिकेट से सम्मानित किया। तालियों की गड़गड़ाहटों के बावजूद भी छोटे बच्चे अनापेक्षित रूप से शान्त थे।

पुरस्कार वितरण के पश्चात् फादर जीवर्ट के दो पुराने छात्र, दीपक बहशी और (शेष पृष्ठ ६ पर)

SC Tremors

The biggest event in the next two weeks (not counting *Wintering!*) will be the election of the 1972 Student Council officers. The President and Secretary will be drawn from Std. X, while the Vice-President and Assistant Secretary will be boys of Std. IX. The campaign speeches are eagerly awaited.

The Big Four

Even competition in all aspects of school life seems to be in the air as the new teams tighten their belts and get set for another hectic year. Already, preparations for various activities are in full swing. XL has the solemn assurance of the four Captains and Fr. Gomez that the four teams have been divided as fairly as they possibly could be. No doubt, Sports Day, March, will justify their claim.

Kliksters Get Organised

On the theory that you can teach an old dog new tricks, the SX camera Club is off to a fresh start. Sixteen eager members, some new equipment, and a moderator (when they can find him!) make up the club. Already quite a few orders for prints have been taken and filled at discount rates. Arvind Ajitsaria has been running his (and his customers') legs off. But the best news is yet to come.

SC Delegates Enthused Over Course

"Leaders are not born; they have to be trained." With this thought in mind, a Student Council Motivation Course was organised for the first time in Patna. It took place at Notre Dame Academy from December 12-17. Sixty boys and girls from thirteen schools all over Bihar benefitted from this course in leadership training. Panel and group discussions, along with talks on different aspects of leadership formed the bulk of the course.

Methods and techniques for promoting group discussions were first demonstrated and then explained. Brainstorming, "Buzz sessions", and the "66 technique" were part of this training in mass communication. An explanation of the Student Council setup by Fr. A. Puthumana gave a good picture of the possibilities open to a Student Council in a given school. A study of Group Dynamics taught campers to look at things from the other person's point of view. Communication exercises demonstrated the importance of speaking clearly and understanding another's ideas thoroughly before acting on them.

A novel aspect of the camp was its administration. This was entirely in the hands of the campers themselves. Every member of the camp

(Contd. on Page 4)

What Makes A School ? २६ जनवरी के नाम पर

Those who visited the campus during the December holidays found out fairly soon. But the majority of us learned only on our return in January that Fr. Puthumana and Fr. Ziebert had received new assignments and would not be at St Xavier's for the coming year. This was surely a disappointment to many boys. The length of tenure of these two Fathers was quite different (one year vs twenty years), but each one's devotion to St Xavier's was wholehearted. In this issue we try to express some of our sentiments of gratitude for the great work they did among us.

On the brighter side, we learned that four capable new lay teachers had joined the staff, along with one Jesuit Brother and two Fathers.

We can't help but reflect on all these comings and goings. They bring with them a certain sadness and heart-break. They also force us to stop and remember that if we have anything valuable at St Xavier's, it's the *staff* and the *students*, more than anything else. What really counts is not the buildings, or courts, or pools, but the calibre of the people. And the tradition they carry on.

Let us hope that the newcomers—staff and students—will not only continue the great Xavier tradition, but make it richer with what they have to offer.

ये भी अपने हैं

१९७२ के सेंट जेवियर्स में बच्चों का एक रेल-सा आता है। झरोखे से यदि ध्यान से देखें तो कई मजेदार बातें दीख पड़ेंगी—कहीं तीन-चार यार एक-दूसरे के कंधे पर हाथ रखे न जाने किस दर्शन की विवेचना कर रहे होंगे तो कहीं ऊँचे वर्ग के छात्रों के ईद-गिर्द खड़े होकर उनकी बातों पर विस्मित हो रहे मिलेंगे। झूले के पास नजर घुमा कर देखें—लम्बी-लम्बी लाइनों में खड़े अपनी पारी के आने की प्रतीक्षा करते मिलेंगे, ऊपर प्रयोगशाला के पास चले जाइये, प्रयोगशाला के अजूबों को आंखें फाड़-फाड़ कर देखते नजर आयेंगे।

एक से एक रूप है उनका—किसी के बाल कंधों तक बड़े हैं तो किसी की आंखों में मोटे-मोटे काजल हैं, किसी की निकर घुटनों तक लटक आई हैं तो किसी नन्हें पिकासो ने अपनी कमीज पर कलाकृतियों बना रखी है। उनसे बातें तो करके देखिये, इतना शरमाएंगे कि कुछ जवाब भी नहीं देंगे लेकिन अपने दोस्तों के बीच ऐसी शेखी बघारेंगे मानों अभी-अभी शेर का शिकार करके लौटे हैं। लेकिन चेहरे पर हमेशा वही भोली-भाली मुस्कराहट रहती है वही बचकाना अन्दाज, वही मासूम खिलखिलाहट। उनके नन्हे से मन में चारों ओर उमंग की ज्योति है, चारों ओर हरियाली है, क्यों न हो ये ही तो विद्यालय के भले कर्णधार हैं।

हर वर्ष की तरह विद्यालय में गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर हर्ष उल्लास तथा उत्साह की उमंगें छात्रों में देखी गई। पच्चीस जनवरी को करीब ढाई बजे गणतंत्र दिवस का समारोह शुरू हुआ। कार्यक्रम बड़ा मनोरंजक रहा। शंडोत्तोलन उप-प्रचार्य फादर जॉन डिमेलो के हाथों किया गया और राष्ट्रीत तथा राष्ट्रीय सलामी के बाद चारों दलों के छात्रों ने अपने-अपने झंडे के साथ परेड का प्रदर्शन किया। परेड का स्तर अन्य दिनों के परेडों से अच्छा था। मुख्य अतिथि फादर राय की अनुपस्थिति के कारण विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं ने ही परेड की सलामी ली। तत्पश्चात् विद्यालय के छात्रों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की शुरुआत निम्न-वर्ग के छात्रों द्वारा एक राष्ट्रीय भावना से प्रेरित गीत से हुई। इसके बाद ग्यारहवीं तथा सातवीं कक्षा के दो छात्रों ने क्रमशः अंग्रेजी तथा हिन्दी में इस राष्ट्रीय जलसे के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मध्य में एक छात्र के कविता पाठ के बाद श्री के.के. मिश्र ने शिक्षकों की ओर से गणतंत्र दिवस के विषय में हमें कुछ बताया। कार्यक्रम के समाप्त होने से पहले, उप-प्रचार्य सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया तथा गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमें देश के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया और साथ ही साथ कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की।

—प्रदीप मिश्र (X)

Lifting

Face

With this issue (page 1) we launch our new XL nameplate. Your comments will be welcomed (unless unfavourable). All we can tell you now that the basic "theme" of the nameplate will varied in the next three issues. That's either a threat or a promise. We'll let you decide which.

Good Old Father Ziebert

A well-built, smiling man in a white cassock walks into the classroom and a chorus chants, "Good morning, Father!" At once he returns the greeting and every face lights up with a smile. That is the way I remember the start of every St. Xavier's English class. The class we all enjoyed and never seemed to finish.

By now, though all those classes have added up to 20 years, and Fr. Ziebert is taking on a new kind of

After every test or exam, he congratulated the successful boys and tried to buck up and encourage the others. He was always ready to coach and help us to improve.

I am certain all the boys will remember him fondly for years to come. I, for one, will certainly miss him. St Xavier's will not be the same without him.

Ravi Choudhary, VII

More Fans For An "Old" Prof

Soon after returning to school I chanced to meet Fr. Ziebert. "How's Raj this morning?" he asked. I was slow to answer and I guess I looked a little gloomy. He said, "Why so sad?" I answered, "It's all because you're leaving us, in other words because you've retired." Hearing this, he laughed and said, "Well, the fact that I've retired means I got a NEW tire, that's all. My St Xavier's tire was getting kind of old and had to be traded in."

Raj Km. Maharaj, VII

Sometimes in class Father used to talk very fast. So much so that the boys started calling him our "Jumbo Jet".

Khalid Parwaiz, VII

In winter time he would usually wear a black cap made of wool. During class he often liked to tell us jokes, and would tell us many stories about things he had seen with his own eyes.

Bikash Swaroopa, VII

Father usually brought a black-board to class which was about as big as a calendar and could be folded.

A queen for primary boys

Another gift from Patna Women's Training College, Mrs. Kumkum Rani is the latest addition to the staff. When *Xavier Life* went to interview her, the first thing to appear was that she loved to teach. It was gratifying to hear her describe enthusiastically how she loved to teach the kids of the first and second standards. However, she feels that the boys in the upper standards could be much more helpful in guiding and corralling the smaller boys at times. Aside from teaching Mrs. Rani is a champion of outdoor games—especially badminton and ten-niquet. She hopes to see these games one day flourish at St. Xavier's. In turn, the school hopes its latest "gift" will flourish—or rather reign—long and successfully.

For weekly tests, he wrote the question on it ahead of time and when we came to class he opened it up. ...One day I was late and had to go to the VP for an admission chit. From there I went directly to Father's class. Just as I entered the room, I stepped on a cracker which burst loudly. This startled everybody and they were all looking at me. I thought sure I was off for the caning-room. Anyway I tried to explain to Father that the cracker was already on the floor when I came in. I think he understood since he asked me to sit down and did not punish me. Later I found out that the monitor himself had put the cracker on the floor!

Prasanna Km. Singh, VII

He liked boys very much and boys liked him too. In class he used to tell us about things that happened 20 or 30 years ago. This always surprised us—how well he could remember things that happened that long ago ...I don't think class was ever boring. At the end he would always finish up by saying, "Thank you, boys." And we would say, "Thank you Father."

Sunil Singh, VII



FR. GEORGE ZIEBERT, S.J.

work and challenge at Khagaul. He is leaving many affectionate old boys at St. Xavier's. As one of them, I would like to say a word or two of appreciation.

Father had two roles to play at St. X., that of teacher and librarian. During class he could explain things like nobody else; on our library day we followed him in a line to his "kingdom" and he let us loose among hundreds of exciting story books. Always he seemed in a gay and care-free mood, mingling and conversing with the boys.

In class he used to tell us about things which took place in his home town back in America. He would tell us about the fun he had as a kid out there. We listened attentively and dreamt about those things. His English period was always a lot of fun.

The 3-Letter Club Comes to Xavier

- Ram :** Did you hear the latest? We're going to start a NCC unit here at St Xavier's.
- Shyam :** Really?
- Ram :** They announced it yesterday while you were home sick. You *were* sick, weren't you?
- Shyam :** Of course I was sick, but not homesick. Do you think I would *malingering*?
- Ram :** Well, if I knew what the word meant, I'd say yes. But since I don't I'm going to let you off easy.
- Shyam :** Thanks. Tell me, how can I join this Navy CC thing? I've always had a great love for water.
- Ram :** Wow? You really are sharp. Listen, N does not stand for Navy. It means National, and NCC means National Cadet Corps.
- Shyam :** *National* I understand, and a *corpse* I've seen, but what does *Cadet* mean?
- Ram :** Shyam, sometimes I wonder about you. Suppose you forget all you know about the NCC and start over.
- Shyam :** If you say so.
- Ram :** I do. And the first thing you should know is that the NCC has three wings, namely the army, navy and air wings.
- Shyam :** Ah ha! You said it yourself, the word *navy*. So I was 1/3 right at least!
- Ram :** No, you were 2/3 wrong! But enough of your nonsense. I'm going home.
- Shyam :** Hold on! You haven't told me anything about the NCC except that it has 3 wings instead of 2. Tomorrow's the deadline and I have to know whether to sign up or not.
- Ram :** I don't think you should join.
- Shyam :** Give me one good reason why.
- Ram :** First of all, they have parades and do a lot of marching and enforce strict discipline all the time. Do you think you could stand that?
- Shyam :** Certainly, if the pay is good.
- Ram :** Well, the pay is nil. What's more, they go on tough camping trips at least once a year. You have to rough it, fix your own grub, and things like that. They find out if you've got what it takes to be a soldier. Still interested?
- Shyam :** Definitely. But if you don't mind I think I'll sign up for the *air force* instead of the navy. Those camping trips will be a lot more fun by plane!

Motivation Course

(Contd. from Page 1)

the camp was due to the good work of these committees. Coordinating the activities of all these committees was the Prime Minister, helped by a Deputy. The Ministers of all these committees worked together to plan out a packed timetable for the campers each day.

And the timetable was packed! From 7:00 in the morning to 10:30 at night the campers were kept al-

ways on their toes. Except for short breaks now and then, free time did not exist. But none were heard to complain or grumble. They were too interested in the job at hand.

The six delegates from St Xavier's feel they have benefitted hugely from this course. They have come back with a fresh set of ideas and new ways to implement them. It now remains to be seen how much the school will be influenced by what these six "leaders" picked up in December.

Subir Sen, XI

शिविर की

कुछ यादें

(अपने राष्ट्र में कुशल नेताओं की बड़ी आवश्यकता है तथा नेतृत्व का प्रशिक्षण विद्यालय-स्तर पर ही देना आवश्यक है, कुछ ऐसी ही भावना से प्रेरित होकर १३ विद्यालयों के कुल ६० छात्र-छात्राएँ, १३ दिसम्बर को ५ दिनों के शिविर के लिए नोड्डेम एकेडेमी में एकत्रित हुए। अब से सुनिये शिविर के कुछ संस्मरण...)

अरुण कुमार : हमारे दैनिक जीवन में अक्सर ऐसे क्षण आते हैं जब हम अपने झूलों पर पर्दा डालने के लिये झूठ पर झूठ बोलते हैं। शायद ही ऐसा कोई दिन बीत होगा जिस दिन हमने कोई झूठ नहीं बोला होगा। आखिर झूठ बोलने से फायदा क्या होता है? कुछ नहीं। इस प्रश्न का वास्तविक उत्तर मैंने नेतृत्व शिविर में सीखा।

पाँच दिनों का शिविर निस्संदेह अविस्मरणीय था। इसमें हमने बहुत कुछ सीखा बहुत कुछ जाना, लेकिन न जाने क्यों एक छोटी सी बात मेरे हृदय में घर कर गई। आयोजकों के दिल के लोग अक्सर कुछ-कुछ, आकर हमलोगों से कह जाते थे और कई बार तो ऐसा होता था कि उनकी बात गलत रहती थी। ऐसे में ये हमेशा अपना गलती को स्वीकार कर लेते थे और हमलोगों से आकर माफी माँगते थे। घटने की छोटी अवश्य है पर बड़प्पन की कुँजी है।

दीपक श्रीवास्तव : हमारे विद्यालय का अतीत कुछ ऐसा रहा है कि मैं फर्स्टेड अंग्रेजी बोलने में समर्थ हूँ। लेकिन नेतृत्व शिविर में कुछ ऐसे छात्र थे जो अंग्रेजी बहुत कम बोल सकते थे। अतः शुरू में ही अपने-आप हमारे विद्यालय के दो प्रतिनिधि

(शेष पृष्ठ ८ पर)

एक पुराना चेहरा

फादर जॉन डिमेलो

फादर डिमेलो विद्यालय के लिये एक नये चेहरे नहीं हैं। केवल एक ही वर्ष पहले ये छात्र-प्राचार्य थे। पिछले वर्ष ये दिल्ली में थे।

नये विद्यालय के लिये फादर डिमेलो के काम की योजनाएँ हैं। इनका विचार है कि विद्यालय में छात्र-परिषद् को ज्यादा सुगठित और सक्रिय होना चाहिये जिससे कि छात्र और परिषद् के बीच अधिक सम्बन्ध की स्थापना हो सके। विद्यालय के खेल-कूद के काम में वे संयुक्त नहीं हैं और चाहते हैं कि छात्रों को सुधारने के लिये उच्च वर्ष के छात्रों को उचित प्रशिक्षण दिया जाय,—इसके लिये छात्रों से सहयोग की आशा रखते हैं।

इस विद्यालय में छोटे बच्चों के सम्पर्क में आने का अवसर उन्हें बहुत अच्छा लगा है। छोटे बच्चों के शिक्षक-शिक्षिकाओं से वे उनके वर्ग रखने की क्षमता के कारण प्रभावित हैं। सेन्ट जेवियर्स को जल्द स्वीकृत आशाएँ हैं।

प्रवीण श्रीवास्तव (X)

Lucky Start for Cricket XI

The Xavier cricket XI opened its '72 season on a winning, though lucky, note when it defeated Sri Krishnanagar by 3 runs on the 22nd of January. Spineless batting and a tricky pitch forced us to wrap up our innings for a meagre 26 runs. The Sri Krishnanagar team, in its turn, could not stand up long against the pace and guiles of Gautam Chatterji (who incidentally, took 8 wickets for 7 runs!), and was bundled out for 23, a very close 3 runs behind our total.

Jyotirmoy Chatterji, XI

Hot off the press (and cheap!)

Fr. Wrob's Anthology of RCPP

Did you ever feel blue or sad and wish you could find something to lift your spirits? Have you ever been bored and wanted something really interesting to read? If you have, then you are one of the thousands for whom a former teacher at St Xavier's has written a special booklet. He calls it an "anthology of riddles, conundrums, puns, and problemets." (For the benefit of our readers in Stds I-VI, Father defines that big word *anthology* as "the choice of the choicest, according to the taste of the chooser.")

The booklet recently went on sale here and is available at the special reduced rate of fifty paise. A lot of boys are showing interest in this grand collection of RCPP'S. And the only thing to explain the special reduced rate is the continued affection Fr. Wrob still feels for the school and boys he once knew so intimately.

Fr. Wroblewski first arrived in India in 1931, and in the 41 years since has not paid a return visit to his native U.S.A. In the 1940's he joined the Xavier staff and did a remarkable job in teaching English and coaching athletics. The Wroblewski Handball Trophy was named in his honour. Judging from those who knew him, his style in the classroom was unique—unlike any other teacher's before or since. Although very demanding, he was tremendously well liked, and become famous for statements like, "If you want to be educated, see a lot of westerns," or "Learn your English from fairy tales."

Three Riddles

- What is the best thing to stop falling hair?
- How is the human eye like a school teacher?
- Why is your nose in the middle of your face?

(Answers? See page 9 of RCPP)

But life was not very kind to him. One day in the late 1950's while he was typing some letters, he felt his fingers becoming numb. This was the beginning of a paralysis that would get worse with the years. In the beginning it was not too bad, but the day soon came when he could only get to class and around the campus in a wheelchair. Still he carried on, vigorous and eager to be in the classroom. Finally, in 1962 his condition forced him to say goodbye to St Xavier's. From here he moved to X.T.T.I. (Digha Ghat, Patna-11), where even the shortest visit is enough to show that Fr. Wrob is no ordinary man.

Without doubt, all of his friends and old boys were delighted last November 27 as he received the Legion of Honour award from St Michael's School. It was an honour richly deserved by a man who continues to live his life in a unique way.

Chandra S. Sharan, XI

एक व्यक्ति तीन कर्तव्य

१९७२ के विद्यालय में कई नये अध्यापकों ने अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। इनमें से एक हैं एक गम्भीर एवं आत्मसात् युवक—श्री कृष्णानंद पांडे। इनका अध्यापन-विषय है गणित व भौतिक-शास्त्र। इन्होंने बी०एस०सी०के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रखा है। 'ट्रिल' की घंटियों में ये श्री सर्वदेव मिश्र की मदद भी किया करते हैं। अध्यापन-अध्यापन के अलावा खेल-कूद के क्षेत्र में भी ये उत्सुक रहते हैं। क्रिकेट इनका प्रिय खेल है।

एन० सी० सी० में ये विशेष रुचि लेते हैं। अधिक से अधिक छात्र एन० सी० सी० में भाग लें, यह इनकी हार्दिक इच्छा है। हमें आशा है कि ये "राम और श्याम" की मदद कर सकेंगे।

राजकुमार भवनानी (IX)

VP disappears during holidays *Saa, Re, Ga...*

January 10th we had our first assembly of 1972, and of all the surprises, the transfer of Fr. Abraham to Delhi came as the biggest.

It seemed to us that in the space of only one year he accomplished more than many others might in several years. He had a knack for streamlining things, taking the complicated and making them simple. One example is the way in which he overhauled the "house system". Once this was set up to run smoothly, the later competitions turned out to be fun. He was also keen on the Friday

March-Past, and saw to it that it be given importance.

He was the same person in class, cool and again able to sort out the essential from the non-essential. But always in a humble and reasonable way, sometimes stating that "I feel this way or that, ...but I'm always open to correction." This was something we esteemed highly.

As for the future, when his task in Delhi is finished, the Xavier boys will be most ready to buy him a return ticket to Patna!

Dilip Srivastava, XI

There's a new face on campus this year and some say he's able to make even a croaking frog sing like a lark. If that sounds like an exaggeration, then you haven't been listening to our young tadpoles in the new Music Room (the former library).

The new face is Mr. Kamal Das and he comes to us well qualified for his work. He did his Intermediate in tabla and took the *Sangeet Visharad* and the *Sangeet Prabaker* degrees at Lucknow and Allahabad. He is a record artiste at the Kohinoor Record Co., Calcutta, and has performed in the past on the radio.

Before coming to St Xavier's, Mr. Kamal Das was professor of music in the Junior Basic Training College, the Shehana Music College, and was principal of the Hindol S.S. Mahavidyalaya, all in Calcutta.

At present he is the practical examiner for the Secondary School Examination and one of the examiners for the Bachelor of Music degree given in Patna.

Though only a part time teacher, he takes music classes in Stds I-V. Private music tuitions occupy him the rest of the time. He finds his young students at Xavier interested in music. Already they have performed in a minor but creditable way on two occasions: Republic Day and Recognition Day.

Denzil Madhavan, XI

Coming Up

Not wanting to put all our gems in one vault, we have held over to the coming issue the chance of introducing to you Fr. Phillip Poovattil and Br. Francis, who joined the Xavier staff in January.

The next issue will be your guide to Sports Day which is to take place Saturday, March 11. All of this, plus a survey of what the clubs are doing will be yours in the next XL.

पुरस्कार...

(पृष्ठ १ से आगे)

भूवन सिन्हा ने क्रमशः हिन्दी और अंग्रेजी में व्याख्यान देकर मुख्य-अतिथि को विद्यालय से विदाई दी। दो अन्य छात्रों ने विदाई-गीत गाया। छात्रों के नाम अपने संदेश में फादर जीवर्ट ने कहा कि वे सेंट जेवियर्स के जीवन से इस प्रकार जुड़ गये हैं कि वे विद्यालय से मानसिक रूप में कभी भी अलग नहीं हो सकते। समारोह के अन्त में दर्शकों के चेहरों पर सन्तोष की झलक देखी गई।

-चन्द्रशेखर शरण (XI)

Uncle Scrooge goes for a walk

Just for the fun of it, XL took a walk around the campus recently to see how things were going. The walk was very pleasant except at one point when we were nearly run down by Std V on the way to the new music room (can those tadpoles move!).

No microscope was needed to see that the administration has been planning ahead and improving Xavier in many ways. Item 1: Two new classrooms on the top floor constructed and furnished for a sum of Rs. 3500. Item 2: Several improvements in the science labs. Item 3: Two new exhaust fans in the assembly hall, meaning first class oxygen (as well as films) from now on. Item 4: Those basketball backboards, beautifully repainted by Cherubim and his crew and set up with nets.

We are happy to see all these additions, but at the same time worried. What is going to happen to the LETTERS page? Readers will stop writing. We will stop printing. *Life* itself may stop!

Xavier life

Editor

SUBIR SEN

Asstt. Editors

ABHAY SHANKER
ARUN KUMAR
DILIP SRIVASTAVA
JYOTIRMOY C.

Photography

A. AJITSARIA

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editor of *Xavier Life*, St Xavier's, Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjivan Press, Patna-11.



Fr. Francis Loesch, S.J.
(1897-1972)

*The
unknown
debt
is
great*

Fr. Loesch, who died Jan. 25th in Delhi, is pictured here with some boys from Nepal.

Born on a Minnesota farm in 1897, Francis N. Loesch studied Civil & Mechanical Engineering, worked for a time as a P.O. clerk, and began his studies as a Jesuit in 1922 at the age of 25.

Four years later (Sept., 1926) he arrived in India to begin a life of service to his fellowmen.

There is no need to make a list of his accomplishments. His friends are well aware of them already; those who never met him would

never understand their real meaning.

Condolences have come from many quarters: from Dev. Kanta Barooah (Governor of Bihar), Jai-prakash Narain, and Cardinal Gracias in Bombay. As well, masons and carpenters who knew him have been seen to shed tears.

But what of St. Xavier's? This was his home until 1944. He built it and dreamt of its future. He could tell you the cost of the wood

in the doors and in which shop he bought the cement. But far more, he knew the woes and heartaches of hundreds who came to him for a bit of the joy and hope he possessed.

It may be hard for us to mourn a Xaverian who has been away from Patna for some time. But gratitude and love we do feel, and pride in the fact that a part of Fr. Loesch's spirit still lingers at St Xavier's. May he rest in peace.

Fr. Abraham Writes from Delhi

Printed below is the major part of a letter from Xavier's former vice-principal, Fr. Abraham Puthumana, S.J. Although the letter was read out during one of the assemblies, we would like to reprint part of it for the inspiration it contains. —Ed.)

My Dear Xaverians,

I enjoyed my stay at St Xavier's Patna, and I must say that I found my work there a really refreshing experience. For me the year was full of new ventures and activities. I was very glad to see your sense of responsibility and enthusiasm for the school shown through your studies, through your participation in the Student Council, School Houses, etc. You are really fortunate to be in the

school when basic changes are taking place in the educational setup there. It is rarely given to many to participate in history making changes in an established school. Yet this is your good fortune. I am sure you will accept the challenge and set high standards of excellence in gentlemanliness, academic and co-curricular activities, good relationship with the staff and the public. Your achievements in these areas will be a healthy challenge to the succeeding generations.

I am happy to have been a part of this experiment and from my experience of the past year I am sure you will keep up the good tradition you have inherited and will carry it to new heights.

I am sorry to take leave of all of you. But, then, this is life and is a part of our being available to others without regard to time or place.

May God bless all of you. Please remember me in your prayers.

Sincerely yours,

A. Puthumana, S.J.
St. Xavier's School
4, Raj Niwas Marg
Delhi-6

एक और सितारा

उस दुबले-पतले, हँसमुख नवयुवक पर तो नजर डालिये। वे हैं जेवियर-हॉल के हिन्दी अध्यापक, श्री सुधीर सेराफिम। बड़ी ही प्रखर बुद्धि है इनकी। पिछले १८ महीनों से ये यहाँ अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। लेकिन अध्यापन-कार्य से कुछ समय निकाल कर इन्होंने हारमोनियम बजाना और टाइप करना भी सीख लिया है। इतना ही नहीं, इन्होंने हवाई जहाज चलाने में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रखा है। निस्संदेह इनमें सीख सकने की बहुत क्षमता है। श्री सुधीर एन० सी० सी० में बहुत उत्सुक हैं। तीन वर्ष तक ये एन०सी०सी० में एक नायक के पद पर रह चुके हैं और चाहते हैं कि अधिक से अधिक विद्यार्थी विद्यालय के एन०सी० सी० संगठन में भाग लें। इसके लिये ये विद्यार्थियों से अधिकतम सहयोग को आशा करते हैं। खेल-कूद के क्षेत्र में भी ये पीछे नहीं हैं। इनका प्रिय खेल है क्रिकेट और ये एक अच्छे बल्लेबाज के रूप में प्रसिद्ध हैं। मैं सन्त जेवियर्स के छात्रों की ओर से इनका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

एंटोनी कन्डाथिल XI

शिविर की कुछ यादें

(पृष्ठ ४ से आगे)

को हीन समझकर अलग रहने लगे थे। यह बात हमारे कई साथियों ने भी देखा। अन्त में, हमलोग आपस में सलाह कर एक दिन उठे और उनसे हिन्दी में बातचीत की। हमारा आपस में परिचय हुआ और फिर मैंने देखा कि हमारे बीच का वह द्वेष-भाव सदा के लिये मिट गया। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। उस दिन मुझे पता चल गया कि सब को बराबर समझने में क्या सुख होता है।

Winterspring Essay Contest

DATE : Friday, February 11, 1972
TIME : 9:45 — 11:15 a m
PLACE : St Xavier's hall and classrooms
WHO : Standards 5-11

—Here's how it will work—

During the first 3 class periods on Friday, Stds 5, 6, 7, & 8 will write on the following topic : HOW I CAN BEST SERVE MY SCHOOL IN 1972. They may think about the topic between now and Friday but they are to bring no notes or material with them to school on the day the essay is written. They are not to ask anyone's help. Ideas and expression are to be their own.

The essay may be written in either Hindi or English.

Stds 5 & 6 will be graded separately from Stds 7 & 8.

There will be TWO first prizes for each group—one for Hindi and one for English.

What about the SENIOR SCHOOL? Stds 9, 10 & 11 will compete together. However, their topic will remain a secret until the contest actually begins! They may also write in either Hindi or English.

The best pieces will be printed in future issues of *Xavier Life*.

SHARE IN THE FABULOUS PRIZES! FRIDAY, FEB. 11.



Xavier Life



Vol. 21, No. 2

ST XAVIER'S PATNA

March 25, 1972

Arun Kumar to Head Student Council

Democracy had its day on February 22. At 11 a. m. Standards 7-11 met in the hall and went about choosing who would represent them on the Student Council for 1972. Candidates crowded the stage, and the outgoing president, Dilip Srivastava, acted as chairman for the elections.

4-Sided Debate Planned

On March 26 St Michael's will give host to an inter-school debate competition. St Xavier's will enter an affirmative and negative team and be among the four participating schools. The other schools will be St Joseph Convent and Notre Dame Academy.

In all, six boys will represent Xavier—three affirmative and three negative speakers. The topic will be "Social Service should be made compulsory at high school level."

As senior debating coach, Fr Cleary is organizing his talent and eagerly looking forward to the task. He has much confidence in their ability and will not settle for a mediocre show. It should be an exciting debate.

After the whole procedure was explained, each candidate was allowed to stand up and speak his case. Most of them chose to be brief and were reluctant to make "rash promises."

After the speeches were over,
(Contd. on page 3)

At the Stroke of Nine

A contest open to St Xavier's boys, although not sponsored by the school, will be held here on Sunday, March 26. The Roteract Club of Patna, along with Camelin Products, is holding a painting competition from 9 a. m. to 12:00 to which all the high schools in Patna will be invited. The prize distribution will be on the following day here at the Xavier campus.

Mini-Munich at Xavier

The shamiana collapsed six times, the wind blew mightily, and spectators baked under the scorching sun. Nevertheless, by the evening of 18th March, all agreed that sports Day had been a huge success. A look at the scoreboard was enough to give anybody an indication of the keen competition that was on. And when the Panthers did win ultimately, it was with a bare margin of ten points over the Tigers. At the end of the day, the Panthers led with 154 points, the Tigers were very close behind with 144 points, the Leopards were third with 128 points, and the Lions fourth with 105.

A further proof of the keen competition of Sports Day is the fact that the individual championships were also very closely fought. Only at the very end was it evident that the four individual champions were Shashank Shekhar (Seniors), Shahidur Rah-



Mr. A. P. Shrivastava

man (Inters), Ejaz Maqbool (Juniors), and Anoop Kumar (Sub-Juniors).

Our Chief guest this year was Shri A.P. Srivastava, Director of Secondary Education, Bihar. His presence and the few words he gave us before distributing the prizes were most encouraging. Apart from Mr. Srivastava, many others have commented on the surprising smoothness with

(Contd. on page 7)

Winterspring Fallout

When we first decided to run an essay contest, we had no idea what to expect. *Winterspring* was a new venture and we held our breath. Overall the response was not bad. Our greatest encouragement came from Fr. Scaria's office. Thanks to his scheduling, a one-and-a-half hour period was set aside on Feb 11 and the boys from Stds 5-11 were all able to participate.

Some people asked why *Xavier Life* was sponsoring an essay contest. Several reasons could be given. For one thing, practically any contest has an appeal to it. Boys like to compete with one another and especially when there are prizes at stake. Another reason is that we are on the lookout for good writers. A contest like this helps to bring promising writers to the surface (where we can see them), and it also gives them confidence in their own ability.

Since it was a bilingual contest and the choice of language was fully up to each boy, we were also interested in that aspect. As it turned out, 159 wrote in Hindi and 155 wrote in English. How's that for balance?

The topic given to the senior school was "The two or three school subjects (or activities) which will help me most in my future career." Judging from remarks heard afterwards, it was not the most popular of topics, but it did produce several fine essays.

Elsewhere in this issue we are printing the names of the winners and also a sample of how some Xaverians "intend to serve their school in 1972."

(FALLOUT: The often radioactive particles resulting from a nuclear explosion and descending through the atmosphere; aftermath; results.)

Cupid Strikes Down the Chute Again

The biologists noticed how Mr. P.S. Thakur looked a little distracted near the end of last month. Then everything was quickly explained as the large, artistic wedding invitations began to circulate. On the second of March, Mr. Thakur journeyed to Arhora (Dist. Bhagalpur) for the biggest event in his life—his marriage to Miss Mina Mishra. It is a joyous occasion. We wish them a future of great happiness and love together.

Looking for some young paratroopers? You can find them in basic training on the boys' playground. Thanks to a very thoughtful donation by Mr. Basant Narain Sinha, a juniors liding board has been set up and painted in bright green and red. The Std I troopers need no special instructions in how it operates. They come zooming down forwards and backwards (a little slower backwards) and make all the older boys green with envy.



"काबुलीवाला" और "झूला" के बाद एक रंगीन चलचित्र, "तीन बहुरानियाँ" छात्रों तथा अभिभावकों के लिये एक नया आकर्षण रहा। "काबुलीवाला" एक ऐसे काबुलीवाले के विषय में थी जो व्यापार के सिलसिले में कलकत्ता आता है तो एक छोटी-सी बच्ची को अपनी बेटी का रूप मानने लगता है। दोनों में परस्पर स्नेह का चित्रण इसमें किया गया है। चलचित्र को बच्चों ने विशेष पसन्द किया। दूसरा चलचित्र साधारण चलचित्रों की तरह ही सामाजिक तनावों पर आधारित था, अतः छात्रों के चेहरों पर देखी गई असंतोष की झलकें आश्चर्यजनक नहीं लगीं। "तीन बहुरानियाँ" के रंगीन होने के साथ-साथ हास्य-प्रधान होने के कारण "काबुलीवाला" की तरह इसे भी दर्शकों ने पसन्द किया। पहले दो चलचित्र पुराने थे अतः उनकी 'स्क्रीनिंग' उतनी संतोषप्रद नहीं रही जितनी कि "तीन बहुरानियाँ" की। इसके बावजूद भी दर्शकों की संख्या बढ़ती देखी गई। इसका कारण संभवतः यह है कि 'सिने-फोरम' अब पहले से कहीं ज्यादा सुगठित हो गया है। रंगीन चलचित्र का विद्यालय प्रदर्शन इसका पहला एवं महत्वपूर्ण सबूत है।

—अभय शंकर (XI)

काद में विवाद नहीं Captain, My Captain!

काद-विवाद परिषद् की स्थापना काद में खेलों के विकास के लक्ष्य से की गई है। संयोजक काद-विवाद को इससे बहुत लाभान्वित है तथा वे चाहते हैं कि अधिक से अधिक छात्र इससे लाभान्वित हों। परिषद् के अध्यक्ष हैं सुवीर (XI) और सचिव प्रभात सिंह (X)। परिषद् के दो विभाग रिये गये हैं, काद के आधार पर। इनके भी दो-दो वर्ग हैं—उच्च वर्ग तथा निम्नवर्ग। रिये के उच्च तथा निम्नवर्ग के अध्यक्ष क्रमशः प्रदीप मिश्र (X) तथा सोनाम मिश्र (VIA) हैं और सचिव क्रमशः अमर सिन्हा (X) तथा निताराम शरण (VIA) हैं। काद के उच्च तथा निम्नवर्ग के अध्यक्षों का स्थान क्रमशः संजय शरण (X) तथा चन्द्र किशोर मिश्र (VII) ने लिया है तथा सचिव का स्थान क्रमशः अरुण कुमार (X) तथा सुवन सिन्हा (VII) ने। काद के बैठक में संयोजक ने परिषद् की योजना तथा महत्ता पर प्रकाश डाला। अब तक कुछ प्रतियोगिताएँ हो चुकी हैं अब देखें इन्टर-स्कूल प्रतियोगिता में अपने विद्यालय का क्या स्थान रहता है।

—प्रदीप मिश्र (X)

Attention Swimmers!

Swims begin in the first week of April. Apply in writing to the V. P. for permission. Remember, no swims for those without proper swimming outfit.

After all the reshuffling and horse-trading that went on among the "big four" last month, they got down to the serious business of electing captains. No one doubts the importance of the captains in bringing success to the team. So by the end of the year we should be able to see how good the following choices were:

LEOPARDS:

Chandrika Rai (Capt.)
Ravindra Puri (Vice-Capt.)

LIONS:

Amar Sinha (Capt.)
Pradip Bahri (Vice-Capt.)

PANTHERS:

Shashank Shekhar (Capt.)
Ashok Saraf (Vice-Capt.)

TIGERS:

Joydeep Gupta (Capt.)
Niraj Sinha (Vice-Capt.)

इलेक्ट्रॉनिक्स क्लब

सेन्ट जेवियर्स के भावी तकनीकियों को रेडियो और टेलिविजन बनाने के विषय में पढ़ाने के लिये 'इलेक्ट्रॉनिक्स क्लब' एक वरदान साबित होगा। खुशी तो इस बात की है कि सेन्ट माइकेल्स के एक अनुभवी फिजिक्स-अध्यापक, श्री राबिन फ्रांसिस को इस क्लब का प्रशिक्षक नियुक्त किया गया है। क्लब के लिये ३०० रुपये के सामान अभी से खरीदे जा चुके हैं। 'मॉडरेटर' फा० स्कारिया कुछ और यंत्र आदि खरीदने की आशा करते हैं जिससे कि सदस्यों को प्रायोगिक कार्य करने में सुविधा हो। फा० स्कारिया का कहना है कि सभा में भाग लेने वाला प्रत्येक छात्र इसका सदस्य है।



Organiser on the move :
Fr. D. Gomez, S.J.

Elections....

(Contd from page 1)

ballots were distributed to all the boys, and one by one they made their choices. The voting came off with great speed and efficiency. Since it was then lunch time, the meeting was adjourned and the ballot box was sealed.

After lunch the counting took place in the presence of Fr. Scaria, Fr. D'Mello, the outgoing SC president, and any others interested in watching the count-down.

The final tally looked like this : Arun Kumar—President; Vineet Singh—Secretary; Niraj Sinha—Vice-President; and Saurabh Das—Asst. Secretary. Four Xaverians who will have plenty to think about and do in '72!

‘क्लिक’

अपनी बैठक १२:२५ में बुलाने के निरर्थक प्रयत्न के बाद अब “कैमरा क्लब” ने एक नया समय चुन लिया है—३:३५। पहली कुछेक बैठकों में विभिन्न तरह के कैमरों का प्रयोग सिखाया गया। अच्छी तस्वीरें उतारना निस्संदेह एक कला है और ‘कलाकार’ बनने के लिये पहला कदम है कैमरे में फिल्म भर कर ‘क्लिक’ करते जाना। कई सदस्यों ने ‘कलाकार’ बनना शुरू भी कर दिया है और ‘डार्करूम’ में अपनी फिल्मों की पॉजिटिव बनाना भी।

अप्रैल के अन्त तक एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी भी की जाएगी। एक सदस्य अनेक फोटोग्राफ दे सकता है वशर्ते वे पोस्टकार्ड-साइज के हों। अनुभवी लोग पुरस्कार भी देंगे। हो सकता है ‘जेवियर-लाइफ’ उनके फोटोग्राफ प्रकाशित भी करे!

—अरविन्द अजितसारिया (X)

Xavier Life

Editor
SUBIR SEN

Asstt. Editors
ABHAY SHANKER
ARUN KUMAR
DILIP SRIVASTAVA
JYOTIRMOY C.

Photography
A. AJITSARIA

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editor of Xavier Life, St Xavier's, Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjivan Press, Patna-11.

Cricket Season Ends (So does luck)

Luck ran out on the Cricket XI (Feb. 19) as they ran into Patna Collegiate on the Gandhi Maidan. A large number of Xaverians came for the match and were disappointed to see the home team succumb by 63 runs to 40. The fielding was very poor, and the condition of the maidan with its many “gopher” holes did not make it any easier. Our bowlers Gautam Chatterji and Ajay Singh, captured 5 and 4 wickets respectively. The only noteworthy batting performance was the 15 runs produced by Ajay Singh. Cricket is making a comeback at Xavier. This season has shown that we have boys with talent and interest. Much more practice and coaching, though, are needed.

Fr. Philip Poovattil S.J.

“Analyse a fact, do not simply memorise...Read, understand, think and then do...Follow your own principles in life and always fight difficult circumstances”—these golden words have been the basis of Fr. Poovattil's well-disciplined life and he seeks to convey them to his students.

Father was formerly Headmaster at K.R. High School in Bettiah. He joined our faculty in January and is teaching mainly biology and English. He puts demands on us, but he is himself a hard worker. Already he has plans to make St Xavier's self-sufficient in lab specimens by setting up a botanical garden on the campus.

One of Father's former students Mr. Osta, has remarked: “If you are really interested in your subject, Fr Poovattil is perhaps the best friend and guide you could have.” As the weeks pass, the boys are finding that to be true.

Niraj Sinha

Winterspring Contest Winners

On February 23 the names of the following boys were announced as winners in XL's first Winterspring Essay Contest:

Hindi Section

Stds 9-11: Arun Kumar (1st) and Chandrika Rai (2nd); *Stds 7-8*: Bhuwan Sinha (1st) and Yashovardhan Sinha (2nd); *Stds 5-6*: Sanjay Sankrityan (1st) and Varun Prashant K.K. (2nd); and *Honourable Mention*: Pradip Mishra, Abhay Shankar, Nikhil Rohatgi, Bajendrapal Singh, Udai Kumar Singh, Sunil Kayan, and Bimal K. Singh.

English Section

Stds 9-11: Jyotirmoy Chatterji (1st) and Sanjay Choudhary (2nd);

Std. 7-8: Sourendu Gupta (1st) and Neelanjan Roy (2nd); *Stds 5-6*: Vineet Gupta (1st), Pravir Krishna (2nd); and *Honourable Mention*: Chandra Shela Sharan, Narendra Singh, Chandra Kishore Mishra, Keshav Sinha, Rajesh Singh, Anil Sinha, and Sanjeev Bansal.

XL is very grateful to the members who acted as judges in the contest.

The prizes awarded in addition to the handsome certificates are as follows: *1st place Seniors*: A year subscription either to N or Himmat; *1st Place Intermediate*: A one-year subscription to N; *1st Place Juniors*: a one-year subscription to Parag. 2nd winners are entitled to Rs. 10 in books which they themselves may select.

कुछ अंश सर्वश्रेष्ठों के

■ मेरी अभिलाषा

हमें खेद है जगह के अभाव के कारण हम हुन्कार-विजेताओं के पूरे निबंधों को प्रकाशित करने में असमर्थ हैं। कुछ निबंधों के कुछ अंश आपके सामने हैं। आइए हम रसास्वादन करें।

सम्पादक

■ डाक्टर या नेता

इस सोचने के बाद मैंने अपने जीवन का उच्च डाक्टर बनना चुना। इसी कारण मैं उच्च शिक्षण त्याग कर मैं जीव-विज्ञान चुना हूँ। मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई में जीव-विज्ञान ही एक ऐसा विषय है जो कि मुझे अपने भविष्य के लिए सबसे सहायक होगा। जीव-विज्ञान पढ़कर ही मैं डाक्टर बन सकूँगा और शीन-मुखियों तथा मरीजों की सेवा कर सकूँगा।

आपका उत्तर था:

विज्ञान की तरफ से हैं कि वे अच्छा छात्र होने में सफल रहें और लोगों को प्रभावित करें किन्तु वे सफल नहीं हो सकते हैं। तो हम? हमको तो इस विद्यालय में जहाँ ज्ञान मिल रहा है स्वयं को इस ज्ञान में प्रवीण बनाने का। क्यों न हम इस ज्ञान का लाभ उठावें?

इस जीव-विज्ञान और "वाद-विवाद" वाले दो चीजें मुझे ऐसी प्रतीत होती हैं जो मेरे जीवन में मुझे सर्वाधिक सहायता देती।

अरुण कुमार

■ भगवते देशायच

जगत् में विवेकशीलता पाई जाती है। प्रकृति के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। प्रकृति की प्रकृति उसी समय कहलाता है प्रकृति के प्रकृति का निर्माण होता है। प्रकृति का निर्माण बहुत तरहों से होता

है। किन्तु खास कर व्यक्तित्व हमारे स्कूल में ही बनता है। क्योंकि स्कूल में ही हमें संयमी बनाया जाता है। अर्थात् स्कूल में ही हमें अनुशासन में रखा जाता है। अब हमें यह देखना है कि जो स्कूल हमारे लिए इतना काम करता है उस स्कूल के लिए हमें क्या करना चाहिए।

मुख्य रूप से हमें स्कूल के नियमों पर भी ध्यान देना चाहिए। हमें अपने

Lalit Kumar Agarwal

Standard 3B has lost a friend, the school has lost a promising Xaverian, and (most of all) the parents of Lalit Kumar Agarwal have lost a cherished son.

Lalit died February 24 at two in the afternoon. The cause was a rabies infection which could not be halted. Lalit was only eight years old. Still at home are two older brothers and a sister. We offer the whole family our deepest sympathy and our prayers. His shy yet friendly smile will be missed. May he rest in peace.

स्कूल की पोशाक पहन कर आना चाहिए। पोशाक को साफ रखना चाहिए। अपने शिक्षकों का माता-पिता की तरह आदर करना चाहिए। अपने दोस्तों से भाई-चारे का व्यवहार करना चाहिए।

मैं तो स्कूल के बच्चों में सिर्फ एक हूँ किन्तु मैं भी स्कूल का नाम कर सकता हूँ। किन्तु जिस तरह एक मछली सारे पानी को खराब कर देती है, हो सकता है मेरे खराब होने से दूसरे लड़कें भी खराब हो जायें। इसलिए सिर्फ हमें ही नहीं सभी लड़कों को संयमी बनना चाहिए।

संजय सांकृत्यान

जीवन के हर पल को संवारने में विद्यालय का कितना बड़ा हाथ है, यह हम सब अनुभव करते हैं। अतः सबसे पहला कार्य हम यह कर सकते हैं कि अपने विद्यालय के सभी कार्य में सहयोग दें। मैं जानता हूँ कि मेरी शक्ति सीमित है पर इस सीमा के अन्दर ही, मुझसे जितना बन पड़ेगा, मैं अपने विद्यालय के सभी कार्यों में आगे रहने की कोशिश करूँगा।

मैं यह भी चाहता हूँ कि मेरा आचरण अद्वितीय रहे। आचरण की दीवारों से ही तो व्यक्तित्व के महल का निर्माण होता है। दीवार पर ही तो व्यक्तित्व का महल टिकता है। और हर वर्ष के कार्यक्रमों पर ही तो आचरण की नींव टिकती है। अतः १९७२ का वर्ष मेरे जीवन में बड़ा महत्त्व रखता है। और इस वर्ष का एक-एक पल मुझे अपने आचरण के निखार में लगाना है। आचरण निखरता जाएगा, तो स्कूल की मर्यादा पर कभी आँच न आएगी। स्कूल की मर्यादा ही मेरी मर्यादा है, यह मैं कभी नहीं भूल सकता।

सच्चा विद्यार्थी अपना तन, मन, धन सब कुछ अपने विद्यालय पर वार देता है। अपने विद्यालय के लिए किसी भी तरह का होम करने में उसे हिचक नहीं होती। उसे न तो माँ की ममता खींचती है, न पिता का स्नेह। वह दिन-रात अपने विद्यालय की प्रगति के बारे में सोचता रहता है। मैं अपनी अभिलाषा इन पंक्तियों में व्यक्त करना चाहूँगा।

मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक
जिस पथ पर खड़ा भव्य है,
मेरा अनुपम विद्यालय एक।।

वास्तव में जो अपने विद्यालय से प्यार नहीं करता, वह अन्य किसी वस्तु से प्यार नहीं कर सकता। मेरा लक्ष्य अपने स्कूल को एक सम्पूर्ण स्कूल बनाना है और कुछ नहीं। विद्यालय की भलाई ही मेरे लिए सबसे करणीय होगी।

भुवन सिन्हा

Staff Medic

Ever since Br. Francis joined the Xavier staff, the boys' cuts and wounds seem to be healing faster. As the school's new infirmarian, he has a big job keeping 800 boys bandaged and painted. But he prepared well for his work having studied at XTII from 1964-1968 and after that at Holy Family Hospital for three years in nursing.

He goes about his work professionally and keeps the infirmary looking neat as a pin. He is affable and easy to talk to, and besides all the bottles of pills on his shelves, he offers a cure that never fails—a broad and warm smile. Asked about his hobbies, he would not name any in particular since, as he says, "I'm interested in almost everything on earth."

सांख्यिकी क्लब

पिछले वर्ष से हो रही एक लम्बी सांख्यिकी गणना का अब उपसंहार हो गया। 'स्टैटिस्टिक क्लब' के सदस्य सांख्यिकीय मानचित्र को पूरा कर चुके हैं और अन्य छात्रों के लिये इसे सूचना-पट्टिका के पास लगा दिया गया है। इस योजना के प्रभारी हैं फा० स्कारिया। यद्यपि इस मानचित्र पर कई आलोचनाएँ सुनने को मिली हैं, परन्तु फिर भी, ऐसी अनोखी चीज पर "स्टैटिस्टिक क्लब" को तो क्या, सारे विद्यालय को गर्व है।

—संजय शरण (X)

रेड-क्रॉस

इस वर्ष 'रेड क्रॉस' के सभापति तथा सचिव के लिये पहली व मतदान हुआ। दसवीं कक्षा के छात्र, प्रभात सिंह और अरुण कुमार को क्रमशः सभापति तथा सचिव चुना गया। पहली सभा में ही 'क्रॉस' ने अपने आगामी कार्यक्रम स्पष्ट किया—शहर में दूध का वितरण पहले की तरह ही अब इसके सदस्यों को नियमित रूप से प्राथमिक चिकित्सा के लिये प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके अलावा प्रत्येक सदस्य को एक "बैज" देने का निर्णय लिया है।

एफ-ए-सी

विद्यालय के चित्रकारों की क्षमता को आंकने के लिए 'फाइन आर्ट्स क्लब' ने प्रत्येक शनिवार को एक साप्ताहिक प्रतियोगिता का आयोजन किया है। कलाकृतियों को उनके प्रदर्शन के लिये क्लब के 'बोर्ड' पर लगा दिया जायेगा। सदस्यों को चित्रकारी में विशेष प्रशिक्षण देने के लिये, पटना के कुछ इने-गिने चित्रकारों को आमंत्रित किया जायेगा। क्लब की विभिन्न आगामी गतिविधियाँ नये रंग लायेंगी। आशा है इसकी सारी योजनाएँ सफल होंगी।

सोरेन्दु गुप्त (VIII)

Sadder But Wiser

The secretariate bell gonged at nine and just 15 minutes after it, I heard the dreaded bell of the school signalling for assembly. I did not want to stand, so I made out a plea of a shoe sore and went into my classroom from where I could peep through the window.

Suddenly, 'Sawdhan' came into my ears and it sounded like thunder. The next words were 'Samne Salute'. The sky resounded with the collective voice of 'Jai Hind'.

'Good morning, boys' came a soft voice which could not have been heard without the mike. I was filled with respect for this soft-voiced gentleman and spontaneously responded with my 'good morning' to him. But my greeting was washed away by the 'Good morning!' of the parading boys. The next command was for the prayer. 'Mere Bhagwan...' I was also saying this to myself. And then suddenly, I started feeling guilty for not joining the assembly.

I promised God that I would not miss the prayer again. I was reflecting on this when a bell disturbed my thoughts. 'I will remind you again.....' was followed by the Do's and Do-nots of the boys from the V.P. I also felt as if the V.P. were saying, "I will miss the assembly again." Friends came marching in to school and were surprised to see me idle in class. I felt ashamed of myself.

But I prepared myself for the next 9:15 a.m. This is very important since it is the beginning of a fruitful school. And if you are a man, you know the value of a good start. As they say, "The best time to begin is half done!" So I must reach school at 9:15 sharp and have really done half of my work.

But remember, this 9:15 is not 7:15 on the 27th and you must correct your watches accordingly!

Pravir Krishna

Hard hit but cheerful

Some people say you never know what a boy is really like till he gets sick.

An example of this may be Ashok Mitra (Std 8) who suddenly lost his eyesight on February 16.

Since then his eyes have been bandaged, he has undergone an operation, and he has been constantly on his back in the hospital. But everytime his friends go to visit him he's the same Ashok, lively and talkative and very much interested in what's happening at school. It's really amazing. His classmate, Sourendu Gupta, reports that he is cheerful and always cracking jokes. If he has a complaint, it's only this: that most of his classmates don't come to visit him. He loves to talk and get the latest news.

Much... (Contd. from p. 1)

which every event was conducted. No doubt last year's experience and good organising on the part of Fr. Gomez and Mr. Sebastian account for this fact.

On the thirteenth of March, the primaries had their Sports Day. In this section, the Tigers captured the track championship with 116 points to their credit. The Panthers, Leopards and Lions followed with 86, 65 and 48 points respectively. The individual champions of the primary section were Nirmal Lakra and Deepak Kumar. One novel feature of the Junior Sports was that instead of inviting one chief guest, we had five parents witnessing the event give away the prizes.

Partly because of the inclement weather and partly because there was so little time devoted to practicing the performance on Sports Day this year, though very good, was not exceptional. But to judge from the splendid co-operation and discipline that all Xaverians exhibited on (and during the week preceding) Sports Day, there is no doubt that this event has set the pace for a year full of many fruitful activities.

Out to Lunch

This must be the season for picnics. Right and left, small groups or classes are heading for the open road. Guided by Fr. Gomez, the boys of Std 8 took off for Maner on February 25. They had breakfast at the Dak Bungalow, then toured around the lake and historic tomb. Their next stop was Koilwar. They were going to have lunch on the sandy shore but, according to Ravi Kumar Sinha, "The wind spoiled our programme and we ended up under a tree." The next day Std. 7 was off with the same guide and their destination was Kumrahar, where besides eating, they also got in a lot of kabaddi and cricket practice.

Not to be left behind, some twenty Leopards, guided by Mr. Trivedi, went to Rajgir on March 12.

चाँदनी रात के डाकू

जाड़े की वह रात बड़ी भयानक थी। पूनम का रहस्यमय चाँद अपनी चाँदनी को बिखेर रहा था। भरे घर के निकट बाँस का जो छोटा-सा जंगल है न, वह चाँदनी रात में और भी मनोरम लग रहा था। रात ढल रही थी और मैं चुपचाप दरवाजा बन्द करके खिड़की की तरफ मुँह किये चाँदनी का नजारा ले रहा था। बहुत थक गया था, अब मुझे नींद भी आने लगी थी। मैं चुपचाप रजाई में सिमट गया। बहुत देर तक प्रकृति की सुन्दरता, मानव-जीवन की क्षणभंगुरता और न जाने क्या-क्या सोचता रहा। आँखें नींद से बोझिल हो गई थीं। मैंने करबट ली और रजाई में और भी सिमट गया। जाने कब मुझे नींद आ गई।

अचानक मुझे किसी के 'फायर' करने की आवाज सुनाई पड़ी। लगातार तीन घमाके, अँधेरे के सन्नाटे को वेधते हुए लुप्त हो गये। कुछ देर तक बाहर कोई चलता रहा और फिर मुझे लगा जैसे कोई मेरे दरवाजे पर दस्तक दे रहा हो। मैंने सोचा मेरा 'जूली' कुत्ता आया होगा। मैं उसे बिस्तर पर से ही डांटने लगा। पर उधर दस्तक कम होने का नाम ही नहीं लेती थी। मुझे



पाठनीय

महोदय,

हमलोग जानना चाहते हैं कि प्रस्तावित एन० सी० सी० शाखा, जो इस विद्यालय में खुलने वाली थी, उसका क्या हुआ? हमलोग अपना नाम बहुत पहले दे चुके हैं परन्तु अब तक उस सम्बन्ध में कोई जानकारी हमें प्राप्त नहीं हो सकी।

आपका विश्वास्य

जगदीप सिंह (IX)

राजकुमार भवनानी (IX)

फा० प्रिंसिपल ने हमें सूचित किया है कि औपचारिक रूप से यह शाखा खोलने के पहले हमलोग शिक्षा विभाग द्वारा इसकी स्वीकृति चाहते हैं। विभिन्न कारणों से हमलोगों का आग्रह अभी भी विभाग में विचाराधीन है। यदि पर्याप्त लड़के चाहें तो एन० सी० सी० के कुछ विभाग अभी भी खोले जा सकते हैं। लेकिन यह पूर्ण रूप से व्यक्तिगत होगा तथा प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षित अधिकारी हमलोग प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

—सम्पादक

बड़ा गुस्सा आया। उठकर मैंने जोर से दरवाजा खोल दिया। तेज हवा के झोंके ने मुझे वापस अन्दर ढकेल दिया। भूत-जैसी चार आकृतियाँ अन्दर घुस आईं और दरवाजा बन्द कर दिया। मुझे अँधेरे में कुछ नजर नहीं पड़ रहा था। बत्ती जलाने के लिये मैंने हाथ बढ़ाया तो किसी के फौलादी हाथों ने मुझे रोक दिया। सर से पैर तक मैं पसीने से नहा उठा। उस हाथ ने मेरे दोनों हाथों को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

Musical Chairs

On the Sports Day programme, there were two official Musical Chairs, one for the guests and the other for the staff. But another game of Musical Chairs that seemed to be on at the Announcing Bureau was noticed by some. In the course of about three hours, St. Xavier's was fortunate enough to have four announcers. In this context, special thanks are due to Fr. Gonsalves and Fr. Starr (who, incidentally, was the gentleman in the black hat whom many of you mistook for a re-incarnation of wild Bill Hickock).

डाकू... (पृ० ७ से आगे)

पीछे बाँध दिया। इतने में एक दूसरी आकृति मेरी ओर बढ़ी। उसके नजदीक आने पर मैंने देखा कि उसके हाथ में एक लम्बा-सा चाकू चमक रहा था। उसने तेजी से मुझे चाकू से मारा और मैं भय से चीख उठा अपनी आँखें बन्द कर के। जब आँखें खोली तो कुछ नहीं था, बस दूर कहीं क्षितिज पर सूर्योदय हो रहा था। मैं हंस पड़ा उस विचित्र सपने की याद करके।

—राजनंदन प्रसाद, VIB

Dates to Remember

March 27 :

Morning school begins
(7:15—12:10 p.m.)

April 12 :

Parents-meet-Teachers Night
for Std. I-IV
(6—7:30 p.m.)

April 13 :

Parents-meet-Teachers Night
for Std. V-XI
(6—7:30 p.m.)

Jubilant winners of 4x100 metres relay race crowd the victory stand March 18. Leopards are on top, Tigers are No. 2, and the Lions in 3rd. Place.



Take me to the Staff Room

The other day a little boy came up to me and said : "Sir told me to meet him in the staff room. Can you show me where it is?" I was delighted to help him—especially since we were standing only five steps away from the new floor-plan of the school. (In the old days a lot of shoe leather was used up on such inquiries!) Nowadays instead of walking we just point to the beautiful plan framed on the wall in green, maroon, yellow, red, and many other colours.

"Just go up this centre flight of stairs, turn right and go down the yellow corridor till you hit the green patch marked number 22 and you're there." So far the chart has not led anyone into the wrong room. That does not come as a big surprise, since the man who designed it was none other than Fr. Scaria himself. We can be sure that if anyone knows where things are, he does.

But like everything in life there is one drawback. Although mounted low on the wall, it's still higher

than most of the boys who pick it, meaning from Stds 1-4. Now the Student Council could be a step-leader and chain it underneath the frame!

Anil Pathak

Man Behind the Bar

Recently Mr. Sebastian picked up a helper. The cassock and easy smile you see at the cashier's office every afternoon belongs to Br. Devasia. Br. is majoring in Commerce at St. Xavier's University. His side-work at St. Xavier's brings him into contact with practically every boy in the school once a month.

Before long he hopes to know all of us by name. He says he wants to learn *your* name rather than the other boys' names. Don't pay your bills on time, a sure way of getting to know Brother well!

Pravin Srivastava



Seniors Take Over Helm

April 19th was declared Students' Day at Xavier, and, as observers can tell you, it was *not* a day like any other day.

The idea for a Students' Day seems to have first arisen in a Student Council meeting. There it was argued that such a day would give the senior students an idea of what it means to staff an institution of 800 boys and to survive the thousand and one problems and laughs which comprise a day at Xavier.

Once Fr. Scaria had given the green light, the Council formed a five-member planning committee consisting of Arun Kumar, Vineet Singh, Narendra Singh, Subir Sen, and Ravindra Puri.

The committee's task was first to fix a date (April 19), and then determine which students would be able (and willing) to act as counsellors for each member of the staff. Once this list was prepared, the substitute staff was called for a meeting and was carefully briefed on the meaning of the day and what was expected from them. Theoretically, there was to be no interruption in studies. Student teachers were to find out from the

(Contd. on page 5)

'Lawn Party' Runs For Two Nights

Judging from the chairs scattered around the yard on April 12, it looked like somebody was planning a lawn party. By six o'clock these chairs were filled with some of the 300 parents and guardians of the junior school boys who had come to meet with the teachers and discuss how much progress had been made since January. Student Council volunteers directed the guests to the various teachers and distributed forms which gave the parents a chance to express their opinions on different aspects of school life. On April 13, a similar routine was followed when guardians of senior school boys arrived. It was not as big a crowd, however, as on the previous evening.

Inside

- Closing the Books, P. 2
- How about a movie, P. 3
- Students' Day Roundup, P. 4
- Finest handball, P. 7

Xavier Life



Vol. 21, No. 3

ST XAVIER'S PATNA

May 3, 1972

Debaters Fight Gamely In First Skirmish

An inter-school English debate between St Joseph's, Notre Dame, St Xavier's, and the host school was held on March 26 at St Michael's.

The Xavier teams, coached by Fr. Kevin Cleary, S. J., consisted of Dilip Srivastava, Sanjay Sharan, and Prabhat Singh (affirmative), and Arun Kumar, Niraj Sinha, and Subir Sen (negative).

Each team was able to debate three different rounds so that by the end of the morning all opponents had been faced.

The excitement gradually increased as the results were announced on a portable blackboard after each round. At the start of the 4th round, St Xavier's and St Michael's were tied with an equal number of first-place wins. But the

last round was tougher than expected and we lost both the affirmative and negative arguments.

The scoreboard finally gave this report: St Michael's (4 wins-597 points), St Joseph's (4 wins-539 points), St Xavier's (3 wins-559 points), and N. D. A. (1 win-497 points). In aggregate points we fared well enough (2nd position), and were fortunate to have Subir Sen and Sanjay Sharan judged as two of the six "best speakers".

The St Michael's student Council and Fr. Murphy organized the morning well, so that the debates came off with great smoothness.

After the second round, an interval was declared and refreshments were served to all the participants in the hall upstairs. During those 20 minutes, at least, there were no losers.

Time to Close the Books

The present examinations mark the end of another term full of activities, studies, achievements, and...occasional disappointments. Most of us are now huffing and puffing over our physics, social studies, and Sanskrit, and cursing examinations wholeheartedly. Of course, our teachers knowledgeably inform us that students who have studied regularly during the term have no need to burn the traditional mid-night oil. But most of us are unable to verify the truth of this saying because by the time we get down to serious study, the examination monster has already swooped down on us with a whoop of triumph.

But let us take our over-taxed minds off exams for a moment and look at what we have achieved during this past term. Many important activities have taken place. Some highlights might be: the resurrection of the Debating Society and Electronics Club, and the strengthening of other activities due to more experience and manpower. There was also the start of music classes for the younger boys which deserves considerable praise and support. Finally, the completion of such major events as Sports Day and Students' Day should leave more time for other affairs next term (not least, we hope, something in the dramatics line).

How much each of us has been "educated" by these activities is not easy to say. Ultimately each boy has to consider and answer this question himself. But one thing did come to the surface through these activities—the boys of St. Xavier's are capable of working together in the most splendid harmony and spirit of helpfulness if they want to do so.

Another thing that has happened this term is that the seniors have handed over most of their leadership responsibilities to the pre-seniors. The editors of *Xavier Life* are among the last to hand something over. We are glad to announce that next term *Xavier Life* will have a new set of editors, armed with fresh ideas and anxious to give you a paper you will enjoy reading. (You will find their names in the *Nutshell* column, which has gone and broken our "top security.") It is safe to say that your contributions—whether of news or features—will continue to be welcomed. They are the air without which XL could not breathe. Have a safe cool holiday!

जान खतरे में ?

महोदय,

कुछ दिन पहले हमारे विद्यालय के प्रवेश द्वार पर एक छोटी-सी दुर्घटना हो गई थी जो बहुत गम्भीर रूप धारण कर सकती थी। उस दिन प्रथम वर्ग के छात्र जोगेश छावड़ा अपने ड्राइवर साथ साइकिल पर सवार होकर विद्यालय आ रहे थे। विद्यालय प्रवेश करते समय साइकिल-चाल संतुलन खो बैठा और दोनों सव गिर पड़े। फलस्वरूप दूसरी दि से आती हुई मोटर एक झटके से रुक गई। जोगेश के सिर में एक हल्की सी टक्कर लग ही गई। मैं :



पाठनीय

"डिस्पेन्सरी" ले गया जहाँ प्राथमिक चिकित्सा के बाद उसे घर भेजा दिया गया।

इन दिनों प्रवेश-द्वार पर कई छोटी-मोटी दुर्घटनाएँ देखने आई हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है विद्यालय के आरंभ और अन्त होनेवाली लड़कों, मोटरगाड़ियों, रिक्शों तथा साइकिलों की भीड़ में अभी तक कोई गंभीर दुर्घटना नहीं हुई है। ओर पहले कि कोई ऐसी दुर्घटना इस बात की ओर विद्यालय संचालकों तथा छात्र-परिषद् का ध्यान आकर्षित करना चाहता और आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में उचित कदम उठाए जाएँगे।

अरविन्द अजितस

द्वितीय महायुद्ध के दौरान पीट काव्ज़र के नेतृत्व में कई व्यक्ति जर्मनी के ही कार्यरत हैं। एक महत्वपूर्ण व्यक्ति, बॉकर को नाज़ियों ने कैद कर लिया है। इससे पहले कि बॉकर दल के सदस्यों को बता सके, पीट उसे और अपने अन्य साथियों को जेल से छुड़ाने की योजना बनाता है। बिना किसी गोली चलाये, योजना सफल हो जाती है। अभिनय की दृष्टि से 'इन्स्टैंट रेड' अपूर्व थी और प्रभावशाली भी। जर्मन में बनी इस फिल्म का इतिअंकन अंग्रेजी में किया गया था। छोटे बच्चों को, संवाद पढ़ने में

How about a movie (or two)?

The upstarts and throwbacks who have been languishing for some English movies will be happy to hear that five famous 16 mm flicks are on the calendar for next term. Below is a sort of preview and an idea of their variety:

July 30 : THE DIRTY DOZEN.....The dramatic story of twelve convicts assigned a dangerous mission behind enemy lines prior to D-Day during World War II, starring Lee Marvin, Ernest Borgnine, and Clint Walker.

August 27: DAVID COPPERFIELD...Charles Dickens' famous classic needs no introduction. It will feature Freddie Bartholomew and Sir Lionel Barrymore.

September 24: HELICOPTER SPIES.....UNCLE agents Napoleon Solo and Illya Kuryakin will thrill you with helicopter adventures when they try to prevent the theft of a spacecraft. In the leading roles are Robert Vaughan and David McCallum.

October 29: TOBY TYLER...A change from spy adventures and war stories, this shows a runaway boy's laugh-loaded adventures



in the world of the circus, and stars Kervin Gioacoran and Henry Calvin.

November 19: KARATE KILLERS...The UNCLE agents return with another suspenseful and action-packed thriller.



कठिनाई हुई अतः वे उदासीन रहे, उच्च वर्ग इससे प्रभावित हुए किना नहीं रह सके।

दूसरी फिल्म 'दोस्ती' के लिए लोगों के बीच बहुत उत्सुकता देखी गई। एक अंधे तथा एक लूले, दो दोस्तों के अगाध प्रेम की कहानी ने सब को प्रभावित कर दिया। छोटे-बड़े सब के लिए यह बहुत संतोषजनक रहा। ध्वनि व स्क्रीनिंग ठीक होने के कारण यह अन्य फिल्मों से ज्यादा रोचक लगी। रंगीन न होने के नाते 'दोस्ती' का प्रभाव लोगों पर स्थानिक ही पड़ा। चलचित्र ने अपना कर्तव्य कर निभाया।

अभय शंकर (XI)

सह पाठियों में विवाद

अंग्रेजी विभाग के नये वाद-विवाद का विषय था : समाचार-पत्र पढ़ना समय का क्या दुरुपयोग है? इसका संचालन सातवीं कक्षा के दीप-कर सरकार ने किया : पक्ष के वक्ता, सौरेन्दु गुप्त (VIII), राकेश बहादुर (VII) तथा नीलाभ मिश्र (VI) तथा विपक्ष के प्रफुल्ल कुमार (VIII), सौमित्र सरकार (VI) तथा सुनील अग्रवाल (VI),— सब ने इतना जोरदार वक्तव्य दिया कि किसी भी पक्ष को विजयी घोषित करने में सभापति को कठिनाई हुई। फा० स्कारिया ने वक्ताओं को उनकी उपलब्धि पर अनेक बधाइयाँ दीं।

हिन्दी विभाग में, ६ अप्रैल को उच्च वर्ग की बैठक बुलाई गई। बैठक की सबसे नई बात यह थी कि सभी सदस्यों को थोड़ी-थोड़ी देर तक बोलने का अवसर दिया गया। विवाद का विषय था— "आज की सामाजिक अनुशासन हीनता का कारण:—चलचित्र।" प्रभावशाली तर्कों ने इस अवसर को बड़ा ही मनोरंजक बना दिया था। अन्ततः यह निर्णित नहीं ही हो पाया कि चलचित्र सामाजिक अनुशासन-हीनता का कारण है या नहीं।

CHANDRA SHEKHAR SHARAN (XI): When I walked into Std VII as an English teacher bounding with enthusiasm, I felt a trifle nervous. I asked the monitor to take the roll-call and after he had finished, I told them to take out their grammar books.

"Open to page 112," I said, "we're going to study....." Then I asked a boy in the front row to set the ball rolling by reading out the first sentence—which was wrong—and correcting it. So did the 2nd, 3rd, and 4th boys. And then everything changed. I felt a mature teacher all over. When I asked the 5th boy to continue the sequence my voice was confident and not at all nervous. I felt maybe I could be a teacher, and a brilliant one at that.

The boys were quiet and started to regard me as a real teacher, not just an amateur. In fact when I stayed in the staff room in the last period (because of a shattering headache), boys from Std VII came looking for me and reminded me, "It's your period, Sir." They were serious and meant it. I felt glad they respected me and told them why I couldn't come. In short, I not only enjoyed the day's experience, I benefitted from it, too.

SANDIP CHOUDHURI (X): I was the lab assistant. In the morning I went upstairs and started my job. That was to clean all three laboratories. First I had to wipe the tables and then the apparatus on which Std VII would have their practicals. After washing them, I kept them in the almira. Then I washed all the basins with soda. After this I had to water the flowers and feed the fishes!

AMARENDRA NARAYAN (X): I would like to be a teacher one day. I think we should repeat Students' Day next year because it gives us a chance to stand up and practice public speaking, and also develop other useful qualities.

On the day after "Students' Day" Xavier Life quizzed a number of the seniors who had had key roles to play. The question asked was: Would you comment frankly on your experience as "teacher for a day"? Here are some samples of what they had to say.

KRISHNA PRAKASH (X): On Students' Day I was not taking part as a teacher, but as Mukti. I had a good experience of Mukti's job in the school. For some people his job would not be easy. It is mainly fit for youngsters, because you have to be constantly going up and down the stairs. For old people it would be difficult, since normally they don't like to roam here and there all day long.

ASHOK MITRA (X): Being a teacher is not something very easy. It is, as I learned from yesterday's experience, a two-way game. The teacher should co-operate with the boys and vice versa to make a good class. Instead of being poker-faced, I tried to be frank and cheerful with the boys. In return, they paid attention to my teaching. I found, however, two boys to be very talkative. But I did not mind too much. After all, in every basket there are a few bad apples!

ABHAY SHANKAR (XI): What struck me most was the sense of discipline among the boys of Std VII and below (with the exception of 3B). Boys of Stds V and VII were very cooperative and ready to learn something, and they were not shy to place their problems before me and discuss them genuinely. I was told to teach Sanskrit in Stds 7 & 8. The discipline among the 7th Std boys and their spirit of cooperation made them appear quite promising as future seniors to me.

Students' Day Roundup

CHANDRIKA RAI (X): Little boys have only a short period in which they concentrate on studies. I told them many times to maintain silence but after a short spell they start talking again. I could just imagine the patience of the teachers with the small boys year after year while for me it was a little job of annoyance lasting only a day.

JAGDISH LALCHAND (XI): I was cashier for the day, and had the job of receiving payment for bills and giving receipts. Needless to say, there were many precautions since money was at stake. Some of the fellows who were paying late did not want to pay the "late fine". One was so eager to be exempted from the fine that at last I had to refer the matter to the Principal for a solution!

NIKESH PRASAD (X): Most of the boys were hard-working, but some of them all wanted to have their names corrected first and would run to the teacher's desk. Teaching of 4th and 5th certainly refreshed my memory of our younger days and about the things we did when we were their age.

RAVINDER BASSI (XI): My recent experience of being a teacher-for-a-day was very interesting and useful. It changed my whole attitude towards teaching. Up till now I had thought that teaching was a drab occupation. This experience opened my

GUTAM CHATTERJEE

XI : Just as I stepped into the Std X classroom as their teacher, the boys greeted me with "Good morning, Sir." This was the first time I had ever been treated as a teacher, so I got nervous and hastily contrived to return the greeting. After these preliminaries, I started giving them the lessons of Quadratic Equations and Geometric Progression. They were ready and willing to learn. When the bell rang indicating the period was over, all nervousness was gone and I was surprised to see they were enjoying their work and would have willingly studied more.

ARUN KUMAR (X)

As teacher-for-a-day, I would say that the whole thing was very interesting. It was an unique experience for me. All of us fulfilled our long-cherished desire to sit in the Staff Room with the (temporary) staff of a teacher. We tried our best to imitate the teachers, even in the manner of dress.

I was teaching the younger boys (Std I to IV) and out of five classes, I found four very cooperative. One particular class consisted of very inattentive students, to the extent that one of them gave out a shrill whistle when I played a popular film song on the harmonium. I took him to the VP where he got a stiff punishment and a Diary entry.

I found the boys attentive and ready to learn something from me. I managed to make the classes interesting, but came away feeling that the work of a teacher is really difficult.

ASHIS DAS GUPTA (X)

My job was PA (Personal Assistant) to the Principal. It had lots of variety. Sometimes I rang the bell; other times the Principal rang the bell summoning me to his office. I found the boys who came to the office to get chalk or meet with the Principal to be very cooperative. I would certainly vote for Students' Day again next year, for in that way we come to know how every person contributes to the smooth running of the school.

—Doomsday Dates—**MAY 18 (THURSDAY)**

Report Cards will be distributed to Stds I-XI between 8:00—10:00 am.

JULY 5 (WEDNESDAY)

Classes begin for II Term

SURYA BHATTACHARYA (X)

We were all eagerly waiting for the great day to come. I was very excited and could hardly sleep the previous night. I had been given the work of a sweeper. As I approached the campus, I could sense the unusual excitement among the boys. At first, some of them were amused and laughed at us sweepers. But we didn't mind. *Somebody* has to entertain the troops. We were first asked to clean a small plot under the tamarind tree. It took some time. Later, four of us cleaned out the swimming pool. And last of all we mopped up the classrooms after the boys had gone home. From my experience, I think the sweepers deserve much more respect and appreciation. I believe the job they do can be said to be a *social service* to us.

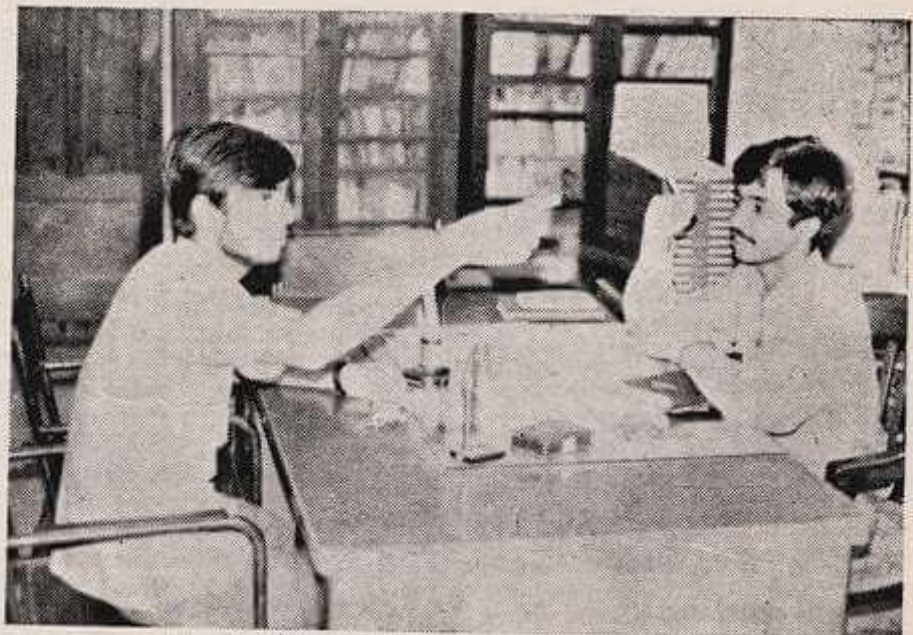
Seniors Take Over*Contd. from page 1*

regulars which books were needed, what pages they were currently on, etc.

Even though students small and big went about their assignments seriously, the "lighter" side kept shining through. The first such being after Principal Dilip Srivastava greeted the boys in the assembly and got for his reply a thunderous "Good Morning, Father!"

Many of the regular teachers came to the school as *visitors* and were intrigued to see how smoothly the routine was going. Mrs. Tandon drew some laughs when she approached the PA in hopes of getting a fictitious son admitted into Std. I. Ashis Das Gupta tactfully explained that the matter of admission would be handled the next day and that he would make an appointment for her to see the Principal.

Before the arrival of students' Day, some were predicting "a few broken pieces." On the following day, however, most of the staff felt that the broken pieces were very few and that, on a whole, Students' Day had succeeded well in achieving its purpose.



Unfamiliar faces at a familiar desk. Prabhat Singh points to the trophy case and gives "Principal" Dillip Srivastava something to ponder over on Student's Day. Pity his words weren't recorded!

A Trip To The Doctor

(An apple a day is not enough)

Messrs. Ringworm, Hookworm, Sinus, Dandruff and a few other characters must have quailed recently when Fr. Principal announced in the assembly: "Dr. Madan Prasad has been kind enough to put his services at our disposal for a thorough medical checkup of all the boys, beginning with the senior-most class."

Very few of us had any notion of what a medical checkup meant; thus until the first guinea pigs had made it through the infirmary, all kinds of theories were being propounded.

I awaited my turn apprehensively, mopping my brow from time to time, as Br. Francis alphabetically summoned the boys from our class.

Eventually, my number was up. However, I must say that on meeting the friendly doctor all my jitters were cast aside. The doctor's first query concerned my home address, parents' names and such like.

Then his assistant, Br. Francis, placed on my face a special pair of spectacles and I was told to read a chart out in the corridor. I breathed a sigh of relief as he pronounced my eyes to be 20-20.

He had more things in his kit, such as a tuning-fork, a blood-

pressure device, and the famous stethoscope. Here and there he pounded me, told me to breathe deeply, open my mouth wide (a difficult feat when I am not eating), and do a few other gymnastics.

I was fascinated by all these tests and the instruments used in performing them. As far as I could see, though, there was no trace of anything for measuring brain cells. This, plus other considerations, lets me report happily that there is nothing at all to fear in these examinations, and everything to gain.

Jyotirmoy C., XI

Still hope:

TENNIS LEAGUE

The Bihar Lawn Tennis Council is conducting a tennis league in Patna. Numerous institutions and clubs, such as B. N. College, Patna College, St Michael's New Patna Club, etc., are participating. In the first leg of the league, St Xavier's played the Patna Electric Supply Co., and defeated them 4 matches to 1.

The Xavier team is comprised of Fr. Norbert Rai, S. J., Jyotirmoy Chatterjee, Abhay Shankar, and Sanjay Choudhary.

After their unexpected good luck with PESCO, they encountered the highly rated B. N. College team and had no chance at all against the controlled play of the professors. Valuable experience was gained, though, in playing on an unfamiliar grass court. Score: 5-nil.

The next round was with the Bankipore Club team. Here we lost two of the singles which seemed well in hand. On this particular afternoon, Fr. Rai's performance was extraordinary. The "net" result: Lost 4 and won 1. Many more matches remain, so the Xavier trio hopes to improve its record.

प्रतियोगिता

आकाशवाणी, पटना के एक अन्तरविद्यालय वाद-विवाद योगता का आयोजन किया गया जिसकी रिकार्डिंग अग्रिम रूप में ली जायगी। वाद-विवाद का तत्काल दिया जायगा, जिस प्रतियोगियों को पक्ष या विपक्ष बोलने का अवसर मिलेगा।

योगिता के लिए प्रारंभिक प ७ मई को आकाशवाणी के रिक कक्ष में होगी। जिसका विषय 'आधुनिक शिक्षा व्यवस्था स प्रद है या नहीं।' १२ मई को वाली इस वाद-विवाद प्रतियोगि प्रत्येक विद्यालय के दो-दो स वक्ताओं को आमन्त्रित किया है।

Xavier Life

Editor
SUBIR SEN

Asstt. Editors
ABHAY SHANKER
ARUN KUMAR
DILIP SRIVASTAVA
JYOTIRMOY C.

Photography
A. AJITSARIA

Published at unfixed vals during the year, XL report on and for the boys study, work, and play a school on the Gandhi M. Address letters to: Edit Xavier Life, St Xavier's, Road, Patna-1. Printed Sanjivan Press, Patna-11.

Oh Sweet Slumber

*I feel so sleepy,
And yawny and dozy,
And you little bed,
Look so lovely and cozy!
I'll soon be cuddled
Beneath your sheet,
And be fast asleep,
From my head to my feet.*

Sindhu R. K. Bhaske, VIA

TRY to be casual

It all started one day when Fr. Paul Faulstich, got a request in the library from some gray-haired seniors which was not easy to fill: more and better paperbacks in English.

As far as the library budget was concerned, Hindi books were getting priority, and the number of boys who could appreciate advanced English literature was proportionately small.

Then he remembered the *Casual Library* made famous by Fr. Jim Cox in olden days and put a plan before the boys. He agreed to beg, borrow, or steal (a figure of speech?) what he could, provided the senior boys did their share, too. As a start, each boy has agreed to contribute two paperbacks if possible from home or else make a donation of three rupees to the cause.

Stds. XI and X have voted in Dilip Srivastava and Sanjay Sharan as coordinators for the project. So far over 70 paperbacks have come in and the titles look very promising.

From his side, Fr. Paul reports that through the enthusiasm of two nuns (one his aunt) and an exceptionally generous group of boys and girls from Harbor Catholic School in East Chicago, many American published paperbacks are on the way.

It's hard to be "casual" about such an exciting venture as this!

Sanjay Sharan, X



No Swivel-chair for these mates. In fact, on Students' Day they seemed more willing to "get their feet wet" than the four boys above. From left, Arvind Ajitsaria, Mahesh Kasera, Surya Bhatta, and Ujjal Bose swab the pool and get it ready for a cool

विद्यार्थियों से दूर... पति की ओर

अपने पति के न्यूयार्क जाने के बाद श्रीमती उषा सिन्हा को विद्यालय का तीन वर्ष पुराना संग्रह देना पड़ा है। इन्होंने अपने कार्य-

जरा नब्ज दिखाइए

डायरी, कॉलेरा और चेचक के होने टीकों के बाद अब सभी विद्यार्थियों की डाक्टरी-जाँच करने का निर्णय लिया गया है। पाँचवीं कक्षा के लड़के रंजन के पितामह, डा० प्रसाद ने इस कार्य को करने के लिए महर्षि अपनी सेवा अर्पित कर दी है। डा० प्रसाद पटना मेडिकल कॉलेज के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक हैं। इन्होंने प्रत्येक लड़के का रक्त-चाप जाँच नाक इत्यादि जाँच करने का निर्णय लिया है। प्रत्येक लड़के की डाक्टरी-रिपोर्ट को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जायेगा।

काल में विद्यालय की जो सेवा की है, उसे हम और विशेषतः कक्षा २ के छात्र, जिनकी ये वर्ग शिक्षिका भी रह चुकी हैं, कभी नहीं भुला सकते। हमें उनकी जुदाई से दुःख बहुत है। हम विदेश में उनके सफल तथा सुखी जीवन की मंगलकामना करते हैं!

—प्रदीप मिश्र

HANDBALL AT ITS FINEST

Class VIII recently concluded a month-long handball tournament in which 24 boys took part. According to reports, it was a big success. The tournament was organized by one of handball's most avid fans, Abhay Krishna. Single-handed he got his classmates to sign up and then kept things rolling down through the final elimination matches. No sooner did the handball tournament end than he announced a similar one for table tennis.

As for the winners (only doubles were played), they are as follows: Ashok Rai and Abhay Krishna (1st Place), Ajay Singh and Shambhunath Singh (2nd Place).

Fr. D. Gomez distributed the prizes during class on April 17. A special prize was awarded to Pramod Bhargava for having played the tournament all alone in the absence of his partner:

Anil Pathak, XI

★ By the grapevine we hear there's been a shakeup in the XAVIER LIFE staff and that new blood is soon to flow into the paper as old heads are chopped off (or, rather, "resign" in favour of more academic pursuits). The present editor, Subir Sen, was asked about the rumour which says the XL office is going "mod". He wouldn't comment. Then one of the sub-sub-editors put in a trunk-call to Jack Anderson and got the real story, which is that Pradip Mishra and Sanjay Sharan will be taking over as XL's new Hindi and English editors respectively. Congratulations !



In a Nutshell

★ Not long ago, Miss Marian Suares visited the campus and introduced YSM (Young Students' Movement) to the upper classes. Miss Suares explained the aim of YSM as "a small-cell approach in which young people tackle and solve problems in their student environment." One of the best arguments in favour of YSM is Miss Suares herself. Last year she finished high school in Calcutta and postponed her college studies in order to volunteer her services to promoting YSM for one year.

★ L-o-u-n-g-e: Seniors have long been familiar with the verb form of this word; now they hope to get acquainted with the noun. According to WEBSTER, that would be "a room in a private or public building for leisure occupations." Such a room was recently made available to the Student Council by Fr. Principal. The location is the North Annex near the handball courts. Getting it furnished will take some work Fr. Scaria has promised to provide a radio.

अप्रैल महीने आरंभ में सन्त जेवियर्स के छात्रों को कॉलेरा की सूईयाँ तथा चेचक के टीके दिये गये। कुल मिलाकर लगभग ८०० टीके तथा १६०० सूईयाँ दी गईं। चित्र में आप सूई लेनेवाले विद्यालय के अन्तिम छात्र-तीसरे वर्ग के रजत कुमार सिन्हा को ब्र० फ्रांसिस के साथ देख रहे हैं।

★ You should see the new notice board in Std XI's room ! Fr. D'Mello came up with the idea in order to post news concerning House Points, Tournaments, etc. And being a generous soul, he made it big enough for lots of other displays, too. Seniors Chandra Shekhar Sharan and Abhay Shankar have shown what you can do with some imagination and magazine pictures. Before long, there should be a board in every room.

★ The '72 Year book is beginning to take shape. Recently Jyotirmoy Chatterjee was appointed Editor of the project. Senior assistants will be Abhay Shankar, Anil Pathak, Chandra Shekhar Sharan, Dilip Srivastava, Ravinder Bassi, and Subir Sen. If you can think of a good name for the Book (something more personal than "year book"), they'd like to have your suggestions. On the double !

Just the FACS

An inter-school art competition sponsored by Roteract and Camlin Products was held at St Xavier's on the 26th of March. The prizes were given out two days later in the IMA Hall. St Xavier's managed to get ten individual prizes and a cup for entering the largest number of competitors. Nine of the winners were given certificates of merit and one—Sourendu Gupta—won third prize in the senior group. Notre Dame bagged the shield for getting the highest number of prizes.

On the 15th of April, FAC members were treated to a slide show. These slides dealt with Renaissance paintings, mainly those of Michelangelo. Members enjoyed the show and are looking forward to another in the near future.



Xavier Life

Vol. 21, No. 4

St. Xavier's - Patna

August 21, 1972

एक दोपहरी: गर्म पर मनोरंजक

बहिरकार हमारा वह चिर-प्रतीक्षित दिन आ ही गया। २१ जुलाई के सप्ताह में आडिटोरियम छात्रों, अभिभावकों तथा शिक्षकों से भरा पड़ा था। सबों की प्रतीक्षा का बाँध तब टूटा जब एनाउन्सर संजयशरण ने उठकर अभिवादन तथा कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की। प्रतियोगिता शुरू हुई बच्चों के द्वारा। छोटे-छोटे बच्चों के मुँह से बड़े-बड़े भाववाले

To the Victors Go the Spoils

Tasty Prizes

The Canteen Management Committee got a bold idea recently. To boost their noon-period sales, they invited boys to draw up some posters showing just how good sandwiches, popcorn, and soda pop could be. For the three best artists they promised appropriate prizes: 10 minutes, 5 minutes, and 3 minutes of all they could eat—compliments of the canteen. The winners turned out to be Ramji Sinha (who, though small, must have skipped breakfast in preparation for his 10 min. prize), Amarendra Narayan (who will never get a First Prize after all the damage he did in just five minutes), and Sourendu Gupta (who in his brief three minutes showed how much artists can be swayed by motives of material gain). Debrata Gupta (VB) pulled the Consolation Prize off the counter: 2 singharas and 1 Akras. This should take care of any profits the Canteen made during July.

पर मधुर गीत सुनकर हम आप ही आप आनन्दित हो उठे। तत्पश्चात् मध्यम वर्गों की बारी आई। इनके स्वर में जरा परिपक्वता आ गई थी जो इनके गायन को मधुर बना देती थी। गायन के बाद वादन। वादन में तबला तथा हारमोनियम प्रस्तुत किया गया जिन्हें सुनकर हम आप ही आप उन छोटे वादकों के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर बैठे। लिस्ट में जब जुनियर्स, इन्टर्स की कड़ी पार कर हम सीनियर्स के पास पहुँचे, तो हमारी उत्सुकता बढ़ गई। गायन बड़ी उच्च कोटि का था। सभी के स्वरों में परिपक्वता तथा मिठास दोनों ही थी। यद्यपि कंठ फूट चला था पर स्वर की मधुरता कायम थी। यहाँ भी गायन के बाद वादन था। गिटार तथा माउथआर्गन से कार्यक्रम की शोभा और बढ़ गई तथा लोगों के ध्यान ज्यादा आकृष्ट हो गए। गिटार के तने तारों पर उनकी उंगलियाँ एक मंजें हुए वादक की भाँति फिरती थीं। माउथआर्गन भी काफी रोचक रहा। प्रतियोगिता के बाद हमारे एक शिक्षक श्री (शेष पृष्ठ ४ पर)

General Knowledge Team Victorious

Who was the first Indian to receive the Nobel Prize? Name the five Great Lakes of N. America. What are the only two active volcanoes in Europe? How high from the ground is the crossbar of a goalpost in Association Football?

These were a few of the questions thrown at the contestants of the General Knowledge Quiz which took place at the IMA Hall on August 12. Chandra Shekhar Sharan, Subir Sen, Sanjay Sharan, and Niraj Sinha (B) represented St Xavier's and did so well that they carried off first place with a total of 10 points. St Michael's and St Joseph's tied for 2nd, each with 5 points. Other participants included four boys from Patna College and a team from Loyola High School. The prize will be awarded October 2 on the occasion of the One-Act Play Festival.

BEGINNING SOON.....

An inter-house debate tournament is being planned. The junior and senior sections of boys will have a choice of speaking in either Hindi or English. The Hindi finals will be on Wednesday, August 23, and the English on Saturday, August 26. We will give you a report on this in our next issue.

नई कलम से

पत्रिका का यह अंक नए सम्पादक मण्डल द्वारा लिखित एवं सम्पादित है। इस तरह का यह हमारा पहला अनुभव है। अतः विद्यालय के कार्य-कलापों के सही प्रस्तुतीकरण में हम कितने खरे उतरे हैं यह तो आप ही निश्चित कर सकते हैं। कहा जाता है कि एक हाथ से तालियाँ नहीं बज सकती और उसी तरह हम बिना आपके सहयोग के आगे नहीं बढ़ सकते। याद रहे कि 'जेवियर लाइफ' विद्यालय के कार्य-कलापों का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इसके प्रकाशन में जब तक सभी छात्रों का समुचित योगदान नहीं होगा, तब तक हम इक्के-दुक्के क्या कर सकते हैं। इसका उद्देश्य केवल इतना ही नहीं बल्कि छात्रों की रचनात्मक शक्ति को प्रोत्साहित करना भी है। उनकी लेखनी में मौलिकता को भरना भी है। इसलिए आप इस अवसर का लाभ उठाएं, यही हमारा आग्रह है। हमें सदा आपके सहयोग की अपेक्षा है, जो चाहे अपनी रचना के माध्यम से हो या कुछ उत्तम सुझावों के द्वारा। क्या हम ऐसी आशा करें?

कई लोग सोचते हैं कि पाठ्यपुस्तकों से ही हमें पूरी शिक्षा मिल जाती है। पर नहीं। पुस्तक और शिक्षक तो हममें केवल जिज्ञासा भरते हैं। उनका कर्तव्य तो हमें केवल रास्ता बताना है, रास्ते पर चलना तो हमको है। सिर्फ पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन ही हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज और देश के हरेक क्षेत्र की घटनाओं में हमको जिज्ञासा दिखाना चाहिए। तभी हम उन्नति कर सकेंगे, हमारा बौद्धिक विकास हो पाएगा तथा विद्यालय जिस उद्देश्य को लेकर स्थापित किया गया है, पूरा हो पाएगा। छात्रों में यह प्रवृत्ति उत्पन्न करने में 'जेवियर लाइफ' प्रयत्नशील है। इसी उद्देश्य को लेकर कई नए शिक्षाप्रद स्तम्भों की शुरुआत के सम्बन्ध में विचार किया जा रहा है। सम्भव है अगले अंकों में आप इनकी उपस्थिति पाइएगा। आशा है हम अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो सकेंगे।

When the morning's freshness has been replaced by the weariness of mid-day, when the leg muscles quiver under the strain, the climb seems endless, and, suddenly, nothing will go quite as you wish—it is then that you must not stop.

Dag Hammarskjöld (1905-1961)
Secy-Gen of U. N., 1953-1961

Once there was a Marshall

The Good Guys and the Bad Guys (shown July 30) was good escapism fun and a welcome release from the depressing modern anti-hero trend of the *Easy Rider* and *Midnight Cowboy* variety.

The story is about the dedicated Marshall James Flagg (Robert Mitchum) forced to retire after 20 years of brave service to the town of Progress. He loves his job, but makes the mistake of trying to organize a posse a short time before the town Mayor hopes to be re-elected.

Smoothly Retired

Flagg has heard that an old foe of his named McKay (Lee Marvin) is in the neighbourhood. This, plus news of a big gold shipment coming by train, makes him suspicious. In no way, though, can he convince the Mayor that something must be done. Instead, the Mayor slyly calls the town together and thanks Flagg for all his years of faithful service and appoints an incompetent nobody to take his place.

Having lost his badge, the ex-Marshall goes off alone to conquer McKay. As it turns out, McKay is not the demon he used to be, and he wavers between the good guys and bad guys. Finally he teams up with Flagg and foils the train robbery which his own gang had planned.

Funniest Man of All

This was a comedy western with many surprises and thrills. The biggest comic of all was probably the Mayor. He was very funny, though he didn't mean to be.

Mitchum did a good job as the old-timer who was having trouble making friends with the modern age. His feelings were aptly expressed by the touching song "No Future for Marshall Flagg". All in all, it was a movie worth seeing, and a consoling substitute for *The Dirty Dozen* which never arrived.

Sanjay Sharan

फुटबॉल के मैदान में

फुटबॉल के मौसम की शुरुआत छात्रों के इच्छित अन्तर्वर्गीय मैचों से की जो इस साल के फुटबॉल के मविष्य को ज्योतिमय बनाते हैं। पहला खेल आठवें तथा नवें कक्षा के छात्रों के बीच था। खेल बड़ा रोमांचक था। काफी कोशिश के बावजूद नवें कक्षा के खिलाड़ी विपक्षियों के एक शॉट को न रोक सके तथा उन्हें एक गोल में हारना पड़ा। हालांकि तीन गोल और दो बचे थे, पर घुसपैठिए रेफरी की तेज नजरों से न बच सके तथा उन्हें 'आफसाइड' का जरूरी अवैध करार कर दिया गया।

दूसरा खेल पाँचवीं तथा छठी कक्षा के बीच था। यह खेल बड़ा ही संतुलित था, जिसके कारण अंत तक कोई गोल न हो सका। अतिरिक्त समय मिलने पर भी संतुलन शून्य-शून्य रहा। पर निर्णय तो लेना ही था तथा अंत के एक टाई-ब्रेकर शॉट में पाँचवीं ने एक गोल दाग दिया तथा बाजी मार ले गए। इसके अतिरिक्त आठवीं कक्षा एवं दसवीं कक्षा के छात्रों के बीच एक मैच खेला गया, जो बड़ा ही रोमांचक था। दशम वर्ग जीत ही रहा कि अंत में आठवीं कक्षा के छात्रों ने एक गोल कर दिया जिससे कि खेल बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गया। इन मैचों में हम कुछ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रशंसक पाते हैं जो शायद उपयुक्त कौशल विकसित कर सकेंगे। इस तरह फुटबॉल की शुरुआत तो अच्छी रही है, अब देखें बाकी कैसा रहता है।

संगीत प्रतियोगिता के समय सप्तम वर्ग के अर्चना सिंह के भजन के साथ तबले पर बजते हुए श्री कमलदास और उनके सहयोगी श्री बी० शर्मा। ➔

New Faces on the Campus

The face is familiar, the voice is not so different, and the manner is extraordinary. It seems the only person who could replace Miss Rekha Prasad (who unfortunately shifted back to Bombay after first term) is her own sister. **Mrs. Uma Verma** joined us in July and happily has all the virtues of her sister who proved so popular with the boys in the junior school. Mrs. Verma majored in Sociology and graduated from St Xavier's College in Bombay. She earned a B.Ed. degree from Patna University and one day hopes to go on for M. Ed.

3 WAYS TO GET AHEAD

The system of Merit Cards has been introduced this term. Through these cards recognition will be given to boys who do well in their weekly tests. If you secure 80% or above, you earn a **white** card (worth 3 points); if you rank between 70-79%, you get a **pink** card (worth 2 points); and if you score between 59-69%, you are awarded a **yellow** card (worth 1 point). Boys who are lucky enough to earn at least 18 points by the end of the term will receive a special certificate on Recognition Day. Question is what colour will that be ???

No one can question the commitment of the Iyer family to education. **Mrs. Malati Iyer** began teaching at St Xavier's in July and a short time after was joined by her husband who is teaching Social Studies to the boys in Std. X. **Mr. Gopal Iyer's** main work is that of lecturer at Patna College. The experience and interest they bring to their classes have already won them much love and respect.

Mr. Dennis Cherubim is the new office assistant you see running around (and taking your money). When Mr. Sebastian became very sick shortly after school started, the bookstore and cashier's office found itself switching over to D. C. So far there have been no short circuits. Mr. Sebastian's return is dearly longed for—not least by Mr. D. C.

Another addition to our young staff is **Miss Nilam Prasad**. She actually started teaching at Xavier before the summer holidays began. The boys of Std. IIB are lucky to have her for their class teacher. Miss Nilam took English Honours at Patna Women's College and will probably raise the standard of English in Classes I and II to a level never heard of before. She has a great interest in art and has already started to help Mrs. Mehrotra in guiding the Fine Arts Club.



कहीं मैं गलत तो नहीं ?

एक दोपहरी...

(पृष्ठ १ से आगे)

सुधीर सेराफिम द्वारा प्रस्तुत माउथआर्गन पर कुछ गीतों ने कार्यक्रम को और मजेदार बना दिया।

गीत-संगीत तो अब खत्म हो चुका था पर पुरस्कार-वितरण का कार्य बाकी था। हमारे मुख्य अतिथि थे उद्योग विभाग के आयुक्त श्री के० के० श्रीवास्तव। पारितोषिक वितरण के पूर्व प्राचार्य फादर स्कारिया ने आकर सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया तथा मुख्य अतिथि से दो शब्द कहने का आग्रह किया। श्री श्रीवास्तव ने अपने संक्षिप्त पर सारगर्भित भाषण में कई उपयोगी बातें कहीं तथा कार्यक्रम के प्रति अपनी प्रसन्नता को प्रकट किया। पुरस्कार वितरण के पश्चात छात्रसंघ की ओर से विनीत सिंह ने सबों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की। इस तरह यह मनोरंजक संगीत प्रतियोगिता समाप्त हुई। अगले बार हम इससे भी मनोरंजक कार्यक्रम की कामना करते हैं।

आजादी का वह प्रथम पावन दिवस आज १९७२ में रजत-जयंती की जयमाला पहने कितने गर्व से झूम रहा है। अतः अन्य स्वाधीनता-दिवसों की अपेक्षा इस वर्ष का स्वतंत्रता-दिवस हमारे लिए अधिक

उसे आज पच्चीस वर्षों के बाद पल्लवित-पुष्पित देख उनका हृदय बांसों उछल रहा है।

अनेक त्रुटियों के बावजूद निस्संदेह हमें विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों विशेष उपलब्धियां

हमारी रजत-जयंती

महत्वपूर्ण है। आज इस विशाल देश के कोने-कोने में परम हर्ष की लहरें उमड़ पड़ी हैं।

हम छात्रों के लिये इस दिव्य आनन्द का उचित अनुभव करना संभव नहीं, क्योंकि हमारे बीच कोई भी ऐसा छात्र नहीं जिसे स्वतंत्रता के पूर्व पराधीन भारत की दारुण दशा का अनुभव हुआ हो। इसका सच्चा अनुभव तो वे ही कर सकते हैं जिन्हें देश की आजादी के लिए विभिन्न यंत्रणाएं सहनी तथा तरह-तरह की कुरबानियां करनी पड़ीं। स्वतंत्रता के जिस पुनीत पीढ़े को उन्होंने अपने खून-पसीने के सींचा,

प्राप्त हुई है। हम प्रगति के पथ पर आगे तो बढ़े हैं अवश्य, किंतु यहीं तक रुकना नहीं है। यह रजत-जयंती हम सबों को चुनौती दे रही है कि हम भविष्य में अधिक परिश्रम, कर्तव्य निष्ठा और सच्ची सेवा-भावना से अपने देश को समुन्नत बनाएं। तभी वह अपनी स्वर्ण-जयंती तक अपना समुचित एवं सर्वतोमुखी विकास कर समस्त संसार में सम्मान का पात्र बन सकेगा।

तो आइए, हम विद्यार्थीगण अपने छात्र-जीवन में ही इस महान कार्य में संलग्न हो जाएं। "जय हिंद।"

★ Football League ★

The Intramural Football League got off to an exciting start Monday, August 7th. The Seniors, Juniors A, and Juniors B make up the three divisions of the league. The top teams of each division will face each other for the championships. Here are the latest scores of games thus far played :

Seniors

Tigers	2	—	Panthers	0
Lions	5	—	Panthers	1
Lions	6	—	Leopards	0

Juniors A

Lions	1	—	Tigers	0
Panthers	0	—	Leopards	0
Lions	1	—	Panthers	1

Juniors B

Tigers	0	—	Panthers	0
Leopards	4	—	Lions	0
Lions	3	—	Tigers	0



दवपेंच-अमर सिन्हा और शकीलुर रहमान आठवीं तथा दसवीं कक्षा के बीच हुए एक मैच में एक दूसरे से फुटबॉल छीनने का प्रयास करते हुए।

The Handball and Table Tennis Tournaments are due to begin shortly. Stories and pictures in our next issue.

Xavier Life

Editors

Pradeep Mishra
Sanjay Sharan

Reporters

Amar Sinha, Arun Kumar,
Arvind Ajitsaria (Photog),
Narendra Singh, Anand
Singh, Ashis Das Gupta,
Prabhat Singh, Vineet Singh,
Neeraj Sinha (A), Raj K.
Bhawnani.

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editors of Xavier Life, St Xavier's, Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjivan Press, Patna-11.

Seniors Sign For Science Test

Principal at Xavier for 15 years

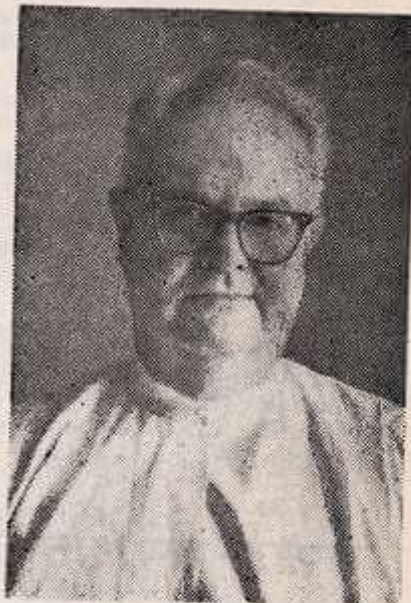
Xaverians Mourn Father Murphy

Nine senior boys have signed up for the National Science Talent Examination scheduled for January 2, 1973. Their task will be to submit a project report and to sit for a written examination, most likely to be held at Patna College Multi-Purpose School. On the day of this exam, 350 candidates will be selected from around the country and will be given a full scholarship and additional stipend.

A wave of shock and sorrow swept over Xavier on September 28 when news came that Fr. Gordon Murphy, S.J. had passed away. For the past twenty days he had been convalescing in the hospital after a heart attack. His blood pressure was unsteady, but his old vigour seemed to be coming back. He hoped to return as principal at St. Michael's as soon as possible. But suddenly there was a relapse and within thirty minutes he was gone.

The following day St. Michael's and St. Xavier's were closed in mourning and hundreds of boys from both schools paid their last respects to the man who meant so much to them.

Father's body rested in state in the centre of the St. Michael's



school hall. At no time was there a lull in the stream of visitors. They came from all over Patna, and from as far away as Delhi, to honour one last time their beloved guru and friend.

On Friday, September 29, a funeral Mass was held at 4:00 p.m. on the St. Michael's campus. In his eulogy, Fr. Jim Cox dwelt on only one facet of Fr. Murphy's character, then stepped aside so that others present could comment and reflect on what Fr. Murphy meant to them. A fair number of fellow Jesuits, old boys, and parents came to the microphone and in a brief but moving way expressed what was in their hearts.

After the Mass was over, the majority proceeded on foot to the cemetery one mile away at X.T.T.I. Bishop Augustine Wildermuth offered the burial prayers.

Fr. Murphy was born in Chicago on January 24, 1918. He first arrived in India in January, 1947-

(Cont. on p. 7)

Xavier Life



Vol. 21, No. 5 ST XAVIER'S PATNA October 5, 1972

Art Contest Draws Record Number

Some 300 entries from 20 schools made the Third All-Patna Drawing and Painting Competition (Sept. 30) the most popular so far. With help from the Student Council, the Fine Arts Club has again organized a very successful programme.

The competitors were divided into three talent groups; A (Stds 9-11), B (Stds 6-8), C (Stds 2-5). In the space of two hours, each artist was asked to do a drawing as well as a painting. This was done between 1:00-3:00 p.m.

Afterwards *Dur ki Awaaz* was shown in the cinema hall and the contestants were served a special tea. During this period Mr. Nripen Ray and Mr. Bireshwar Bhattacharya carefully went about their work of judging and awarding prizes to the best pieces.

At 6:00 p.m. sharp the chief guest, Mr. P. K. J. Menon (Chief Secretary, Government of Bihar) arrived and everyone gathered in the hall for the prize distribution.

Some of the lucky winners are as follows: Ajaz Rizvan Ghani (from St. Michael's) took first place in Group B and was named the *best artist* of all the groups. The prize for sending the highest number of entries went to St. Joseph's School. Having secured five points, St. Xavier's won the Dr. Dilip Sen Memorial Shield for the second year in a row. Next highest was Central School (Anisabad) with 4 points.

(Cont. on p. 7)

News Staff Tours 'Indian Nation'

A sudden downpour of rain almost, but not quite, washed out a very interesting tour made by the XL staff on September 5. The ten staff members and their moderator, Fr. Faulstich, left the campus on cycle 30 minutes later than planned, but were still on time to see the dak-edition of Aryawart rolling at 10,000 an hour through the huge rotary press.

The tour was made possible through the kindness of Mr. Kali Kant Jha who is the Secretary and Manager of the Indian Nation Press.

One of the foremen, Mr. Abdus Subhan, was the guide and he took real interest in answering the staff's questions and in showing them all aspects of the press's operations.

Apart from the immense Crab-tree printing press, the most intriguing machine was the Linotype. Line by line, this machine composes the type which eventually forms the

newspaper. The operator sits at a keyboard resembling that of a typewriter. As he types out the copy and occasionally taps a lever here and there, the whole machine seems to be in motion.

Suddenly out of nowhere a piece of metal 2 or 3 inches long drops down and is so hot that you can hardly hold it. Moulded on top (and backwards) are words to appear in the next edition of the paper.

The staff hopes to visit other prominent presses in Patna and learn more about how the professionals do their job.



Top two salesmen. The fact that the drive for yearbook patrons was so successful is due to the hard work and business-like approach of boys like Anil Pathak, XI (Chairman of the drive) and Iftekhar Anjum, VIII. Iftekhar (pictured on the left) brought in the largest sum of any individual, Anil got the second largest amount, and Arvind Ajitsaria, X (not in the photo) placed third.

■ आनन्द सिंह X

‘तीन विजेता’

विद्यालय में इस वर्ष पहली बार बास्केट बॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। चूंकि यह एक अन्तर्दलीय प्रतियोगिता थी, इसलिए प्रत्येक दल को एक दूसरे के विरुद्ध मैच खेलना पड़ा। पैन्यस और लेपडंस के बीच हुए पहले मैच में पैन्यस बड़ी आसानी से 24-7 से जीत गए। उधर दूसरे मैच में टाइगर्स ने लायन्स को 26-14 से पराजित कर दिया। फिर लायन्स ने अपनी हार का बदला पैन्यस को 21-19 से हरा कर ले लिया। लेकिन पैन्यस और टाइगर्स के बीच खेला गया मैच बड़ा ही उत्तेजक तथा मनोरंजक था। खेल के पहले हाफ में पैन्यस का पलड़ा भारी था। पर खेल के परिणाम के विषय में कुछ भी कह पाना मुश्किल था। खेल की गर्मी के साथ-साथ खिलाड़ियों का जोश भी बढ़ता जा रहा था। अन्त में गीतम चटर्जी के कठिन प्रयास के फलस्वरूप पैन्यस ने टाइगर्स को 30-28 से हरा दिया। सभी मैचों के प्राप्तियों को मिलाकर पैन्यस, टाइगर्स और लायन्स, तीनों विजेता रहे।

तीनों टीमों को चार-चार अंक प्राप्त हुए। दुर्भाग्यवश लेपडंस एक भी मैच जीत न सके तथा उन्हें एक भी अंक प्राप्त न हो सका। इस तरह तीन विजेताओं के साथ बास्केट-बॉल प्रतियोगिता समाप्त हुई। इन खेलों के स्तर को देखते हुए हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि विद्यालय में बास्केट-बॉल का भविष्य उज्ज्वल है।

■ नरेन्द्र सिंह X

Two Collegians Found Cutting Up in Assembly

Two College students from Gujarat put on an interesting show at the morning assembly on Sept. 25. For fifteen minutes they demonstrated the art of Japanese paper-cutting which they learned on a recent trip to Japan. Their prize production was a lotus flower. In the course of their lively display they reminded us more than once that we too could make such things if we just had a copy of their booklet which sold for Rs. 1.50

Planning seriously for the fun

With the music and debating competitions behind us and the Fete fast approaching, the Student Council has been doing its utmost to make October 7th a grand success. Since projects like a fete require much work and careful planning, the SC has set up a seven-member committee, with Fr. D'Mello in charge, to manage the affairs of the Fete.

The first thing this committee discovered was that it didn't have enough money in its treasury to organize a reasonably good Fete. Hence they decided to hold a raffle. Over 3000 tickets have so far been sold which means the organisers will not only be able to pay for the handsome raffle prizes, but will be able to round up prizes for other ventures like Treasure Island,

Ring—the—Duck, and the Shooting Gallery. Housie and Horse Racing will be there to tempt budding "betters", and for those whose luck has run out the cafeteria will be available as a sure bet. Cartoons and a miniature boat journey through Patna are being planned for the children.

As somebody expressed it the other day, the effort and goal seems to be to make this Fete *so good* that we will be able to forget last year's. That may be an exaggeration of last year's failure. However, it is no exaggeration to say that in the end what will make or break the '72 Fete is not a single committee, or a particular stall, but simply the enthusiasm of *each and every* Xavier boy. Let's hope for an abundance of it this weekend!

Fellow Students:

The long awaited Xavier Fete has arrived. Please work like ants, sweat like horses, and get dog-tired so that the big day coming up will be a grand success.

Yours sincerely,

Arun Kumar

Student Council President

QUOTATION

"There will not be another fete like it this year."—from Wm. Shakespeare's last (and till now unpublished) tragedy *Saturday afternoon at home*, Act VII, Sc. II.

Dussehra Holidays

School Closes
11 Oct. (12:05 pm)
Starts Again
23 Oct. (9:15 am)

और कहीं हम जा सकते ?

महाशय,

नए टेबुल-टेनिस टेबुल के आ जाने से पुराने वालों को भोजन-कक्ष के प्राचीर में रख दिया गया है। वहाँ जगह की बहुत कमी है जिससे कि खिलाड़ियों का



पाठनीय

खेल नहीं निखरेगा। वहाँ का वातावरण बहुत ही दूषित है और उसमें ज्यादा देर तक ठहरना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ एवं निर्मल हवा अनिवार्य है। अतः छात्र संघ एवं अधिकारीगण से सविनय निवेदन है कि उन दोनों टेबुलों के लिए उचित स्थान की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र कर दी जाए। आशा है इस पर ध्यान दिया जाएगा।

आपका विश्वासी

अमर सिन्हा X

XL Goofs Again

Dear Sir:

This is to refer to the photograph of the Musical Competition which you published on page 3 of your last issue. It was said that the name of the boy was Amitabh Sinha, but the name of the boy in the picture is Nilabh Mishra. I hope the mistake will be corrected.

Yours sincerely,

Surya Bhattacharya

■ Thank you for your letter and for pointing out a very unhappy mistake. Many others noticed it also. However, you might like to know that the boy's *real* name is not Nilabh Mishra, but Nilabh Sinha (Amitabh's older brother)!

—Ed.

मधुर स्वरों की तान-धुन में !

२३ सितम्बर की शाम को संत जोसेफ कान्वेंट में एकांकी परिषद पटना के द्वारा एक संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में अन्य कई स्कूलों की तरह अपने विद्यालय से भी कुछेक छात्र संगीतज्ञों ने भाग लिया था। समारोह का कार्यक्रम करीब सात बजे आयोजकों की ओर से दर्शकों का अभिवादन करके किया गया।

प्रतियोगिता शुरू हुई संत जोसेफ कान्वेंट के छात्र संजय तिवारी के द्वारा जिन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी का एक-एक गीत सुनाकर तथा माउथऑर्गन बजाकर दर्शकों का दिल जीत लिया तथा प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर लिया। शास्त्रीय संगीत में राममोहन राय सेमिनरी के छात्र संदीप सेन (जो कि पिछले साल तक संत जेवियर्स के छात्र थे) ने सितार पर रागदेश बजाकर निर्णायकों तथा दर्शकों को बड़ा

प्रभावित किया तथा उस क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार के भागी बने। समूह गान का प्रथम पुरस्कार कुर्जी अस्पताल की महिलाओं को उनके नेपाली गीत के लिए मिला।

अपने विद्यालय के तीन छात्र, अनिरुद्ध मुखर्जी, धीरेन्द्र तथा शंकरन ठाकुर ने एक-एक मजन गाया। अनिरुद्ध तथा धीरेन्द्र के प्रयास सराहनीय थे और शंकरन ठाकुर को तो उनके उत्तम प्रयास के लिए एक सान्त्वना पुरस्कार भी मिला। वादन के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार अपने विद्यालय के अरुण कुमार को मिला जिन्होंने इलेक्ट्रिक गिटार पर एक बड़ी ही लोकप्रिय फिल्मी धुन बजायी थी। इसी तरह अन्य कई आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। अन्त में समिति की सदस्या श्रीमती मुखोपाध्याय ने समिति की ओर से सबों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।



In the photo above, Miss Nilam Prasad discusses with Mr. Arun Kumar the progress of his son Anjani of Std IA (upper left corner). Meanwhile, Mrs. Narayan and her son Vijay (upper right corner) await their turn.

Parents-Meet-Teachers nights have blossomed into a week. At the suggestion of certain parents themselves, more time has been set aside for them to discuss their boy's progress with their teachers. Without doubt, the purpose of these recent meetings (Sept. 25-28) was fulfilled much more than by those held during First Term.

B. S. E. B. Sponsors Novel...

Experiment

It has often been said that boys who do extremely well in examinations are usually bookworms and rarely know anything outside their textbooks. To test the truth of this saying, and to find out if the Board's examinations are actually a measure of one's ability, the Bihar School Examination Board organized a 3-day Community Life Programme from September 17-20.

The first twenty of the Secondary School examinations (1972) and the first ten of the Higher Secondary examinations (1972) were invited to participate in this programme. Two seniors from St Xavier's—Abhay Shankar and Subir Sen—also participated to find out how they would fare in competitions against persons of other examination bodies. Strangely enough, there was not a single girl among the first 20 of the S.S. nor the first ten of the H.S.

Busy Schedule

The programme started off with an essay contest on Sept. 17. The next day was plenty busy with three contests of two hours each—Science Talent, General Knowledge, and Elocution. On Sept. 20 a difficult personality test was given. In this, an interview board judged the participant's personality on the basis of some questions that they asked. One surprising thing about all these tests was that they were held in English, although most of the participants would have preferred Hindi.

On the lighter side, there was a trip to Rajgir, Nalanda, and Pawapuri by a tourist coach on the 19th.

More than a good time

The two Xavier participants feel they not only had a good time, but learned something valuable for the future. They discovered, among other things, that the outlook or life of boys from other schools is different from theirs. After the ice was broken on the first day the atmosphere became very friendly. The participants mingled well and had many 'warm discussions.'

P
M
T
—
W
E
E
K

He loved his work'

by Fr. Kevin Cleary, S. J.

He loved his work

There is one man today who is remembered, and remembered fondly at St. Xavier's, it is Father Gerard Murphy.

He came to this school as a young man learning the Xavier traditions from the stalwart Jesuits who had founded this school and carried it on according to high tradition.

Then the time came for Father Murphy to take up the reins of government as Principal in 1955. From that time onward he came into the lives of generations of Xavier boys who have stood every morning near this old imli tree in front of this school building, just as you boys are standing here today in assembly.

It was Fr. Murphy who initiated and began the "assembly" here at St. Xavier's. And now it has grown, it has improved with the years, to become what you young men have made it today.

You see how much we owe to men of vision, to men of action who have built up an institution. Fr. Murphy was Rector and Principal of St. Xavier's from 1954 to 1965—that was the period when the new dining hall, study hall, and dormitory were built, all of which we have converted to our present requirements. It was he and Fr. Reinboth who were the men of action that gave you boys that swimming pool which adds so much to your fun and happiness in school.

In the last ten or fifteen years we have been justifiably proud of our debating teams and our debating contests. We owe all that to his hard work and initiative, just as we owe our one-act play contests to his foresight and determination.

(Cont. on p. 8)

On Saturday, Sept. 29, Fr. Scaria planned a Prayer Service during the morning assembly in order to honour our former principal Fr. Murphy. It was a moving ceremony, with the school flag flying at half-mast, and all the boys on their best behaviour. From among the several tributes paid to Fr. Murphy we wish to record the major parts of those by Fr. Kevin Cleary, S. J. and by senior student, Subir Sen. We think they speak for many people. —Ed.



"If ever a man lived up to the Xavier motto..."

My Fellow Xaverians,

When I think of Fr. Murphy and all that he meant to us, so many things come to mind that I do not know where to start, what to say. Many of the juniors did not know him, but for us who knew him from a very tender age, from the very beginning of our school life, it is difficult to convey that feeling of personal loss to you.

I remember when I joined this school for the first time as a boarder. We had unpacked my things and I was to bid goodbye to my parents. Naturally, I was on the point of bursting into tears. Suddenly Fr. Murphy scooped me up in his arms, nodded to my parents, and before I knew what

(Cont. on p. 7)

■ अब से जब आप किसी रिक्रेशनेवाले को अपने स्कूल चलने को कहेंगे तो उसे शंका की कोई गुंजाइश ही नहीं रहेगी क्योंकि हाल ही में विद्यालय के मुख्य-द्वार पर एक शिलालेख जिस पर 'संत जेवियर्स' खुदा हुआ है, लगा दिया गया है। शायद इसे देखना थोड़ा कठिन हो पर यह वहीं है।

★ In a recent city-wide Table Tennis Tournament, Raj Km Bhawnani and Bhuwan Sinha took part in the Juniors' Division. The opposition was too much for them in the singles games, but the doubles they took in fine style. XL congratulates them for their teamwork!

■ अभी हाल में उपप्राचार्य के कार्यालय के अन्दर तथा बाहर कुछ परिवर्तन किए गए हैं जिसमें वोगनबीलिया की लम्बी लता का अनावरण मुख्य है। इसके अलावा नए परदे, बढ़िया पेन्टिंग्स तथा कई आकर्षक पोस्टर भी लगाए गए हैं जिसके कारण आफिस अब आकर्षक दिखता है।

★ When Alistair MacLean's latest book arrived in Patna's bookstores, one of the first to hear about it was that voracious reader S. Radhakrishnan. Faster than you could say *Bear Island*, he had his own copy and was enjoying the story. He liked it so well that he has donated the book to the Casual Library, and earned the gratitude of all the CL members.

■ प्राचार्य फादर स्कारिया ने विद्यालय में एक सामान्यज्ञान प्रतियोगिता आयोजित करने की योजना बनायी है। वे बसहरा छुट्टी के तुरंत बाद इस प्रतियोगिता के आयोजन की आशा करते हैं।

★ Using their free time and quite a few holidays, our Xavier Hall neighbours performed a noble task recently. They converted the old bakery into temporary living quarters for their two cooks who have to be up at 4:30 a.m. to begin their work. What a pile of bricks and rubbish came out of that room!



News In Brief

★ Elsewhere in this issue there's an article about the fine music competition which took place at Bankipore on Sept. 23. What it does not mention is the terrific razzing received by Xavier's first-place winner as soon as his class mates classmates heard about his prize: a tin of powder.

★ Lee Marvin fans will be glad to hear that *The Dirty Dozen* which was supposed to be shown on July 30 has been re-booked for the last week of January, 1973.

BIG VICTORY!

The Staff was no match for the mighty Student Eleven October 3rd. Final score: 2-nil. Star players: Fr. D'Mello (he was all over the place), Jagat Bhushan Nadda (owner of the two winning goals), and Sandip Choudhary (the invincible goalie).

Earlier in the day, the Student Council presented each teacher with an inscribed Wilson ballpoint pen, as a token of appreciation for services rendered off the football field.

■ विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का कार्य बिना किसी बाह्य प्रदर्शन के चुपचाप चल रहा है। सुबीर सेन पत्रिका के नए सम्पादक चुने गए हैं। सुबीर आजकल विद्यालय के प्रत्येक छात्र की तस्वीर प्राप्त करने के प्रयास में लगे हुए हैं। फोटो खींचने तथा उन्हें तैयार करने का काम 'शेडो' स्टुडियो के द्वारा किया जा रहा है। अब तक की खबर के अनुसार यह कार्य 95 प्रतिशत समाप्त हो चुका है।

★ XL surely speaks for the whole school in offering its sympathy and prayers to Mr. Dennis Cherubim whose father died in Bettiah on September 7. He was still a young man and many little ones are left at home. The future will not be easy for Dennis' mother, brothers, and sisters.

■ सूरज कुमार (VB) हाल में कई आवश्यक तथा मनोरंजक प्रश्नों की सूची 'जेवियर लाइफ' के कार्यालय में प्रकाशन हेतु ले आए। देखिए आप इस एक का उत्तर दे सकते हैं या नहीं। - सौर मण्डल में किस ग्रह के सबसे ज्यादा उपग्रह हैं? उनकी संख्या कितनी है?

★ Fr. Scaria has a new pair of specs and as far as we can see (with our old ones) they are powerful indeed. Hereafter it's going to be harder to score points in the inter-house cleanliness campaign.

■ अगले शनिवार को विद्यालय में के अवसर पर अपने यहाँ के छात्र कल कारों द्वारा बनाए गए चित्रों तथा पोस्टरों की एक प्रदर्शनी होगी ताकि अधिक अधिक लोग इसे देख सकें तथा उसका आले सकें। हमें आशा है कि कम से कम यह प्रदर्शनी शुल्क रहित होगी।

Lack of coaching and preparation?

Hindi-English Debates Held

Intramural house debates took place during the week of August 20-25. The finals of the Hindi division were staged on Wednesday, August 23. The result surprised a lot of people as the younger and less experienced Panthers team defeated the Tigers while supporting the proposition, "विज्ञान मानव के लिए अधिक प्रयोजन हो रहा है।" Niraj Sinha (A) and Saurabh Das

both earned praise for their speaking ability.

In the Junior section, it was the Leopards who triumphed over the Tigers.

On August 26 (Sat.) the English debaters met to decide whether or not "The press, the radio, and other information media do not give man a chance to think and be himself." On that occasion the Tigers routed the Lions, the winning house being represented by Niraj Sinha (A), Sanjay Sharan, Dilip Srivastava, and Subir Sen. In the Junior Section, The Leopards overcame the Lions. Here the speaking of Nilabh Mishra, Bhuwan Sinha, and Chandra K. Mishra was rated high.

In terms of the whole debate, Subir Sen (English) and Arun Kumar (Hindi) emerged as the top speakers.

During and after the various contests, some people commented on the apparent "lack of preparation and need for coaching in genuine debate style." The organizers and various houses have heard this comment and are anxious to do something about it before the next intramural debates get underway.

A special word of thanks is due to the "outsiders" who kindly acted as judges for both sections of the debates: Mr. K. B. Narain, Fr. R. P. Sah, Fr. J. B. Thakur, and Fr. A. Starr.

Fr. Murphy (Cont. from p. 1)

—only a few months before the glorious Day of Independence.

His first major assignment was that of Hostel Prefect and Vice-Principal at St. Xavier's from 1952-1954. He became Rector in 1954, and the following year was made Principal.

As Principal from 1955-1968, he did much to enhance the reputation of St. Xavier's School. His capacity for work, his good humour, and great love for building boys into men will be remembered for generations.

"If ever a man..."

(Cont. from page 5)

was happening, I found myself sitting on his lap, gulping down bread and butter and tea. This little incident, one of so many, just shows you how well he understood his boys, seniors and juniors alike.

Today I can stand up before you and express myself unhesitatingly. But even five years ago I was too shy to speak out even in class. When I was in the seventh we were having a little compulsory recitation in class. For some reason, Father happened to be present. I gave my speech in my usual faltering, stammering manner, — the more so because he was present. A few days later we had to submit our names for the English elocution contest. It never struck me to give my name. The next day, Fr. Murphy called me to his office. I went, nervous and frightened. He showed me the list of those boys who had given their names and said, "Son, why isn't your name here?" I was dumbfounded. I can't speak!" I told him. "Aren't you speaking now?" he asked. "But before a crowd, in a contest!" He said, "Of course you can, you can do anything if you try hard enough."

I do not know what he meant to others, but for myself I do believe from the depths of my heart that if ever there was a man who lived up to the motto of St. Xavier's *For God and Country*, it was Fr. Murphy. Let his life be a source of inspiration to us always.

Subir Sen, XI

Art Competition

(Continued from page 1)

Best winners from Xavier were: Anand Narayan (Consolation), Saurabh Gupta (Second), Sudipto Das (Consolation), Sunil Kayan (Consolation), Manoj Ram (Consolation), Debabrata Gupta (Consolation), and Balaji Mohnish (first).

Those who wish to see the prize-winning paintings may do so at a special exhibit to be shown during the Xavier Fete, October 7.

Xavier Life

Editors

Pradeep Mishra
Sanjay Sharan

Reporters

Amit Sinha, Arun Kumar
Arvind Ajitsaria (Photog),
Narendra Singh, Anand
Singh, Ashish Das Gupta,
Prabhat Singh, Vincet Singh
Neeraj Sinha (A), Raj K.
Bhawnani, Sourendu Gupta.

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editors of *Xavier Life*, St. Xavier's, Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjwan Press, Patna-11.

जीना कैसे ?

जीवन एक अनमोल बेला है,
कभी नहीं वह अकेला है।
संत जेवियर्स का क्या कहना,
सात अक्तूबर यहां बड़ा मेला है।
'सूम' कंसा पाल रखा है,
भाग्य आपका न काला है।
दौड़ पड़ें कुछ देर न करें,
पास खड़ी विजय-माला है।

'He loved his work'

(Cont. from p. 5)

So you see from these words of mine how well he should be remembered here at St. Xavier's. The truth was: he loved St. Xavier's,—he loved you boys—he loved his work of education. He accomplished so many things, but it was not what he did but the Man that he was that explains his whole life.

In this short appreciation of him we have left many things unsaid, many things. But on behalf of all the teachers who ever worked at St. Xavier's, let me this morning pay him the tribute of our deepest respect and gratitude for all his kindness.

He was the finest of gentlemen in all his dealings with us. God has taken him away from us at the height of his efficiency, at the zenith of his educational experience. And whatever God does, he does for the best.

But we Xaverians this morning lift our hearts in a prayer of gratitude to that good God because he gave to St. Xavier's

that splendid Man,
that devoted Principal,
that excellent Priest of God,
Father Gordon Murphy!

एक और मुख्यमंत्री:

आज हम अपने देश की स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती मना रहे हैं पर क्या हमने इन पिछले वर्षों में अपनी उपलब्धियों को आंका है? आज हमारी तथा हमारे समाज की क्या स्थिति है, इस पर हमने कभी विचार किया है? आज हमारी नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति कसी है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर को यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

Canteen Theft Reported

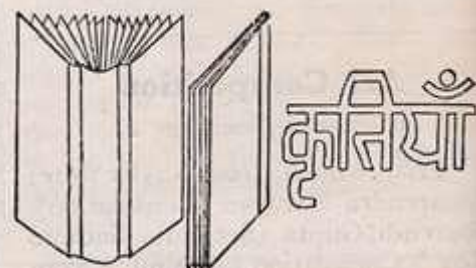
On the morning of Sept. 21, as the chairman of the C. M. C. (Canteen Management Committee) walked into the canteen to count the money of the previous day's sales, he was caught by a great surprise. THE MONEY WAS MISSING, and with no clue as to what had happened to it. The following day, and the day after that, more losses were reported and he became very worried.

On Saturday the 23rd, the C. M. C. formed its own CID and made a thorough search of the canteen premises. All the while, some were blaming the managers, others the customers.

Then, a great discovery! Hidden far back in a deep drawer were Rs 118.00 and four luxuriously bedded baby rats. Fortunately mama and papa rat had not converted the money into their own currency.

एक कटु सत्य

ने अपनी कृति 'एक और मुख्यमंत्री' में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। यह कहानी है निर्वन परिवार के एक बंकार ग्रेजुएट अरविन्द की जो अपनी मामी के तानों से ऊबकर घर छोड़ देता है। दूसरे शहर में भी वह राजनीतिक पार्टियों के चक्कर में आकर इधर-उधर भटकने लगता है। इसी दौरान उसे कई कड़वे अनुभव प्राप्त होते हैं जो उसके जीवन की दिशा ही बदल देते हैं। उसके पथ राजनीति की ओर अग्रसित



होते हैं। चुनाव में उसे किसी तरह कांग्रेस पार्टी की उम्मीदवारी मिल जाती है और वह चुनाव भी जीत जाता है। एक बंकार युवक अब एक विधायक है। अपनी चालाकी तथा तिकड़मबाजी से वह किसी तरह मन्त्री पद प्राप्त कर लेता है। और फिर मुख्य-मन्त्री जिस पद पर वह दस साल तक लगातार रह जाता है। बाद में जब उसे लोग अपना नेता चुनकर मुख्यमन्त्री नहीं बनाते तो वह दल बदलकर तथा कुछ विधायकों को मिलाकर फिर मुख्यमंत्री बन जाता है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने आज के मानव-जीवन पर करारी चोट की है। आज मनुष्य कितना झूठा, निर्मम भ्रष्टाचारी, जातिवादी, व्यक्तिवादी तथा स्वार्थी हो गया है, इसका अन्दाज हमें इसे पढ़ने पर ही होता है। अरविन्द को जनत को पूर्ण सहानुभूति प्राप्त है पर वही जनत तथा देश का सबसे बड़ा दुश्मन है। चुनि उपन्यास व्यंग्यात्मक है, इसमें हास्यरस का भी समावेश है। पूरी तरह से देखिए त 'एक और मुख्यमंत्री' एक कटु सत्य का हमारे सामने रखता है, जिसे हमें स्वीकार करना चाहिए। ■ प्रदीप कुमार X

Grand time for making new friends



Staff Wins Match by Narrow Margin

The hearty cheering and drum-beating of 800 boys was not enough to change things on Nov. 28 when the Staff basketball team defeated the Students by a score of 24-21. At first sight, the score makes the game sound like it was a strongly "defensive" one. Actually there was a good deal of offense and attack. But it was about as direct as a soldier shooting at his target blindfolded. Even so, everyone enjoyed the game and seemed unanimous in thanking Fr. Gomez for planning it as he did.

From Miss... to Mrs.

XL cables heartiest congratulations to Mrs. Teresa (Abraham) Gilbert on her recent marriage (Oct. 24) to Mr. Anthony Gilbert. Since her husband is on the staff at St. Michael's, there should be no lack of school talk at the supper table.

Jubilation

In October, Bishop Augustine Wildermuth celebrated his 50th year as a Jesuit and 25th year as a Bishop. St. Xavier's joined with other schools in Patna to mark this grand occasion by staging a two and a half hour show entitled *Message of Love*. There were morning as well as evening shows at Rabindra Bhawan on Oct. 31 and Nov. 1. Nearly 100 Xavier's boys attended the morning program on Nov. 1. Besides the dance-drama, there were shorter choral numbers which included the lively "Freedom Ain't Free" and "Up With People". St. Mary Peter Claver from Notre Dame Academy was the over-all director.

Xavier Life



Vol. 21, No. 6 ST XAVIER'S PATNA - December 6, 1972

विद्यालय में बाल दिवस

१४ नवम्बर को विद्यालय में बाल दिवस बड़े उत्साह तथा सकलतापूर्वक मनाया गया। उस दिन सभी कक्षाएं स्वयंसेवक रही तथा हार्पोल्लास का वातावरण दिन भर छाया रहा। कार्यक्रम की शुरुआत चारों दलों के मार्चपास्ट के द्वारा हुई जिसने शिक्षकों तथा उपस्थित अभिभावकगण को बड़ा प्रभावित किया। इसके बाद दो-एक गीतों के साथ इस समारोह का कार्यक्रम शुरू हुआ। तत्पश्चात् आया उस दिन का सबसे मनोरंजक कार्यक्रम फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता जिसमें बचपन के भोलपन पर विभिन्न रूपों की छाप लिए हुए किशोरों तथा बच्चों का समुदाय बड़ा फव रहा था। किसी ने सेट जी का रूप बनाया था तो किसी ने डोंगी साधु का। जापानी लड़की के अलावा छात्रों ने नोर्सेनिक शिक्षक, गुण्डों के बांस तथा पंजाबी भंगड़ा टोली

की झांकियां प्रस्तुत की। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला सप्तम वर्ग के विनीत गुप्ता को जिसने एक सुन्दर जापानी लड़की का भेष बनाया था। दूसरा स्थान भिलारी की भूमिका करनेवाले पंचम वर्ग के राजीव को मिला। तीसरे स्थान के भागी सप्तम वर्ग के चन्द्रकिशोर मिश्र तथा राजीव रंजन हुए जिन्होंने डोंगी साधु का तथा सेट जी का रूप बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया था। फैंसी ड्रेस के बाद एक फिल्म 'एक फूल दो माली' का प्रदर्शन हुआ जो बड़ा ही सफल रहा। इस तरह बाल-दिवस बड़ी सफलतापूर्वक मनाया गया। अगले वर्ष भी हम ऐसे ही बाल दिवस की कामना करते हैं।

Prizes Earned

A Fancy Dress Competition, organized by the Kishore Dal, was held at the Botanical Gardens, November 18. Xavier joined 15 other schools of Patna in the show which began promptly at 3 p. m. and lasted some two hours.

His Excellency Governor Barooah was present to distribute the prizes. Pradip Agrawal and Vinod secured third place in Group B. Prizes from an earlier Painting Competition which took place at Hardinge Park (Nov. 12) were also handed out. Balaji Mohnish scored a first prize in his division. Congratulations!

Fr. D'Mello Now at Kurji

Our athletic and affable VP received a promotion in early November, when he was made acting Principal at St. Michael's. Fr. D'Mello's absence is felt dearly, although it is not really complete. Just like when he was VP, he has a way of showing up when you least expect him.



व्यस्त बेला

काल के पहिए ने हम सबको वर्ष के अन्तिम खण्ड पर ला रखा है जो कि वर्ष भर का सबसे व्यस्त समय है। इधर परीक्षाएं और उधर अन्य कार्यक्रम। अतः व्यस्तता की इस घड़ी में हमने जेबियर लाइफ के इस संक्षिप्त अंक के निकालने का विचार किया है। चार पृष्ठ के इस अंक में भी हमने विद्यालय की घटनाओं तथा सम्बन्धित समाचारों को प्रस्तुत करने की यथासम्भव चेष्टा की है। हम अपने इस प्रयोग में कितने सफल रहे हैं, इसका मूल्यांकन तो आप ही कर सकते हैं।

विद्यालय में मनोरंजन-कक्ष का निर्माण अधिकारियों की ओर से छात्रों के लिए उत्साहवर्द्धक है। बहुत दिनों से हम सबको एक ऐसे मनोरंजन कक्ष की कमी खल रही थी। पर जिस कक्ष में इसका निर्माण हुआ है वह इतना बड़ा नहीं है कि सभी इच्छुक छात्र इसमें प्रवेश पा सकें। अतः बहुत सोच विचार के बाद यह निर्णय लिया गया कि तत्काल उच्चवर्गीय छात्रों को ही इसमें प्रवेश दिया जाय। इस निर्णय के कारण अन्य छात्रों के मन में हीन भावना पैदा नहीं होनी चाहिए तथा उन्हें यह समझना चाहिए कि यह निर्णय मजबूर होकर ही लिया गया है। भविष्य में सबों की अपनी-अपनी बारी आएगी ही।

प्रदीप कुमार मिश्र

Mother Teresa

Mark Dec. 10 on your calendar. That's the day a volunteer group has fixed for a **Fancy Fair** which will be held in aid of Mother Teresa and her charitable works. Besides winning prizes and helping a good cause, you can meet some of your classmates. At least two stalls will be manned by Xaverians. The place: Christ Church compound (10 am—5 pm).

Happiness is a wondrous commodity. The more you give, the more you have.

Former Editor of AR Talks on Shakespeares and Newspaper

Standards 8-11 were treated to a guest lecture on Nov. 15. Mr. Jacob Sloan (from USIS, Madras) and Mr. Pradip Dey (USIS, Calcutta) presented a slide lecture entitled "Shakespeare on the American Stage." One thing that stood out was how more and more U. S. stages are being built almost in the midst of the audience, so that nobody is very far from the action. Just as interesting was his talk the next afternoon on "How to Read a Newspaper." After this talk he met in a smaller session with the XL Staff to answer their questions and suggest ways in which they might improve their "esteemed journal." Mr. Sloan, by the way, was the Editor of the *American Reporter* from 1966-69.

Handball Final

After many postponements, the Open Handball Tournament began on Oct. 27. Most of the matches were played during the lunch break and after 3:35 pm. The finals took place on Saturday, Nov. 18. Also on the same day were a cricket match between the combined strength of 6th & 7th vs 9th on the Maidan, the Staff Picnic at Maner, and a Fancy Dress Competition at the Botanical Gardens. Hence the number of spectators was small. Or so, at least, Nikesh Prasad (organizer of the tournament) likes to think. Below is the lineup of the winners:

JUNIORS

Singles: Bimal K. Singh

Doubles: Bimal K. Singh & Harmindar Singh

INTERS

Singles: Ajay Singh

Doubles: Ajay Singh & Atul Sinha

SENIORS

Singles: Anil Pathak

Doubles: Amar Sinha & Sandip Choudhary

Quiz

1. Here is a lucky number—14857. Multiply it by 2 or 3 or 4 or 5 or 6. You seem to get the same numbers in different digits. Now do it with 7.



2. There are 9 oranges. 8 weigh the same and one is lighter. You have a balance. You are allowed to use it twice—How would you find the orange which is lighter?



3. On the Marina Beach in Madras the height of the tide is 15ft. every time it rises and falls. There is a huge boat and it has a ladder attached at the side. Each step of the ladder is 3 ft. high. How many steps does the water reach when there is a tide?

(Answers on Page 3)

चिह्नों दिनों विद्यालय में कुछ मनो-
 चित्रों का प्रदर्शन काफी चर्चित रहा।
 इन चित्रों को सभी फिल्मों समाजिक थी।
 इन को आखें एक ऐसे परिवार की कहानी
 को चिह्नों बड़े तथा छोटे बेटे की शादी
 करीब तथा धनी परिवार में ही
 होती है तथा गरीब वह अपनी सास के
 साथ व्यवहार तथा अत्याचार की भागी
 बनती है। अन्त में सास की मन को आखें
 चिह्नों के बाद उस परिवार की सुख-शांति
 प्राप्त हो जाती है। 'आस का पंछी' भी
 एक गरीब नायक तथा धनी नायिका की



The first major "happening" in the new senior lounge took place on Nov. 24 when Dr. Mukopadhyaya spoke to Stds 10 & 11 on "Medicine as a Career". The talk began at 5 p.m. and proved to be very informative. Dr. Mukopadhyaya is pictured here with a number of seniors who were present. From left: Chandra Shekhar Sharan, Jagdish Lalchandani, Anil Pathak, Subir Sen, Dilip Srivastava, Gautam Chatterjee, and Ravinder Bassi.



कहानी थी जिसको युद्ध दृश्य तथा हास-
 विनोद ने काफी मनोरंजक बना दिया था।

एक दिवस के अवसर पर 'एक फूल
 दो बानी' का प्रदर्शन बहुत सफल रहा।
 कुछ चरित्रों के बीच चक्कर काटती
 कहानी का केन्द्र-बिन्दु था एक छोटा-सा
 बच्चा-माला लड़का जिसके अभिनय ने
 सभी का प्रभावित किया। अच्छी
 कहानी के अलावा फिल्म में पर्वता-
 नारायण, नार-बाइ, हास्य-वर्ग और पैरो-
 कीर्ति की भरमार थी जो फिल्म के मनो-
 रंजन बनाने में काफी योगदान देते थे।
 इन दो फिल्मों की तुलना में इसकी
 कहानी तथा ध्वनि के अच्छे होने के
 अलावा यह फिल्म रंगीन भी थी जिसके
 कारण इसका प्रदर्शन और भी
 सफल रहा। विद्यालय में सिनेफोरम धीरे-
 धीरे चर्चित कर रहा है। खैर यह तो
 ही चर्चित की बात, आइए अब भविष्य की
 बात देखें। अमर सिन्हा

First Things Second

Teacher: What are you jumping
 up and down for, Sandip?

Sandip: I took my medicine and
 forgot to shake the bottle.

Report Cards

Report Cards will be distribu-
 ted on Dec. 20 (Wednesday).

New Books

Book lists will also be distri-
 buted on Dec. 20. Boys are ex-
 pected to buy their books for
 the year 1973 well in advance.
 The following days have been
 reserved for the various classes
 to buy their texts from the
 bookstore on cash payment:

Std. 2 A&B-21 Dec., 9:30-12:00 noon
 3 A&B-21 Dec., 1:30-4:00 pm
 4 A&B-22 Dec., 9:30-12:00 noon
 5 A&B-22 Dec., 1:30-4:00 pm
 6 A&B-23 Dec., 9:30-12:00 noon
 7, 8, 9, 10, 11-23 Dec., 1:30-4:00 pm

School will open for the year
 1973 on Monday, Jan. 8. It will
 be a full class day.

ANSWERS: (For Quiz on P. 2)

3. The boat rises with the tide!
 the third one is the lightest.
 same one is lighter. If they are equal
 remaining 3. If they don't weigh the
 on each side of the balance from the
 equal put them aside. Put one orange
 side of the balance. If they weigh
 2. Take 6 oranges. Put 3 on each

Racqueteers

Table tennis received a big boost
 this year with the arrival of the
 handsome new regulation table from
 Bombay. Good evidence for this
 could be seen at the recent T.T.
 Tournament in the school hall,
 where every match displayed a
 high grade of ping-pong. Following
 are the winners of the various
 categories:

JUNIORS

Singles: Uday Shankar

INTERS

Singles: Bhuwan Sinha

Doubles: Pandey S. K. Sahay and
 Shakil-Ur-Rehman

SENIORS

Singles: Niraj Sinha, (A)

Doubles: Amarendra Narayan &
 Jagdip Singh

Two of Xavier's most promising
 players went from the school tour-
 nament into the Bihar Junior State
 T. T. Championships. In this, Niraj
 Sinha (A) and Raj K. Bhawnani
 became the doubles champions, and
 Niraj narrowly missed taking the
 singles crown. Niraj, however, has
 been invited to represent Bihar at
 the National Tournament in Ah-
 medabad scheduled for Dec. 27-29.
 This is a great honour and oppor-
 tunity. The whole school will be
 following the tournament closely!

Xavier Life wishes its readers

Merry Christmas

Happy Holidays

A Bright New 1973!

* * * * *

Leopards Come Out No. 1 for 1972

	I	II	III	IV
	Leopards	Tigers	Lions	Panthers
Weekly Tests	1426	1361	1278	1503
Debates	400	400	200	200
Sports Day	768	864	630	924
Music Competition	72	36	8	56
Football	500	300	700	100
Basketball	50	300	175	100
Table Tennis	300	100	175	50
Handball	150	125	150	25
March Past	884	1018	908	970
Grand Total	4550	4504	4224	3928

in the Polls

...the last two class periods... the Student... to elect its... the coming year.

...12 candidates mount-... the stage and campaigned for... Unlike last year the voters... more alert this time.

...asked a number of good... questions which quick-... candidate out into the... "What do you mean when... the Council can do a... this year?" "Do you... change the constitution?"... some of your achieve-... school during the past 2

(Contd. on page 3)

Xavier Life



Vol. 22, No. 1

March 8, 1973

Top Xaverians Honoured

Recognition Day was held on Feb. 8. This year's ceremony began outside with the flag hoisting and impressive... by Standard XI. After this everyone gathered in the large hall to hear the valedictory speech delivered by... Sen (excerpts on page 4), and to receive the... and certificates earned by hard labour during the... year.

The chief guest was Fr. Joseph... S.J., superior of all the... working in this region, as... in Delhi and Jaipur. After... in English (excerpts on

page 5), he spoke for a few minutes in Hindi to the smaller boys up front. His analogy of two bullocks pulling together proved a big hit, and left behind a lesson that was valuable not only for the junior boys.

Awards were given out to boys who stood first and second in their class in all subjects as well as in the individual subjects (see photo on page 7). In addition, one boy from each class was honoured for his example and all round involvement in school affairs during 1972.

(Contd. on page 3)

Second To One

A team comprising two veterans and two newcomers ventured out to represent Xavier at the General Knowledge Quiz on Feb 7. The quiz was sponsored by the All Patna One-Act Play Committee and was held this time at St. Joseph's School.

Five schools participated in the game of wits, while the jovial quizmaster, Mr. K.C. Sharma, called out the questions.

St. Michael's won first place (15 points), St. Xavier's were second (10 points), and Notre Dame Academy a close third (8 points).

In her words of appreciation after the contest, Mrs. Mukhopadya congratulated winners and losers alike.

The Xavier team included Sanjay Sharan, Neeraj Sinha (B), Jagadip Singh, and Saurabh Das.

Social Service League Formed

During the lunch-break on Feb. 7, a special meeting called by Fr. ... and Mr. Suresh Pathak... the formation of the Social... League at Xavier. For... there have been inquiries... the possibility of SSL getting... again, but nothing was done... recently.

Those present at the meeting... elected Abhay Kri-... as President, Sunil Srivas-... as Vice-President, Shahidur... as Secretary, and As-... as Asst. Secretary.

Henceforth the Red Cross Soci-... will be a part of the League. Last time was spent discussing... projects the SSL should give... to.

Club stages dramatic meet

"To be or not to be" would have made a good motto for our dramatists during the past couple of years. At last the dilemma has been solved, though, and happily it's in favour of existence. A decisive meeting was held on Feb. 20th and the packed classroom was a sign surely of our strong desire to do something in dramatics.

Two of our teachers, Miss Sheela Shah and Mr. S.D. Mishra, spoke at the meeting. They stressed the fact that the club's success would depend entirely on the good will and enthusiasm of the members.

An inter-house dramatic competition will be staged near the end of the term. The house captains will have to lead the way.

A Judicious Move ?

At a meeting in early February the Student Council came up with a proposal to establish a *student court* at Xavier. The idea was discussed for some minutes and, even though some were foggy about what exactly the court would do, all were in favour of having it.

You don't have to talk to many boys to see that the fogginess has not completely disappeared. Ask your friends what they think the *student court* is all about and you are liable to get many different answers. This is no cause for concern provided all of the answers say pretty much the same thing. But has anybody spelled out in detail what the jurisdiction of the court will be?

If I am liable to such a court, I would like to know ahead of time where I stand. Who has the right to summon me to the court? And once I am there, will I have to plead my own case? If not, can I choose my lawyer? And who are the lawyers anyway?

Advocates of such a court argue that it will be concerned only with petty cases and minor quarrels. Have these become so numerous? And if they are "minor", maybe taking them to court will just make them "major". It is in a skeptical mood that we ask these questions.

There is one large benefit that could come from such a court, and that is the experience it would give to the lawyers and judges among us. Every case would be an opportunity to practice the art of prudence and correct judgement. We would see how extremely difficult it is to weigh the pros and cons in an argument. Lawyers would have to use all their wits and make sure no evidence was overlooked.

In short, those who stand to gain most from a *student court* are the court officials and not the plaintiffs. If sponsors of the idea in the Student Council think otherwise, they are invited to come forward and express their views. XL will be happy to print them.

Congratulations

Saroor Afzal (7B) received 2nd prize in Group B and Abhijit Choudhary (4A) won a consolation prize in the Fancy Dress Competition held by the Leo Club, March 4th, on our campus. More than 20 schools took part. St. Mary's High School had the highest number of winning entries.

Coming Soon

The Parents-Meet-Teachers Week will be at the end of this month. (Mar. 26-30: each evening from 4:00-6:30 pm.) A special circular will be sent out giving further details.

Dear Sir :

A short while ago Fr. S. generously offered a chance to students to conduct the morning assembly. The senior students did it and were very successful. S.D. Mishra's booming "Salute" and Fr. Principal's and pleasant "Good Morning Boys" were imitated by the boys. At the same time the assembly ran smoothly and orderly. It is just an indication of how well we can handle a really possible job. If we are given the opportunity to perform this even once a week, as the circumstances permit, many of us will be showing up our abilities to the school and many unfamiliar faces will come to light. I hope we can continue this.

Yours sincerely
Niraj Sinha

Speak Out !

महोदय,

इस पत्र का उद्देश्य 'टेबल टेनिस टूर्नामेंट' वर्ष के आरम्भ में हो यह सुझाव है जिससे कि पटना में तथा पटना बाहर जानेवाली अन्य टूर्नामेंट में भाग लेने वाली टीम का चुनाव हो सके। पिछले 'टूर्नामेंट' साल के अन्त में हुआ था। अभ्यास के लिए पूरा समय नहीं मिल सका क्योंकि परीक्षा का समय अत्यन्त निकट था।

आपका विश्वास
अशोक सराफ

Dear Sir :

I want to call your attention to our cycle shed. I'm afraid the cycles going in are not the ones when they come out. Day after day the number of cycles increases but the space remains the same. As a result the cycles are so crowded that it is suggested that if one is moved out, another should be moved in. A whole bunch of cycles is taken out over. Is there anything we can do about this problem?

Yours sincerely
Rajiv Dhillon

NOTICE

The yearbook editors report that their big project has finally been given to the printer. If all goes well you will have your yearbook by early April (1973!).

SC Election

(Contd. from p. 1)

"Do you consider the Student Council to be just one of the many clubs in the school?" These questions as these gave the students something to think about on the stage. And the answers which gave the voters some food for thought at least for making a choice.

After this speech-making, the outgoing president, Arun Kumar, made a plea for thoughtful voting and explained the procedure to be followed.

The voting went rapidly and the following boys were given a chance to lead the Council during 1973: Niraj Sinha (A), President; Sarabj Das, Secretary; Soumen Gupta, Vice-President, and Arun Sinha, Asst. Secretary.

The school looks forward to their leadership and initiative.

Recognition Day

(Contd. from p. 1)

After a lapse of four years, the coveted Xavier Medal was presented this year to Subir Sen. The importance of this medal can be judged more by the people who received it than by any other. It attempts to honour the Xavierian whose example has been outstanding—in studies, co-curriculars, service of others, and love for his school. If the excitement which greeted this year's announcement of the award meant anything, the choice was highly popular and the medal richly deserved.

The morning's program ended with a few words from Fr. Scaria, thanking the parents and other guests who were kind enough to attend.

‘एशिया ७२’ से आकर्षित ४३

पिछले वर्ष जब सम्पूर्ण देश में ‘एशिया ७२’ की धूम मची हुई थी, हमारे विद्यालय से भी फा० गोम्स के नेतृत्व में ४३ लड़कों की एक टोली ‘एशिया ७२’ तथा दिल्ली और आस-पास के दर्शनीय स्थानों को देखने ११ दिस० को चल पड़ी। सफर की हमारी पहली मंजिल दिल्ली थी। वहाँ हमने दो-तीन दिन ‘एशिया ७२’ का मली-मौति परिभ्रमण किया। यह बहुत ही बड़ा तथा अपने ढंग का अनोखा मेला था। कई

“Taffy and the Jungle Hunter”

Set in the beautiful, wild background of Africa, *Taffy and the Jungle Hunter* (shown Jan. 15) was an absorbing spectacle of wild life, though the story itself was nothing to get excited about.

It narrates the adventures of young Bough, the son of a forest ranger. As we follow him on his



adventures, we see how interesting life can be in the jungle.

But one day Bough faces a crisis when his father announces that urgent business is calling them back to civilization. Bough has grown very attached to Bozo (a pet chimp) and Taffy (a baby elephant). He can't bear the thought of leaving them behind. Instead he leaves his home behind and takes his two pets into the jungle on a great adventure.

Days go by before his father's search party catches up with them. And it's none too soon, since Bough is on the point of collapse.

Does this mean the end of Bough's friendship with Bozo and Taffy? Not at all. The ranger tells his son that his two pets can come along on the trip back to America. To this kind of news there's only one answer: "Gee, Golly!"

प्रभावशाली तथा आकर्षक मंडपों के पीछे ठसाठस लाखों की भीड़ नी बजे रात्रि तक लगी रहती थी। रूस, जर्मनी, जापान, हरियाना, महाराष्ट्र एवं भारत-सुरक्षा मंडप विशेष श्रेय के पात्र थे। इस बृहद् मेले का मजा लूटने के पश्चात् हमारी टोली ने दिल्ली के विभिन्न प्रमुख स्थान—कुतुबमिनार, अजायबघर, जन्तर-मन्तर, त्रिमूर्तिभवन, चाणक्यपुरी, लालकिला, शांति-वन, राज-घाट आदि का भ्रमण किया।

स्थानों के अलावा राष्ट्रपति श्री गिरि तथा प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारे पास फूलों की माला तो नहीं थी, फिर भी हमलोगों ने अपने जेब-खर्च से सुरक्षा-कोष के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी को दो सौ रुपये का उपहार प्रदान किया। यह उपहार हमारी टोली के सबसे छोटे लड़के संजीव झा द्वारा दिया गया, जिसके प्रत्युत्तर में उसके गाल पर हल्की-सी थपकी लगाते हुए प्रधान मंत्री ने “बहुत अच्छा, बहुत धन्यवाद” कहते हुए हमारी तुच्छ भेंट को सहर्ष स्वीकार किया। राजधानी का दर्शन कर हम लोग एक दिन आगरा गए। वहाँ फतेहपुर सीकरी, सिकन्दरा, आगरे का किला तथा विश्व-विख्यात ताजमहल देख कर काफी रात गए दिल्ली लौटे। सप्ताह भर का यह भ्रमण हम सबों के लिए अत्यंत सुखद, अनुभवपूर्ण और सफल रहा। १९ ता: को सहीसलामत हम सभी पटने वापस आ गए।

अन्त में दिल्ली के संत जेवियर्स स्कूल के सभी अधिकारियों के प्रति हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने वहाँ हमारा भव्य स्वागत किया।

विनय राय IX

White Ants Vanquished

Our old relic of a cinema hall is coming back to life again. The greenroom, which was all infested with white ants, has been demolished and rebuilt. And in the main hall a “false” ceiling has been installed and fresh paint applied. This will be a tremendous boost for the dramatics club.

—A Senior's Valedictory—

Valedictory is a word we don't use very often—just once a year. It means a speech of farewell, the kind of farewell which only seniors can speak as they leave their alma mater and begin the adventure of life. This year the privilege of speaking on behalf of the seniors of '72 went to Subir Sen, a well-known figure on campus and former Editor of Xavier Life. We would like to share with our readers some excerpts from Subir's valedictory.—Ed.

Honourable Guests, Respected Teachers, and my Fellow Xaverians :

Recognition Day marks the end of a saga, the saga of ten years of school life. It all started ten years ago one fine morning in January, when a group of awe-struck, wide-

eyed little fellows gained the distinction of being Xaverians. In the beginning we were a little afraid of the big world of noisy classmates and formidable teachers. Some of us even cried a little. But gradually we settled down.

It is impossible for me to tell you about all that we have imbibed from Xavier. We have come into contact with many people on this campus. We have passed through the hands of many teachers who have guided and helped us. We are grateful to all of them because they have taught us the art of writing well, of expressing ourselves clearly and lucidly. But more than all the classroom training, we are grateful for all those helps that go into the making of a man. Knowledge is no doubt an asset, but to be a man of integrity, a man of honour, a man of character—that is something. And I hope we have achieved a bit of that.

. . .

Today, as we are about to set out on the adventure of life, we find it difficult to express our gratitude for all the good things that Xavier has given us. We shall come back in later life and look at these grey walls and the imli tree and they will call into life the memories of happy days spent at Xavier.

But before we say farewell, let us express a deep, sincere, and genuine gratitude to all our teachers, to those who have guided our young lives, to all who brought sunshine and happiness into our school-boy existence. To all—teachers, friends, juniors, seniors, servants, and especially our parents and families, we express our deepest gratitude for all these full and happy years at Xavier.

Final Salute

XL would like to pay tribute to the following eleven points of the AIHS curriculum, thank them for the good spirit they have shown all the time they were at Xavier, and wish them God's blessing and success in their coming exams and future careers.

Abhay Shankar Dula
Anil Pathak
Chandra Shekhar Sharma
Dilip Srivastava
Gautam Chatterjee
Jagdish Lalchandani
Jyotirmoy Chatterjee
Pradeep Tandon
Ravinder Bassi
Sanjay Choudhary
Subir Sen



Seven Seniors Opt for Matric

Seven out of twenty three seniors (1973 batch) will be sitting for final S.S.B. (Matric) Examination which begins on March 5. This is an option recently made available to boys in AIHS schools in Bihar the seven boys are : Amarendra Narayan, Anand Singh, Arindam Guha, Bepin Behari, Narendra Singh, Nirmal Saraf, and Surya Bhattacharya. XL wishes them smooth sailing through this final exam and every success as they move into college.

नए वर्ष के नए चे

नए वर्ष की शुरुआत में ही मैं कई नए शिक्षकों का पदार्पण हुआ है। मैं एक फादर जीजें थाना हूँ, जिन्होंने के अलावा देर से आने वाले लड़कों की डायरी पर हस्ताक्षर करने का काम किया है। उनका सदाबहार है। मैं मिलनसार चेहरा ही अक्सर देखा जाता है पर यह तो लेट-लतीफ ही बता सकता है कि वे कितने कठोर हो सकते हैं।

विद्यालय के अंग्रेजी तथा संस्कृत को सुश्री आर० सुख के आगमन के बड़ावा मिला है। उनपर प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के शिक्षण का भार सौंपा गया है। उनकी विभिन्न हस्तकलाओं एवं साहित्य रचि विद्यालय के लिए लाभदायक हो सकती है।

ब्रदर जोस थोमस एक और नए शिक्षक हैं। छोटे बच्चों के खेलकूद के प्रारंभ के कारण उनकी बच्चों में लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही है। इन सब शिक्षकों के अलावा उन्हें अपनी बी० एस० परीक्षा के लिए भी काफी सफलता पड़ता है।

नवनीत सौरभ: एक सफल संकलन

नारायण दत्त द्वारा संकलित 'नवनीत सौरभ' के प्रथम परिचय में ही आकर्षण का दृक् है। आद्योपान्त पठन के बाद यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि 'नवनीत सौरभ' का परिमल चिरस्थायी रहेगा। एक उत्कृष्ट पत्रिका नवनीत के बीस सालों के सफर से चयन की गई एक सौ एक सामग्रियाँ मानस-पटल पर एक अमिट छाप डोड़ती हैं। वैज्ञानिक, साहित्यिक लेख, कथा वर्णन, शिकार-कथा सब इस संकलन में पाए जा सकते हैं। सिक्के तथा डाक-टिकट संग्रहित भी अपनी मनपसन्द सामग्री इसमें पा सकते हैं। वैज्ञानिक लेख गहन तथा स्पष्ट करने को विवश कर देते हैं। 'लौ का विघटन' तथा 'फूलों में वर्ण भेद' काफी उत्कृष्ट होते हुए भी वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण हैं। विद्वत्विख्यात महापुरुषों आइन्स्टाइन, सी. डी. रमन, महात्मा गांधी आदि के बारे

में वर्णन हमें उनके जीवन को विभिन्न पहलुओं से देखने को मजबूर करते हैं।

खासकर हेलेन केलर का लेख 'केवल तीन दिन' तो बिल्कुल मर्मस्पर्शी है। यदि उन्हें तीन दिन के लिए ही दृष्टि मिल गयी होती तो वे क्या करती, इसमें उन्होंने बतलाया है। जीना ऐसे चाहिए मानों जिन्दगी तीन दिन का पैरोल हो। इसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका और 'रीडर्स डाइजैस्ट' के बारे में लेख रोचक ही नहीं जानकारीपूर्ण भी हैं। यही नहीं और कितनी ही छोटी-छोटी बातें, जिन्हें हम महत्वपूर्ण नहीं समझते, उनके बारे में भी रोचक सामग्रियाँ हैं। पूरी तीर पर यह कहा जा सकता है कि पाठक किसी भी श्रेणी या मनस्थिति का क्यों न हो, यह पुस्तक वह पसन्द करेगा ही।

जगदीप नारायण सिंह १०

First XI Humble Challengers

The match which everyone looked forward to so keenly turned out to be very one-sided. On Feb. 3rd the varsity cricketers took on the rest of the school and upheld their reputation rather well. The varsity batted first. In no time the score was 76 for 3. But then three wickets fell in quick succession and the challengers took hope. It was short-lived, though, as Sandip came to bat and amassed 42 runs. The Varsity were finally all out for 149.

The challengers fared poorly at bat, scoring 1 run for the first five wickets! Then they steadied off and managed to get at least 37 runs by the end of the match.

As captain of the challengers, Mr. Sebastian probably wondered whether he hadn't coached the varsity a little too well.

Anti-Smallpox Day

Dr. Francis reports that Feb. 3rd was declared "smallpox day". With the help of four other nurses from Holy Family Hospital, all the boys were vaccinated against smallpox. Next will come anti-malaria and typhoid injections. These medics deserve a warm thank you for the efficient and humane way they took care of us.

Captains Elected

A big meeting was held on January 31st to determine who would be head Tiger, Lion, etc for the coming year. Last year saw almost two sets of officers due to the sudden departures of certain captains. Even without making an oath of permanency for 1973 the fond hope is that the captains will be permanent. They are as follows:

TIGERS: Ravi Srivastava (Capt)
Shahidur Rehman (V.C.)

LEOPARDS:

Ravindra Puri (Capt)

Abhay Krishna (V.C.)

LIONS: Anil Bhawnani (Capt)

Ajay Singh (V.C.)

PANTHERS:

Pradip Bahri (Capt)

Sourendu Gupta (V.C.)

FOR GOD AND COUNTRY

Below are a few thoughts from Fr. Joseph Knecht's speech on Recognition Day. It was the kind of speech which helped both staff and students to see what we are, or should be aiming at in St. Xavier's. -Ed.

What are the needs of our country today? Over and above mere academic excellence there is needed a concern, a loving concern, for our less privileged brothers, for those who do not have even what is required for the necessities of life in food, shelter, clothing, medical care, and education.

Here at St. Xavier's we strive to be sensitive to the needs of our less-privileged brothers. Therefore, attention is given not only to academic excellence, but to all round growth.

As we adapt our educational programme to the needs of India, Bihar, and our local community,

we must continue to ask ourselves why 60% of our people are below the poverty line. *What concern is this of mine?* How is this related to the task of education? I know the entire staff of St. Xavier's will continue to ask this question of themselves. The parents and students must also ask themselves this same question. Our goal in education is to bring a child through a period of continual growth to adulthood where he can contribute not only to his own welfare, but to that of the nation. It is a goal that is high and our standard must be kept high. But we can attain it.

★ A lot of ground has been covered since we first reported on our "singing tadpoles" a year ago. Thanks to the keen interest of Mr. Kamal Das, free after-school lessons in tabla and harmonium are now being offered. Fr. Scaria has gotten the room repaired and freshly painted so that even the tone-deaf feel like singing. Besides, a new harmonium, (that includes scale changer, tremular, and coupler) has been bought.



News In Brief

NJB basket

★ The seniors have lately arranged their desks in a way that will be hard for other classes to imitate. Taking their cue from last year's seniors (can we call them post-seniors?) they have put their desks in a semi-circular, half-moon (though not loony) position. Senior Ashish says that, "It is not recommended for classes with more than 16 boys."

★ प्रमोद सिन्हा XI का कहना है कि हमारे स्कूल-कैटिन में कभी-कभी कुछ छात्रों की अनभिज्ञता हमारे मनोरंजन का कारण बन जाती है। हाल ही में एक द्वितीय वर्ग के लड़के ने काली 'आक्रा कोला' देख कर बड़ी सरलता से कहा, "मुझे वह शराब चाहिए।" बच्चे की गंभीरता को देख, प्रमोद के मुख से हँसी के फुहारे छूट पड़े। इससे उस बच्चे पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा। वह तो 'काउन्टर' पर पैसा रखे अपनी शराब का इंतजार कर रहा था। यहां पर उम्र का कोई सवाल नहीं उठना चाहिए। उस लड़के का कोई दोष नहीं। बात यह है कि 'आक्रा' बाजार से इतने दिनों से गायब था कि शायद वह लड़का यह भूल ही गया होगा कि भाई 'आक्रा' है क्या?

★ By some artful persuasion the Cricket XI managed to set up a smooth pitch in the front yard in January. But it didn't last very long. The authorities feel that the glory of a game like cricket should not be marred by broken windows!

★ संत जेवियर्स के छात्रों के पहले दल को, जो अखिल भारतीय उच्चतर माध्यमिक परीक्षा देने जा रहे हैं, वर्तमान एकादश वर्गीय छात्रों द्वारा एक विदाई भोज पर आमन्त्रित किया जा रहा है। यह विदाई उन्हें २९ मार्च को दी जायगी जबतक कि उनकी परीक्षाओं का बोझ उतर चुका होगा।

★ The Student Council has come up with something to gladden the heart of Cherry Blossom Boot Polish, Inc. It's called *Operation Shoeshine*. The House earning the most points in the preceding week is put in charge of inspection at each morning's assembly. Scuffle up violators of the neatness code are fined 10 paise and given a brush and some polish.

★ राजीव बासल VIII हमारे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने 'पराग' के १५ अंक पुस्तकालय को प्रदान किया है। छात्रों के लाभार्थ इनकी चार पुस्तकें बना दी गई हैं। ऐसे अनुदानों का हम सदा स्वागत करते हैं।

Xavier Life

Editors

Pradeep Mishra
Sanjay Sharan

Reporters

Amar Sinha, Arun Kumar,
Arvind Ajitsaria, Ashish
Das Gupta, Prabhat Singh,
Vineet Singh, Neeraj Sinha
(A), Nikesh Prasad

Address letters to: Editors of
Xavier Life, St. Xavier's Fraser
Road, Patna-1. Printed by
Sanjivan Press, Patna-11.

The Nawab's Game

A new book on cricket has come out by Sujit Mukherjee and is called *Playing for India*. It is the first of its kind on Indian cricket and will be of special interest to Xaverians since the author is an old boy of St. Xavier's and has sent an autographed copy inscribed as follows: "For the St. Xavier's boy who will play for India."

The book is a most astute appraisal of the Indian cricket scene from the time big cricket came to India till the handsome victory over the west Indies and England in 1970-71. Beginning at the beginning, the author narrates the tale of the Indian openers—who bore the fury of the new ball attack from the fast bowlers.

He discusses that dreaded Indian machinery, the human automatons, who could make the greatest batsmen prod and push almost



at mercy hour after hour, and others whose magical work with the twists of the middle third fingers was a delight to spectators, the 'spinning mill'.

One has heard stories of Ma and Hazare. Yet the way in which Mr. Mukherjee recovers these events, and lesser known ones, has a special appeal.

He attempts to give a complete history of Indian cricket, spares neither criticism nor when it is due. This is a book that deserves to be read by every cricket loving Xaverian, if he never gets the chance to "play for India"!

Victory Over Jalan

The PDCA match against Jalan High School on Feb. 4 was clearly a one man show. Gautam Chatterjee broke the hearts of the Jalan bowlers with an mighty knock of 62 (unbeaten), then went on to mesmerize the rival basmen with his dangerous off cutters.

In the early stages of the match, the Xavier batsmen were in the straits with 6 down for 38. Everything changed, though, as soon as Gautam and Sandip were up batting. They combined well, with Sandip leaving most of the scoring up to his partner. Very quickly 73 runs were on the board. But then Sandip unfortunately moved on to his wicket to a ball pitched outside the leg stump. However, there was no stopping Gautam. Time and again he lifted the spinners and pacemen over the heads of the fielders. He soon ran out of partners and the Xavier innings folded up at 119 and 23 overs.

The Jalan batsmen played two or three overs from Gautam and Sandip confidently. But soon ran into trouble. Gautam bowled their opener with a beautiful bowling. From then on it was a regular procession of batsmen to the sidelines. Finally, they were all out for 55, Gautam having the lion's share of the bowling—11 overs for 20 runs and 5 wickets.

Gautam was 62 not out. Sandip made 13 and Ajay Singh 11.



Pictured above are the boys who stood first in their respective classes at the end of 1972. Front row (left to right): Sanjay K. Sinha IIIB, Sanjeev Bansal VIIB, Shashank Priya IVB, Rajeev Ranjan Das VA, Prashant Kumar IVA, Rajeev Mohan IIIA; Back row: Varun Prashant VIB, Vineet Singh XI, Binoy Roy IX, Anil Bhawnani X, Sunil Agarwal VIIA. (The class designation after each name refers to 1973). A few boys were absent when the photo was taken.

The school extends its sympathy and heartfelt prayers to :

Abhay Dubey, whose father (Prof. G. P. Dubey) died suddenly on January 17 at the age of 58;

Rajesh Sinha (IX), whose father (Mr. G. P. Sinha, MLC) died of a heart attack on February 11 at the age of 52;

Gautam Chatterjee, who lost his grandmother on February 10.

May their souls rest in peace, and may the example of their lives be an inspiration to us.

This towering amarind

As soon as you enter the gate of St. Xavier's you can see a big tamarind tree just in front of our school building. How astonishing it is that from a tiny tamarind seed such a big tree has grown up and is giving us a lot of tamarind.

Its leaves are countless. The tree shows the greatness of God. Many boys rest and eat their tiffin under this tree. They even play games under it. This place, where the tree stands like a giant, is calm and quiet. It is very pleasant in summer. I always like to sit or stand under this tree and talk to my friends.

Being a very large tree, it bears a lot of tamarind which fall on the ground. The small boys are quite glad when this happens and they quickly eat them.

Sometimes they fall by themselves and sometimes because they are bumped by a rock. The small boys like to throw stones up at the branches. However, since this tree is so good to us, we should be kind to it. We should not throw stones at our friend.

Debabrata Gupta, VI B

Junior Leopards Surprise Crowd on Mar. 1st

The Juniors' Sports Day (March 1) was a great success. Mr. Sebastian and Br. Jose Thayil directed the show and were aided by many seniors and members of the staff. The slow beginning was due to the fact that the house captains had not prepared well a list of those who would compete.

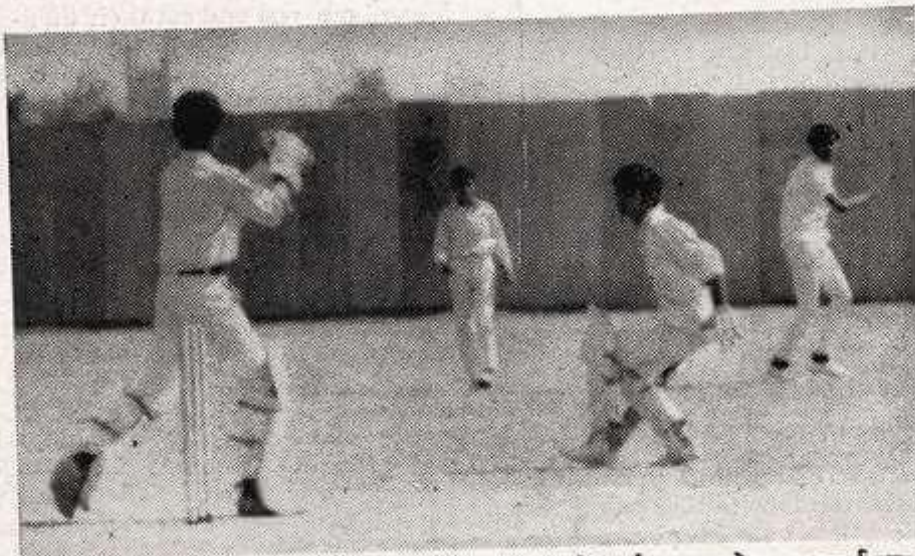
The Tigers and Lions led in the

early events, but soon the Leopards came from behind and took the day with 108 points. The Tigers were second with 90 points. Panthers third with 88 points, and Lions last with 74 points.

The main attraction is still to come: Senior Sports Day, March 10, on the Gandhi Maidan.

चल चित्र

वर्ष के आरंभ में ही हमारे विद्यालय में "सच्चा-झूठा" फिल्म दिखलाया गया। तेज वर्षा और ठंड के समय इसका प्रदर्शन सुखद-मनोरंजन रहा। 'सच्चा-झूठा' कहानी थोड़ी दो हमशकल नौजवानों की जिनमें एक गांव का रहने वाला सोधा-साधा भोला है, जो अपनी बहन की शादी के लिए पैसा कमाने शहर आता है और दूसरा धूर्त और बदमाश हमशकल रंजीत है। छद्म-वेषी रंजीत का भोले की भूमिका अदा करने की कोशिश करना, पुलिस का उसे पकड़ने का विफल प्रयास आदि घटना-चक्र के साथ फिल्म आगे बढ़ती जाती है। अंत में रंजीत गिरफ्तार हो जाता है, पर उनमें यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि सचमुच में भोला कौन है। यहाँ तक कि भोला की बहन भी उसे नहीं पहचान पाती। उनकी पहचान भोले के कुत्ते के द्वारा होती है। फिल्म में मनोरंजक कथानक, मार-घाड़ तथा हास्य-व्यंग्य होने के अलावा इसकी शूटिंग-स्क्रीनिंग तथा ध्वनि भी अच्छी जैची, जिससे कि इसका प्रदर्शन और भी आकर्षक साबित हुआ। भविष्य में हम ऐसे ही मनोरंजक चल-चित्रों की आशा करते हैं।



'कहीं छूट न जाए'—दिनांक ११ फरवरी को संत जेवियर्स तथा राजेन्द्र नगर हाई स्कूल के बीच खेले गए गज में सदीप चौधरी की गंद को रोकते हुए विकेट-कीपर अतुल सिन्हा। उस तरफ खड़े हैं, जगतभूषण नड्डा तथा बल्लेबाजी कर रहे हैं विरोधी दल के कप्तान राजीव। संत जेवियर्स ने यह मैच चार विकेट से जीता।

XL announces its second

Essay Contest

For all boys: Stds 6-11

Tuesday, March 13, 1973
9:45-11:15 am

Topics will be announced at the beginning of the contest.

Papers will be judged on 3 different levels: Stds 6&7, 8&9, 10&11.

You may write in either Hindi or English.

FABULOUS PRIZES FOR THE WINNERS!



मिजाज कीमत की चीज है।
अतः बेकार गरमाइये मत।

क्रिकेट की तैयारियाँ

क्रिकेट की लहर जहाँ सारे देश में फैली हुई है, वहाँ हमारा विद्यालय भी अपवाद नहीं रहा है। पूरे जोश के साथ क्रिकेट की तैयारी शुरू हो गई। शुरूआत कुछेक अन्तर्बर्गीय मैचों से हुई। उसमें अष्टम नौय है अष्टम तथा नवम् वर्ग के बीच खेला गया मैच जिसके रोचक होने के बावजूद अष्टम वर्ग १ पारी तथा ५५ रन में जीत गया। कुछ ही दिनों बाद स्कूल टोन पुनर्गठन हुआ जिसके नेतृत्व का भार अतुल सिन्हा के कंधों पर डाला गया। उपर कप्तान हुए सदीप चौधरी। टीम के निर्माण के थोड़े अभ्यास के बाद ही हमारी टीम ने जिला क्रिकेट समिति द्वारा आयोजित अन्तर्-विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए नाम दे दिया।

इधर विद्यालय एकादश ने २९-१-७३ को राजेन्द्र नगर की एक टीम "फ्रेंड्स क्रिकेट क्लब" से एक मैच खेला जिसमें सात विकेट से विजयी रहा। कुशल नेतृत्व तथा कौशल प्रदर्शन के कारण ही यह विजय हासिल हो पायी। क्षेत्ररक्षण में कुछ खामियाँ तो थीं, पर वे निरन्तर अभ्यास से दूर हो सकती हैं। रनसंख्या इस प्रकार थी—फ्रेंड्स क्रिकेट क्लब—४८ रन पर जीत खिलाड़ी आउट। संत जेवियर्स—४९ रन जीत खिलाड़ियों के आउट होने पर।

इस मैच के कुछ ही दिनों बाद विद्यालय एकादश ने पी० डी० सी० स्कूल का पहला मैच पटना सिटी स्थित जालान हाई स्कूल के साथ खेला जिसमें यह टीम रनों से विजयी रहा। विद्यालय की ओर से गीतम चटर्जी का खेल सबसे अच्छा रहा जिन्होंने ६२ अविजित रन बनाकर जीत दल की रनसंख्या को बढ़ाया वहीं २० रन पर पाँच विकेट लेकर विरोधी दल के छेकें छुड़ा दिये। रन संख्या इस प्रकार थी—संत जेवियर्स—११९ रन

जालान हाई स्कूल—५५ रन आशा है पी० डी० सी० स्कूल के अगले मैच में भी विद्यालय एकादश को ऐसी ही सफलता मिलेगी।

Xavier Life



Vol. 23, No. 1 ST XAVIER'S PATNA October 9, 1974

Xavier Artists Do It Again!

A heavy rain beginning at 7:00 a.m. (Sept. 21) and lasting for two hours was hardly the best omen on which to begin the long-planned-for All-Patna Drawing and Painting Competition. But by 12:00 the omen proved devious and bright rays of sunshine, as well as young smiling faces, began to fill the campus.

It was the fifth inter-school art competition at Xavier, and a record number of 550 artists from 32 schools appeared. At 12:30 code numbers were assigned to each one, and by 1:00 the painting began in earnest. There were three age groups: A (Seniors), B (Inter), and C (Juniors).

Soon after the bell rang at 3:00, everyone was down on the tennis court getting set for the ritual of judging. The Fine Arts Club gave a new twist to the judging this year by having it done in the presence of all the contestants and visitors. This, plus the use of code numbers, insured absolute fairness. And, besides, added a good bit of suspense and excitement to the whole prize-winning process.

Knowing that the contestants would be famished after their work was done, Mr. R.B. Singh, D.I.G. (BMP) had made arrangements to provide all of them with free snack packets.

The judging was done in grand style by Mr. Nripen Roy, Shri Vijay Verma, and Mr. Uday Sathe.

(Contd. on page 8)

अभियन्ता, चिकित्सक या ...?

अंततोगत्वा इस वर्ष हमारे प्राचार्य महोदय के विशेष मशकत से "रोटरी क्लब" के कुछेक सदस्यों ने हमें विभिन्न पेशों से अवगत कराने का दायित्व लिया। यह हमारे विद्यालय के समस्त इतिहास में नवीन है। हम छात्र इस कार्यक्रम का हार्दिक स्वागत करते हैं। व्याख्यानों के फलस्वरूप उच्च वर्ग के छात्रों को अपने पेशों को चुनने में अपूर्व सहायता प्राप्त होगी।

वाक्ताओं के क्रम में प्रथम व्याख्यान डा० विमल प्रकाश ने पेश किया। चिकित्सा और उसके फराख क्षेत्र का वर्णन करते हुए इन्होंने इसके महत्त्व, प्रकृति तथा विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त छात्रों को अपने संशयों के स्पष्टीकरण करने के लिए भी वक्त मिला।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

REMIND

Your Parents

Oct. 12

5 p. m.

Parents-

Teachers

Association

INAUGURAL

MEETING

-plus-

PRIZE

DISTRIBUTION



A novel feature of the Parents-Meet-Teachers Nights in August and September was the entertainment programmes staged by the boys of various classes. The Class Teachers worked energetically with Mr. Kamal Das and Mr. Shyama Prasad (and often against the clock) to make these shows a big hit. Pictured above is Arvind Kumar (II-A) "proposing" to Brij Kishore Mishra (II-B) during a song sequence, "Will you marry me?"

“कदली सीप, मुजंग मुख
एक स्वाति गुण तीन
जैसी संगति बैठिए
वैसी ही फल दीन”

अर्थात् स्वाति नक्षत्र की बूंद परिस्थितियों के अनुसार नए-नए रूप धारण करती है। छात्र भी उस स्वाति नक्षत्र की बूंदों के समान है जो कि विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न रूप धारण कर लेते हैं। दूषित वातावरण मिलने पर पतन के विकने रास्ते पर फिसलने लगते हैं। किन्तु उन्हीं छात्रों को यदि सत्संग प्राप्त हो जाता है तो वे मरकत मणि की भांति दमकने लगते हैं। आज के छात्रों को तो दूषित वातावरण ही प्राप्त हो रहा है। वह राजनीति के बहकावे में आकर विचारों की शक्ति खो बैठता है, फलस्वरूप कुछ से कुछ कर बैठता है। क्या यह किसी

छात्र-कर्त्तव्य

छात्र के लिए उचित है कि वह गली-गली “जिंदावाद-मूर्दावाद” चिल्लाता फिरे? कदापि नहीं। छात्र का प्रथम कर्त्तव्य है विद्या ग्रहण करना। वही वह शस्त्र है जो उसे आगामी जीवन में विपदाओं से जूझते वक्त सफलता दिलाएगा। यदि वह उस शस्त्र को पहले से अपनाता नहीं तो समाज में उत्पन्न दुर्व्यसनों को कैसे मिटाएगा।

पढ़ाई के इच्छुक अन्य विद्यार्थियों का मार्ग कंटकों से आकीर्ण करना, उन्हें परीक्षा देने से रोकना अथवा विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों का बन्द करना—किसी समाज में अंकुरित बुराइयों को मिटाने का सही तरीका नहीं है।

हमारे विद्यालय को भी इससे बहुत क्षति पहुँची है। पाठशाला बन्द होने के कारण पढ़ाई पिछड़ गई, परीक्षा स्थगित कर दी गई एवं जेवियर लाइफ का भी कोई प्रकाशन न हो सका।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी व्यक्ति को अपने विद्यार्थी जीवन में

Pearl Of Great Price

Fifty years in the service of God, fifty years in the service of the nation, fifty years in the service of man and humanity—all this and more was the meaning of “Jubilee” to Fr. Cleary and Fr. Moran this year. We celebrated Fr. Cleary’s jubilee in February and Fr. Moran’s just a few weeks ago. Both these men have been indispensable parts of the foundation on which the great Xavier tradition is based.

Fr. Moran was the founder-principal back in 1940. He has seen these sturdy walls and broad halls as lines on paper, and he has seen this marvelous building come up brick by brick under the loving guidance of Fr. Loesch. He has worked with other great men like Fr. Niesen to give Xavier much of the shape that it has today.

Fr. Cleary came to St. Xavier’s when the school had just completed a year of its existence. He, too, has seen our present school building come up slowly. And through the years he has identified himself completely with Xavier boys and their achievements. Generations of old Xaverians, humble labourers and prominent figures of society today, remember this fine, devoted man with warm gratitude, joy, and love. Indeed, some are firmly of the opinion that St. Xavier’s without Fr. Cleary is unthinkable.

The small programmes that we have staged to celebrate these joyous occasions were tiny tokens of the gratitude and esteem that we hold for these men. They give us a chance to stop and wonder at the pricelessness of that “pearl of great price” which has enticed men of such calibre and dedication away from their families, their homes, and even their country.

राजनीति से परे रहना चाहिए। किन्तु कुछ विद्यार्थियों का कहना है कि क्या पीड़ितों एवं क्षोषितों को देखकर उनके ह्रिय में टीस उत्पन्न नहीं होगी। अतः मैं यह कहना चाहता हूँ कि फिलहाल स्थिति ऐसी विषम है कि राजनीति या भारतीय शासक इसका समाधान करने में असमर्थ हैं। ऐसी उथल-पुथल की स्थिति में हम छात्रों को सावधानी बरतनी चाहिए तथा खूब सोच-समझकर कदम बढ़ाना चाहिए। यह वह संगम स्थल है जहाँ से एक गलत कदम उठ जाय तो मंजिल दूर होती जाती है और सही कदम मंजिल पर पहुँचा देता है।

Xavier Life

Editors

Anil Bhavnani
Raj K. Bhawnani

Reporters

Sunil Srivastava, Saurabh Das, Satish Varma, Binoy Roy, Atul Sinha, Sourendu Gupta.
Ravi Sinha (Photography)

Address letters to : Editor of *Xavier Life*, St. Xavier’s, Gandhi Maidan Marg, Patna-1
Printed by Sanjivan Press
Patna-800011.

Scientists, Dancers, Linguists

New Faces in the Staff Room

MISS SABITA OBEROI

When Atul Sinha and Binoy Roy came back after interviewing Miss Sabita Oberoi, and we asked for their comments, they said, "Camera shy, but a most interesting person."

Actually, complete devotion to her job and a painstaking thoroughness in everything she does, characterise Miss Oberoi, who is a B.Sc. with Honours in Chemistry. The interest with which she guides all her students, especially in the lab and when giving western-dancing lessons to the seniors is much appreciated. But this does not mean that she is one of those serious poker-faced people. On the contrary, she has a ready smile which quickly wins the heart of anyone she meets.

MR. SHYAMA PRASAD

Mr. Shyama Prasad is the dancing coach who joined Xavier this term. He is a Dance Visharad from Prayag Sangit Samiti, Allahabad. In addition, he has a diploma in commercial art. He is very much enthused over the unexpected response of the boys to his teaching. In fact, he is quite confident that in a year or two, St Xavier's will be able to host an All-Patna Dancing competition!

When asked about his hobbies, he told us with his charming Binaca-Flouride smile that he loves to see movies and to stage functions. We do hope he'll have a long and happy stay here.

MISS CECILY THOMAS

A much traveled member of the staff is Miss Cecily Thomas. In a short period of three years,

(Contd on page 7)



XAVIER LIFE clicks its heels and gives a wholehearted salute to the '74 AIHS batch who posed for this photo one exam-morning last March. Back Row, L to R: Sandip Choudhary, S. Radhakrishnan, Ashis Das Gupta, Nikesh Prasad, Pradip K. Mishra, Amar Sinha, Prabhat Singh, Vinet Singh, Arun Kumar, Peter Amantius, Arindam Guha, Shreyas Sharan; Front Row: Krishna Prakash, Mahesh Kaseria, Arun Toppo, Anand Sinha, Arvind Ajitsaria. Sorry for the late recognition, gang!

सफल वक्ताओं को पुरस्कार

२६ सितम्बर को हमारे विद्यालय में एक और कनिष्ठ, अन्तर दलीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रत्येक दल ने अपने दल-सीन प्रतिनिधियों को भेजा था। प्रतिनिधियों के ठोस विचार एवं युक्ति-संगत बर्तन ने यह सिद्ध कर दिया कि हमारे दल जितने भावी सुवक्ताओं के रत्न छिपे हैं। कनिष्ठ वर्ग के सिधु रत्न और वरुण सिंह दोनों भाइयों ने अपनी वाक् पटुता से सभी सुनने वालों को मोहित कर दिया और ज्येष्ठ वर्ग के आनन्द-सेन तथा अक्षय ने अपने आकर्षक और ओजपूर्ण भाषण द्वारा श्रोतागण को प्रभावित किया।

निश्चय ही अपने उत्साह तथा अवकलन के फलस्वरूप प्रतियोगियों ने इस प्रतियोगिता को अति सफल बनाया। अतः वे सभी बच्चे के पात्र हैं।

Tigers Drown

Opponents

Take '74 Title

The '74 Water Festival started off with a big splash at 11:00 a.m. on the 14th September. After an exciting hour in the pool, the Tigers found themselves the winners with a total of 63 points. The Leopards, Lions, and Panthers occupied second, third, and fourth positions with 44, 20, and 12 points respectively. Iftekar Anjum (X) captured the senior championship.

The two Rajcevs, Ruben and Ranjan, were declared the Inters and Sub-Juniors champions. Unfortunately, the Juniors had no individual champion. Thanks to Mr. Roy, the new swimming coach, the standard of swimming this year was much higher than in previous years.

Fr. Niesen . . . a man of intimacy

by Fr. T. Downing, S.J.

Although it is some months now since Fr. Edward Niesen passed away in Delhi (March 12), XL would like to keep his memory alive and pay tribute to him in this issue by reprinting the greater part of an article by Fr. Downing, who is now teaching at St. Xavier's in Kathmandu.

We Patna Xavierans owe much to Fr. Niesen. He served here from 1941 to 1954, and did more for Xavier than the record books will ever tell. We think that Fr. Downing's remembrance sums up in a beautiful way what Fr. Niesen meant to many of us.

Never before did I believe so strongly in heaven. Fr. Niesen died this morning at 8:00. For such a life as his there must be a reward like heaven. He was sixty-six when he passed away. (Thirteen of those years were spent as hostel superintendant and principal at St. Xavier's, Patna; the next thirteen as rector and principal at St. Xavier's, Kathmandu; and the final seven as principal of the St. Xavier's Middle School in Delhi.)

It was more than on the surface that Fr. Niesen touched those with whom he came in contact. His sincerity, utter truthfulness, and complete unselfishness penetrated past surface formalities to the man, the heart, the inner self of the person he contacted. This was true whether in sportsmen, in students, in workers, or in government officials.

In sports, he was often on the field as a referee. The players liked him out there because they knew there would be fair play and sportsmanship, and the spirit of trying-to-do-your-best.

These were qualities that Father himself so transparently had. His contacts were intimate with his beloved "boys", so much so that when he spoke farewell addresses to them great tears rolled down his furrowed cheeks, and students unashamedly cried in his presence for they knew that his tears came from a loyal devoted heart.

His intimacy was deeply felt by the many he came in contact with in the construction of the several buildings he so laboriously, and very personally, put up. He once remarked, "If you can let people know you trust them, they in turn will let you in their inner circle and wholeheartedly return that trust."

That this really happened in Father's life could be seen in the number of merchants he had for friends. It was also evident among low and high government officials whom Father Niesen often met. With him there never was felt the need for flattering diplomacy or a cautious outer shell. The feeling was that Father did not operate in a maneuvering manner. He was open, frank, and sincerely humble.



Fr. Edward Niesen S.J.

What gave strength and manliness to this intimacy was the physical suffering he daily endured. He was often awake till two or three at night with an asthma that made it almost impossible to breathe. Then he would start the next day at five with his puja and prayers and put in a full day's work. During that day often there would be pains from the liver that were so sharp and piercing, his teeth would grit and his face would grimace.

अभियन्ता...

(पृष्ठ १ से आगे)

दूसरे वार्ता के प्रस्तुतकर्ता श्री आर० मिरचन्दानी थे जिन्होंने इतिहास निर्धारण पेशे का इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण महत्व, विभिन्न क्षेत्र एवं भारत में, ना केवल में इसके स्थान के बारे में बताया। इस पूर्व उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों के गुणत्व पर प्रकाश डाला, जो हमारी वार्ता के चुनने में बड़े सहायक होते हैं।

तदन्तर श्री सरकार 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' के प्रमुख कार्यकर्ता ने महानगर (बैंकिंग) के संदर्भ में बड़ा दिलचस्प व्याख्यान प्रस्तुत किया। बैंकिंग का मौलिक ज्ञान तो दिया ही, साथ-साथ, इसकी कमी भूत आवश्यकता, विभिन्न दर्जे एवं वेतन की भी जानकारी दी।

चौथा व्याख्यान श्री टी० नाथ, पुलिस अधीक्षक द्वारा हुआ जिन्होंने पुलिस प्रशासन तथा सुरक्षा संबंधित वक्तव्य हमारे सम्मुख प्रदान किया। अपने भाषण के आरंभ में उन्होंने पुलिस के इतिहास के बारे में कहा कि फिर इससे संबंधित कुछ आवश्यक बातें और अन्त में एक सच्चे पुलिस का उत्तरदायित्व बताया।

बहरहाल, यह उच्च वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ, जो भावी वार्ताओं की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विनय राय
दशम्वर

That all of this could go day after day and year after year seemed, and was, a miracle. It was a miracle of Faith. The Faith that Fr. Niesen had in God and man. It was not a puppy love faith, but a Faith that was a conviction shown in many deeds.

That is why today I believe more than ever in heaven. That is in me cries out that such a sacrificing, moving, unselfish life there must be an eternal reward.

More than a bus-trip

Patna City Excursion

Here is a report on an interesting bus-trip some forty of us made to Patna City, under the guidance of Fr. Norbert Rai. We went there on Saturday, Sept. 21st, to see the orphanage run by the sisters of Mother Teresa. But we got to see much more than the orphanage.

Entering the gate off the main road, we saw men crowded in front of the holy church which is very tall and some 300 years old. A huge bell is on the left of the church, and years ago it was a present from the king of Nepal.

The sisters run a dispensary for the poor, and their free treatment has saved many lives.

There is a general ward in which very young orphans are looked after. These children are given free food and treatment by the sisters. A cheerful, happy smile is always seen on the faces of these sisters.

Also on the small compound is an institution where young boys and girls are taught to read and write. This is called "Nirmala Shishu Bhawan". Many volunteers come here daily and help the sisters in their work.

In other sections, there are some very old and destitute men and women. They are helped so that they may lead a cheerful happy old life and face death with a smile on their lips. There is a graveyard behind the church in which many holy ones are buried. The oldest grave is of 1884.

These sisters show an example of the saying that "Service to humanity is a real service to God". Let us, therefore, try to follow their example, and help them as far as we can in our small way.

Sunil K. Agarwal, VIII-A

A Jubilarian Remembers

When Father Cleary first came to St. Xavier's, the school was just concluding its first year of existence. Our present school building did not exist at all; it was in May 1941 that the work on the school building began. The Second World War was on, construction material was difficult to obtain, cement was scarce, so were iron rods but we managed to put up that building, thanks to Father Frank Loesch.

Father Cleary remembers the first years of cricket on the maidan: our boys learnt the game quickly and within five or seven

we had to stand up [to fast bowling as if we were grown men.

Our Hockey very soon won praise for the school. The man who worked so hard for us as a coach and director was Father Niesen, who died recently in Delhi. Our Hockey was fast, well played with good passing, but we were always at a disadvantage against the police and the college teams who had weight and muscle on their side. But, as you can guess, the crowd was always for us: boys win the hearts of the crowd. Something else that father remembers is Xavier's Baseball games. No game lends itself so well as a class game and for one short period from 3:00 to 3:35 p.m. Every class had its own equipment and we had to be out on the field and in action within 5 minutes.

It was an encouraging sight to see five hundred boys playing compulsory games, and baseball was one of the most popular during the first 10 years of St. Xavier's existence.

During the war we often had American soldiers coming to play with us: we saw some wonderful catching and pitching and batting. At the end of the war we received dozens of bats, balls and gloves from the U.S. Army—a most welcome gift that lasted us for years.

Father Moran was the first principal of the school: he and Father Niesen laid down the first traditions of our school, as a hostel and as a day school.

The school within ten years had established a good name for studies and for discipline. And so it is that St. Xavier's of today grew little by little into the school which you know today. It is our duty to live up to the finest traditions and pass on to the younger boys the true spirit of Xavier.



Two Golden Jubilarians who have earned the affection of many present and past Xaverians are Fr. Marshall Moran (left) and Fr. Kevin Cleary (right). If XL could only afford it, this picture would be framed in pure gold.

years we were playing against the College teams and beating them very often. Some of our lads were really good batsmen, but it was our bowling and good fielding that brought us so much praise from the other teams. After all we were only boys of 15 or 16 and in the tournaments

ADVICE

To the faltering frightened and fainthearted.... Be valiant, valorous, and venturesome! Come to the November Fair!

A small but enthusiastic crowd was on hand in the Theatre Hall to watch the Third All-Patna General knowledge Quiz Contest on the evening of Sept. 12 th. The Xavier team was made up of Anant Upadhyaya, Binoy Roy, Shivanand Jha, and Udayan Singh. Six teams participated and Patna Women's College came out on top with six points and the answers to some tough questions. The other schools followed in this order : St. Joseph's, St. Michael's, Mount Carmel & St. Xavier's (tie), and Notre Dame.

Even in the middle of a term full of activities, the seniors and pre-seniors are preparing hard for their Higher Secondary and Matric examinations respectively. The seniors have already taken round N0. 1 of their trial exams. This was mainly from Sept. 16-20. The pre-seniors will begin their sent-up exams on the 14th of October.

Volunteers and staff members conducting the Painting Competition (Sept. 21) for the "B" group in the library were agreeably surprised by the unanimous co-operation of the contestants there. Not only were they most helpful during the competition, but after the papers had been collected, all of them made a point of cleaning up the library tables and putting back the chairs in their proper places.

Contrary to popular belief, a teacher, too, has to study hard in order to be successful at his job. This was proved recently by Miss Cecily Thomas and Mr. P.S. Thakur who have just completed their B.Ed. examinations. From what we hear, they have done very well. We now eagerly await the results (and the sweets to follow).

The exciting western, "The Day of the Evil Gun," starring Glenn Ford came as a pleasant surprise to the seniors the other day. It was all about a man who goes in search of his wife and two daughters who had been kidnapped by the Apache Indians. Although the hall was stuffy and the screen too small, it turned out to be one of the most entertaining films this year.

Keeping up the Xavier tradition in table-tennis, Uday Shankar (7A) bagged the second prize of the doubles event in the sub-juniors section of the Patna District table-tennis tourney in August.



News In Brief

A new addition has been made in the biology lab. Fr. Scaria was kind enough to provide eleven plastic models of different systems in the human body. Besides these models, English grammar charts and some geographical maps for Social Studies, History, and Geography have also been brought from Delhi. Hats off to Fr. Scaria for this wonderful contribution!

The Fine Arts Club is deeply grateful to Camlin Ltd. who donated 60 consolation prizes for the All-Patna Drawing and Painting Competition. These prizes were a great encouragement to all those contestants who "almost made it" to the honours list.

LIFE ...
Will never be the same after you see the Fair '74 !

जूता पालिश समाज सेवा के लिए

विदित है कि हम संत जेवियर संस्था के छात्र गत वर्ष से समाज सेवा तथा जन कल्याण के लिए सक्रिय तथा समयानुसार प्रयत्नशील हैं। हमारे प्रयत्नों के मार्ग में संकट आये हैं, आते हैं और आएंगे किन्तु हम निभिकतापूर्वक अपने प्रयास को कार्यान्वित रखकर लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है।

हमने गतवर्ष शैक्षणिक केन्द्र की दुजरा में स्थापना की थी। और संप्रति वह संस्था आगे बढ़ रही है। कुछ अर्थ संप्रति भी हमने किया और वस्त्र औषधि एवं पाठ्यक्रम के साधन एकत्रित कर योग्य व्यक्तियों में वितरण किया। हमने बिहार स्वास्थ्य केन्द्र, होली फॅमली अस्पताल एवं दुजरा क्षेत्र के अभावग्रस्त व्यक्तियों में वितरण किया। संप्रति हमारी संस्था शिक्षण केन्द्र में एक सुयोग्य शिक्षक कार्यरत है जिन्हें दान एवं चन्दे से प्राप्त अर्थ से साठ रुपये प्रतिमाह आर्थिक सहायता दी जाती है। फिर जैसे आपका मालूम ही है हमारे विद्यालय में "जूत चमकाओ अभियान" के अन्तर्गत छात्र के गन्दे जूतों को पालिश किया जाता है।

हम आशा करते हैं कि भविष्य हम अपने कार्यक्षेत्र को विस्तृत करने में पूरा प्रयास करेंगे। हमारा क्षेत्र केवल "पटना" ही नहीं होगा अपितु सा भारतवर्ष एक न एक दिन हमारे कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आयेगा। अतएव हम अपने विद्यालय के सभी छात्रों से आशा नहीं अपितु पूर्ण विश्वास रखते हैं कि साथ हमारे कार्य में हाथ बटाएंगे।

अभय कृष्ण

तड़ाग तट भोज

जब संध्या का सूर्य अपनी लोहित लालिमा बिखेरता हुआ अस्ताचल की ओर गमन करता है, उस समय हमारा विद्यालय प्रांगण भी अरुणिमा से आच्छन्न हो जाता है। प्रत्येक, रविवार या शनिवार की संध्या को विद्यालय परिवार का कोई न कोई अंग अवश्य ही तड़ाग के स्वच्छ-तम जल के बीच हिलोरे मारता दिखाई देता है।

इस अछूते आनन्द का अवसर कई बर्गों को मिल चुका है, और कई उसके प्राप्ति हेतु कतार में खड़े हैं।

इसी लोहित अवसान में जब रवि का पद लेने शशांक आ रहा था, तभी क्रमशः १३ एवं २७ जुलाई को अष्टम् 'अ' तथा 'ब' के छात्रों ने इस कार्यक्रम को बड़े धूमधाम से मनाया। उन्होंने का अनुसरण करते हुए उत्साहित ६ 'अ' तथा 'ब' के छोटे लड़कों ने भी क्रमशः ८ सितम्बर तथा ३ अगस्त को इसे सम्पादित किया।



The photo above shows the five Xaverians who sat for the Bihar Secondary Examination last March. L-R : Jagdip Singh, Ashok Saraf, Ashok Mishra, Tamal Sarkar, Sudhir Khanna. All did well for themselves, and Jagdip did exceptionally well, managing to come fourth in the state! They are a credit to Xavier. Our good wishes and prayers go with them for a successful future.

हाल में ही १५ सितम्बर को सप्तम 'अ' तथा 'ब' के छात्रों ने सम्मिलित रूप से, एक नए ढंग से इसे मनाया। प्रतियोगिताएँ हुई :- (क) तेराकी (ख) संगीत (ग) चुटकुले। मजा तो तब आया जब शिक्षक चुटकुलों को सुनकर हँसी से लोट-पोट हो गए। प्रोत्साहन का एक अदम्य तरीका!

चन्द्र किशोर मिश्र
'नवम्' वर्ग

Night of Great Speeches and Poems

A packed theatre hall had occasion to listen to the immortal words of Churchill, Roosevelt, Lincoln, and Tennyson once again on the fifth of September at the Xavier English Elocution Contest. The hard work invested in the contest paid off, and the audience showed appreciation for the efforts of the different speakers.

One of the few light or humorous pieces of the evening was presented by Anand Sen and was entitled "With Gratitude". It is based on a story of Oscar Wilde, which was considerably reworked a few years ago by Fr. Cleary in order to be apt for the elocution stage. The speech won for Anand the senior gold medal and, needless to say, he accepted it—with gratitude.

Out of the Inters group, Partho Ghosh (VIII) stormed his way to the first prize with Tennyson's "Charge of the Light Brigade."

And in the Juniors bracket, Sankarshan Thakur was declared the winner for his "Speech of Brutus" from Shakespeare's play *Julius Caesar*.

Dipankar Sircar (IX)

New Faces....

(Contd. from Page 3)

she has traveled all over Bihar, doing her bit teaching in schools. And now, she has come to St. Xavier's,—to stay we hope! A B.Sc. in chemistry from Kerala University, Miss Thomas loves stitching and cooking. In addition, she is an excellent public speaker and actress. We have no doubt that all St. Xavier's will benefit hugely from this jewel from Kerala.

MR. HARENDRA MOHAN THAKUR

In Mr. Harendra Mohan Thakur, we have a devoted Hindi teacher and a great chess enthusiast. As a matter of fact, Mr. Thakur hopes to see this game flourish at Xavier one day. He also likes badminton. Though very impressed by the behaviour of Xaverians, he feels they could do with a little more discipline.

MRS. REKHA SRIVASTAVA

As Mrs. Rekha Srivastava is no stranger to this campus (having come back to us after an absence of two years), we will not give you a long list of her many talents and accomplishments. For those of you who have joined St. Xavier's recently, we recommend looking up a friend's copy of the lone yellow issue of *Xavier Life* (Vol. 20, No. 4). However, we will satisfy your curiosity about what she has been doing in the period of her absence. Well, she has added two more feathers to her cap. Firstly, she has joined the noble ranks of married women. And secondly, she has got herself a first-class M.A. in Ancient Indian Culture and History from Bombay University. We take this opportunity to wish her a long and happy married life, and equally long and happy stay at Xavier.

Music Contest Charms Audience

A visitor to the Xavier campus is at various times either overwhelmed by the shrill screams of the boys playing on the lawn or else soothed by the low hum of a busy school routine. But on the evening of September 7th a third, new, and welcome sound filled the campus—the sound of music. On that day St. Xavier's hosted its Second All-Patna Music Competition, in which 35 contestants from 18 different schools took part.

The first part of the programme was devoted to bhajans and film songs by the junior group. After the ten-minutes interval, the seniors took the stage. In addition to bhajans and film songs, they pleased the audience with a number of Tagore songs. As the final decisions of the judges were collected and the results tabulated, a few guest artists entertained the audience. The words of encouragement that Mrs. Ramola Nandi, the chief guest, spoke to the contestants were very much appreciated. As the results were announced, she distributed prizes to the following:

A. Junior Bhajan :

1. Ishita Roy—Ratnavati Vidya Mandir;
2. Manoj K. Lule—Kendriya Vidyalaya;
3. Neeta Kumari—Shishu Bhavan (K. Dal).

B. Junior Film Song :

1. Md. Avid Khan—St. Xavier's;
2. Tini Sinha—Carmel Primary School;
3. Amita Biswas—Patna Junior School.

C. Senior Bhajan :

1. Alka Prakash—St. Joseph's;
2. Namila Das—Carmel High School;
3. Dina Bala Thakur—Hartman School.

D. Senior Film Song :

1. Sushmita Mukherji—Notre Dame Acad;
2. Prabhu K. Ghosh—Central School;
3. Amita Bose—Govt. Girls' H.S.

E. Senior Tagore Song :

1. Ajit K. Jain—St. Xavier's;
2. Rani Bala—Kishore Dal;
3. Pradeep Upadhyaya—St. Michael's

The organisers are sincerely grateful to Mr. Shri Narayan Jha, Mr. Md. Habibullah and Smt. Malti Iyer for kindly acting as judges on this occasion. Our thanks are also due to Mrs. Aloka Das (the music teacher at St. Michael's) and Mr. Ram Prakash Pandey who so ably accompanied the contestants on the harmonium and tabla respectively.

Experienced Coach for Swimmers

St. Xavier's should soon have a first-class swimming team, under the guidance of Mr. R. C. Roy, our new swimming coach. Trained at the National Institute of Sports, Patiala, Mr. Roy is a man of varied talents. He is trained to coach boys in basketball, gymnastics, and other games. As Fr. Scaria puts it, "He has so many certificates and recommendations to his credit, that you would require an entire issue of *Xavier Life* to give an account of them".

Mr. Roy is much interested in sports journalism, and writes for some of the best sports journals in the country. *Xavier Life*, too, hopes to print some of his articles in the future.

Mr. Roy's message to all swimmers is: "Swim regularly, swim the approved strokes, and you can challenge the fishes to a 100 metres race."

We welcome him to this campus, and wish him a long and fruitful stay here.

Xavier Artists...

(Contd. from page 1)

The familiar, commanding, and entertaining voice over the microphone was none other than old boy Subir Sen's. During the few intervals when he had no prize-winning announcements to make, a number of artists were called to the mike to show their stuff in the musical line. The crowd was delighted.

The results of the "C" group were the first to be announced. Xaverian Dharmnath Pandey was awarded the first prize. Second place went to Neelu Kumari of Ratnavati Vidyamandir; and the third to Arnab Nandi of Christ Church School. After another interval came the senior results. This drew the greatest applause as word came that Ranjana (St. Joseph's), Sourendu Gupta (St. Xavier's), and Sujata Jaiswal (Hartmann) had won first, second, and third prizes respectively. Loud applause (and some catcalls) also greeted the three SB's from Xavier who picked up consolation prizes—Suresh Baxi, Sanjay Bhatla, and Sabyasachi Banerjee.

In the "B" group, Pushpa Kumari (Mount Carmel) took first prize, and was followed closely by Ram Krishna Jha and Ranjan Kumar, both of Central School (Anisabad). Pushpa also had the distinction of being declared "Best Artist" of the day!

Finally, to end the day with a bang, Dr. Dilip Sen presented the Dr. S. N. Sen Memorial Trophy to St. Xavier's, who had come first with five points to its credit. St. Joseph's and Central School tied for second place, each with three points.

Satish Varma, X

WANTED

One meteorologist willing to predict sunny skies for Sunday, November 3. Apply at Student Council Office. Applications recieved after this date will be not only in vain but disdained.

Old Boys News

After a long silence, the Old Boys Association of St. Xavier's and St. Michael's was resurrected at the initiative of Fr. Scaria, Fr. Cox and some old boys. On the evening of August 10, many of the old Xaverians and Michaelites at Patna gathered together to jaw over old times with old friends and teachers.

On this occasion, everyone remembered with love and gratitude the man who had once been the heart and soul of the Old Boys Association—Fr. Gordon Murphy, who died Sept. 28, 1972.

Fr. Cox addressed the group and spoke of the necessity of setting up a permanent association with a definite constitution. For this purpose, an ad-hoc committee was formed and was en-

(Contd. on page 10)

Staff Overcome by Weather (and Young Opponents)

Whatever else they may be, members of the Xavier staff are definitely not footballers. This was proved conclusively on Sept. 4 on the Gandhi Maidan. In spite of the gallant fight put up by Mr. Sebastian and Fr. Rai, the Staff lost to the School XI at goals to nil. Even though seven hundred jubilant boys were cheering the school team, and even though the referee was Assistant Upadhyaya of Std X, the teachers were ready to concede that they lost to a better team. However, the year is not over, and rumblings in the Staff Room show that the teachers are ready for another round, but this time preferably on the basketball or tennis court, and minus the 100-degree afternoon sun! Care to take them on?

Student's Day... Full of lessons

According to a recent survey among teachers, every day is students' day. But if you ask the students, they will tell you there is only **one** real students' day and that this year it fell on August 6th. It is the magic day when—overnight—students become teachers, students become administrators, and not least (for somebody has to be administered to) students become students!

This year the Student Council and all the seniors collaborated well with all the teachers and planned a successful day.

At day's end there was not a single "substitute" who was not commenting about the difficulties he had to face. And with these comments came the realization that a teacher's life is not at all a bed of roses. Rather, a single day in the teacher's shoes was sufficient to give a glimpse of the vast amount of tact, understanding, and patience that is required in this noble profession. Suresh Baxi, for example, substituting for Mr. Paul Osta in the library, has come out with the firm statement that there should be a stiff punishment for all those who do not replace chairs, magazines, and books in their proper places.

A particular class which persisted in being rowdy, unruly and disturbing in spite of repeated warnings and, even a caning from vice-principal-for-the-day, Anand Sen, almost wrecked the harmony of Students' Day. The substitute sweepers, too, had a hard time cleaning up the grounds, food and ink-stains on classroom floors, and swabbing the entire second floor corridor which had been flooded due to somebody leaving the taps open.

However, in spite of such minor mishaps, Students' Day was a grand success. Indeed, visitors to the school that day were heard to comment on the surprising smoothness with which everything was conducted. The general consensus of opinion among seniors, however, points

to the need for a much better performance next year. And, not least, the junior Xaverians will need to be motivated in the correct way.

Anand Sen, X

एक रमणीक आयोजन

नाट्य भवन पर्या के बावजूद भी लगभग भर चुका था। १० सितम्बर, ठीक ५:३० बजे माईक पर श्री सर्वदेव मिश्र की मिश्री मिश्रित आवाज गूँज उठी। इस वर्ष की वाक् पटुता प्रतियोगिता प्रारंभ हुई और तीनों खण्डों के कलाकारों ने एक के बाद एक मंच पर आकर अपना वक्तव्य पेश किया। दर्शकों का दिल बाग-बाग हो उठा।

बड़ी विषम परिस्थिति थी। काफी उलझन के बाद निर्णायकगण निष्कर्ष निकाल सके। विजेताओं की सूची:—

बनिष्ठ:— (१) आनन्द सेन, (दशम्) (२) अनन्त उपाध्याय, (दशम्), (३) चन्द्र किशोर मिश्र, (नवम्)।

मध्य:— (१) वरूण सिन्हा (२) अजित अग्रवाल तथा विमल कीर्ति सिंह (३) राज मधुरेन्द्र सहाय

कनिष्ठ:— (१) संजय सिन्हा, (२) (२) शंकर ठाकुर तथा राजीव रंजन दास (३) राजेश शुक्ला।

२७ सितम्बर को हमारे विद्यालय के प्रांगण में अन्तर विहार वाक् पटुता प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में लगभग चौदह विद्यालय के छात्रों ने भाग लिया। हमारे विद्यालय में से भी अतुल सिन्हा (दशम् वर्ग) एवं चन्द्र किशोर मिश्र (नवम् वर्ग) ने अपनी प्रतिभा दिखाई। इस प्रतियोगिता का आयोजन बहुत ही करीने ढंग से किया गया था एवं संत जेवियर्स के चन्द्र किशोर ने बनिष्ठ वर्ग में तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया।

अतुल सिन्हा

Debaters Sharpen Skills, Win Awards

Everybody looks up to a leader—one who can think clearly, speak persuasively, defend and argue his case, and show the way to others. But how do you become such a leader?

The Xavier Debating Society worked out a three-month programme of debates which is sure to develop some leaders. The inter-class programme started in July. Each week (not always on the same day), speakers from Stds 6-11 have been getting a chance to stand up and be heard on such vital topics as rickshaws, nuclear explosions, and keeping wild animals in captivity. Fr. Mani has been acting as over-all moderator and Sunil Srivastava as the able senior organiser.

One week the debates are in Hindi and the next in English.

Elsewhere, Xavier debaters have taken part in two inter-school debates. In the first of these (organised by the Rotary Club) Niraj Sinha A (XI) and

Sourendu Gupta (X) took part, but were unable to bag a prize, as St. Joseph's Convent carried off the trophy. However, in the second debate (sponsored by the Leo Club), Anand Sen (X) and Atul Sinha (X) spoke so well on the theme of "Democracy in India" that they won first place. What is more, Anand was declared the best speaker and was able to walk home with a handsome cup under his arm. Congratulations!

Old Boys.....

(Contd. from page 9)

trusted with the task of presenting to the general body a suitable constitution. We hear that the draft constitution is now ready and was presented to the general body at a meeting on October 6. One thing that the Old Boys are firm about is that the focus of all their activities will ultimately be the school. No doubt St. Xavier's will be very much benefitted by the activities of this association.

A Prof's Life

The career talk on Tuesday afternoon, September 24, will go down as one of the best offered so far by the Rotary team. Professor Ranjan Narayan of Patna University spoke to us about University Teaching."

In his introduction he said he felt considerable nostalgia because it was his first speaking assignment in the old theatre hall since the days when he stood up there and took part in elocution, debating and dramatics. In an attempt to qualify the glowing picture which Mr. Satish Anand drew in introducing him, he added that one of his most memorable elocution appearances was the time when, as a young Xaverian, he forgot his speech in the middle and had to pause for two minutes before he could recall the rest and go on. (He did not say so himself, but the record shows Prof. Narayan did "go on" and that he captured plenty of laurels before he left St. Xavier's).

In polished prose and with great feeling, Prof. Narayan gave us some notion of what it's like to teach in a university. He started out by showing historically how our modern universities evolved into what they are today. He described what is unique about the Indian university system, what qualities and talents are needed in one who would like to become a university professor, and what satisfactions he can hope for (personal and financial) in this field.

In brief, Prof. Narayan not only talked to us about his subject, but gave us a living model of what we might aspire to become.

Raj Kumar Bhawnani

Coming Soon! **Xavier Fair** Don't Miss It!

Sunday Nov. 3, 2-8 p.m.

St. Xavier's School Campus

Bring your Mummy, your Daddy, your brothers, sisters, chachas, aunties, cousins, and all your friends!

- Hilarious Stalls
- Handsome Prizes
- Hot Samosas and Cool Drinks

Pack off your worries.....
Come to the XAVIER FAIR

WIN: Electric Guitar
Air-Cooler
Aristocrat Cycle
Elec. Wall-Clock
2-Band Tr. Radio
and 100 Other
Wonderful Prizes!

GRAND LOTTERY DRAWING:
8 p.m.

एक और विजेता

नवम्बर मास के चन्द्रकिशोर मिश्र को "सर्व पटना एकांकी प्रतियोगिता" में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का स्थान प्राप्त हुआ।

Should Spell Triumph for Teams

Basketball enthusiasts are following closely the progress on the new all-weather cement court on the west side of the campus.

After much advance planning, work began on digging out the foundation on March 24th. All together 10,900 cubic feet of earth were removed, as a preparation for the sand and brick foundation which will support the smooth, cement surface.

The work is progressing well, but another full month will be needed to complete the job. The unique shape the court is taking is due to the interest and plans loaned to us by Fr Richard Cherry at St Xavier's School (Jaipur) where a similar court has been a boon for years.

It is really to be a Tri-Court, that is three courts on the surface of one. The regulation court (46' x 90') will run north/south, and two junior courts (each 32' x 60') will intersect it in the east/west direction. Slender but sturdy cement pillars will support the six backboards.

When the new court is completed, it will make the game available to Xaverians around the year. Matches with other schools, even tournaments, will be possible.

NEW MINISTRY HOLDS OFFICE FOR ONE DAY

The boy sat in the corner, watched him with awed interest, and reflected, "How much more fun to be a teacher than a student."

On April 3rd this boy, and many other seniors, got their chance. Not only did they do service in the classroom, but they were engaged on every other front in the School—as Chief of Staff (Atul Sinha), C. I. D. (Rakesh Bahadur), Medical Officer (Susanta Pal), Archives (Ravi Chaudhary and Rajiv Bansal), Aid-de-camp (Pradip

Xavier Life



Vol. 24, No. 2

ST XAVIER'S PATNA

May 5, 1975

एकांकी की संध्या : लान्वस की "मन्जिल"?

गत मंगलवार, २२ अप्रैल को हमारे विद्यालय प्रांगण में "एकांकी प्रति-योगिता" आयोजित की गई थी। पूर्व इसके कि मैं आपको इसका लेखा-जोखा दूँ मैं आपको यह बता दूँ कि यह मात्र एक सप्ताह के अटूट परिश्रम का मधुर फल था।

प्रतियोगिता प्रारंभ हुई 'पंचसं' के 'प्रतिशोध' से। उसमें भार्गवों के शास्त्रार्थ में जीतने पर पिता द्वारा उपहास के पात्र बनने के कारण अपने पिता से ही बदला लेने आता है। परंतु पिता के आदर्श वचनों से उसका मन बदल जाता है तथा वह माता-पिता की सेवा में लौट आता है।

तत्पश्चात् उस दिन का सर्वश्रेष्ठ एकांकी प्रस्तुत किया गया—'मन्जिल उस पार' अतुल सिन्हा (११) द्वारा लिखित इस नाटक का मुख्य केन्द्र इस बेकारी की दुनिया में, नौकरी की तलाश में ठोकरें खा रहा एक डिग्रीयुक्त व्यक्ति है। अंतरात्मा न जाने क्या-क्या कराती है। परंतु अंत में वह जीवन से संघर्ष ही नहीं समझौता भी करता है।

Agrawal) Finance Minister (Anil Kayan), and the very essential Anti-Pollution Squad (Bimal K. Singh & Co).

On the morning after Students' Day, our Real-Acting-Principal, Fr. Mani, said how pleased he was with our performance. The rest of us, too, felt good about it, but there were some who discovered that there's more to a teacher's life than fun.

इसके बाद मात्र दिन का हास्य एकांकी, टाइगर्स द्वारा 'जॉक' प्रस्तुत किया गया। एक महाशय—जी हॉ, जॉकरूपी आदमी प्रो० आनंद के मित्र मोलानाथ के यहाँ चिपक जाते हैं तथा लोकी की खीर पकाकर दर्शकों को उछलाते रहते हैं।

तत्पश्चात् आया अंतिम—एकांकी सीमा-रेखा। एक ही परिवार में इस धिनीने राजनीति के शिकार तीन व्यक्ति जो जब अंत में आए तो खून से लथपथ फर्श पर लेटे हुए थे।

सर्वदेव मिश्रजी ने अपनी मिश्री मिश्रित वाणी में एकांकियों की भूमिका एवं पात्र-परिचय दिया।

उस दिन का सितारा या अतुल सिन्हा सर्वश्रेष्ठ अभिनेता। आदर्च्य है संत जेवियर में लड़कियाँ कहीं से आईं—जी हॉ, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार मिला असल नहीं बल्कि नकली लड़कियों को क्रमशः जो राजनंदन प्रसाद तथा राजीव प्रसाद थे।

डा० रहमान ने पुरस्कार वितरण कर हमें अनुगृहीत किया। अतः समाप्त हुई एकांकी प्रतियोगिता।

चन्द्र किशोर मिश्र, 'दशम'

Spotlight on the Games Dept.

Through the years here at Xavier stress has been put on sports and games. The purpose has been to carve men out of boys and make us physically, as well as mentally strong.

Playing together on the field helps us to learn teamwork. In the beginning we want only to be the "star" and to win the whole game by ourselves. Team sports teach us how to cooperate with each other and how to obey the commands of the captain. Some sports may not teach us teamwork, but they can teach discipline and hard work which will be very valuable for us in the future. Every sport, though, should teach us how to win and how to lose like real sportsmen. It should teach us that what counts is "not whether you win or lose, but how you play the game."

The games we learn in childhood can be of great benefit in college and adult life. They will help us to keep physically fit (no need to buy expensive bull-workers!) and to mix with many people who would otherwise remain strangers to us. These are a few reasons which show how important games can be.

But the question here and now is: Where do we stand in the games department? If we look at the past, we see that often we attained a high level in sports. Sometimes we even challenged and beat the collegians. Our cricket teams had marvelous success. And in football and hockey we went far. But at present...?

The standard is slipping. Some claim we are just a shadow of our former selves, and that the desire to excel is not there anymore. We hop from one tournament to another

(Continued on page 7)

"तीसरी कसम", जो हमारे विद्यालय प्रांगण में प्रदर्शित की गई थी, राजकपूर की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में से एक है। इसकी कहानी बिहार के ही सुप्रसिद्ध लेखक श्री फनीश्वर नाथ 'रेणु' द्वारा लिखी गई है। कथानक मुख्यतः नायक राजकपूर द्वारा खायी गयी तीन कसमों के इर्द-गिर्द घूमता है। पहली कसम यह कि वह कभी अपनी बैलगाड़ी में चोर-बाजारी का माल नहीं ढोयेगा। दूसरी कसम यह कि वह कभी अपनी बैलगाड़ी में बांस नहीं ढोयेगा। और तीसरी कसम यह कि वह कभी अपनी बैलगाड़ी में किसी कम्पनी की 'बाई' को नहीं ढोयेगा। नायक पहली कसम इसलिए खाता है कि चोर-बाजारी के माल ढोने के फलस्वरूप ही उसकी गाड़ी जप्त हो जाती है और वह किसी तरह अपने बैल को लेकर भाग उठता है। दूसरी कसम इसलिए खाता है कि बांस ढोने के कारण ही (नायक के अनुसार) उसे बहुत पीटा गया। एक बार वह अपनी बैलगाड़ी में बांस ढोकर ले जा रहा था कि तभी एक घोड़ा-गाड़ी से उसकी टक्कर हो गयी और घोड़ेगाड़ी पर सवार व्यक्तियों ने उसकी जम कर मरम्मत की। तीसरी और अन्तिम कसम वह इसलिए खाता है कि वह जिस

(शेष पृष्ठ ५ पर)

Xavier Life

Edited by :

Bhuwan Sinha (Hindi)
Shakilur Rahman (English)

Assisted by :

Senior reporters from
Stds. IX, X and XI

Address letters to :

Editors of *Xavier Life*
St. Xavier's School
Gandhi Maidan Marg
Patna 800001. Printed by
Sanjivan Press, Patna-11.

Report Cards

Will be distributed to
Std. I—XI
19 May (Mon)—9 a. m.

School Reopens

For 2nd term
Monday, July 7
9:15 Assembly

True Love

The young man poured out his heart's devotion on paper as he wrote to the girl of his dreams:

"Darling:

I would climb the highest mountain, swim the widest stream, cross the burning desert, die at the stake for you.

PS: I will see you on Sunday ...if it doesn't rain."

Fr Scaria Takes Leave for Research

At the end of March, Fr. Scaria began research on a doctorate in education (Patna University) and in his place Fr Mani Thundathil has been appointed Acting-Principal. Fr Scaria is in Calcutta at the moment, making the rounds of some important libraries. He hopes to complete his work in about six months time. We look forward to his return. And we pledge our fullest cooperation to Fr Mani during the coming months.

★ '75 Cricket Roundup ★

The school cricket team, chosen under the watchful eye of Mr. Sebastian and with the help of the co-captains, Atul Sinha and Rajiv Raman, got off to an eager start. We joined the PDCA League and our first match was with the Ram Mohan Roy Seminary boys. Recovering from a disastrous beginning of 15 for 4, we finally put together a total of 57. Rajesh Sinha (29 runs) and Rakesh Bahadur (12 runs) boosted our team morale at crucial moments. Our bowlers then came forward and made a quick clean job of it, bundling them out for only 34 runs.

In the semi-finals we met St. Michael's, and after collecting a good total of 125 for 7 in 40 overs (Rakesh Bahadur 33 runs, Manoj Srivastava 29 runs and Rajiv Raman 20 not out), we thought we had our opponents on their knees. But in this we underestimated the slippery fingers of our fielders who passed up one gift after another until they had us 125 for 7. A big disappointment, but also a lesson for next year.

Both in batting and bowling, Rakesh Bahadur and Sanjay S. T. turned in outstanding performances this season. Of late, cricket fervour has subsided, as swimming and

एक संगीतमयी संध्या

अंततः १९ अप्रैल को संध्या पाँच बजे १९७५ की गायन-वादन प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। प्रारम्भ ही "रुक जाना नहीं" गाने से हुआ और प्रगति के पथ पर अग्रसर होने को हमें नवल प्रोत्साहन मिला। इस प्रतियोगिता में लगभग ४५ छात्रों ने भाग लिया।

जनश्रुति के अनुसार यह कार्यक्रम पूर्णरूपेण सफल रहा तथा उनके अनुसार गायन-वादन काफी उच्च कोटि का था। प्रतियोगिता की समाप्ति पर फा० राय ने "दो शब्द" के उपरान्त पुरस्कार-वितरण समारोह सम्पन्न किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने विजेताओं को ही नहीं बरन् सम्पूर्ण प्रतियोगी-मण्डल को बधाई दी। चन्द्र किशोर मिश्र के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही "एक और महत्वपूर्ण संध्या" समाप्त हुई।

विजेता-सूची इस प्रकार है:-

वरिष्ठ वर्ग:- १) अजीत जैन, ९ 'अ';
२) मुबन सिन्हा, १०, ३) कल्याण बनर्जी एवं राहुल नियोगी, ९ 'ब'
मध्यम वर्ग:- १) कुमार अभिनव-६ 'ब',
२) सुजय वसू राय-७ 'ब', ३) राजीव रंजन।

कनिष्ठ वर्ग:- १) म० आबिद खान-५ 'अ',
२) कुमार रजय सिन्हा-३ 'अ',
३) पंकज कुमार-४ 'ब'

भजन:- १) पुनीत कृष्णा-८ 'अ'; २) प्रवीर कृष्ण-८ 'अ'

तबला-वादन:- १) नीलाम सिन्हा, १०;
२) राहुल नियोगी, ९ 'ब'।

सभी विजेताओं को बधाई। अंततः बधाई श्री कमल दास एवं उनके सहयोगी श्री राम प्रकाश पाण्डेय को जिन्होंने क्रमशः हारमोनियम एवं तबले पर गायकों का साथ देकर इस समारोह को सफल बनाया।

handball move to the fore. No doubt the weather accounts for this. The mat is reluctantly rolled up and our ardent cricketers begin their restless hibernation until another season, a milder sun, dawns with bright new hopes.

Manoj Srivastava, XI



१९७४ का पुरस्कार-वितरण समारोह इस वर्ष १५ मार्च को सम्पन्न हुआ। पुरस्कार वितरित हुए एक्स. पी. टी. ए. के अध्यक्ष श्री एस. के. रहमान के हाथों से। फोटो में वे पुरस्कार से सम्मानित कर रहे हैं ७ 'ब' के संजय घोस को। फा० स्कारिया माइक पर पुरस्कार विजेताओं के नामों की घोषणा कर रहे थे।

Handball Tournament to Span Two Terms.

(Call in the bridge-builders)

Satwant Singh and D. Puri were delegated by the Student Council to organize the '75 Handball Tournament. They report that it got off to a good start but that due to "many interruptions," it won't be possible to finish the tournament before the end of this term. The results which have come in (Juniors Section) are printed below. Senior winners will come in the July XL.

Singles Champion: Iftikhar-uz-Zaman, VIII-B (Tigers), and **Runner-Up:** Rohit Ahluwalia, VIII-B (Tigers).

Doubles Champions: Pravir Ghosh, VIII-B and Samir Km. Das, VIII-B (Leopards), and **Runners-Up:** Sanjiva Sinha, VIII-B and Subrata Banerjee, VIII-B (Panthers).

Altogether 106 boys have signed up for the tournament.

Sudanshu S. Roy, IX-A

Tribute from Ex XL Ed.

Dear Editor :

I received a copy of XL (dated 9th Oct. '74) via Fr Cleary. With Fr Moran, Fr Cleary, and Fr Niesen on its pages, it took me back to our good old days at St X. Incidentally, I was on the staff of XL when it was cutting its first teeth—way back in 1954-55. You boys have put a pair of moustaches on its upper lip. I predict a sunny future for you and your paper—Sundays inclusive.

Ever yours,
Prof. Alo Sircar

Ed. Note: We are very pleased to print this letter from Prof. Sircar who is a Lecturer in English at Gaya College, Gaya. We apologize to him for not printing it sooner. The issue referred to, by the way, was the last one put out by our predecessors, Anil Bhavnani and Raj K. Bhavnani. So they are the ones who should take a bow!

Dear sir,

I would like to suggest that our Student Council set up a weekly General Knowledge Quiz Competition for Std. VII and above. Stds. VII & VIII could be in the junior division, and the rest in the senior. Each boy who takes part could give 25 p. and from this money prizes could be given out to those who get 1st, 2nd and 3rd. Some of the money could be set aside for the Social Service League and the Student Council. We could do this in the tiffin break, and the Council could decide on what days to have it.

Sincerely yours,
Biswajit Jha, 8A

Dear Sir,

In this letter I would like to inquire about the badminton tournament. Last year it was started and everyone of us in the tournament gave Rs. 3.50 (for singles and doubles). Only one or two matches were played. I would ask the organisers to restart the tournament or return our entry fees.

Yours sincerely,
Pravir Krishna, 9A
and many others.

Speak Out!

Dear Sir,

We have a very good collection of books and magazines in our school library. But some irresponsible people do not understand their value. Many a time when a person picks up a magazine from the rack he finds it is torn or pages have vanished. What is this? I hope that some steps against such things will be taken by the librarian.

Yours Sincerely,
Sanjeev Bansal, 9 B
Ujjal Chaudhary, 9 B

Swimming Invitation to :

MAXAA

(Michael's & Xavier's Alumni Assoc)

MEMBERS

(real and potential)

You're invited to cool off and meet your fellow alumni at the SX and SM pools according to the following routine :

SX—Sun, Mon, Thurs 5:30 pm
SM—Tue, Wed, 6:00 pm

No special fee will be charged for your admit cards, but you should be duly registered (10.00) and up to date with your 1975 membership contribution (15.00). Cards can be obtained from Fr. Paul Faulstich at St. X. or Fr. James Cox at St. M.

Memo from the Weather Bureau:
"It's going to be a hot summer."

WAIT A MINUTE!

PRAKASH: If I saw a man beating a donkey and stopped him, what virtue would I be practising?
VIKASH: Brotherly love.

नृत्य का शौक अबवा....?

महाश्व,

गत वर्ष "फाइन आर्ट्स क्लब" ने एक "नृत्य वर्ग" की व्यवस्था की थी जिसकी सहायता से वरिष्ठ वर्गों के छात्र आधुनिक नृत्य-कला में प्रवीणता प्राप्त कर रहे थे। खेद इस बात का है कि इस वर्ष हमने इस "नृत्य वर्ग" का नाम ही न सुना। और तो और, इसकी अध्यापिका, मिस सविता ओबराय ने भी इस विद्यालय से विदाई ले ली है। अतः विद्यालय-अधिकारियों से अनुरोध है कि वे इस ओर भी अपना ध्यान दें और इस महत्वपूर्ण अंग को फिर से जागरूक बनाने में छात्रों की सहायता करें।

जगनीत सिंह
दशम् वर्ग

Xavier Profile:

Mrs Ira Sinha

Faces intrigue me and new faces intrigue me even more. So when the editor handed me the job of interviewing the newest face among the Staff, it was with promptness that I fixed an appointment with Mrs Ira Sinha who joined Xavier in January.

Tall, slim and smart, Mrs Sinha claims Patna as her home. She passed the matriculation examination from a local school and is an arts graduate from the Magadh Mahila College.

She teaches General Science and Drawing to the junior classes. From our brief conversation, she appears to be a Jack (sorry, a Jill) of many trades. Her hobbies include painting, photography, and dancing (classical as well as western). She takes a keen interest in games, although mainly from the sidelines.

A woman of few words, Mrs Sinha doesn't let her quietness prevent her from being an enjoyable person. She is genuinely interested in her pupils and it looks like they will profit much from her skill and devotion. We warmly welcome her to our campus.

Manoj Srivastava, XI

आकाशवाणी पर

• हमारे छात्र •

"यह आकाशवाणी का पंचरंगी प्रोग्राम विविध भारती है। प्रारंभ होता है कार्यक्रम-युवा-वाणी। आज सबसे पहले सुनिए, संत जेवियर स्कूल के ही छात्र से उनके मॉनीटर बनने का अनुभव।

"नियम और शृंखला प्राकृति के शाश्वत विधान"

ये शब्द आप में से अनेकों ने पिछले १८ मार्च की संध्या छः बजकर पाँच मिनट पर अपने रेडियो पर सुने होंगे। घटनाक्रम गत १६ मार्च से प्रारंभ होता है जब हमारे प्रधानाध्यापक महोदय ने हमदसम्बन्ध के छात्रों का परिचय एक ऐसे व्यक्तित्व से कराया जो आकाशवाणी केन्द्र, घटना के एक पदाधिकारी हैं। ये श्री बी. एन. पांडे थे जिन्होंने हम छात्रों को इस आकाशवाणी केन्द्र से अपने मनपसन्द विषय पर कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए आमंत्रित किया।

इस नए अनुभव को प्राप्त करने में हम छात्रों ने अपनी रुचि दिखाई। देखते देखते में उन्होंने हमारे वहां जाने के विभिन्न दिनों को भी निश्चित कर दिया। और उस १८ मार्च के बाद से हम छात्रों ने आकाशवाणी पर कार्यक्रम प्रसारित करने का सिलसिला जो आरम्भ किया वह अब भी जारी है।

अब तक हम में से अनेक छात्रों की मंच पर वाणी ने रेडियो के द्वारा आपके मन को काफी बहलाया होगा। अंत में मैं श्री पांडेजी को हम सबों का यह सुअवसर प्रदान करने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ।

—राजीव कुमार सिन्हा (१०)

फिल्म-समाचार

(पृष्ठ २ से आगे)

वाई को डोता था और जिससे उसे प्रेम हो गया था, उसने उसे छोड़ दिया।

'74 BATCH SURVIVE EXAM BATTLE AIM GUNS ON NEW TARGET

What does a senior do when he wakes up one morning and finds those fearful AIHS/Matric exams completely behind him?

He leaps for joy, for there is no more need to rattle off formulas, cram names and dates, or puzzle over problems meant for a computer. At least not for a few blissful weeks.

As a way of celebrating this event, Nikhil, Puri and Bahri, we hear, have gone off to Nainital;

Ajay Singh, Abhay, and the Nadda brothers have gone to Simla. Some, like Pramod and Sourendu, are using the interval to learn typing; Anil Bhavnani, Niraj Sinha (B), Rajiv Dhir, Raj Km. Bhawnani, and Eqbal-ur Rahman are preparing for I. I. T. exams while Sunil Srivastava is aiming at entrance in Vellore Medical College.

The AIHS (Mar 7-Apr 7) and Matric (Mar 10-Apr 5) exams took place almost simultaneously. There seems to be a mood of satisfaction



A final salute to the departing '74 AIHS batch. L-R (kneeling): Pradeep Bahri, Sunil Srivastava, Anil Kaseera, Deepak Banker, Atul Kishore, and Neeraj Sinha (B); (Standing): Rajiv Narayan, Nikhil Rohatgi, Eqbal-ur-Rahman, R. N. Puri, Rajiv Dhir, Amit Ganguly, Abhijit Choudhary, Raj K. Bhawnani, Neeraj Sinha (A), Anil Bhavnani, Gautam Ghosh, and Saurabh Das.

कई दृष्टि से यह सिनेमा उच्च कोटि का है। नायक के रूप में राजकपूर की अभिनय कला अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है। गानों से भरपूर होने के कारण यह फिल्म दर्शकों का अत्यधिक मनोरंजन करती है।

नीलाम सिन्हा (१०)

We wish them God's blessing and a bright future as they join the honoured ranks of Xavier Alumni!

Rajesh Sinha, XI

Atul Sinha, XI

among those examined. They felt that the questions were good and that they were prepared for them (how well prepared we will be able to judge a few weeks from now).

The '74 batch can look back with joy over their Xavier years, and also with pride over their senior accomplishments. If there were not too many all-rounders, there were a fair number, at least, who achieved much in either studies or co-curriculars taken separately. In art, elocution, debate, and cricket there were performances which will be long remembered and which set a high norm for the rest of us to follow and surpass.

“ईसवी सन् २००० में बिहार”

• • • कहा जाता है कि जब बर्बरता, बेकारी, और गरीबी अपनी चरम सीमा को लांघने लगती है तब क्रांति होती है। क्रांति समूचे ढांचे को उलट-पलट कर धर देती है। क्रांति सिर्फ दंगा-फसाद से नहीं, विचारों से भी होती है। बिहार में भी मैं विचारों की क्रांति की बात दोहरा रहा हूँ। अत्यधिक गरीबी, बेकारी, और अन्याय के मध्य

खेती होती है। सब कार्य विद्युत से संचालित है और मनुष्य सिर्फ बटन दबाने का कार्य करते हैं। पुलिस-संस्थान समाप्त हो गया है क्योंकि कोई कमी नहीं रह जाने के कारण चोरी, डकैती नहीं होती और कलह का निपटारा न्यायालय करता है। ट्रैफिक बढ़ जाने के कारण सड़कें नीचे और खंभों के ऊपर बनी हुई हैं। हर एक इमारत के ऊपर उद्यान है जिससे स्थान का बचत हो सके। चारों ओर खुशहाली है, सभी चिंतामुक्त हैं, स्वस्थ शरीर

प्रमुख अंश सर्वश्रेष्ठों ... आपके लिए

सुलगती हुई आग ज्वालामुखी जैसा फूट कर अपने लावा से तमाम जातीयता तथा पिछड़ेपन को भस्म कर देगी। यह आग बिहारवासियों में स्वतंत्रता के पश्चात् से ही सुलग रही है और उसकी चिनगारी प्रत्यक्ष भी होने लगी है। चंद वर्षों में व्यवस्था में मूल परिवर्तन होगा और शासन वास्तविक अर्थों में योग्यों के हाथ में आएगी। तब विज्ञान-चक्र पूरी गति से बिहार में घूमेगा और उसके पावन-प्राण समस्त बिहार, उसके प्रत्येक अणु-परमाणु में बस कर उसे तरक्की की ओर घसीटेगा और ईसवी सन् २००० तक बिहार हर क्षेत्र में पराकाष्ठा पर रहेगा। शायद मेरा ऐसा कहना बहुतां को अतिशयोक्ति प्रतीत हो किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि विज्ञान पागल है, उसका कोई ठिकाना नहीं कि वह क्षण भर में कितना कर बैठे। तो आइए हम बिहार को ईसवी सन् २००० के कल्पना-चित्र में देखें।

बिहार ... पृथ्वी पर स्वर्ग ?

• • • बगल में गंगा खंभों के मध्य से बह रही है और उन खंभों के सहारे एक समूचा शहर बसा है जिसपर आधुनिक फार्म, उद्यान, बाजार, कारखाना, कॉलोनी आदि स्थित है। इस शहर का नाम है ‘गंग-पटना’। दूर गांवों में ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं खड़ी हैं और खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों को मिलाकर सामूहिक

एवं स्वस्थ-मस्तिष्क हर ओर बिखरा पड़ा है। भोजन के लिए मनुष्य विशेष प्रकार की टिकिया का प्रयोग करते हैं जो भूख तथा अन्य-विकास के लिए पर्याप्त है कहीं भी लोह-पट-गामिनी और चल-चित्र भवन नजर नहीं आते क्योंकि पहला मूगित है और दूसरे की आवश्यकता नहीं रही चूँकि घर पर ही सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। विज्ञान जरूर प्रगति कर गया परन्तु सबसे विशेष पहलु यह है कि मनुष्य विवेकहीन नहीं हुआ है बल्कि सभ्यता के साथ-साथ उसके मानवीय गुणों में और विकास आया है और यह उसकी सर्वोत्तम उपलब्धि है।

—अतुल सिन्हा, (११)

इस बार निबन्ध-प्रतियोगिता के फलस्वरूप हमें कुछ बहुत अच्छे निबन्ध दृष्टिगत हुए; और निर्णायक दल को भी अत्यधिक कठिनाई हुई, सर्वश्रेष्ठों का चुनाव करने में।

वायदे के अनुसार, इस अंक में प्रथम स्थानाधिकृत निबन्धों को प्रकाशित किया जा रहा है। स्थानाभाव के कारण पूरे निबन्धों को प्रकाशित करने में हम अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। आइये, हम इनका ही रसास्वादन करें।

“ये परम्पराएँ हीरे के समान ...”

भारतीय परंपराएं सैकड़ों, हजारों, साल से चलती आयी हैं। हर पीढ़ी इनको मानती आयी है, इसमें निश्चित रूप से कोई गूढ़ रहस्य होगा, इन परंपराओं में कोई आन्तरिक लाम छिपा होगा, जिससे हमारे पूर्वज फायदा उठाते आये हैं और

“In the past ... so many stories of glory and virtue”

India, as we all know her, is a country badly caught in the clutches of poverty, corruption and other religious and social malpractices that have hurt the life of both the old and young generations. And yet when we look back to the past we see so many stories of glory and virtue.

In our homeland we have both good and bad traditions. There were bad traditions, like a widow being burnt alive on the pyre of her husband, the tradition of untouchability etc. But most of these evils have been either abolished or declared illegal.

As for the good traditions, some of them I bring before your eyes, e.g. faith in God and religion, no excess of freedom to men and women lest they should become immoral, and love for God and our neighbours.

But, alas, most of our younger generation do not agree to these moral values, and turn to follow blindly the western fashions and values. So, the youth should be made to understand the greatness of Indian family traditions and also made to understand the quotation of a great Indian social worker and philosopher, Swami Vivekananda, who said: “Indian life has tears on the face, but happiness in the heart; whereas western life has a cheerful outlook, but there is sobbing inside.”

Suraj Kumar (8B)

हमें भी इससे लाभान्वित होना चाहिये।

भारतीय परंपरा के अनुसार हर स्त्री माता के समान पूज्य होती है, दूसरे की स्त्री के तरफ आँख उठा कर देखना भी महापाप समझा जाता है। संस्कृत में कहा गया है, “मात्रवत् परदारोऽपि पर द्रव्येष लोढवत्।” दूसरों का धन हमारे लिये मिट्टी के समान है।

माता-पिता की सेवा ईश्वर की आराधना के समकक्ष मानी गयी है। इसमें एक आन्तरिक लाभ छिपा हुआ है; जिसे हमें समझना चाहिये। अगर आज हम अपने माता-पिता को, उनके वृद्धावस्था में सेवा प्रदान करते हैं, तो कल हम भी माता-पिता बनेंगे, वृद्ध होंगे, हमारी बारी आयेगी सेवा प्राप्त करने की। इस परंपरा से हर पीढ़ी दर पीढ़ी लाभ उठाती आयी है।

इन परंपराओं को खोने से, हमारा जो चारित्रिक पतन होगा वह कल्पनातीत है। ये परंपराएं हीरे के समान हैं; जिन्हें हम अगर संजो कर रख लें तो हमारा जीवन उस अनादि ज्योति के प्रकाश से ज्योतिर्मय हो जायेगा जिसकी खोज में सैकड़ों साधु मुनि, वर्षों तक तपस्या करते आए हैं।

बिमल. क. सिंह ९ 'ब'

X-ITORIAL : Spotlight...

(Continued from page 2)

and hardly improve our standard. A mediocre player has an upper hand when the game is sub-standard. But when we compete with other schools, the hand is not so "upper."

There is much excitement and fervour prior to each tournament, then we lay off for the rest of the year. There is little sustained effort at perfecting our games. And this accounts for our present low standard. If we want to improve our games, this attitude should not be tolerated.

Today we are at a crossroad. We may not be able to achieve what we did in the hostel days, but we can improve ourselves. The senior classes are growing and there is more talent available. What we need is rigorous practice and... good coaching.

Mr Sebastian deserves highest credit for all he has done to guide and coach us. It has not been easy for him, with the bookstore also to look after. We are thus delighted by the rumour that the authorities are on the lookout for a coach to work with Mr Sebastian.

I am sure you will agree that the time is ripe. It is neither too late nor too early, but the ideal moment for us to do something.

एक मौका और—

शरद मौसम सन्धासावस्था में मोक्षप्राप्त करने को अपनी गठरी जर्जर शरीर पर संभाले लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ रही थी और बसन्त-बहार अपनी यौनवस्था की ओर अग्रसर। हमें भी अपने ब्रह्मचर्य में एक और मिला अपनी प्रतिभा को निखारने का।

शुक्रवार, १४ फरवरी, को प्रथम तीन घंटियों में 'जेवियर लाईफ' द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। एष्टम् वर्ग के ऊपर की कक्षाएँ तीन खण्डों में विभाजित थी। दशम् वर्ग एकादशम् (वरिष्ठ) का विषय था "इसवी सन् दो हजार (२०००) में बिहार;" एवं वर्ग कनिष्ठ ८, ७ का विषय था "हमारे भारतीय परिवारों में कुछ प्रशंसनीय परम्पराएं हैं; हम उन्हें न खोएं।" इन दोनों वर्गों का हिन्दी अथवा आंग्ल भाषा में लिखने की स्वतंत्रता थी। उपकनिष्ठ वर्ग (६, ७) का माध्यम सिर्फ हिन्दी था एवम् उनका विषय था "नई कक्षा के प्रथम दिवस के अनुभवों का वर्णन करें।"

अन्तिम चरण सबसे रोमांचकपूर्ण एवं दिलचस्प था जब विजेताओं को प्रमाण पत्र तथा अन्य पुरस्कारों से प्रोत्साहित किया गया।

विजेता सूची

वरिष्ठ वर्ग (१०, ११)

हिन्दी खण्ड

प्रथम—अतुल सिन्हा ११
द्वितीय—चन्द्रकिशोर मिश्र १०
तृतीय—राजीव रमण १०
सराहनीय—राज कु० महाराज १०

कनिष्ठ (८, ९)

प्रथम—बिमल कीर्ति सिंह ९ ब
द्वितीय—नीलाम मिश्र ९ अ
तृतीय—शैलेन्द्र सहाय ९ अ
सराहनीय—संजीव वंसल ९ अ

अंग्रेजी खण्ड

सव्यासची बनर्जी ११
मनोज श्रीवास्तव ११
शिवाचन्द झा ११
रवि चौधरी १०

सूरज कुमार ९ ब

वरुण सिन्हा ८ ब

प्रवीर कृष्णा ९ अ

कुतिल जे० राय ८ ब

उपकनिष्ठ वर्ग (३, ७)

हिन्दी खण्ड

प्रथम—राजीव रंजन दास ७ अ
द्वितीय—शेखर स० शुक्ला ५ ब
तृतीय—जीतेन्द्र कुमार ७ अ
चतुर्थ—मनोज कुमार ७ अ

पंचम—रशीद अहमद ६ ब

षष्ठ—सैयद जवेद हैदर ७ ब

सराहनीय—१) संजय कु० सिन्हा ७ अ

२) राजीव कुमार ६ अ

"दुख और सुख के संगम"

नई प्रभात की नई बेला में मैं उत्साह एवं उमंग के साथ पाठशाला के लिए रवाना हुआ। रास्ते भर पुरानी यादों में खोये मैं स्कूल पहुँचा। अपने मित्रों से पुनः मिलने के लिये मैं व्यग्र था। मुझे इस बात की खुशी थी कि मैं अपने पुराने

मित्रों से फिर मिलूँगा। साथ ही अपने गुरुजनों का साथ छूट जाने का गम था जो मुझे बहुत प्यार करते थे। इसी तरह दुख और सुख के संगम में डूबा मैं अपने गन्तव्य जो कि सातवीं कक्षा थी, की ओर बढ़ा जा रहा था।

राजीव रंजन दास ७ "अ"

Debabrata Gupta (8 A) reporting: F. A. C. members got some very helpful tips on Feb. 15 & 18. Two classes were conducted by Mrs. Thomas, an artist from the U.S.A., who is teaching at Notre Dame Academy for a few months. Some budding artists from St. Joseph's joined our FAC's so that the audio-visual room was jam packed. Mrs. Thomas talked about the theory of colour matching, perspective, and many other art problems that we often face. Afterwards Mrs. Mehrotra praised her for managing to give us so much in such a short time.

*Many
hands
make
light
work!*



"The teachers had a hectic week the students had an anxious one." That quotation pretty well sums up April 7-11, except that it leaves out the vital "third partner", without whom there would be no teachers and no students, and that is the PARENTS. All three came together during Parent-Teacher week, and the result was several hundred fresh hopes and resolutions.



News In Brief

NJB basket

Good News (for a change) from the Xavier Canteen! Chairman Pradip Agrawal and co-chairman Jagjit Singh proudly pass on the statistic that, during March and April they and their faithful helpers pulled in a profit of Rs-350. Even allowing for inflation, that sounds like a school record. What is more, XL hasn't a single anticanteen-food letter to print this time!

This is not exactly news, but for those young bowlers who wonder why their best efforts to hurl the ball over the wall of the west games field do not succeed, the simple reason is the extra five feet recently cemented on above the old wall. Those who do succeed are getting free lessons in permanent detachment.

समाज-सेवा का अद्भुत प्रतीक! कुछ असहाय व्यक्तियों के लिए मकान बनवाने हेतु हमारे कुछ छात्र नन्त माइकेल से ईंट उठा रहे हैं, फा० राय के संरक्षण में।

सक्रिय-संत जेवियर समाज कल्याण संघ

"बहु जन हिताय, बहु जन सुखाय"—यह भावना तो हमारे विद्यालय के पाठ्य क्रम का अनिवार्य अंग है। इसे कार्यान्वित करने के लिए हमारे स्कूल में, नियमित रूप से 'सोशल सर्विस लीग' की बैठकें हुआ करती हैं। इन बैठकों में केवल शब्द एवं हो हस्ता नहीं हुआ करता। इन बैठकों के फलस्वरूप हम समाज में जागरूकता फैलाने के क्षेत्र में काफी हद तक अप्रसिद्ध हो चुके हैं। हम अपने सक्रिय दिलों की चेष्टा द्वारा इस परमार्थ की चेतना को जीवंत रूप प्रदान करने की चेष्टा कर रहे हैं।

विभिन्न कार्यक्रमों के हलचल में कहीं हम इस संघ के कार्यक्षेत्रों को भूल न जाएं। याद ताजी करने हेतु लीजिए दो महीने का व्योरा। धन्यवाद। फादर राय को जिन्होंने प्रत्येक कार्य में अग्रणी बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त किया। उनके कथन पर हमने तीन गरीब परिवारों का नव-निर्माण कार्य प्रारंभ किया है।

१—एक अंधे परिवार के सुचारु जीवन की पूर्ण व्यवस्था।

—एक क्षय-रोग से पीड़ित गरीब महिला, जिसके साथ सात बच्चे हैं, के लिए एक पक्के घर तथा जमीन की प्रायः पूर्ण व्यवस्था कर दी गई है।

३—हमारे भूतपूर्व रात्रि-रक्षक, भरत बहादुर (नेपाली) अपने चार असहाय बच्चों को छोड़कर इस लोक से कूच कर गए। उन्होंने करीब दस वर्षों तक हमारे संस्था की सेवा की।

इस परिवार की दशा आजकल एकदम दयनीय हो गई है। अतः हम इसका भी उद्धार करने को कटिबद्ध हैं। इस सराहनीय सेवा-कार्य में मैं अपने पूर्ण हृदय से इनको धन्यवाद ज्ञापन करूंगा, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना हाथ बटाया है:-

(१) संत माइकेल विद्यालय (२) संत जोसेफ कॉन्वेंट (३) हमारे स्कूल के शिक्षक, संचालक तथा कुछ सहृदय व्यक्ति, जिनके सहयोग से हम करीब ८००० रु० की सामग्री इकट्ठा कर चुके हैं।

'दीघा' में मकान का कार्य प्रारंभ हो चुका है। आगे हम सबों की सहायता पर निर्भर करते हैं। इसी हेतु हमने एक 'लॉटरी' चलाई है, और आशा है हम आपके पूर्ण सहयोग से इस कार्यक्रम को सफल बना सकेंगे तथा हम अपने आदर्श 'भगवते देशाय च' को सार्थक कर सकेंगे।

In 1891 Mr. James Naismith, a P. T. instructor in the YMCA College, Springfield, Massachusetts, hung up a peach basket and asked his students to aim a soccer ball into it. The peach basket story has now developed into what today is one of the fastest games on earth—basketball.

Basketball is popular all over the world, specially in the U. S. where it is the largest spectator sport of them all, due no doubt to the great excitement which seems to be built into the game.

The fast action game is played at its best by pro teams like the Boston Celtics, N. Y. Knicks, and Los Angeles Lakers. And some of the greatest players have had names like Bill Russell, Wilt (the "Stilt") Chamberlain, and Willis Reed.

Sports like running, high-jumping, and swimming depend on the effort and skill of one man. But basketball requires individual skill *plus* teamwork. When five good players know how to play as a team, it is not long before they are No. 1.

The international champs today are the Russians. They narrowly defeated the U.S. at Munich in 1972. It was a sad day for the Yanks, whose best players (the super-pros) were not able to play since the rule is that only amateurs (those who do not directly get money for playing) are eligible for the Olympics.

Back home in India we have some good teams, with people like Abbas Moontasir and Man Mohan Singh whose performances are of a good standard. Abroad we have not had much success yet, but our star is rising. Whereas in the West it is mostly an indoor sport, we prefer to play it outdoors. As good coaches and courts increase, we will surely improve and before long become world-class.

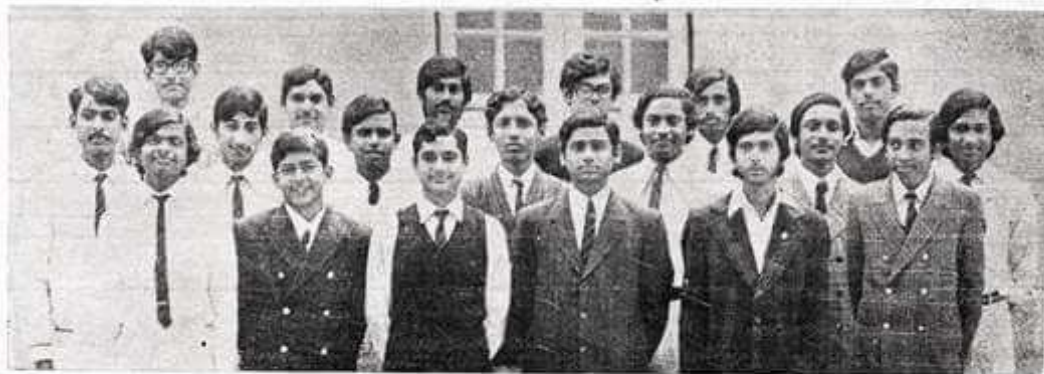
Basketball is a game which builds top coordination of body movements and develops a high sense of sportsmanship and cooperation among the players. And (unlike boxing or kabaddi) the rules insure a minimum of bruises and broken noses!

Here at Xavier how do we stand? Now that a handsome new court is on the way, we have a great opportunity before us. There is no lack of talent among us. With some good coaching and a lot of practice, we should be ready

in Jamshedpur!

A familiar name in basketball is *The Harlem Globetrotters*. They put on exhibition matches all around the world and besides having some of the finest basketball players alive, they know how to make the spectators laugh. Once they brought along a kangaroo to play for them, and do you know what happened?... this jumping jupiter scored the most! Now if a kangaroo can rise to such heights, there's gotta be hope for you and me.

Sabyasachi Banerjee, 11



A smiling, cheerful Matric '74 batch gather for one last photo together before the final exams. L-R (front row): Suresh Baxi, Chandra P. Rajwar, Jagat P. Nadda, Pramod Bhargava, Bimal Agrawal, and Raj Shekhar; (Middle Row): Dinesh Verma, Sanjay Bhatia, Bishun Lal, Ashok Singh, Abhay Krishna, Anant Upadhyaya, and Deepak Sinha; (Back Row): Satish Verma, Jagat B. Nadda, Ajay Singh, Sourendu Gupta, Shambhu Nath Singh, and Ravi Sinha. Camera shy: Anand Sen, Binoy Roy, Keshav Sinha, Neelanjan Roy, and Pandey S. K. Sahay.

Lines For Life

*To each is given a bag of tools
A shapeless mass and a book of rules
And each must fashion, ere Life has flown,
A stumbling block or a stepping stone.*

*One ship sails East, another West,
By the self-same breeze that blows;
'Tis the set of the sail, and not the gale
That determines the way she goes.*

*The ways of the world, like the ways of the sea,
As we journey through this life;
'Tis the set of the soul that determines the goal,
And not the storm or the strife.*

(Dedicated to our elder brothers who ran a good race and are now waiting for results of their final lap at Xavier)

Spring Sports: Senior Division

"Come on Tigers, Come on Panthers! Pull! Pull!" Pull they did. Then a whistle blew, and a loud whoop of victory from the Tigers' camp proclaimed them the tug-o-war champions for 1975.

This was one of the many exciting events on the Senior Sports Day, which was held on 8th of April. At the outset, before the track events began, the Tigers were at the bottom of the pool, but they made an astonishing recovery and finally tied the Panthers (274 each) at the close of the day. Two big aces in the Tigers' upsurge were Abhay Singh (IX-A) and Nirmal Lakra (VII-B). They were later declared the Senior and Junior Champions. Abhay ran the 100 m. sprint in 12 sec. and reached 17.1 ft in the broad-jump. The Leopards mustered 234 points to come in third.

Mr M. P. Singh, I. G. of BMP and Home Guards, kindly presided over the function and distributed the prizes just as the sun was setting in the west. Richard Bhanju (VII-B) and Ashish Kumar (V-B) bagged the largest number of medals in their sections and were declared champions of the juniors and Sub-Juniors respectively. As on the Junior Sports Day, the X-PTA announced special prizes (packets of sweets) for the runners-up.

The grand spectacle, and last of all the items, was the Fr Murphy Inter-School Memorial 4x100 m. Relay Race. Only two schools (Loyola and St Michael's) of the six invited showed up.

St Michael's broke the tape again this year and carried off the cup, leaving some to wonder about how wise it is to put this event at the flag end of the programme. After sprinting all afternoon against fellow Xaverians, the relay team is hardly in its best form for taking on the cream of other schools. In any case, our anchor-man, Shahidur Rahman, put on a tremendous burst of speed and secured a lucky Second for us.

As a last word, Mr Sebastian, the house captains, and school staff (too many to be named individually) deserve our gratitude for all the time and energy they devoted to making this day a happy memory.

Shakilur Rahman, XI

Table Tennis Hopes Overturned at Loyola

Loyola H. S. announced its 2nd Inter-School Table Tennis Tournament, and as soon as we heard about it, we wondered who would represent Xavier. After some pre-tournament games, Bhuwan Sinha, Mahesh Bhawnani and Rai Atul Krishna (X), Ajit Kumar (X-A), and Khanna Sanjay Narayan (VIII-A), were given the honour. They practiced wholeheartedly. The tournament which was supposed to have started on 8th April was postponed to the 12th. Unfortunately Mahesh and Khanna tumbled in the first round. Bhuwan and Ajit went further, but the latter bowed to his own school-mate in the semifinals. Bhuwan then met D. K. Gandhi of R.M.R. Seminary in the finals and went down to this strong opponent (1-3). In the doubles, SX lost in the first round. S. K. Das and D. K. Gandhi went on to win the doubles championship. Our thanks to Loyola for another well-organised tournament!

Akhouri Indu Shekhar, IX-A

1975 Cricket Scoreboard

- 1 Feb: Princip. XI (50 all out)
Rest of SX (49 all out)
- 8 Feb: Leopards (45 for 6)
Lions (44 all out)
- 8 Feb: Panthers (73 for 3)
Tigers (72 all out)
- 15 Feb: Panthers (150 for 7, D)
Lions (50 all out)
- 15 Feb: Leopards (49 for 7)
Tigers (48 all out)
- 23 Feb: St X (90 all out)
Loyola (43 all out)
- 26 Feb: St X (97 all out)
RMR Sem (34 all out)
- 1 Mar: St M (126 for 7, D)
St X (125 for 7)
- PDCA SEMIFINALS**
- 15 Mar: Panthers (88 all out)
Leopards (43 all out)
- FR CLEARY CRICKET TROPHY**
- 16 Mar: St M (208 for 7, D)
St X (101 for 9)
- 23 Mar: SX VIII & IX (149 all out)
SM VIII & IX (50 all out)

Statistics—courtesy of
Rakesh Bahadur, X and
Rajnish Kumar, IX-A.

SUMMER SWIMS Mon-Tue-Thu-Fri

10:00 a. m. & 4:30 p. m.



१९७५ की खेल-कूद प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) के "हर्डल रेस" में "हर्डल" छलांगते हुए बिमल क० सिंह (९) और छलांग मारने की तैयारी करते हुए '७ ब' के फंक्शन एक्का।

Seniors Sign For Science Test

Nine senior boys have signed up for the National Science Talent Examination scheduled for January 2, 1973. Their task will be to submit a project report and to sit for a written examination, most likely to be held at Patna Collegiate Multi-Purpose School. On the basis of this exam, 350 candidates will be selected from around the country and will be given a full science scholarship and additional stipend.

Principal at Xavier for 15 years

Xaverians Mourn Father Murphy

A wave of shock and sorrow swept over Xavier on September 28 when news came that Fr. Gordon Murphy, S.J. had passed away. For the past twenty days he had been convalescing in the hospital after a heart attack. His blood pressure was unsteady, but his old vigour seemed to be coming back. He hoped to return as principal at St. Michael's as soon as possible. But suddenly there was a relapse and within thirty minutes he was gone.

The following day St. Michael's and St. Xavier's were closed in mourning and hundreds of boys from both schools paid their last respects to the man who meant so much to them.

Father's body rested in state in the centre of the St. Michael's



school hall. At no time was there a lull in the stream of visitors. They came from all over Patna, and from as far away as Delhi, to honour one last time their beloved guru and friend.

On Friday, September 29, a funeral Mass was held at 4:00 p.m. on the St. Michael's campus. In his eulogy, Fr. Jim Cox dwelt on only one facet of Fr. Murphy's character, then stepped aside so that others present could comment and reflect on what Fr. Murphy meant to them. A fair number of fellow Jesuits, old boys, and parents came to the microphone and in a brief but moving way expressed what was in their hearts.

After the Mass was over, the majority proceeded on foot to the cemetery one mile away at X.T.T.I. Bishop Augustine Wildermuth offered the burial prayers.

Fr. Murphy was born in Chicago on January 24, 1918. He first arrived in India in January, 1947—

(Cont. on p. 7)

Xavier Life



Vol. 21, No. 5 ST XAVIER'S PATNA October 5, 1972

Art Contest Draws Record Number

Some 300 entries from 20 schools made the Third All-Patna Drawing and Painting Competition (Sept. 30) the most popular so far. With help from the Student Council, the Fine Arts Club has again organized a very successful programme.

The competitors were divided into three talent groups; A (Stds 9-11), B (Stds 6-8), C (Stds 2-5). In the space of two hours, each artist was asked to do a drawing as well as a painting. This was done between 1:00-3:00 p.m.

Afterwards *Dur ki Awaaz* was shown in the cinema hall and the contestants were served a special tea. During this period Mr. Nripen Roy and Mr. Bireshwar Bhattacharya carefully went about their work of judging and awarding prizes to the best pieces.

At 6:00 p.m. sharp the chief guest, Mr. P. K. J. Menon (Chief Secretary, Government of Bihar) arrived and everyone gathered in the hall for the prize distribution.

Some of the lucky winners are as follows: Ajaz Rizvan Ghani (from St. Michael's) took first place in Group B and was named the best artist of all the groups. The prize for sending the highest number of entries went to St. Joseph's School. Having secured five points, St. Xavier's won the Dr. Dilip Sen Memorial Shield for the second year in a row. Next highest was Central School (Anisabad) with 4 points.

(Cont. on p. 7)

News Staff Tours 'Indian Nation'

A sudden downpour of rain almost, but not quite, washed out a very interesting tour made by the XL staff on September 5. The ten staff members and their moderator, Fr. Faulstich, left the campus on cycle 30 minutes later than planned, but were still on time to see the dak-edition of Aryawart rolling at 10,000 an hour through the huge rotary press.

The tour was made possible through the kindness of Mr. Kali Kant Jha who is the Secretary and Manager of the Indian Nation Press.

One of the foremen, Mr. Abdus Subhan, was the guide and he took real interest in answering the staff's questions and in showing them all aspects of the press's operations.

Apart from the immense Crab-tree printing press, the most intriguing machine was the Linotype. Line by line, this machine composes the type which eventually forms the

newspaper. The operator sits at a keyboard resembling that of a typewriter. As he types out the copy and occasionally taps a lever here and there, the whole machine seems to be in motion.

Suddenly out of nowhere a piece of metal 2 or 3 inches long drops down and is so hot that you can hardly hold it. Moulded on top (and backwards) are words to appear in the next edition of the paper.

The staff hopes to visit other prominent presses in Patna and learn more about how the professionals do their job.



Top two salesmen. The fact that the drive for yearbook patrons was so successful is due to the hard work and business-like approach of boys like Anil Pathak, XI (Chairman of the drive) and Iftekhhar Anjum, VIII. Iftekhhar (pictured on the left) brought in the largest sum of any individual, Anil got the second largest amount, and Arvind Ajitsaria, X (not in the photo) placed third.

‘तीन विजेता’

विद्यालय में इस वर्ष पहली बार बास्केट बॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। चूंकि यह एक अन्तर्दलीय प्रतियोगिता थी, इसलिए प्रत्येक दल को एक दूसरे के विरुद्ध मैच खेलना पड़ा। पैन्यस और लेपडंस के बीच हुए पहले मैच में पैन्यस बड़ी आसानी से 24-7 से जीत गए। उधर दूसरे मैच में टाइगर्स ने लायन्स को 26-14 से पराजित कर दिया। फिर लायन्स ने अपनी हार का बदला पैन्यस को 21-19 से हरा कर ले लिया। लेकिन पैन्यस और टाइगर्स के बीच खेला गया मैच बड़ा ही उत्तेजक तथा मनोरंजक था। खेल के पहले हाफ में पैन्यस का पलड़ा भारी था। पर खेल के परिणाम के विषय में कुछ भी कह पाना मुश्किल था। खेल की गर्मी के साथ-साथ खिलाड़ियों का जोश भी बढ़ता जा रहा था। अन्त में गौतम चटर्जी के कठिन प्रयास के फलस्वरूप पैन्यस ने टाइगर्स को 30-28 से हरा दिया। सभी मैचों के प्राप्तांकों को मिलाकर पैन्यस, टाइगर्स और लायन्स, तीनों विजेता रहे।

तीनों टीमों को चार-चार अंक प्राप्त हुए। दुर्भाग्यवश लेपडंस एक भी मैच जीत न सके तथा उन्हें एक भी अंक प्राप्त न हो सका। इस तरह तीन विजेताओं के साथ बास्केट-बॉल प्रतियोगिता समाप्त हुई। इन खेलों के स्तर को देखते हुए हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि विद्यालय में बास्केट-बॉल का भविष्य उज्ज्वल है।

■ नरेन्द्र सिंह X

Two Collegians Found Cutting Up in Assembly

Two College students from Gujarat put on an interesting show at the morning assembly on Sept. 25. For fifteen minutes they demonstrated the art of Japanese paper-cutting which they learned on a recent trip to Japan. Their prize production was a lotus flower. In the course of their lively display, they reminded us more than once that we too could make such things if we just had a copy of their booklet which sold for Rs. 1.50 !

‘सफाई अपेक्षित है’

जीवन में सफाई के महत्व को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में 27 अगस्त से सफाई सम्बंधी कार्यों में वृद्धि की गई है। छात्रों में इसके प्रति रोचकता को बढ़ाने हेतु एक अन्तरदलीय स्वच्छता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्य में विद्यालय द्वारा नियुक्त व्यक्तियों के अलावा स्वयं छात्रों को विद्यालय की सफाई का ध्यान रखना होगा। इस अन्तर्दलीय प्रतियोगिता में प्रत्येक दल को एक सप्ताह की अवधि दी जायगी। चार सप्ताह के बाद यह क्रम फिर वैसे ही चलेगा। प्राचार्य ने इस प्रतियोगिता हेतु पाँच निर्णायकों की नियुक्ति की है, जो प्रतिदिन प्रत्येक जगह की सफाई को देखते हुए अंक दिया करेंगे। उस सप्ताह में विशिष्ट दल के प्रत्येक छात्र को इस कार्य में सहयोग देना होगा। असहयोगी छात्र अपने दल के अंकों में न्यूनता लाने के भागी होंगे। देखें हम कितने सफल होते हैं?

■ आनन्द सिंह X

Planning seriously for the fun

With the music and debating competitions behind us and the Fete fast approaching, the Student Council has been doing its utmost to make October 7th a grand success. Since projects like a fete require much work and careful planning, the SC has set up a seven-member committee, with Fr. D'Mello in charge, to manage the affairs of the Fete.

The first thing this committee discovered was that it didn't have enough money in its treasury to organize a reasonably good Fete. Hence they decided to hold a raffle. Over 3000 tickets have so far been sold which means the organisers will not only be able to pay for the handsome raffle prizes, but will be able to round up prizes for other ventures like Treasure Island,

Ring—the—Duck, and the Shooting Gallery. Housie and Horse Racing will be there to tempt budding "betters", and for those whose luck has run out the cafeteria will be available as a *sure* bet. Cartoons and a miniature boat journey through Patna are being planned for the children.

As somebody expressed it the other day, the effort and goal seems to be to make this Fete *so good* that we will be able to forget last year's. That may be an exaggeration of last year's failure. However, it is no exaggeration to say that in the end what will make or break the '72 Fete is not a single committee, or a particular stall, but simply the enthusiasm of *each and every* Xavier boy. Let's hope for an abundance of it this weekend!

—Fellow Students:—

The long awaited Xavier Fete has arrived. Please work like ants, sweat like horses, and get dog-tired so that the big day coming up will be a grand success.

Yours sincerely,

Arun Kumar

—Student Council President—

QUOTATION

"There will not be another fete like it this year."—from Wm. Shakespeare's last (and till now unpublished) tragedy *Saturday afternoon at home*, Act VII, Sc. II.

—Dussehra Holidays—

School Closes
11 Oct. (12:05 pm)
Starts Again
23 Oct. (9:15 am)

और कहीं हम जा सकते ?

महाशय,

नए टेबुल-टेनिस टेबुल के आ जाने से पुराने वालों को भोजन-कक्ष के प्राचीर में रख दिया गया है। वहाँ जगह की बहुत कमी है जिससे कि खिलाड़ियों का



पाठनीय

खेल नहीं निखरेगा। वहाँ का वातावरण बहुत ही दूषित है और उसमें ज्यादा देर तक ठहरना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ एवं निर्मल हवा अनिवार्य है। अतः छात्र संघ एवं अधिकारीगण से सविनय निवेदन है कि उन दोनों टेबुलों के लिए उचित स्थान की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र कर दी जाए। आशा है इस पर ध्यान दिया जाएगा।

आपका विश्वासी

अमर सिन्हा X

XL Goofs Again

Dear Sir:

This is to refer to the photograph of the Musical Competition which you published on page 3 of your last issue. It was said that the name of the boy was Amitabh Sinha, but the name of the boy in the picture is Nilabh Mishra. I hope the mistake will be corrected.

Yours sincerely,

Surya Bhattacharya

■ Thank you for your letter and for pointing out a very unhappy mistake. Many others noticed it also. However, you might like to know that the boy's *real* name is not Nilabh Mishra, but Nilabh Sinha (Amitabh's older brother)!

—Ed.

मधुर स्वरों की तान-धुन में !

२३ सितम्बर की शाम को संत जोसेफ कान्वेंट में एकांकी परिषद पटना के द्वारा एक संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में अन्य कई स्कूलों की तरह अपने विद्यालय से भी कुछ छात्र संगीतज्ञों ने भाग लिया था। समारोह का कार्यक्रम करीब सात बजे आयोजकों की ओर से दर्शकों का अभिवादन करके किया गया।

प्रतियोगिता शुरू हुई संत जोसेफ कान्वेंट के छात्र संजय तिवारी के द्वारा जिन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी का एक-एक गीत सुनाकर तथा माउथऑर्गन बजाकर दर्शकों का दिल जीत लिया तथा प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर लिया। शास्त्रीय संगीत में राममोहन राय सेमिनरी के छात्र संदीप सेन (जो कि पिछले साल तक संत जेवियर्स के छात्र थे) ने सितार पर रागदेश बजाकर निर्णायकों तथा दर्शकों को बड़ा

प्रभावित किया तथा उस क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार के भागी बने। समूह गान का प्रथम पुरस्कार कुर्जी अस्पताल की महिलाओं को उनके नेपाली गीत के लिए मिला।

अपने विद्यालय के तीन छात्र, अनिरुद्ध मुखर्जी, धीरेन्द्र तथा शंकरान ठाकुर ने एक-एक भजन गाया। अनिरुद्ध तथा धीरेन्द्र के प्रयास सराहनीय थे और शंकरान ठाकुर को तो उनके उत्तम प्रयास के लिए एक सान्त्वना पुरस्कार भी मिला। वादन के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार अपने विद्यालय के अरुण कुमार को मिला जिन्होंने इलेक्ट्रिक गिटार पर एक बड़ी ही लोकप्रिय फिल्मी धुन बजायी थी। इसी तरह अन्य कई आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। अन्त में समिति की सदस्या श्रीमती मुखोपाध्याय ने समिति की ओर से सबों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

B. S. E. B. Sponsors Novel...

Experiment

It has often been said that boys who do extremely well in examinations are usually bookworms and rarely know anything outside their textbooks. To test the truth of this saying, and to find out if the Board's examinations are actually a measure of one's ability, the Bihar School Examination Board organized a 3-day Community Life Programme from September 17-20.

The first twenty of the Secondary School examinations (1972) and the first ten of the Higher Secondary examinations (1972) were invited to participate in this programme. Two seniors from St Xavier's—Abhay Shankar and Subir Sen—also participated to find out how they would fare in competitions against persons of other examination bodies. Strangely enough, there was not a single girl among the first 20 of the S.S. nor the first ten of the H.S.

Busy Schedule

The programme started off with an essay contest on Sept. 17. The next day was plenty busy with three contests of two hours each—Science Talent, General Knowledge, and Elocution. On Sept. 20 a difficult personality test was given. In this, an interview board judged the participant's personality on the basis of some questions that they asked. One surprising thing about all these tests was that they were held in English, although most of the participants would have preferred Hindi.

On the lighter side, there was a trip to Rajgir, Nalanda, and Pawapuri by a tourist coach on the 19th.

More than a good time

The two Xavier participants feel they not only had a good time, but learned something valuable for the future. They discovered, among other things, that the outlook on life of boys from other schools is different from theirs. After the ice was broken on the first day, the atmosphere became very friendly. The participants mingled well and had many warm discussions.



In the photo above, Miss Nilam Prasad discusses with Mr. Arun Kumar the progress of his son Anjani of Std IA (upper left corner). Meanwhile, Mrs. Narayan and her son Vijay (upper right corner) await their turn.

Parents-Meet-Teachers nights have blossomed into a week. At the suggestion of certain parents themselves, more time has been set aside for them to discuss their boy's progress with their teachers. Without doubt, the purpose of these recent meetings (Sept. 25-28) was fulfilled much more than by those held during First Term.

P
M
T
—
W
E
E
K

'He loved his work'

By Fr. Kevin Cleary, S. J.

Men of Xavier,

If there is one man today who is remembered, and remembered lovingly at St. Xavier's, it is Father Gordon Murphy.

He came to this school as a young man learning the Xavier traditions from the stalwart Jesuits who had founded this school and started it off according to high ideals.

Then the time came for Father Murphy to take up the reins of government as Principal in 1955. From that time onward he came into the lives of generations of Xavier boys who have stood every morning near this old imli tree and in front of this school building, just as you boys are standing here today in assembly.

It was Fr. Murphy who initiated and began the "assembly" here at St. Xavier's. And now it has grown, it has improved with the years, to become what you young men have made it today.

You see how much we owe to men of vision, to men of action who have built up an institution. Fr. Murphy was Rector and Principal of St. Xavier's from 1954 to 1959: that was the period when the new dining hall, study hall, and dormitory were built, all of which we have converted to our present requirements. It was he and Fr. Reinboth who were the men of action that gave you boys that fine swimming pool which adds so much to your fun and happiness in school.

In the last ten or fifteen years we have been justifiably proud of our debating teams and our debating contests. We owe all that to his hard work and initiative, just as we owe our one-act play contests to his foresight and determination.

(Cont. on p. 8)

On Saturday, Sept. 29, Fr. Scaria planned a Prayer Service during the morning assembly in order to honour our former principal Fr. Murphy. It was a moving ceremony, with the school flag flying at half-mast, and all the boys on their best behaviour. From among the several tributes paid to Fr. Murphy we wish to record the major parts of those by Fr. Kevin Cleary, S. J. and by senior student, Subir Sen. We think they speak for many people. -Ed.



"If ever a man lived up to the Xavier motto..."

My Fellow Xaverians,

When I think of Fr. Murphy and all that he meant to us, so many things come to mind that I do not know where to start, what to say. Many of the juniors did not know him, but for us who knew him from a very tender age, from the very beginning of our school life, it is difficult to convey that feeling of personal loss to you.

I remember when I joined this school for the first time as a boarder. We had unpacked my things and I was to bid goodbye to my parents. Naturally, I was on the point of bursting into tears. Suddenly Fr. Murphy scooped me up in his arms, nodded to my parents, and before I knew what

(Cont. on p. 7)

■ अब से जब आप किसी रिश्तेवाले को अपने स्कूल चलने को कहेंगे तो उसे शंका की कोई गुंजाइश ही नहीं रहेगी क्योंकि हाल ही में विद्यालय के मुख्य-द्वार पर एक शिलालेख जिस पर 'संत जेवियर्स' खुदा हुआ है, लगा दिया गया है। शायद इसे देखना थोड़ा कठिन हो पर यह वहीं है।

★ In a recent city-wide Table Tennis Tournament, Raj Km Bhawnani and Bhuwan Sinha took part in the Juniors' Division. The opposition was too much for them in the singles games, but the doubles they took in fine style. XL congratulates them for their teamwork!

■ अभी हाल में उपप्राचार्य के कार्यालय के अन्दर तथा बाहर कुछ परिवर्तन किए गए हैं जिसमें बौगनबीलिया की लम्बी लता का अनावरण मुख्य है। इसके अलावा नए परदे, बड़िया पेन्टिंग्स तथा कई आकर्षक पोस्टर भी लगाए गए हैं जिसके कारण आफिस अब आकर्षक दिखता है।

★ When Alistair MacLean's latest book arrived in Patna's bookstores, one of the first to hear about it was that voracious reader S. Radhakrishnan. Faster than you could say *Bear Island*, he had his own copy and was enjoying the story. He liked it so well that he has donated the book to the Casual Library, and earned the gratitude of all the CL members.

■ प्राचार्य फावर स्कारिया ने विद्यालय में एक सामान्यज्ञान प्रतियोगिता आयोजित करने की योजना बनायी है। वे दशहरा छुट्टी के तुरंत बाद इस प्रतियोगिता के आयोजन की आशा करते हैं।

★ Using their free time and quite a few holidays, our Xavier Hall neighbours performed a noble task recently. They converted the old bakery into temporary living quarters for their two cooks who have to be up at 4:30 a.m. to begin their work. What a pile of bricks and rubbish came out of that room!



★ Elsewhere in this issue there's an article about the fine music competition which took place at Bankipore on Sept. 23. What it does not mention is the terrific razzing received by Xavier's first-place winner as soon as his class mates classmates heard about his prize: a tin of powder.

★ Lee Marvin fans will be glad to hear that *The Dirty Dozen* which was supposed to be shown on July 30 has been re-booked for the last week of January, 1973.

BIG VICTORY!

The Staff was no match for the mighty Student Eleven October 3rd. Final score: 2-nil. Star players: Fr. D'Mello (he was all over the place), Jagat Bhushan Nadda (owner of the two winning goals), and Sandip Choudhary (the invincible goalie).

Earlier in the day, the Student Council presented each teacher with an inscribed Wilson ballpoint pen, as a token of appreciation for services rendered off the football field.

■ विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का कार्य बिना किसी बाह्य प्रदर्शन के चुपचाप चल रहा है। सुबीर सेन पत्रिका के नए सम्पादक चुने गए हैं। सुबीर आजकल विद्यालय के प्रत्येक छात्र की तस्वीर प्राप्त करने के प्रयास में लगे हुए हैं। फोटो खींचने तथा उन्हें तैयार करने का काम 'शेडो' स्टुडियो के द्वारा किया जा रहा है। अब तक की खबर के अनुसार यह कार्य 95 प्रतिशत समाप्त हो चुका है।

★ XL surely speaks for the whole school in offering its sympathy and prayers to Mr. Dennis Cherubim whose father died in Bettiah on September 7. He was still a young man and many little ones are left at home. The future will not be easy for Dennis' mother, brothers, and sisters.

■ सूरज कुमार (VB) हाल में कई आवश्यक तथा मनोरंजक प्रश्नों की सूची 'जेवियर लाइफ' के कार्यालय में प्रकाशन हेतु ले आए। देखिए आप इस एक का उत्तर दे सकते हैं या नहीं। - सौर मण्डल में किस ग्रह के सबसे ज्यादा उपग्रह हैं? उनकी संख्या कितनी है?

★ Fr. Scaria has a new pair of specs and as far as we can see (with our old ones) they are powerful indeed. Hereafter it's going to be harder to score points in the inter-house cleanliness campaign.

■ अगले शनिवार को विद्यालय मेले के अवसर पर अपने यहाँ के छात्र कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों तथा पोस्टरों की एक प्रदर्शनी होगी ताकि अधिक से अधिक लोग इसे देख सकें तथा उसका आनंद ले सकें। हमें आशा है कि कम से कम यह प्रदर्शनी शुल्क रहित होगी।

Lack of coaching and preparation?

Hindi-English Debates Held

Intramural house debates took place during the week of August 21-26. The finals of the Hindi division were staged on Wednesday, August 23. The result surprised a few people as the younger and less experienced Panthers team defeated the Tigers while supporting the proposition, "विज्ञान मानव के लिए अभिवाप प्रमाणित हो रहा है।" Niraj Sinha (A) and Saurabh Das

both earned praise for their speaking ability.

In the Junior section, it was the Leopards who triumphed over the Tigers.

On August 26 (Sat.) the English debaters met to decide whether or not "The press, the radio, and other information media do not give man a chance to think and be himself." On that occasion the Tigers routed the Lions, the winning house being represented by Niraj Sinha (A), Sanjay Sharan, Dilip Srivastava, and Subir Sen. In the Junior Section, The Leopards overcame the Lions. Here the speaking of Nilabh Mishra, Bhuwan Sinha, and Chandra K. Mishra was rated high.

In terms of the whole debate, Subir Sen (English) and Arun Kumar (Hindi) emerged as the top speakers.

During and after the various contests, some people commented on the apparent "lack of preparation and need for coaching in genuine debate style." The organizers and various houses have heard this comment and are anxious to do something about it before the next intramural debates get underway.

A special word of thanks is due to the "outsiders" who kindly acted as judges for both sections of the debates: Mr. K. B. Narain, Fr. R. P. Sah, Fr. J. B. Thakur, and Fr. A. Starr.

Fr. Murphy (Cont. from p. 1)

—only a few months before the glorious Day of Independence.

His first major assignment was that of Hostel Prefect and Vice-Principal at St. Xavier's from 1952-1954. He became Rector in 1954, and the following year was made Principal.

As Principal from 1955-1968, he did much to enhance the reputation of St. Xavier's School. His capacity for work, his good humour, and great love for building boys into men will be remembered for generations.

"If ever a man..."

(Cont. from page 5)

was happening, I found myself sitting on his lap, gulping down bread and butter and tea. This little incident, one of so many, just shows you how well he understood his boys, seniors and juniors alike.

Today I can stand up before you and express myself unhesitatingly. But even five years ago I was too shy to speak out even in class. When I was in the seventh we were having a little compulsory recitation in class. For some reason, Father happened to be present. I gave my speech in my usual faltering, stammering manner, — the more so because he was present. A few days later we had to submit our names for the English elocution contest. It never struck me to give my name. The next day, Fr. Murphy called me to his office. I went, nervous and frightened. He showed me the list of those boys who had given their names and said, "Son, why isn't your name here?" I was dumbfounded. I can't speak!" I told him. "Aren't you speaking now?" he asked. "But before a crowd, in a contest!" He said, "Of course you can, you can do anything if you try hard enough."

I do not know what he meant to others, but for myself I do believe from the depths of my heart that if ever there was a man who lived up to the motto of St. Xavier's *For God and Country*, it was Fr. Murphy. Let his life be a source of inspiration to us always.

Subir Sen, XI

Art Competition

(Continued from page 1)

Prize winners from Xavier were: Amarendra Narayan (Consolation), Sourendu Gupta (Second), Sudipto Roy (Consolation), Sunil Kayan (Consolation), Manoj Ram (Consolation), Debabrata Gupta (Consolation), and Balaji Mohnish (first).

Those who wish to see the prize-winning paintings may do so at a special exhibit to be shown during the Xavier Fete, October 7.

Xavier Life

Editors

Pradeep Mishra
Sanjay Sharan

Reporters

Amar Sinha, Arun Kumar
Arvind Ajitsaria (Photog),
Narendra Singh, Anand
Singh, Ashish Das Gupta,
Prabhat Singh, Vineet Singh
Neeraj Sinha (A), Raj K.
Bhawnani, Sourendu Gupta.

Published at unfixed intervals during the year, XL is a report on and for the boys who study, work, and play at the school on the Gandhi Maidan. Address letters to: Editors of *Xavier Life*, St. Xavier's, Fraser Road, Patna-1. Printed by Sanjivan Press, Patna-11.

— जीना कैसे ? —

जीवन एक अनमोल बेला है,
कभी नहीं वह अकेला है।
संत जेवियर्स का क्या कहना,
सात अक्तूबर यहां बड़ा मेला है।
'सुम' कैसा पाल रखा है,
भाग्य आपका न काला है।
दौड़ पड़े कुछ देर न करे,
पास खड़े विजय-माला है।

'He loved his work'

(Cont. from p. 5)

So you see from these words of mine how well he should be remembered here at St. Xavier's. The truth was: he loved St. Xavier's,—he loved you boys—he loved his work of education. He accomplished so many things, but it was not what he did but the Man that he was that explains his whole life.

In this short appreciation of him we have left many things unsaid, many things. But on behalf of all the teachers who ever worked at St. Xavier's, let me this morning pay him the tribute of our deepest respect and gratitude for all his kindness.

He was the finest of gentlemen in all his dealings with us. God has taken him away from us at the height of his efficiency, at the zenith of his educational experience. And whatever God does, he does for the best.

But we Xaverians this morning lift our hearts in a prayer of gratitude to that good God because he gave to St. Xavier's that splendid Man, that devoted Principal, that excellent Priest of God, Father Gordon Murphy!

एक और मुख्यमंत्री:

आज हम अपने देश की स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती मना रहे हैं पर क्या हमने इन पिछले वर्षों में अपनी उपलब्धियों को आंका है? आज हमारी तथा हमारे समाज की क्या स्थिति है, इस पर हमने कमी विचार किया है? आज हमारी नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति कसी है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर को यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

Canteen Theft Reported

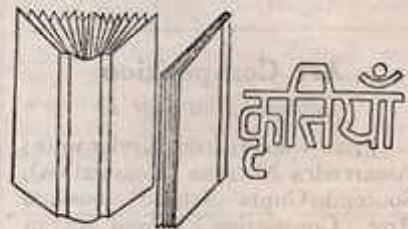
On the morning of Sept. 21, as the chairman of the C. M. C. (Canteen Management Committee) walked into the canteen to count the money of the previous day's sales, he was caught by a great surprise. THE MONEY WAS MISSING, and with no clue as to what had happened to it. The following day, and the day after that, more losses were reported and he became very worried.

On Saturday the 23rd, the C. M. C. formed its own CID and made a thorough search of the canteen premises. All the while, some were blaming the managers, others the customers.

Then, a great discovery! Hidden far back in a deep drawer were Rs 118.00 and four luxuriously bedded baby rats. Fortunately mama and papa rat had not converted the money into their own currency.

एक कटु सत्य

ने अपनी कृति 'एक और मुख्यमंत्री' में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। यह कहानी है निधन परिवार के एक बेकार ग्रेजुएट अरविन्द की जो अपनी भाभी के तानों से ऊबकर घर छोड़ देता है। दूसरे शहर में भी वह राजनीतिक पार्टियों के चक्कर में आकर इधर-उधर भटकने लगता है। इसी दौरान उसे कई कड़े अनुभव प्राप्त होते हैं जो उसके जीवन की दिशा ही बदल देते हैं। उसके पथ राजनीति की ओर अपरिचित



होते हैं। चुनाव में उसे किसी तरह कांग्रेस पार्टी की उम्मीदवारी मिल जाती है और वह चुनाव भी जीत जाता है। एक बेकार युवक अब एक विधायक है। अपनी चालाकी तथा तिकड़मबाजी से वह किसी तरह मन्त्री पद प्राप्त कर लेता है। और फिर मुख्य-मन्त्री जिस पद पर वह दस साल तक लगातार रह जाता है। बाद में जब उसे लोग अपना नेता चुनकर मुख्यमन्त्री नहीं बनाते तो वह दल बदलकर तथा कुछ विधायकों को मिलाकर फिर मुख्यमन्त्री बन जाता है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने आज के मानव-जीवन पर करारी चोट की है। आज मनुष्य कितना मूढ़, निमंम, भ्रष्टाचारी, जातिवादी, व्यक्तिवादी तथा स्वार्थी हो गया है, इसका अन्दाज हमें इसे पढ़ने पर ही होता है। अरविन्द को जनता की पूर्ण सहानुभूति प्राप्त है पर वही जनता तथा देश का सबसे बड़ा दुश्मन है। चूंकि उपन्यास व्यंग्यात्मक है, इसमें हास्यरस का भी समावेश है। पूरी तरह से देखिए तो 'एक और मुख्यमंत्री' एक कटु सत्य को हमारे सामने रखता है, जिसे हमें स्वीकार करना चाहिए। ■ प्रदीप कुमार X

Grand time for making new friends



Scholars Honoured

Recognition Day was held on the 12th of April. Parents were invited to be present and to assist in giving out the various prizes. Awards were given to boys who stood first in one or more subjects. After the assembly the parents posed with their sons for a group photograph.

Fr Wrob Departs for Well-Earned Reward

On the morning of April 14, with the blue-and-gold flying at half-mast, Xaverians met in assembly and paid a fond farewell tribute to Fr. Joseph F. Wroblewski, S. J.

Fr Wrob, as he was familiarly called by his students, died on April 13 at Xavier Teacher's Training Institute in Digha Ghat.

He had spent the last 14 years of his life at XTIT cheerfully enduring a paralysis which grew steadily worse through the years.

During the assembly Fr. Scaria called on Fr Kevin Cleary to speak of the 20 amazing years (1942-1962) when Fr Wrob did so much for St Xavier's as senior

Xavier Life



Vol. 25, No. 1

ST XAVIER'S PATNA

May 6, 1976



कला प्रेमियों के लिए रंगीन-सँध्या

दिनांक २०-४-७६ को सांय ५-३० बजे। विद्येटर हाल नाट्य-प्रेमियों से खचा-खच भरा था। यह था हमारे वार्षिक एकांकी प्रतियोगिता का दृश्य।

नियत समय पर यवनिका उठी। 'टाईगर्स' प्रस्तुत थे अपने हास्य एकांकी 'दो कलाकार' के साथ। इसमें बूझामणि व मातंण्ड ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। तत्पश्चात् लड़की के विवाह पर पिता की मजबूरियों का चित्रण करने वाला एक सामाजिक व्यंग्य एकांकी हुआ। यह था 'लायन्स' द्वारा प्रस्तुत 'रीढ़ की हड्डी'। फिर 'पैन्यर्स' ने प्रस्तुत किया 'वापस', इसमें एक छात्र विकल बुद्धि से अपने फीस के रूपए वापस लेने कॉलेज आता है तो प्रोफेसर उसे चतुराई से भगा देते हैं। फिर उस दिन का एकमात्र ऐतिहासिक

एकांकी 'पृथ्वीराज की आँखें' का 'लेपडेंस' द्वारा मँथन किया गया। इसमें भारत का अन्धा शेर पृथ्वीराज तानाशाह गोर के आगे अत्याचार के बाद भी झुकता नहीं।

फिर 'लघु मनोरंजन कार्यक्रम' के बाद निर्णय सुनाया गया। सर्वश्रेष्ठ एकांकी का पुरस्कार प्राप्त किया 'पृथ्वीराज की आँखें' के प्रस्तुतकर्ता 'लेपडेंस' को। सर्वश्रेष्ठ (शेष पृष्ठ ६ पर)

छात्र दिवस

वर्ष के पूर्वांच 'छात्र-दिवस' बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष भी २३ मार्च को सभी ने उत्साह और उमंग से इस दिवस के सफल आयोजन में पूर्णतः सहयोग दिया। एक दिन के शिक्षक अन्य कार्यकर्ताओं ने भी अपनी भूमिका भलीभाँति निभायी।

इस दिन की शुरुआत असेम्बली के सफल आयोजन से हुई। ड्रिल मास्टर ने

teacher, alumni moderator, and sports enthusiast. Fr Cleary was uniquely able to talk to us about Fr. Wrob because he was with him as a brother Jesuit and fellow teacher through those same years.

The funeral Mass began at 4:30 pm in the chapel at XTIT, with Bishop Augustine F. Wildermuth presiding. Fr Jim Cox preached a beautiful eulogy, the kind which only a real friend and fellow teacher could put together. The Mass was followed by the burial rites in the XTIT cemetery. A number of Old Boys were present to voice, as it were, one last "thank you" to their former guru.

(See also : Letters column on page 2)

असेम्बली में जान ला दी। फिर इसके समापन पर छात्र अपनी-अपनी कक्षाओं में विशेष प्रसन्नता से प्रवेश कर प्रथम घंटी की तैयारी में तत्पर हो गए। शिक्षकों के लिबास में इसवीं कक्षा के छात्रों को देख (शेष ४ पृष्ठ पर)

★ संपादकीय ★

‘भगवते देशाय च’

नव वर्ष के अद्भुत आलोक से विद्यालय के कार्य-कलाप आलोकित हो उठे हैं, प्रतिभाएं मुखर रही हैं और सभी अपने कर्तव्यपथ ‘भगवते देशाय च’ पर पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ अग्रसर हो रहे हैं। विद्यालय-प्रांगण विविधताओं को ‘सामं-जस्य’ देता है और विद्यालय-पत्रिका भाग्य को सहायता है ‘छात्रों की प्रतिभा’ के अलग-अलग कलेवर से। आत्मनिष्ठावर्धक मनुष्य को संतोष देती है। अतः बन्धुओं अनुरोध है कि अपनी रचनाओं द्वारा जेवियर-लाइफ के पन्नों में प्राण भर दें ताकि यह विद्यालय के जीवन में प्रकाश स्तंभ बन सके। ईश्वर ने ‘मनुष्य’ की सृष्टि की, वास के लिए वसुधारा का निर्माण किया और प्रत्येक को ऐसी शक्ति दी जिससे कि वह प्रकृति पर शासन कर सके। इस शक्ति का विकास ही पत्रिका का मूल उद्देश्य है और विद्यार्थीय गति-विधियों की जाँची तो इनमें निहरी हो है।

विद्यालय हमारी चेतना को जागरूक करता है, अतः हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि केवल चिन्तन ही न करें बल्कि मुखर हो विद्यालय को कुछ दें। आदान-प्रदान मस्तिष्क की कुंठा दूर करता है और भविष्य-निर्माण की दिशा में सचेष्ट करता है। जेवियर-लाइफ पत्रिका का यह अंक हम सबों के मानसिक तुष्टि के पाषण्ड के रूप में हमारे सामने है।

Shakilur & Bhuwan Bow Out

XL would like to publicly thank Shakilur Rahman and Bhuwan Singh (recently promoted to the rank of Old Boys) for the fine editorial job they performed during 1975.

Sunil Agrawal (10A) has been appointed the new editor and has so far been assisted most by the following writers and news hounds: Sanjeev Bansal, Neelabh Mishra, Pravin Sinha, Sindhu, Pravir Krishna, Sitaram Sharan, Parthosarthi Ghosh, Rajiv Mohan Prasad, and Suraj Kumar. “The more the merrier” is the answer to those who wonder if they can also write for XL.

Dear Sir,

I was sorry to learn from *The Statesman* of the 16th April that Father Wroblewski has passed away. Few could have been so lucky as we were to have him as our teacher to guide us through the final years of our school. Thousands of miles away from home, like others with him of his country, he gave us his best with devotion and dedication. How many can say as we can that we have known—the most under his tutelage—how happy learning can be, how gay, how full of life?

We have come a long way since then. One by one our older generation have started to leave the scene. So has left Father Wroblewski a few days back. Fond memories will be our homage to him now, our gratitude and affection, and a quest to keep alive the spirit which he has fostered within us.

Yours sincerely,
Pranab Kumar De, 1949

Dear Sir,

I would like to suggest that there should be a column in *Xavier Life* full of advertisements.

Secondly, I want to give a suggestion regarding the publication of the paper. You should publish it once a month. If that is not possible, then at least once every two months. If you publish all the happenings of a term in one issue, there will not be enough space for everything, and the whole thing will be topsyturvyfied.

Yours sincerely,
Preveen Sinha, 10 B



पाठनीय

पुस्तकालय

प्रिय संपादक महोदय,

हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में साप्ताहिक या मासिक पत्रिकाएं अति-विलम्ब से आती हैं। फल यह होता है कि छात्र उन्हें या तो पढ़ चुके होते हैं या पुराना जानकर उनमें रुचि नहीं लेते। यदि ऐसी व्यवस्था हो सकती जिससे ये स्थानीय बुक-स्टॉल से खरीदी जा सकती तो इससे हमारा ही हित होता।

छात्र-संघ की प्रथम बैठक में श्री विश्वजीत झा (नवम् 'अ') ने दैनिक अखबारों की मांग की थी। उन्हें यह आशा दिलायी गयी थी कि निकट भविष्य में ही दैनिक अखबारों की मांग पूरी की जाएगी। इस दिशा में कुछ प्रगति होगी भी, या नहीं? सीताराम शरण

उत्तर

साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएं समय पर आने लगी हैं। शेष ७० प्रतिशत पत्रिकाएं हमें बाहर से मंगवानी पड़ती हैं जो कि स्थानीय बुक-स्टॉल में नहीं मिलती हैं।

दैनिक अखबारों के बारे में हमें अनुभव है कि अखबार या तो एक से दो दिन तक पुस्तकालय में रहते थे या उसी दिन उन्हें रद्दी की टोकरी का मुंह देखना पड़ता था। श्री पाल आस्टा

Off they go into the wild blue yonder



The distinguished faces above belong to the Xavier AIHS candidates who sat for their exams during March. While they await a verdict we know will be outstanding, XL bids them a fond adieu and much future success. (L to R): Rajesh Sinha, Atul Sinha, Manoj Srivastava, Shahidur Rahman, Susant Pal, Udayan Singh, Shahid Ashraf, Sabyasachi Banerjee, Shakilur Rahman and Shivanand Jha.

Tigers Top Rest in Music Depart.

Coming to school twice the same day takes some doing. It wasn't hard on April 11, though, since the second time round there was music to look forward to.

The Inter-House Music Competition began promptly at 5:30 pm. The junior most contestants were the first on stage. Anoop Gomez scored first, Saibhat Neogy second, and Subhajit Bose third. They were followed by the inters, the most melodious being Anirudh Mukherjee (first) Md. Arif (second), and Md. Ali Khan Warsi (third).

At last the long-practiced seniors came before the mike. Strangely many of these were also dependent on written notes. Apart from this handicap, the many songs and ghazals were appreciated by the audience. Ajit Jain once again (and deservedly) won the first prize. By now it has become his monopoly. Pravir Krishna (second) won the heart of the audience and judges with "Kasame ham apne jan ki khaye". Finally, Suresh Kumar (third) successfully blamed someone for breaking his heart with "Dil asa kisi ne mera tora".

Fr Scaria announced the prizes (Tigers were declared first) and

thanked everyone who had come for the programme. Vineet Gupta was the announcer. Mr Kamal Das deserves our thanks for the hard work he put in to getting the contestants ready.

As I left the hall, I ran into a boy who seemed very happy and cheerful. I asked him to show me what prize he had won. I soon found out that instead of a winner he was a happy loser. What more could you ask for from a musical evening?

Pravir Krishna, 10 A

Case of the Quiet Recruit

On the morning of their first day as recruits, the cadets were fully intimidated by a towering sergeant who was all brawn and muscles. "My name is STONE," he roared, "and I am like a rock so don't try to fool me." He then proceeded to ask the names of all the cadets. When he came to a puny-looking fellow and asked his name, the recruit didn't answer, but just stood there trembling. Angriely the sergeant demanded: "I want an answer, you green-horn!" The young soldier tearfully replied, "Sir, my name is Stonecrusher."

(Submitted by Suraj Kumar, 9B)

कनिष्ठ वर्गों के लिए नयी शिक्षिका

श्रीमती मोरा सिन्हा अब विद्यालय की काफी लोकप्रिय शिक्षिका हो चुकी हैं। उन्होंने बीमेन्स कॉलेज पटना से स्नातक की परीक्षा दी और वे उत्तीर्ण हुईं। विद्यालय में आने से पहले वे 'संत जोसेफ कॉन्वेंट' में शिक्षिका थीं। उनके पति 'गंगा पुल निर्माण' में अभियन्ता हैं। उनकी दो छोटी-छोटी लड़कियाँ हैं—प्रीति और नीति। आशा है बहुत सालों तक आप हमारे विद्यालय में पढ़ाना बहुत पसंद करेंगी। शुभकामनाएँ।

मुधांशु खेहर राय १०'अ'

Scientific Additions

MR JAIPRAKASH PATHAK

Mr Pathak joined the St X science department this term. He has an M.Sc. in Physics from L.S. College, Muzzafarpur. His marriage took place recently. Two of his favorite pastimes are stamp-collecting and table tennis. A basic principle of his: "First deserve, then desire." No doubt that includes our First Term marks.

Pankaj Sinha, 10 A

MR M. A. ZAHIDI

Even though he was born with an M.A., Mr Zahidi took the trouble to acquire another one in Mathematics from Magadh University. So far he is happily unmarried. He is cheerful and obliging and has a keen interest in football and dramatics. While being interviewed he gave the impression that teaching was something he enjoyed doing more than any other profession. We welcome him to St X.

Neelabh Mishra, 10 A

दो वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद आया था वह दिन। लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात् मिलन का वह दिन उपस्थित हुआ। छात्रों का मुवा उत्साह देखकर बसन्त का उसकी पूर्ण गरिमा के साथ ध्यान हो आता था। हाँ, मैं ६ मार्च की ही बात कर रहा हूँ। प्रसन्नता और आनन्द के उत्सव का दिन था वह। उस दिन हमारा 'फेट' था।

वार्षिक मेला

दिवस के उत्तरार्ध में, दो बजे 'फेट' उद्घटित हुआ और उसी क्षण हमें भीड़ के प्रथम रैले का अनुभव हुआ। भीड़ बढ़ती ही गई पर आशा के विपरीत 'ज्यूक बॉक्स' और 'लाउडस्पीकर' सामोश रहे। 'प्रथमो प्रासः...' विद्युत् आपूर्ति बन्द थी। हाँ, आश्वासन था कि बिजली ४ बजे तक लौट आएगी। खैर, श्री गणेश अच्छा ही हुआ था। स्टॉलो पर भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। स्वाभाविक था कि भीड़ का दबाव कैफे टेरिया' पर सर्वाधिक होता। वही एकमात्र ऐसा स्थान था जहाँ हर व्यक्ति अपने खर्च का उचित प्रतिदान प्राप्त कर संतुष्ट हो सकता था, उसके लिए श्रम या कला की आवश्यकता नहीं थी। निशाने बाज अपनी कला 'शूटिंग गैलरी', 'पिरामिड्स', 'कोकोनट-शार्ड' आदि स्टॉलों में आजमा रहे थे।

अन्तर विद्यालीय चित्रांकन प्रतियोगिता

दिनांक २०-२-७६ को सन्त जेवियर के प्रांगण में आयोजित '५वीं अन्तर विद्यालीय चित्रांकन प्रतियोगिता' में हमारे विद्यालय के प्रतिभाशाली चित्रकारों ने

दूसरे अपने भाग्य की आजमाइश 'हाउजी' या 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' में कर रहे थे। इनके अतिरिक्त और भी कई स्टॉल थे 'कैच द रूपी' 'इलेक्ट्रिक कॉयल', 'फिश पान्ड' 'पिरामिड्स' आदि। उस दिन का प्रमुख आकर्षण था, 'पटना बाई बोट' जो कि चिल्ड्रेन्स कॉरनर का एक अंग था: पटना के दर्शनीय स्थानों का नाव से निरीक्षण बच्चों की रुचि का लक्ष्य और उनके आकर्षण का केन्द्र था, उनका यह कोना।

बिजली गायब थी। सारी रंगीनी और चहल-पहल के मध्य भी शाम पर उदासी के बादल घिरने लगे थे। स्टॉल अन्धकार में एक-एक कर बन्द होने लगे और व्यवस्था में ही विद्युत्-विभाग ने 'फेट' की हत्या कर दी, पर उसका यह संक्षिप्त जीवन भी सफल रहा। इसका श्रेय है फा० स्कारिया, विद्यालयियों एवं शिक्षकों के अथक श्रम को। सिर्फ मुझे ही नहीं वरन् विद्यालय के हर छात्र को, विद्यालय परिवार के हर सदस्य को इस सफलता पर गर्व है। छात्रसंघ को बधाई।

नीलाभ मिश्र '१०'अ'

चौथी बार शील्ड जीत कर हमारा सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। इस बार शील्ड के सभाधिकारी सन्त भाईकल व सन्त जेवियर हैं।

यह प्रतियोगिता अपराह्न १०-३.०० बजे तक हुई। इसके बाद एक चलचित्र (५ राइफल्स) का प्रदर्शन हुआ। इससे सबका मन उल्लासित हो गया। मध्यान्तर के समय सभी प्रतियोगियों को नाश्ता व एक छोटा-सा उपहार दिया गया।

चलचित्र के प्रदर्शन के ५ मिनट बाद पारितोषक वितरण समारोह प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमती निर्मला सोहनी ने एक छोटा-सा भाषण किया। तत्पश्चात् विभिन्न वर्गों के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गए। उल्लेखनीय है कि वर्ग 'अ' के प्रथम तीन पुरस्कार 'जेवियर इन्टर ऐक्ट क्लब' द्वारा प्रदान किये गए।

सन्त जेवियर के नन्दे चित्रकारों ने तो कमाल कर दिया। वर्ग 'सी' के प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार सन्त जेवियर को प्राप्त हुए। वर्ग 'अ' में दशम कक्षा के दोनों प्रतियोगियों सुनील काया व सोमित्र सरकार को क्रमशः द्वितीय व (शेष पृष्ठ ८ पर)

छात्र दिवस

(पृष्ठ १ से आगे)

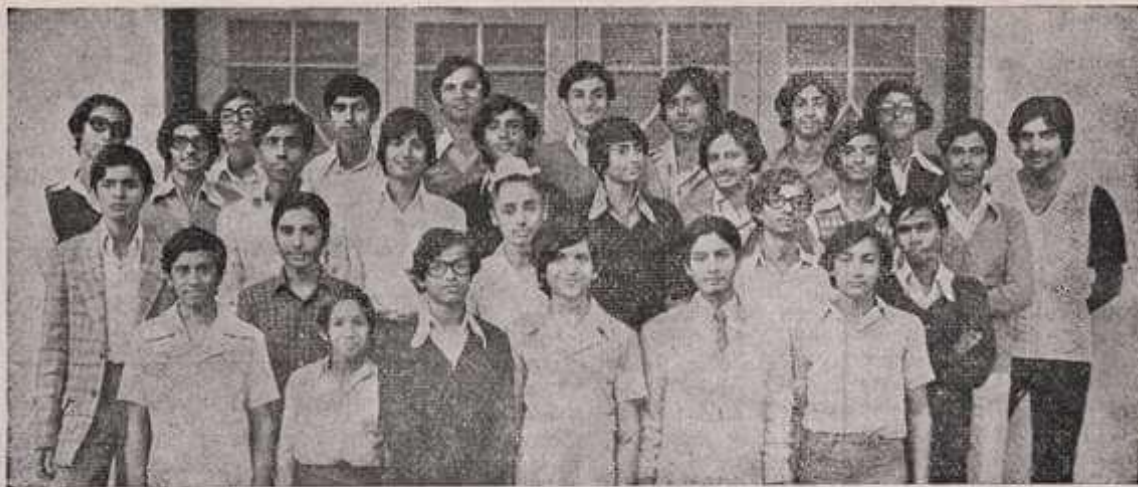
उनके अघरों पर मुस्कान की रेखाएँ खिंच गयीं। शिक्षक दबी मुस्कान से अपने कार्य में लीन हो गए। फिर दूसरी घंटी शुरू हुई और इसी तरह आठों घंटियाँ बीत गईं। कुछ शिक्षकों ने थोड़ी ही देर में छात्रों के हृदय को अपने शिक्षण-सामर्थ्य द्वारा जीत लिया। कुछ थोड़े परेशान भी हो गए थे। प्राचायं और उप-प्राचायं काम के बोझ से दबे हुए थे और कुत्सायत छात्रों से सफलतापूर्वक पेश आ रहे थे। विद्यालय प्रांगण सदैव की भांति शांत और वीरान लग रहा था।

३.३५ की घंटी बजने के बाद छुट्टी हो गई और शिक्षक चैन की श्वास लेते हुए घाम को लौट चले।

जीतेन्द्र किकानी, दशम 'अ'



The biggest attraction in the Spring Fete was "Patna by Boat." Seen here on a trial run are Mr. Ashok (left) who, with the help of Mr. Shyama Pd., painted the scenes around the pool, and Mr. Amando Thakur using the wooden oar which he made himself.



The lean and hungry look. After spending ten years at the banquet of knowledge, how could anyone be lean or hungry? Xavier's record number of 29 MATRIC candidates are hungry, though, for good results after their exams which took place in March. XL predicts they will be well rewarded! From left to right (Front Row) Sunil Madan, Rajeev Bansal, Chandra K. Mishra, Parimal Agrawal, Jagjit Singh, Rajeev Khaitan; (2nd Row): Arun Kumar, Raj K. Mehrotra, Satwant Singh, Anil Kayan, Praveen Sharma; (3rd Row): Raghubir Upadhyay, Rakesh Bahadur, Parwaiz Khalid, Bhuwan Sinha, Raj K. Maharaj, Sanjay P. Singh, Raj Atul Krishna, Dipankar Sircar, Neelabh Sinha, Mahesh Bhawnani; (4th Row): Vikash Pathak, Arif Abdullah, Rajiv Sinha, Khalid Parwaiz, Dharmendra Singh, Devendranath Puri, and Ravi Chaudhary. Camera shy: Pradip Agrawal.

Graphologist Grapples with Strange Hieroglyphics

Something different was in store for us on the morning of March 24. Fr Scaria introduced to us a grapho-analyst by the name of Mr P.G.S. Patel from Maharashtra. Mr Patel claimed that he could discover much about our personalities just by a careful analysis of our hand-writing.

He offered three degrees of analysis (Rs 1,3,5), the Rs 5 variety being the most thorough. After explaining a few things about the usefulness of this art, he asked us to write out (by way of demonstration) a short passage from a book. He collected our papers and began to analyze a few of them. One boy, he declared, was shy of girls although he didn't show it and he liked being flattered by others. Another showed signs of over-acting and exaggeration. Mr Patel said he would probably make a good journalist! Lastly he found one of us to be a nervous chap, eager to hide his weakness, and much worried about exams.

Well, after this little introduction many boys were eager to sign up and be analyzed, including the present reporter. After a few days we were given the results in a sealed envelope. Now I

am not mentioning any names, but some of those reports would be worth more than Rs 5 on the open market.

Suraj Kumar, 9B

अलविदा: फादर राय

३० जनवरी का प्रभात। प्रांगण में उदासी छाई थी। ६: बपों से फादर राय का साथ आज छूटने वाला था। फादर स्कारिया का आज जन्म दिन था और फादर राय का वियोग-दिवस। आज फादर राय के लिए एक विशेष समारोह होने वाला था। समारोह की शुरुआत बिमल कोर्ति सिंह के भाषण से हुई, जिसमें फादर राय को उनकी सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया गया और उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रकट की गईं। तत्पश्चात् 'कमल दास' ने छोटे-बच्चों के साथ एक गीत गाया।

मिसेज उमा वर्मा ने एक वक्तव्य दिया, जिसने सभी का हृदय जीत

लिया। उनके वक्तव्य का एक अंश है "फादर राय के लिए यह विद्यालय मायका के समान है और फादर जहाँ जा रहे हैं वो उनका ससुराल होगा। जिस तरह मायका छोड़ते समय एक पुत्री को बहुत दुःख होता है उसी तरह फादर को अभी बहुत दुःख है। और अपने मायके का साथ फा० कभी नहीं छोड़ेंगे और हमेशा फादर आकर हमें अपने विचार प्रदान करेंगे।"

समारोह के अन्त में फादर राय ने खुद एक छोटा-सा वक्तव्य दिया। अपने आशीर्वाचनों से उन्होंने हमें अनुगृहीत किया और विद्यालय के भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रकट कीं अलविदा, फादर राय।

अजीत अग्रवाल ९'ब'

Medals and certificates for the table-tennis champions of 1975 were given out in the assembly on 26 April. In the seniors division the lucky recipients were, for SINGLES: Ajit Kumar (1st) and Mahesh Bhawnani (2nd); DOUBLES: Ajit Kumar and Mahesh Bhawnani (1st) and Raj Atul Krishna and and Bhuvan Sinha (2nd). In the juniors division the winners were, for SINGLES: Kunal Singh (1st) and Dhananjay Pratap (2nd); DOUBLES: Uday Shankar and Vikas Narayan (1st) and Sunil Agrawal of IX-A and Ratan Saraf (2nd).

श्री त्रिवेदी और श्री पांडे बी.ई.डी. की तैयारी कर रहे हैं, जबकि श्री ठाकुर एम.ई.डी. को। 'जेवियर लाइफ' उनकी सफलता की कामना करता है।

The wonderful game of Football is back again! And the small fry are whooping for joy. A band of reliable white-trousers from Std 9B are taking turns at perfecting the game. At 10 paise per round there is a lot of fun plus a boost for the S.S.L. treasury. Sanjay Sankritayan is directing the show.

दसवीं कक्षा के छात्र इस वर्ष के अन्तरविद्यालय बास्केट बॉल प्रतियोगिता के चैंपियन घोषित हो गए हैं। अन्तिम चक्र में उन्होंने आठवीं कक्षा को २३-१९ से हराया। बधाई।

After the weekly test on March 12, the student body gathered around the basketball court to watch Mr. Kalley's Xavier team march out against the Patliputra Medicos. Earlier the Medicos had defeated Xavier Hall by the big margin of 41-21. Interest was high. Mr. Kalley's excellent shooting gave us a big 36-16 lead at halftime, a lead which the reserves squandered in the second half. In the final minutes the Medicos tried to serve us a death notice, but again our mighty "K" saved us and we won by a score of 54-52.

कादर स्कारिया वाटर-कूलर के लिए 'विद्यालय अभिभावक शिक्षक संघ' के कार्यकारिणी समिति को उनके अथक परिश्रम के लिए शतबार बधाईयाँ देते हैं।

Seldom have lottery tickets been sold with more zest than this past spring. Special credit goes to the following: Stds 7A (first), 6B (second), and 7B (third). And among individuals the best salesmen were Sunil Raj, Raju Singh, Nalin Chandr, Sanjay Krishna, and Alok Singh, in that order.



Prior to the C.K. Nayadu Cricket Tournament in Agra, several Xaverians were called to take part in the selections at the Moinul Haq Stadium. Jitendra Kikani and Sanjay Singh (ST) deserve credit for making the team which represented Bihar in the Inter-State Tournament which opened on Feb. 16th in Agra.

श्री रेमी ऑस्टा तथा श्री के.एन. पांडे का शुभ-विवाह पिछले वर्ष संपन्न हुआ। जेवियर लाइफ की ओर से शुभ-कामनाएँ।

Mr. Kamal Sharma and Mr. Lallu Prasad have been given charge of the school canteen. Tasty hot samosas, tea, and chapattis are some of the popular items now easily available. And, so far as we know, neither of the above managers have yet been reported coming late for a 5th period class.

XL offers sincere congratulations to Fr. Mami Thundathil who pronounced his final vows as a member of the Society of Jesus, along with three brother Jesuits, on April 22. The Mass of the Vows began at 4:30 pm in the school hall. Officer, of the Student Council as well as many teachers were present to express their good wishes to Fr Mami.

'विद्यालय-मेला' की सफलता के लिए श्रीमती निर्मला गुप्ता, श्री कमल शर्मा, श्रीमती अजितशारिया, श्री व श्रीमती लुचरा ने अथक प्रयास किया। छात्र-संघ आप को बधाईयाँ देता है।

The library continues to get a supply of new and exciting books. Some recent additions include *Freedom at Midnight* by Lapierre and Collins, as well as the one volume edition of *Asian Drama* by Gunnar Myrdal.

For the first time in recent history, Std VII was made eligible for voting in the S.C. elections. On January 19 Fr. Scaria read out the constitution of the Student Council and introduced the candidates who, one by one, gave their speeches.

Due to the fact that there was only one ballot, the voting and counting went more rapidly than in the past. Winners of the different posts were: Bimal K. Singh (Presid), Varun Sindhu (V-Presid), Sunil Agrawal (Secr), and Aftab Ahmed (Asst Secr).

Swimming Invitation to MAXAA

Michael's & Xavier's Alumni Assoc.
MEMBERS

Cool off and meet your fellow alumni at the St Xavier's pool

Sunday & Monday evenings
during May and June
5: 30-6: 30 pm

Please bring membership card

सिने समाचार

हमारे विद्यालय में नये वर्ष के साथ ही अच्छे चल चित्रों का प्रदर्शन प्रारम्भ हो गया। जनवरी माह में 'आप की कसम' का प्रदर्शन हुआ। यह दाम्पत्य जीवन में गलत फहमी के कारण अलगाव की समस्या का चित्रण था। यह फिल्म कला, कहानी व तकनीकी तीनों से सफल रहा।

फरवरी माह में 'बूट पालिश' का प्रदर्शन हुआ। इसमें गरीबी की समस्या में जीसते दो बच्चों की कहानी है। वे अपना जीवन बूट-पालिश करके काटते हैं। अन्त में उन्हें एक सन्तानहीन दम्पति अपना लेते हैं। हालाँकि चलचित्र पुराना है पर कथानक नया लगता है। फिल्म में दोनों बच्चों ने जीवन्त अभिनय किया है।

मार्च में 'रामपुर का लक्ष्मण' का प्रदर्शन हुआ। यह दो भाइयों की कहानी है जो बचपन में बिछुड़ जाते हैं। एक भाई अपराधी बनता है और दूसरा योग्य-भाला किसान। अन्त में परिस्थितियों के कारण बड़ा भाई अपने को कानून के हाथों कर देता है। यह फिल्म रंगीन होने के कारण मनोरंजक था।

आशा है और अच्छे चलचित्रों का प्रदर्शन होता रहेगा।

संजीव बंसल '१०बी'

JUBILEE YEAR FOR XL

The issue of XL which you are now reading is, according to the Roman numeral system, not XL but, as everybody knows the beginning of Volume XXV. That means Silver Jubilee Year.

Congratulations to everybody—especially our long-suffering readers!

Next term we'll celebrate by giving you the news more often. Ed.

Interact News

Interactors met for the first time this year on Jan. 20. This was an organisational meeting conducted by Rotarians Fr. Scaria and Mr Arun Prasad. In a viva-voce election Nilabh Mishra was chosen President, Parthosarathi Ghosh as Secretary, Sindhu Ratna as Vice-President, and Vineet Gupta as Treasurer.

The officers were formally installed at a grand meeting in

Report Cards

Will be distributed to

Std. I—X

20 May (Thu.)—9 a. m.

School Reopens

For 2nd term

Thursday July 8

9:15 Assembly

the school hall on Feb. 23, in the presence of senior Rotarians who had come together for their official weekly meeting. Rtn. Vice-President Ranjan Narayan turned the president's gavel over to Nilabh Mishra and the rest of the meeting was ably conducted by him.

All was not serious business, though. Ajit Jain stole the hearts of everyone with his melodious version of "Chalte Chalte". And Akhouri Indu Shekhar along with Gautam Ghosh delighted the audience with their harmonica tunes. After various items and speeches, Sindhu Ratna put in the final words of thanks.

In an earlier meeting (Feb 8) Fr Manthara suggested ways in which Interact members might lend a hand in his community development programme in Mandiri.

Another suggestion put before the members was to assemble 20 of the best paintings produced in the All-Patna Competition held at St X on March 20, and send these to an Interact Club abroad in fulfillment of the International Understanding Project.

Interactors did an energetic and fine job of helping to host the North India Rotary Conference in late January.

Parthosarathi Ghosh, 10 B

St. Joseph's Capture Shield

The second Inter-School Hindi Debate took place in the school hall on April 24. Organized by the Student Council, the debate drew participants from eight different schools. Each school had two representatives, one for the affirmative and one for the negative. The proposition was: Resolved that the dowry system be abolished.

The judges declared St Joseph's Convent (English medium) as the best team of the debate and awarded them the handsome shield. St Xavier's (represented by Neelabh Mishra and Varun Sindhu) earned second place and a tall shining cup.

Awards for individual speakers: Padmaja) Mishra from St Joseph's (Best); Archana Bishroi from St Joseph's (Second); and Stuti Prasad from Mount Carmel (Third.) Congratulations!

Sunil Agrawal, 10A

कला प्रेमियों के लिए

(पृष्ठ १ से आगे)

अभिनय का पुरस्कार मिला पृथ्वीराज की भूमिका में सिन्धुल को। द्वितीय पुरस्कार सुनील अग्रवाल व तृतीय पुरस्कार पार्थ सारथी घोष को मिला। सुनील काया, कीर्ति सिंह, सुनील अग्रवाल (नवम व) व राय मधुरेन्द्र को सांत्वना पुरस्कार मिले, फिर 'जन-नाण-भन' के साथ प्रतियोगिता समाप्त हुई।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय जाता है श्री इयाम प्रसाद को जिन्होंने कुशल रंग-मंच भूमिका तैयार की, श्री सर्वदेव मिश्र को कुशल निर्देशन के लिए धन्यवाद व श्री अशोक को अच्छा मेकअप करने के लिए धन्यवाद। ये तीन अंग एकांकी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ थे।

संजीव बंसल १० बी

शरद कुमार १० बी

SUMMER SWIMS Mon-Tue-Thu-Fri

10:00 a. m. & 4:30 p. m

OASIS: a fertile or green area in an arid region; Syn: Xavier Canteen.

Rrrriinnngg...the bell sounded and I knew it was lunch time. Tiffin-tin in hand, I made for the good outdoors when to my surprise I saw every one, big and small, racing towards the games field. "Is there a match today?" I asked myself. The quick answer from my computer was "No". Then why all the excitement?

I hurried along with the rest and arriving under the mighty banyan discovered what everybody else seemed to know: a new canteen had opened. Everyone was shouting and happy except our Golden-wallah. Glumly he told me, "Sab bikri mar diya". I tried to console him, but his usually smiling face presented a pathetic look.

A special attraction of the canteen seemed to be "Garam Chai". I saw one small tike sipping it with great delight and excitement. I laughed, not knowing I would soon have something to cry about.

Two boys were fighting over a plate of "chhola". I tried to end their quarrel and be a good referee, but just then the plate flipped onto my trousers and eventually ended up on my feet. At this the two boys forgot their quarrel and had a good laugh. Their parting words to me, "Sir, ab aap khaa lijiye." Thus ended my visit to the new canteen.

Pravir Krishna, 10B

शनिवार ता० २४-४-७६ को जल-शीतकारक यंत्र उद्घाटित हुआ। श्री शर्मा और डा० रहमान ने कार्य संपन्न किया।

Red Cross Unit Increases Membership

The Xavier Red Cross branch began another year under the enthusiastic guidance of Mr Suresh Pathak.

The Youth Red Cross has as its direct aims: the improvement of health, prevention of disease, and the mitigation (lessening) of suffering.

The school's 133 members have been divided into five groups for more efficient running. Recently a photo album was received from a unit in Bombay. Such exchanges are encouraged. The Xavier unit hopes to return the favour in the near future.

Much is expected from the new set of officers: Manoj Chopra (Presid), Sindhu Ratna (Secr), Varun Sindhu (V-Presid), Ajit Agarwal (Jt. Secr), Shailendra Sahay (Treas), and Sudhanshu Roy (Jt. Treas).

Varun Sindhu, 9B

younger members with plenty of zeal and talent for helping their neighbour.

In the opening meeting Fr. Manthara, the moderator, explained to the members how they could help out in a community development project in Mandir. He stressed that what he hoped for most from S.S.L. was not money but willing co-operation from each of the members.

Newly elected officers are: Vineet Gupta (Presid), Abhay Singh (Secr), and Satish Karamchandani (Treas).

Rajeev Ranjan 9A

(पृष्ठ ४ से आगे)

तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। वर्ग अ का प्रथम पुरस्कार सन्त माईकल के अखिलेश सिन्हा को प्राप्त हुआ। सर्वश्रेष्ठ चित्रकार का पुरस्कार सन्त जोसेफ की आठवीं कक्षा की छात्रा अन्जू अम्बष्ठ को प्राप्त हुआ। फिर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सन्त जेवियर व सन्त माईकल के छात्रों ने शील्ड ग्रहण की।

शील्ड प्राप्त करने में सन्त जेवियर के इन चित्रकारों ने विशेष योगदान किया: सुनील काया, सीमित्र सरकार, कमल प्रकाश, अफताब करीम, अशोक भास्कर पाण्डेय हेमन्त कुमार व देवव्रत गुप्ता।

पारितोषिक वितरण के बाद इनटरैक्ट क्लब के अध्यक्ष नीलाम मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इसके बाद एक विशेष कार्यक्रम हुआ। प्रमुख विजेताओं से भेंट वाला युगवाणी कार्यक्रम के आयोजक श्री अरुण ने की (इसे बुधवार २४-३-७६ को प्रसारित किया गया) इस कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षकों व इनटरैक्ट क्लब के स्वयंसेवकों ने विशेष योगदान किया। इस कार्यक्रम की सफलता पर सभी प्रसन्न थे।

विशेष 'वर्ग अ' में 'वाइ' विषय पर प्राप्त पहले बीस चित्रों को 'जेवियर इनटरैक्ट क्लब' द्वारा विदेश के एक इनटरैक्ट क्लब को उनके 'अन्तराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम' के अन्तर्गत भेजा जा रहा है।

संजीव बंसल १०'बी'

1976 Cricket Scoreboard

FR CLEARY CRICKET TROPHY

17 Jan:	Tigers (55 all out)
	Leopards (56 for 8)
	Lions (86 all out)
	Panthers (112 all out)
24 Jan:	Leopards (147 all out)
	Lions (90 all out)
	Panthers (120 all out)
	Tigers (120 all out)
31 Jan:	FINALS
	Leopards (68 all out)
	Panthers (50 all out)

PDCA LEAGUE TROPHY

14 Feb:	St X (114 all out)
	Loyola (38 all out)
8 Mar:	St X (168 all out)
	Patna Coll. (80 all out)
27 Mar:	FINALS
	St X (78 all out)
	RMR Sem (80 for 9)

Statistics—by Sanjeev Bansal, 10B

News from S.S.L.

A new set of officers, a new programme, and a tremendous scope for good work is the boast of our S.S.L. The group comprises boys mainly of the senior sections, although there are some

The Latest

Young friends and old students of Fr George Thana will be happy to hear that he has completed his Tertiaship and B. Ed. studies and rejoined the Xavier staff as our vice-principal. A warm welcome!

★ Interview with Coach Kalley ★

By now staff and students alike are familiar with our outstanding basketball player-coach, Mr. Ramesh Kalley.

Mr Kalley is what you might call a born athlete. He is interested in many sports. For

many years football was his favourite game. Then in 1967 he took a keen interest in basketball and by 1970 was an accomplished player for Haryana.

He is a product of N.I.S., Patiala. He was deputed by N.I.S. to encourage the game of basketball in Bihar. He resides at St Xavier's and is working in cooperation with the government Sports Council. When the National School Games were held in Patna last December, Mr. Kalley played a key role in organizing the basketball finals at Patna Women's College and on our court. He has made numerous trips outside Patna to Jamshedpur, Chaibasa, Banaras, and Jorhat in Assam, all with the aim of building up interest in basketball. When the National Police Games were held in Patna in January, he was called on as advisor, coach, and referee.

His present dream is to take a Mini Basketball team to represent Bihar in the National Tournament at Hyderabad in early June. He is now busy coaching and selecting a mini squad (they can be no more than 12 years of age). They have made great progress in the last few months, and are determined to bring honour to Bihar in the National Tournament.

Mr. Kalley is a gem and we hope that N.I.S. will allow him to continue the fine work he is doing for the game of basketball in Bihar.

Rajiv Mohan Prasad, 9B



Feb. 7.....Day of the Giants. St. Xavier's had a chance to see some real professional basketball when the finalists of the National Police Games agreed to play an exhibition match on our court. CRPF won this one over BSF by the narrow margin of 61-58.

Basketball Scores (1975-1976)

14 Aug:	Inaugural Match
	Staff (21)—Students (14)
25 Sep:	Tigers (14)—Lions (10)
25 Sep:	Inter-House Finals
	Panth (24)—Leop (22)
17 Jan:	7A (10)—7B (8)
17 Jan:	8B (16)—8A (12)
17 Jan:	9B (16)—9A (6)
17 Jan:	6B (20)—6A (8)
17 Jan:	10 (21)—10A (4)
17 Jan:	5B (9)—5A (4)
17 Feb:	10B (28)—9B (8)
17 Feb:	CRPF (61)—BSF (58)
17 Feb:	Best 6th (10)—5th (0)
17 Feb:	8B (26)—7A (2)
17 Feb:	Best 10th (24)—9th (6)
17 Feb:	4B (16)—4A (5)
17 Feb:	Best 8th (16)—7th (4)
17 Feb:	Best 6th (21)—5th (11)
17 Feb:	Best 8th (26)—9th (11)
17 Feb:	Best 7th (18)—6th (0)
17 Feb:	Best 5th (18)—4th (14)
20 Mar:	Inter-Class Championship
	Best 10th (23)—8th (19)
22 Apr:	CRPF (60)—St X (48)

New Captains Take Command of Their Troops

The four houses met on January 20 and, after honourably discharging last year's captains, proceeded to choose their new officers. After all the ballots were counted, the following emerged victorious: For the TIGERS, Abhay Singh (Capt) and Rajesh Singh (V-Capt); PANTHERS, Rajnish Kumar (Capt) and Sanjeev Sinha (V-Capt); LEO-PARDS, Sindhu Ratna (Capt) and Varun Sindhu (V-Capt); LIONS, Ujjal Choudhary (Capt) and Rajeev Mohan Prasad (V-Capt). The formal transfer of badges took place with much pageantry at the opening of Sports Day, Feb. 28.

Sanjeev Bansal, 10B

We Are Grateful

Xavier cricketers have lots of different opinions about the season just finished, but on one point they are unanimous: their thanks to MR ADHIKARI for the skillful and generous way he coached the varsity day after day in the fine points of the game. No one doubts we had a good season. Much of the credit must go to this man who symbolises the best of cricket in Patna.



With chief guest, Mr. Bhasker Banerjee, looking on with approval, Rajnish Kumar (Capt) and Sanjiv Sinha (V-Capt) display the shield which their Panthers captured on Sports Day (Feb 28).

श्रृंखला में एक और कड़ी

राविराज का प्रचंड ज्वाला, समीरण का साँय-साँय करता शोंका, छात्र-संघ की सफलता, विद्यार्थियों में उत्तेजना, उमंग और जोश—इन सब के सामंजस्य को ही वार्षिक खेल-कूद दिवस कहा जा जा सकता है। श्रृंखला की एक कड़ी तो २१ फरवरी को ही जुड़ चुकी थी। जब कनिष्ठ वर्ग के छात्रों ने खेल-कूद में अपनी योग्यता दिखाकर प्रशंसा पायी थी और दर्शकों का दिल जीत लिया था।

दूसरी कड़ी यानि २८ फरवरी अपराह्न में १.३० बजे शुरू हुयी। भास्कर बनर्जी ने मुख्य अतिथि का भार निभाया। प्रारम्भ हुई हमारी प्रतियोगिता 'भास्कर-पास्ट' से और दूसरे कार्यक्रमों के सहयोग ने उसे आगे बढ़ाया। उस दिन का सितारा था अभय सिंह १०'अ', जिसने चैंपियनशिप हासिल कर दर्शकों का दिल जीत लिया। मध्यान्तर में दसवीं कक्षा

के छात्रों ने एक खूबसूरत 'ड्रिल-प्रदर्शन' कर सबकी प्रशंसा पायी। इसके बाद कुछ अन्य रोचक कार्यक्रम हुए। प्रतियोगिता समाप्त हुई फा० मरफी मेमोरियल अन्तर-विद्यालयीय रेस से जिसमें संत माइकल के धावक विजयी घोषित हुए। मुख्य अतिथि के सारंगभित भावण के पश्चात् पुरस्कार-वितरण हुआ। खेल-कूद दिवस समाप्त हुआ सुनील अग्रवाल के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ। दिवस की सफलता पर छात्र-संघ को बधाई! चारों दलों में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए पैंथर्स टीम को बधाई!

विभिन्न वर्गों के चैंपियन इस प्रकार हैं :

सीनियर्स	—अभय सिंह
इन्टर्स	—सोमनाथ मुखर्जी
जूनियर्स	—संजय चौधरी
सब-जूनियर्स	—सपन कुमार

Printed by Sanjivan Press,
Patna 800011. For private
circulation only.

PDCA SEMI-FINALS

Slow Start but Bold Recovery Against Patna Collegiate

A mere 46 runs with 6 wickets down. That was the plight of our Xavier cricketers early in their Patna District Cricket Association semi-final match against Patna Collegiate H.S. The match was held at the Gandhi Maidan on March 8.

The tide was turned, though, by the amazing sixth wicket partnership sweep of 60 runs by Samir Das (37) and Ujjal Choudhary (23). From there we went on to score a total of 168 runs before taking to the field.

The bowling of Rajnish Kumar and Vipul Shukla was outstanding. They captured 3 wickets each for 5 and 8 runs respectively.

By day's end Patna Collegiate collected only 88 runs, thus giving us an 80-run margin of victory.

Abhay Singh, 10 A

PDCA FINALS

Slow Start and No Recovery

By defeating Loyola and Patna Collegiate in the PDCA Tournament, Xavier earned the right to meet Raja Ram Mohan Roy Seminary in the finals at the Patna Science College grounds on March 27.

Captain Rajnish Kumar won the toss and chose to bat first. It took a while to warm up. Bishwajeet, Kaushal, and Jitendra, normally strong batsmen, had trouble connecting. Altogether they scored but 4 runs. More than anything, this was a tribute to the excellent fielding of the Seminary team. Eventually the remaining Xavier batsmen were able to raise the score to 77 runs, which put us in a by-no-means-comfortable position as we went out to field after lunch.

The afternoon belonged to Seminary captain Sujit Ranjan Chakravarty who picked up a handsome 53 runs and led his team to victory. Final score : St Xavier's-78 runs, all out; R.M.R. Seminary-80 for 9 wickets.

It was an exciting match and—many believe—only the first chapter of a story that will have a happy ending next year.

Jainendra Yadav, 10 A

Three Cheers

The game of nerves, thrills, and mental acumen is over. Four happy Xaverians have brought home the cup from the exciting General Knowledge Quiz held at St Michael's at 10 a.m. on September 1. After a shaky start our team (Sanjeev Bansal, Praveen Sinha, Neelabh Mishra, and Suraj Kumar) turned in one of Xavier's best performances in recent years.

Three schools participated. The Notre Dame quartet, which led through most of the contest, placed second with 33 points, just two behind the winners. St Michael's made a strong recovery and ended with 25 points.

Each school had seniors on hand to cheer their respective teams. At times the pleasant atmosphere of the contest was marred when individuals in the audience tried to prompt and call out the answers.

Mr. Raphael Sah acted as the capable Quiz Master. The St. Michael's General Knowledge Club organised the contest and made sure things went smoothly.

मिनी बास्केटबाल टीम हैदराबाद में

मिनी बास्केट बॉल टीम—हैदराबाद में

मि० रमेश काले द्वारा कठिन प्रशिक्षण के पश्चात् वह दिन आया जिसकी हम स्वीनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। जिज्ञासा, उत्साह एवं भय का समन्वय मुंह पर झलक रहा था। हम १४ लड़के जमशेदपुर के बिहार बास्केट बॉल टीम के सेलेक्शन के लिए जा रहे थे। पूज्य फादर पॉल एवं फादर जाज ने हमें बिदाई दी। १३वीं नई को मुंह अन्धेरे हम जमशेदपुर पहुँचे जहाँ हमने सेंट लोयोला स्कूल में पड़ाव डाला।

मि० काले की मेहनत रंग लाई, प्रशिक्षण कैंप के लिये १४ में से ६ चुन लिए गये। हम पटना वापस आये और चुने हुए खिलाड़ी १९ तारीख से शुरू होने वाले कोचिंग कैंप में भाग लेने के लिए (शेष पृष्ठ ८ पर)

Xavier Life



Vol. 25 No. 2 ST. XAVIER'S PATNA September 24, 1976

Xavier Welcomes New Rector

"Your teachers were my teachers" - Fr. Thakur

We reached his room a bit late, but he welcomed us with a warm smile and offered us seats. We had come to interview Fr J. B. Thakur, S. J., the new Rector of St Xavier's.

We showed him our long list of questions but he was not dismayed. He made us feel at home in a warm and friendly way.

Father told us that he was born in Bettiah and did his schooling at Khrist Raja H.S. He proudly informed us that two of our present teachers were once his teachers. Frs Poovattil and Thottuvellil. Another of his teachers was Fr Saldanha, the spry and elderly father who spoke to us about St Francis Xavier in December, 1974.

Fr Thakur joined the Society of Jesus in 1956. Later he earned his B.A. (Hons.) from Ranchi University and M. A. (Hindi) degree from Patna University. (He said he would be happy to help us find good pieces for our Hindi elocution programmes!). Before his appointment to St Xavier's, Father was Rector for three and a half years at X.T.T.I., Digha Ghat.

His studies have taken him to different parts of India, Darjeeling, Hyderabad, and Poona.

Judging from his remarks, he has a love for the poor and needy, and a great desire to see all of us



here at Xavier form a united family.

He told us that his favourite game was basketball and immediately afterwards he laughed. He was light-hearted about the fact that a short person could really like this game.

Of the various subjects he is now teaching, he puts Character high on the list. He likes to teach

(Contd. on page 5)

Fr. Scaria Appointed Director of Schools

Fr. Scaria, St. Xavier's beloved and hard-working principal for the past five and a half years, turned the office reins over to Fr. Mani Thundathil, S. J. at the start of the second term.

The changeover became necessary in order to free Fr. Scaria for his new task as Director of Schools for the Patna Jesuit Province. This new assignment is an important one, involving a network of six different Jesuit high schools.

During his years as principal, Fr. Scaria steadily worked to develop the curriculum and to build good relationships between the parents, staff and students. He had an eye for the fine arts and felt that we could not be introduced to these skills too early—particularly music, painting, and dancing. He enjoyed his hours in the classroom and gave many of us a love for the difficult subject of physics. He was versatile: he could repair a clock or assemble a radio with a practiced and patient hand. His favourite forms of relaxation were ping-pong (where he was invincible) and shuffleboard (where he was quite audible). His hearty laughter and example of devotion to a difficult job are things we'll remember.

As he gets set up in his new post, we want him to know how grateful we are for all that he has done for St. Xavier's. If anyone has earned a lifelong SX citizenship badge and a golden key to the front door, it is surely Fr. Scaria! May the good Lord bless him!

गर्मी में कैंटीन

माननीय महोदय,

श्री कमल शर्मा द्वारा कैंटीन बहुत सफलतापूर्वक चलायी जा रही है और हम कमल शर्मा व फादर स्कारिया के बहुत आभारी हैं, परन्तु कैंटीन में कुछ सीलिंग पेंखों की सख्त जरूरत है। इतनी गर्मी व इतनी भीड़ में कुछ भी खाने का मन नहीं करता। अतः, हम 'विद्यार्थी परिषद्' व प्रधानाध्यापक महोदय से आग्रह करते हैं कि जल्द से जल्द इस ओर ठोस कदम उठाया जाए।

आपका सदैव विश्वासी
सुधांशु शेखर १० 'अ'
अभय सिंह १० 'अ'

TIMELY REMINDER

Dear Sir,

Due to that infamous flood, we did not have the exciting STAFF vs STUDENTS Football Match last fall. I hope the organisers will make sure that we don't miss it this year!

Sincerely,

Sindhu Ratna 10A

Testing Info & Patience

On August 31, 25 boys took part in the annual U.N. Information Test. Counting parents, contestants, and teachers, over 100 people are now anxiously waiting for the results. Does anybody have that information?

HIMALAYAN KUDOS

St. Xavier's School¹
Kathmandu

Dear Sir,

I was honoured to receive a copy of your magazine. It is interesting to see how people can communicate with one another through a magazine.

The magazine of yours is of a high calibre. The photos add to the beauty of the magazine. The articles were of a high standard.

I'll try to send you a copy of **The Godavarian** when it's out. Right now the press is working on it.

I hope this sense of generosity and thoughtfulness will continue in the time to come. Give my greetings to your staff. I hope to see your magazine again soon.

Sincerely,

Gambhir Bhatta
(Editor)

Speak Out!

Dear sir,

Last year we were lucky to hear a number of career talks given by respected personalities in Patna. They talked to us about their work and difficulties and helped us decide our future careers. I hope we will be able to hear similar talks in this second term.

Sincerely,

Ajit Kumar, 10A

Xavier Life

Editor: Sunil Agrawal, 10A

Asst. Ed. : Sanjeev Bansal 10B

Reporters: Jitendra Kikani, Vineet

Gupta, Neelabh Mishra, Sindhu

Ratna, Pravir Krishna, Sitaram

Sharan, Pravin Sinha,

Punit Krishna, Varun Sindhu,

Ajit Agrawal and Suraj Kumar.

Address letters to: Editor of XL

St. Xavier's School, Patna 800 001

Printed at Sanjivan Press, Patna-11

For private circulation only

शिक्षक अभिनंदित

वेदों के अनुसार विद्या रत्न दान करने वाला गुरु पिता समान है। छात्र उसका आदर करते हैं, उसके प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

संत जेवियर के छात्रों में "शिक्षक-दिवस" के अवसर पर इन महान शिक्षकों के प्रति अपना आदर और आभार प्रकट किया, एक छोटे से 'मनोरंजन कार्यक्रम' द्वारा, "शिक्षक दिवस" के रूप में हम स्वर्गीय राधाकृष्णन को भी याद करते हैं - जिनकी जन्मतिथि ५ सितम्बर को पूरे भारतवर्ष में मनायी जाती है।

कार्यक्रम में "समारोहाध्यक्ष" का भार सम्माला छात्र परिषद के अध्यक्ष विमल कीर्ती सिंह ने। कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ छात्र परिषद सचिव सुनील अग्रवाल के भाषण से। तत्पश्चात् एक समूह गीत हुआ। मनोरंजन कार्यक्रम समाप्त हुआ प्राचार्य महोदय फादर माणि के आशीर्वाचनों के साथ। इस कार्यक्रम में छात्रों एवम शिक्षकों ने मनान रूप से भाग लिया।

तत्पश्चात् छात्रों एवम शिक्षकों के बीच एक वास्केट-बॉल मैच हुआ जिसमें छात्रों ने शिक्षकों को ४२-२६ से हरा दिया।

Hindi Orators Hold Forth

The national language never sounded so eloquent as on the night of July 28. Xaverians gathered at 5:30 p.m. to listen to a programme of Hindi speeches and dramatic monologues.

One by one the speakers came to center-stage and delivered the pieces they had practiced for over a week. It was a grand display of talent and poise and the judges were the only uncomfortable people in the hall.

Mr S. D. Mishra (the announcer) and all our Hindi teachers deserve much thanks for the valuable coaching they gave us.

Prizes were given out as follows: SENIORS. Sunil Agrawal, 9A, (First), Bimal K. Singh (Second), and Sunil Agrawal, 10A (Third); INTERS- Rajeev Ranjan 8A, Sanjay Jhunjhunwala, 8A, and Manoj Kumar, 8B. JUNIORS: Pranay Kumar, 5B, Alok Kumar, 6B, and Balaji Mohinish, 6A.

Glad News !

Mrs. Rekha Srivastava has become a happy mother. Her baby girl, Shikha, was born on July 5th. Our congratulations and best wishes go out to her. We look forward to her return among us after the Dusshera holidays.

ऐसे कार्यक्रम इस गुरु छात्र के महान सम्बन्ध को सुदृढ़ करने में एक कड़ी है, ऐसा हमारा विश्वास है।

शरद कुमार संजीव बॅसल XB



O God, Thy Greatness Vast

O God, thy greatness vast
O Lord, your name the last
For men to remember at times;
Yet when the world does a crime
You are the master of that might
That can lead the world to light;
Through You innocence will alight
And man's sin will be put to flight.
Misery and bitterness will be set aside
Happiness and sweetness will go side by side
Man will get his daily bread
Innocence, love, and mercy will spread
Our world will delight in endless peace
War, dishonesty, and cruelty will cease.

—Aftab Ahmed, 9B

मूँछें-महात्म्य सुना रहे, सुनो लगाकर कान। मूँछों का गुणगान एवं इसकी महत्ता बताते सुनील अग्रवाल ९ 'अ' (घोखा मत खाइएगा कि यह सम्पादक महोदय की तस्वीर है)

God has given us two ears and one mouth so that we can listen twice as much as we speak. —Epictetus

कहानी:

देशभक्ति

मैं पिकनिक स्थल पर बैठा था, बगल में मेरा मित्र किशोर था। शायद वह प्रकृति के सौन्दर्य को निहार रहा था और सोच रहा था, ईश्वर ने कितना सुन्दर बनाया है इस ब्रह्माण्ड को।

निस्तब्धता का साम्राज्य एकाएक भंग हो गया। किसी ने किशोर के कंधे पर हाथ रखा, किशोर चौंक उठा। वह विजय ही था। उसने कहा—“किशोर प्रकृति को तो खूब निहारता पर कभी इस देश को अन्दर से निहारता है। “अच्छा क्या देखा तुमने इसके अन्दर?”

किशोर ने प्रश्न का उत्तर दूसरे प्रश्न से दिया। विजय गम्भीरतापूर्वक कहने लगा—आज हमारे देश की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल है। अभी इसे आकाश की ऊँचाइयों तक उठना है। हर तरफ गरीबी, चारों तरफ अन्धकार। आखिर इसे मिटाया कैसे जा सकता है। किशोर, देश को ऊँचाइयों तक उठाने के सपने तभी साकार होंगे जब हम मिलकर काम करेंगे। देश को तुम जैसे नवयुवकों की आवश्यकता है।

बलिदान

पहाड़ों की ओर देखते हुए, विजय ने, बोलने का मिलमिला जारी रखते हुए कहा—जब जब हमारे इस विशाल देश भारत को संकटों के बादल ने घेरा है, तब-तब हमारे वीर सैनिकों ने उसे बखूबी टाल दिया है। उनके लहू से पर्वतराज हिमालय की बर्फीली चोटियाँ खत-रंजित हो उठी हैं। अठखेलियाँ करती नदी की अगणित धाराएँ भी स्वतन्त्र रहना बेहतर समझती हैं। पिजरे में फड़फड़ाता पक्षी भी स्वतन्त्रता की देवी को देखने के लिये लालायित रहता है। हम भी स्वतन्त्रता कायम रखना चाहते हैं।

किशोर ने हिम्मत कर कहा—परन्तु देश ने हमारे लिये क्या किया जो हम देश के लिये करें?

विजय ने क्रोधावेश में तमतमाते हुए कहा—‘बुलू भर पानी में डूब कर मर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

MY FAVOURITE GAME

XL asked some of its youngest readers to talk about their “favourite game”. Here are a few of the answers.—Ed.

अरनव गंगोपाध्याय, 3B

मेरा मन पसन्द खेल कबड्डी है क्योंकि यह खेल जब चाहे खेला जा सकता है। जब मैं दूसरी पार्टी के क्षेत्र में घुसता हूँ तो पूरी साँस लेकर घुसता हूँ ताकि उस क्षेत्र का अधिक से अधिक देर तक चक्कर लगा सकूँ। जितना मजा उस क्षेत्र के अधिक अन्दर जाने से आता है, उतना किसी को छूने में नहीं अतः मैं कबड्डी बहुत पसन्द करता हूँ।

AJAY NANDAN (3A): I like football and cricket more than other games, but sir has asked me to write about my most favourite game. I have heard that there are quarrels in football, so I will rank cricket as my most favourite game, since mummy has forbidden me to fight with other boys.

अमरेन्द्र प्रसाद सिंह, 4A

मेरा सर्वप्रिय खेल क्रिकेट है क्योंकि मुझे अंपायर को देखने में बहुत मन लगता है। उजली टोपी, उजला कोट और काला पैंट और अगर अंपायर काला हुआ तो क्या कहना—एकदम बन्दर लगता है, और मुझे बन्दरों को देखने का बहुत शौक है।

KAUSHIK TALPATRA (4A):

“My favourite game is cricket, which is said to be the king of all games. Although it is the king of all games, it is not only for kings. I like it very much because the players of this game should wear white uniforms while playing matches, and I play matches every Saturday, so mummy allows me to wear white shirts and pants on those days.

पुष्प राज, 3B

वैसे तो मुझे सब खेल पसंद हैं परन्तु कबड्डी सबसे ज्यादा पसंद है क्योंकि मैं इसे ठीक से खेल सकता हूँ। मेरे घर के सामने एक इमली का पेड़ है जिसके नीचे छाँह की कमी नहीं रहती और मेरे दोस्तों की कमी नहीं है। इसलिए पापा-मम्मी मुझको गर्मी, जाड़ा सभी समय खेलने देते हैं कभी मना नहीं करते, इसलिए मुझको यह खेल पसन्द आता है।

PRAKASH RANJAN (3A): My favourite game is Table Tennis. I go to the club twice a week. I hear the sound “tak-tak-tak” which I like very much. I am sure you can guess what this tak-tak-tak sound is. This is my reason for liking the game.

Chemistry of a “New” Element

(We print here the gist of a lecture given by Professor Pravir Krishna, 10A, soon after the completion of International XYZ Year. The editors of XL commend him for his boldness and his willingness “to rush in where angels fear to tread.”)

Gentlemen: Let me first of all say that this element is not as new as our title might suggest. It's as old as mankind, and absolutely indispensable to it, but I would say its uniqueness has been identified only in the last year or two. I might describe this element in the following way: Symbol: W, Valency: highly variable,

Atomic Weight: generally above 100 lbs; Occurrence: remarkably numerous in both the single and married state, Properties: Colour (flamboyant), Smell (cosmetical), Boiling Point (low); Random Characteristics: Ages claimed will be generally 5 to 10 years less than official carbon tests; when two or more samples of this element are set in close proximity communication signals begin at once and (unlike those on Viking II) are difficult to stop. These are just the highlights of my research. Even if I am not awarded the Nobel Prize, I feel that my discovery will be of interest to all wise and budding chemists.

Sunday 8-8: No Rest for Debaters

On August 8th, for the second year running, St. Joseph's hosted a four-corner debate on its campus. The event drew a lot of Xaverians away from their usual late Sunday morning slumber, not least being the debaters themselves: Bimal K. Singh, Vineet Gupta, Sindhu Ratna, and Ajit Agrawal. Sunil Agrawal, 10A, acted as one of the chairmen. The topic before the house was: "The progress of youth is hampered by the prejudice of elders."

Each team was comprised of a boy and a girl who had ten days to prepare and unify their set speeches. This year the contest was on neither an inter-school nor inter-house basis. The team of Reena Ojha (NDA) and Ajit Agrawal (SX) were awarded First Place. Ajit won the Best Speaker award and Reena followed with a close Second. Well done!

Red Cross Camp

—No lack of volunteers—

After an intensive week of special classes and organisational meetings, Bihar's Junior Red Cross team left for Taradevi, near Simla, on May 22.

Hardly a better spot could have been chosen for the camp in the month of May. The Bihar team gave a good account of themselves from the very start of the camp. Varun Sindhu was appointed editor of the newspaper and Ajit Agrawal was given the job of Hindi reporter. Sunil Kayan was made Assistant Sports Organiser. On different occasions Sindhu Ratna, Parthosarthi Ghosh, Ajit and Varun acted as chairmen of the larger meetings. Suman Nayak took along his thinking cap and won first prize in the Quiz Contest.

Other highlights of the camp: Whenever a VIP visited the site, Ajit Agrawal was there with a "made-in-Bihar" garland to welcome him; during the entertainment on the concluding day Khanna Sanjay stole the show with his "Mehbuba, Mehbuba" dance performance; the Assistant Sports

Young Scientists Meet at NDA

Just to show that science can be very interesting and a practical subject (like our teachers keep telling us), a large Science Exhibition was put on at Notre Dame Academy on Sept. 11. The Patna Diocesan Educational Association sponsored it from 9:30 a.m. till 4:00 p.m. St Xavier's submitted five different exhibits.

A steady stream of visitors, mainly high school seniors kept the managers busy talking till they were hoarse. It was reported that in general the exhibits from the girls' schools were more complicated and required sometimes five or six repeated explanations before the principle was fully understood by the boys!

SX Welcomes New Rector

(continued from page 1)

it and he's convinced that of all the subjects this is the one most likely to make a gentleman and true Xaverian out of a boy.

The impression we carried away after our little chat was that of a man who may be short in stature, but who is tall in his love for St Xavier's and his ability to win the hearts of all of us who study here.

Vineet Gupta & Sunil Agrawal 10A

I wondered why somebody didn't do something, then I realized that I was somebody.

—Anon

Organiser and camp comedian, Sunil Kayan, captured second prize in the Painting Competition; but, alas, as the team on its way home-roamed about hot Delhi with cold pockets, the same Sunil had to meet an unscrupulous shop-keeper who "murdered" Rs 20 of his! Varun S. and Sindhu Ratna

प्यार का खजाना

मुझे मंथू से बहुत प्यार है। मंथू मेरा तोता है। मेरे सातवें जन्म-दिन पर पापा ने मुझे यह तोता खरीद कर दिया था। इसे मंथू... मंथू कहकर पुकारने लगा। धीरे-धीरे यह तोता बहुत कुछ बोलना सीख गया। घर के लोग जब बाहर से आते, तो ये कहता—“आइये आइये आइये।” और जब कोई अनजान आदमी आता, तो चिल्लाता—“चोर चोर चोर।” उसके ऐसा करने से हमें बड़ी शर्म महसूस होती थी। हम डांटते तो मंथू नाराज हो जाता। एकदम चुप हो जाता। खाने को देते तो नहीं खाता। बड़ा जिद्दी है। जब उसे प्यार से मंथू मंथू करते तब कहीं मानता।

चोर! चोर!

एक दिन अचानक मेरे नानाजी जबलपुर से आए। तोता उन्हें देख कर चिल्लाने लगा—“चोर चोर चोर।” मेरी मां बहुत नाराज हो गई। कहने लगी—“भगा दो इस तोते को।” मैं रोने लगा। पापा ने मुझे प्यार किया और तोते को सामने से हटाकर किचन में रखने को कहा। अब तोते का पिजरा सामने के बरामदे से हटा कर किचन में लटका दिया गया। मेरी मां तोते से सदा नागज रहतीं। हमारी दाई जब उसे ‘मिट्टू मिट्टू’ कहती तो तोता जोर-जोर से शोर करने लगता। हम दौड़कर जाते। लेकिन समझ नहीं पाते कि तोता क्यों गुस्सा होता है। एक दिन पता चला कि वो अपने नाम के बिगाड़े जाने से नाराज होता है। उसे अपना नाम मंथू बहुत प्यारा है। दाई जब भी ‘मंथू’ को ‘मिट्टू’ कहती वह ‘टं टं’ करने लगता। दाई कभी ‘मंथू’ कह पाती और तोता ‘मिट्टू’ नहीं सुन पाता। दिन भर दोनों में झगड़ा होता रहता।

एक रात हम सो रहे थे। चारों तरफ शांति थी। एकदम सन्नाटा। तभी तोता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

'शूशान डिपार्टमेंट' ने इन छः महीनों में १३५ ह० समाज सेवा के लिए एकत्र किया। इस विभाग का वरुण सिधु ९ 'ब' ने प्रतिनिधित्व किया। 'समाज सेवा दल' के अध्यक्ष विनीत उनको धन्यवाद देते हैं।

During the summer—that sleepy time when most boys like nothing so much as to be under a tree sitting on a chunk of ice—St. Xavier's offered a one-month Basketball Coaching Camp. The few boys who took advantage of it every afternoon at 5:00 profited a lot under the guidance of Br. Sebastian. This was noticeable from the way they played and led their teams in the recent inter-house games.

विद्यालय की 'मिनी बास्केट बॉल टीम' पूरी तरहकी कर रही है। कुछ महीने पहले छोटे लड़कों ने माउंट कार-मेल की छात्राओं को 'बास्केट बॉल' मैच में हरा दिया।



News In Brief

आखिर अब बंडमिंटन टूर्नामेंट समाप्त पर है। रवि सिंह १० 'अ' अब इसको अथक परिश्रम पश्चात् समाप्त करने को तत्पर हैं। आशा है हमलोगों को इसके बारे में 'लेटर टू द एडिटर' में पत्र मिलने बंद हो जाएंगे।

रजनीश कुमार (कप्तान, क्रिकेट दल) को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया और समीर दास (नवम् 'ब') को सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज। श्री एम० एम० अधिकारी ने उन्हें अपनी तरफ से इनाम दिया। यह घोषणा पी० डी० सी० ए० द्वारा आयोजित अन्तर विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में दिखाए गए खेल के आधार पर की गई। बधाइयाँ।

'छात्र-परिषद्' के दूसरे टर्म के प्रथम बैठक में प्रश्न पूछा गया कि जलशीतकारक यन्त्र हमलोगों की सेवा नहीं कर रही है, क्यों? फादर मानि ने उत्तर में कहा कि बिजली की सप्लाई में कुछ गड़बड़ी हो गई है। जैसे ही यह गड़बड़ी दूर हो जायगी हमें फिर ठंडा पानी पीने को मिलेगा। वैसे 'लन्च ब्रेक' में यह प्रतिदिन आधे घंटे के लिए ठंडा पानी देता है।

गांधी मैदान में आजकल फिर 'गोल-पोस्ट' लगा दिया गया है। बच्चों को अब फुटबॉल खेलने में आसानी होगी।

On July 31, the lay staff invited the fathers and brothers from the St. Xavier's community to a special luncheon in the school hall in order to commemorate the feast of St. Ignatius, the founder of the Jesuits. A great time was had by all.

३० जुलाई १९७६ को बक्सों के धमा-धम के बीच स्टाफ और स्टूडेंट के बीच बास्केट बॉल मैच समाप्त हुआ। स्टाफ चार अंक से विजयी रहे। सर कैंले का छात्रों के तरफ से महत्वपूर्ण योगदान रहा।

'फाइन आर्ट्स क्लब' के अध्यक्ष देव व्रत गुप्ता ने बताया कि वे जल्दी ही एक अन्तर कला चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करने की कोशिश कर रहे हैं। अतः चित्र कला प्रेमियों, ब्रश व पेंट लेकर तैयारी शुरू कर दो।

इस गर्मी की छुट्टियों में प्रवीण चोपरा ९ 'ब' अपने चाचा जी को छोड़ने स्टेशन गये। ट्रेन में अभी ये लोग सामान चढ़ा ही रहे थे कि वह चल पड़ी और ये लोग अंदर दबे पड़े थे। किसी तरह वे ट्रेन से कूदे। चोट तो आई पर ज्यादा नहीं।

He who makes no mistakes never makes anything.
—English Proverb

May he rest in Peace

During the summer holidays, tragic news was received about the sudden death of Mr N. P. Karamchandani, the father of Satish who studies in 9A. He had the highly responsible job of Resident Engineer for Gammons India Ltd on the Ganga Bridge project. He died on June 11 at the age of 47. He is dearly missed by his wife and three children, as well as a great many friends and colleagues.

XL offers heartfelt sympathy to Satish and all his family and prays that God will look after them in the days ahead.

English Elocution

It was September 8. Throughout the day exalted pieces of oratory echoed through empty halls and from high up on the terrace. Twenty six contenders were warming up for the Annual English Elocution Contest to be held at 6 p.m.

The hour finally struck and we can honestly say that this year's contest was not like many others. The speakers were better prepared, there was more variety in the pieces given, and, best of all, there was a big and appreciative audience on and to inspire us to our best efforts. It was a "night to remember" for those who took part, as well as for those who had the good fortune to be present.

The prize-winners in the JUNIOR group were: Kanchan Kumar (1st), Devashish Sinha (2nd), and Somnath Sen (3rd).

Among the INTERS: Dharmath Pandey (1st), Ujjwal Chatterjee (2nd) and Manoj Kumar (3rd).

SENIOR winners were: Khanna Sanjay "Mussolini" Narayan (1st) Bimal Kirti "Trilok" Singh (2nd), and Neelabh "Patrick Henry" Mishra (3rd).

Bimal Kirti Singh did a first class job of announcing and was sort of a traffic cop in getting performers on the stage at the right time. The music and dance interlude was directed by Mr. Kamal Das and Shyama Prasad. Fr. Paul Jackson, Joseph Koottinal, and Thomas Kuriakose graciously acted as judges.

Fr. George Thana invited Mr. Shiv Shankar Das, Secretary of the Bihar Secondary School Examination Board, to distribute the prizes. Jitendra Kikani gave the vote of thanks and the programme concluded with the national anthem.

A candle loses nothing of its light by lighting another candle.
James Keller

फादर मानी थोमस की विदाई

चेहरे पर त्याग एवं मित्रता की कांति लिये फादर मानी थोमस ने हमारे इस विद्यालय को एक वर्षीय अल्प सेवा के पश्चात् छोड़ दिया। १७वीं जुलाई को उन्होंने हमसे विदा ली। उनकी इस अल्प अवधि में हमने उनसे बहुत कुछ सीखा, (विशेष रूप से छोटी कक्षा के विद्यार्थियों ने जिनको वे गणित पढ़ाते थे।)

ये पटना विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि से विभूषित हुए थे।

अपनी थियोलॉजी की पढ़ाई के लिये दिल्ली की 'विद्या-उद्योति' संस्था में जा रहे हैं।

छात्रों के हार्दिक सहयोग से अतिशय खुश होकर उन्होंने इस पत्रिका के साक्षात्कार में बताया कि वे अपनी पढ़ाई समाप्त कर यहां वापस आने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

भगवान उन्हें हर क्षेत्र में मदद करें। हम विद्यार्थीगण उन्हें अक्षुण्ण अंशों से विदा देते हैं। —जीतेन्द्र किकानी १० 'अ'

देशभक्ति

(पृष्ठ ४ से आगे)

जाओ, गम नहीं आती देश के बिछड़े ऐसे अपशब्द भिखारते। कितने ही बीरों ने इस देश के लिये जान कुर्बान की। उस समय हर खेत खून से सिंचा था। क्या देश ने उन शहीदों के लिये कुछ किया? नहीं! कभी नहीं!

माफ करना किशोर मैं आवेश में बहुत कुछ कह गया। किशोर शून्य को निहारता रहा।

उस दिन से ठीक पन्द्रह साल बाद मैं कहीं जा रहा था। अचानक एक शहीद स्मारक देख चौंक उठा, उस पर लिखा था—किशोर आनन्द, जो कि देश की रक्षा हेतु कुर्बान हो गये। नीचे किशोर के शब्द थे, 'गम नहीं है इस कुर्बानी का, मैं अपना फर्ज निभा कर जा रहा हूँ।'

बाला जी मोहिनिश, ७ ए.

प्यार का खजाना

(पृष्ठ ५ से आगे)

जोर जोर से चिल्लान लगा —चोर... चोर... चोर।

पापा जल्दी से उठकर पीछे भागे। सचमुच एक चोर दीवार कूद कर भाग रहा था। मां और बूआ भी जाग गईं। मेरा छोटा भाई सुमित भी जग गया। सभी किचिन में आए। वहाँ मां की साड़ी में ढेर सारे सामान बन्धे थे। मां ने गठरी खोली। उसमें थे—प्रेसर कुकर, मिक्सर, स्टील की बालियाँ, ग्लास और लगभग घर के सारे बर्तन। मां ने कहा—'हाव हम लुटते-लुटते बच गए।' पापा ने कहा—'जिस तौते पर तुम नाराज होती रहती हो न, उसी ने बचाया है। अगर वह चोर सारे सामान लेकर चम्पत हो जाता। मां खुश हो गईं। उन्होंने प्यार से तौते को देखा और कहा—'कितना अच्छा है, अपना मंथू।' तभी तौता चिल्लाने लगा—'मम्मी, मम्मी।' हम सब चकित रह गए। तौता घर में सबको पुकारता था लेकिन मम्मी को कभी आवाज नहीं देता था। मां पापा का चेहरा देखने लगीं। पापा ने कहा—'तुम मंथू पर बिगड़ती रहती थीं इसीलिए वह तुम्हें आवाज नहीं देता था। आज पहली बार तुमने प्यार से उसका नाम पुकारा है इसीलिए उसने भी तुम्हें प्यार से आवाज दी है।' फिर मेरी तरफ घूम कर पापा बोले—'हमेशा याद रखना, जब तुम किसी को प्यार दोगे, वह भी तुम्हें प्यार देगा। प्यार एक खजाना है। उसे बांटना सीखो। जितना बांटोगे उतना ज्यादा प्यार पाओगे।'

संजय ओनील शॉ

कक्षा ३ 'बी'

AIHS Tally

Ten seniors took the All India Higher Secondary Exam and secured 6 Firsts; 3 Seconds, and one compartmental. With distinctions in math and physics, and an aggregate of 72% Shakilur Rahman was the shining light in his class.

मिनी बास्केटबॉल टोम

(पृष्ठ १ से आगे)

लिये फिर जमशेदपुर चले गये।

एक हफ्ते सुबह और शाम के दमतीड़ अभ्यास के पश्चात् हम ५ लड़कों (मोहित अहलूवालिया, रमेश तिवारी, हेमन्त बहारी, जिवेक लुबरा एवं सोमनाथ सेन) ने बिहार राज्य की अन्तराज्यीय मिनी बास्केट बॉल टूर्नामेंट में प्रतिनिधित्व किया जो हैदराबाद के समीप कोठाकुदान में होने वाला था। कप्तान संत जेवियर्स का ही था।

२९वीं मई को बिहार की मिनी बास्केट बॉल टीम कोठाकुदान के लिये खाना हो गई।

बिहार ने तीन मैच खेले, केरल, आंध्र प्रदेश एवं हरियाणा के साथ। किन्तु भाग्य ने हमारा साथ नहीं दिया और साथ ही साथ अन्य राज्यों की तरह हमने उतनी प्रविष्टि भी नहीं की थी।

संर, उन मैचों में से बिहार ने केरल को बहुत ही कम अंकों से (२५-१८) से हराया किन्तु आंध्र से (१८-४४) और हरियाणा से (१७-७७) से हार गये।

बिहार का प्रदर्शन कोई बहुत अच्छा भी नहीं था, न ही कोई बहुत खराब था—उस छोटे अन्तराल के प्रशिक्षण से तुलना करते हुए।

हम हारे पर दिल में कोई अफसोस नहीं, कोई दुःख नहीं, कोई मलाल नहीं।

'अनुभव जीत से अपेक्षाकृत बेहतर है।'

—मोहित अहलूवालिया, ७ 'बी'

BSSE Results

—Something to cheer about—

Of the 29 boys sent up this year for the Bihar Secondary School Examination, 22 scored in First Division and 7 in Second. Much credit to Bhuwan Sinha for topping his class and landing among the best 15 in the state!

Ajit Kumar Captures T.T. Crown

The T.T. Tournament was keenly contested this year with only one player to uphold the honour of Std. 10. That paddle-swinging turned out to be Ajit Kumar who eventually outplayed Uday Shankar, 9A, to capture the Singles title for the Tigers on August 27.

Other winners are given below: Senior Doubles Uday Shankar and

Kunal Singh (Leopards) defeated Ajit Kumar and Pravin Krishna (Tigers) on Sept. 9

Among the Juniors, Sudhir Saraf, 7A (Leopards) defeated Ratan Saraf, 7 A (Lions) on August 28 to gain the singles championship. Then in the Doubles meet on Sept. 9, Ratan Saraf and Ratan Jha (Lions) defeated Sudhir Saraf and Sanjay Agrawal, 7A (Leopards). Congratulations—not only to the winners but also to those who gave them a good fight!



ये हैं देश के भावी बास्केटबॉल के खिलाड़ी। इनमें से कुछ ने बिहार का प्रतिनिधित्व किया, अन्तर राज्यी बास्केटबॉल प्रतियोगिता में। अभी वे विद्यालय का प्रतिनिधित्व अन्तर विद्यालयी प्रतियोगिता में कर रहे हैं और फाइनल्स में पहुँच चुके हैं। (बैठे हुए) आलोक सिन्हा, मोहित अ०, श्वेत्स्वर शरण, जिवेक लुबरा और पणू सिंह (खड़े हुए पहली पंक्ति) रमेश तिवारी, संजय सिन्हा, सुजय सिन्हा, रवींद्र नाथ, देवाशीष सिन्हा और सोमनाथ सेन। (दूसरी पंक्ति) सर सेवैस्टियन, ब्रदर जॉनी, ब्रदर सेवैस्टियन और सर रमेश कौल।

Inter-House Basketball Finals Thrill Spectators

At the end of the first-half (Aug. 16.), the Panthers trailed the Leopards 14-8. The rebounding of Braj Kishore along with the floor play and scoring of Arun Kumar and Sudhakar seemed almost too much for the Panthers. Then they caught fire and decided that this was no way for a champion to perform. The second half brought on a burst of power and points from the Panthers and

when the final whistle blew, they were ahead 28-24!

Later in the Junior Division, the Leopards grabbed the title by three decisive wins against the Lions (16-12), the Panthers (14-13) and the Tigers (28-17). Due to the number of 'kalley-coached' players scattered through the Junior Division, the excitement and quality of play were very high this year. Congratulations to the winners!

Xavier Life



Vol. 26 No. 1 ST. XAVIER'S PATNA March 31, 1977

SC Voters Put to the Test

The D-Day for this year's Student Council election was February 4th. For the first time in recent memory the voters as well as the candidates were put to the test.

In an open forum meeting held a couple of weeks earlier, the idea was proposed that each voter should study the Constitution of the Student Council and prove by means of a little exam, that he is familiar with its main points.

The plan was supported by the majority and carried out with great success. The 40-question true-false test was not overly difficult. All the same a few managed to flunk it and thereby forfeit their ballot.

Std. 7-10 met in the auditorium at 12:30 p.m. The Vice-Principal, Fr George Thana, addressed the group. The candidates then sallied forth with their speeches like so many gladiators come to face the lions in the open arena.

At last came the voting. Once all the ballots were filed, Std 10B took off for their chemistry practicals and missed the thrill of the counting. By the time they returned, Varun Sindhu was declared President, Aftab Ahmed (Secr), Shailendra Sinha (V-Presid), and Manoj Kumar (Asst Secr). With these officers at the helm, '77 should be a very successful year for the Student Council. Full steam ahead!

Hard Labour's Sweet Reward

A table-full of medals and certificates was awarded to deserving Xaverians Sunday afternoon, March 13. A large number of parents came with their sons to witness the programme. Fr Scaria introduced the chief guest, Mr. S.S. Das, Secretary of the Board of Secondary Education. Mr Das gave an informative speech about the 10+2 syllabus which Bihar is now adopting and afterwards handed out the

awards to those who stood first in their class as well as in different subjects.

Atul Sinha, '75 batch, received the coveted Xavier Medal, and in a brief speech afterwards paid tribute to his parents and to St. Xavier's for all they had done for him. Fr. J.B. Thakur concluded the programme with a vote of thanks.

कनिष्ठ क्रीड़ा-दिवस

गुलाबी सर्दी और उल्लसित वातावरण के बीच १६ फरवरी को हमारे छोटे भ्राताओं का खेल-कूद समारोह (वर्ग १-४) संपन्न हुआ। शुभारंभ हुआ यह समारोह, छात्र-परिषद् के अध्यक्ष के भाषण से। परंपरागत रूप से छात्रगण ४ दलों में विभाजित थे। इनका मार्च-पास्ट बड़ा ही आकर्षक रहा। तत्पश्चात् विभिन्न प्रकार के दौड़ों की कड़ी सी लग गई। इनमें बैलून-दौड़, बोरा-दौड़ और बाधा-दौड़ मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहे। लेपर्ड्स और लायन्स के अंकों में तो जैसे दौड़ ही लग रही थी कभी-कभी तो दर्शकों का हर्षोल्लास कोलाहल में परिवर्तित हो जाता था। आखिरकार लेपर्ड्स लायन्स से एक अंक से विजयी हुआ।

अंतिम अंक इस प्रकार थे :

लेपर्ड्स - १४६ अंक

लायन्स (बेचारे) - १४५ अंक

पैनथर्स - १३६ अंक

टाइगर्स - ८८ अंक (मात्र)

मध्यांतर के समय दर्शकों को अल्पाहार दिया गया। प्रतियोगिता "रीले रेस" से अंत हुई। अंत में फादर स्कारिया ने कुछ मान्य अभिभावकगणों के द्वारा ही पारितोषिक-वितरण करवाया। लेपर्ड्स के कप्तान को शील्ड प्रदान किया गया। इन छात्रों को विभिन्न वर्गों में सर्वविजयी घोषित किया गया :

वरिष्ठ वर्ग, शाहिद इमाम पैनथर्स
मध्यम वर्ग, राजीव कुमार पैनथर्स
कनिष्ठ वर्ग, तपेन्द्र कुमार सिंह,
लेपर्ड्स।

॥ बेबी फील्ड एक बार फिर नीरव हो गया है।

-मनोज कुमार, नवम् 'ब'

शीत या वसंत, या शीत-वसंत

चंद्रमा बारह बार पृथ्वी की परिक्रमा पूरा कर चुका और इधर तीन सौ पैंसठ दिन बीते। '७६ बीता और हम लोगों ने '७७ में प्रवेश किया। समय आया अपनी परम्पराओं को आगे बढ़ाने का और वह भी हो ही गया। १६-२-७७ को 'विन्टर-स्प्रिंग' निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ और निबन्ध के क्षेत्र में श्रेष्ठता का अनुमान भी हो गया। इस निबन्ध प्रतियोगिता का उद्देश्य मात्र पुरस्कार वितरण या श्रेष्ठता का चुनाव नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य 'उभरते लेखकों' की खोज है, और यही कारण है कि जेवियर लाइफ ही इसका आयोजन करता है। हमारे उद्देश्य की पूर्ति भी काफी हद तक हुई।

प्रतियोगिता तो १०१ प्रतिशत सफल रही, परन्तु कुछ लोगों का कहना था कि कनिष्ठ वर्ग का विषय बड़ा अजीब था। विषय था "मिनी वस पटना वासियों के लिये एक ईश्वर प्रदत्त वाहन है"। पक्ष या विपक्ष दोनों पर लिखा जा सकता था। विषय तो रोचक था। उच्च वर्ग के लिये विषय था, "संत जेवियर और मैं", जिस पर काफी अच्छे निबन्ध मिले। कनिष्ठ विद्यार्थियों ने भी अच्छे निबन्ध प्रस्तुत किये। अतः अब विजेता तो बधाई के पात्र हैं ही, जिन्हें निराश होना पड़ा उन्हें भी एक उत्तम चेष्टा के लिये शत बधाई! जेवियर लाइफ की ओर से।

"He's a Champ!" "He's a Rascal!" Is He?

There is an old maxim, "Character is the tree and reputation its shadow. The tree is the real thing, its shadow a mirage." Students of science know that the nature of a shadow changes due to changes in the position or nature of the light, but the nature of the object does not change. Likewise, the reputation of a man may be tarnished or it may shine due to the variance in the light of social attitudes and opinions. But still his true worth—his character—remains the same and he cannot always project a false image of himself. At one time he may be scoffed at or insulted and his reputation may be at a low ebb. Yet, if he carries on with his good work in good faith, people will come to respect him and greatness will be too vast for any temple built in his honour.

There is a dark side to this subject, too. We come across many people who are believed to be very virtuous and great. Their cronies will weave all sorts of yarns about their goodness and righteous behaviour, although they may be doing illegal and immoral acts "under the table". But in this regard A. Lincoln reminds us: "You can fool all the people some of the time, and some of the people all the time, but you cannot fool all the people all the time."

So don't judge the nature or character of any person just by hearsay. First inquire discreetly and think of a person as good or bad only in the light of his true self and character. You may find that what you discover is not the same as his "reputation"!

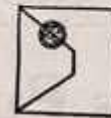
कंटोन में एक कमी

महोदय,

गर्मी करीब आ गई है। वैसे यह मौसम पसीने से नहाने का अच्छा मौसम है किन्तु फिर भी लोग इस गर्मी को बर्दाश्त नहीं कर पाते। ठन्डे कोका-कोला का तो मजा ही खत्म हो जाता है। कारण यह है कि "कैन्टीन में पंखा नहीं है"। यदि कैन्टीन में चार पंखे लग जाते तो मैं कहता सोने में मुहाग और कैन्टीन में चार चांद लग जाते।

पंखामिलायी,

सुनील अग्रवाल, पंकज कुमार, दशम 'अ'



पाठकीय

समय पर चेतावनो

महोदय,

बच्चों के क्रीडांगन उर्फ बेबी फील्ड में एक घंटी की आवश्यकता एक लम्बे असें से महसूस की जा रही है।

बच्चे जब खेल में मशगूल हो जाते हैं तो घंटी की घीमी आवाज को वे सुन नहीं सकते और देर से लौटने पर शिक्षक अथवा शिक्षिका से डांट सुननी पड़ती है। इसीलिए बेबी फील्ड में भी एक घंटी की व्यवस्था की जानी चाहिए।

आपका विश्वासी,

मधुरेन्द्र सहाय,

विश्वजीत झा, दशम 'अ'

The Ugly Duckling?

Dear Sir,

Some games are given proper care, but table tennis seems to be shunted aside. There are coaches for cricket and basketball, but nobody cares for table tennis. Good quality table tennis balls, for example, are difficult to get. Can we hope for a little T.T.L.C. in this direction?

Yours sincerely,
Uday Shankar, 10A

Never Say Die

Dear Sir,

With apologies to Walter De La Mare (author of "The Silver Penny"), I have put together the following verses regarding a topic dear to the hearts of all of us:

Drowned is the badminton man,
Drowned his sweet tourney
Into the deep abyss, no heaven,
Our poor rupees seven!

Yours perseveringly,
Punit Krishna, 10A

(Ed. Note: In view of the many interesting letters received on account of this tournament, XL would like to conduct another one in the near future. Just send your name and Rs. 25 to: President of "Twentieth Century Badminton Tournament", C/o XL, etc. Further details to be announced next year.)

Footballino

Dear Sir,

I kindly request you to inform the school authorities that footballino must be started again, because it is a good game and it is liked by all. We should discuss how to make it a real success.

Yours sincerely,
Md. Shakib Habibi, 10B

Why not give a nudge to the Social Service League, Shakib? They supervised it very well last year and earned some money for their projects.—Ed.

Xavier Life

Editor

Suraj Kumar

Joint Editors

Punit Krishna & Ajit Agrawal

Assisted by

Senior reporters from
Sods VIII, IX, and X.

Address letters to:

Editor of Xavier Life
St Xavier's School
Gandhi Maidan Marg,
Patna 800001. Printed by
Sanjivan Press, Patna-11

WELCOME

—TO THE CLUB—

A hearty welcome to the following who joined the St Xavier's staff in January:

Miss Hemlekha Bhattacharya, a recent graduate from Patna Women's College, who majored in English Honours, and who, despite her warm and winning smile, has already made it clear that she's here to teach and get something into our thick heads.

Fr. Mani Poovakot, S.J., a scientist with a human touch, he graduated from St Xavier's College, Ranchi, with a major in Biology, and is fast becoming one of the pillars of our St X science department.

Fr. Charles Carver, S.J., a happy blend of science and humanities, likewise a graduate of St. Xavier's College, Ranchi, and (something few can boast of) with teaching experience as a regent on this campus back in 1967.

Br. Vincent Francis, S.J., well liked and highly respected by Stds 6 & 8, he moves fast and demands a lot in the classroom. In earlier studies he scored a first-class first in Hindi both at St. Xavier's College, Ranchi, and Allahabad University. Presently he is also supervising the Night School for our neighbourhood children.

Something for Next Term

After the lively Junior Sports program on Feb. 16, the seniors began to warm up to their own big day, Feb. 26. A fair number of elimination rounds and field events were completed and lanes had been chalked out on the maidan when word came that the whole show was off. Mrs Gandhi was coming to campaign and give a speech at that very spot on Feb. 28.

House captains who might have been worried about their team's readiness have now got the summer holidays in which to train and expand their muscles. Senior Sports Day has been postponed [till] next term.

TAPOAFFACS'S APQC

On January 29, five schools and four colleges met in our auditorium to take part in the All-Patna Quiz Competition sponsored by (take a deep breath first) The All-Patna One Act Play Festival and Cultural Society.

The area reserved for the contestants was as crowded as a fish market, and it took awhile before the late-arriving audience outnumbered the 36 contestants.

Two blackboards were needed to record all the points. The programme was of such proportion that everything had to be doubled and tripled. SX seniors manned their stations well, however, and the organisational part went smoothly.

Mrs Mukhopadhyaya, the mind and heart behind TAPOAFFACS, must have foreseen that the collegians would have the edge on us, so she brought along two prizes—a shield and a trophy.

In the college division, Science College emerged first in general knowledge with a total of ten points. St. X., however, ended with the same score as Notre Dame (9 points) and that called for an overtime. One wrong answer (just to make it exciting) and two correct ones later, St. X. pulled ahead and won the day 12-11.

Congratulations to Biswajit Jha, Suraj Kumar, Kunal Singh, and K. J. Roy, who brought us from down under up to the heights!

House Captains Chosen

In the crucial election for this year's House Captains (Jan. 18) the following boys made the grade of Captain and Vice-Captain respectively: LIONS: Rajiv Mohan Prasad and Kumar Alok; TIGERS: Rajesh Singh and Akhileshwar Upadhyay; LEOPARDS: Rajiv Ranjan Prasad and Arun Singh; PANTHERS: Sanjeev Sinha and Suresh Singh.

कुछ अंश सर्वश्रेष्ठ के

“संत जेवियर विद्यालय और मैं”

विद्यालय का शाब्दिक अर्थ होता है “ज्ञान का घर” और इस घर में होते हैं शिक्षक और विद्यार्थी जो शिक्षा को बांटते एवं ग्रहण करते हैं। किसी भी परिवार में छोटे बड़ों का आदर करते हैं और उनसे शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस पर महान् दार्शनिक अरस्तू ने भी कहा है—“परिवार मानव जीवन की उत्तम पाठशाला है।” ठीक इसी प्रकार विद्यालय भी एक परिवार है जिसमें विद्यार्थी शिक्षक का आदर करते हैं और उनसे शिक्षा प्राप्त करते हैं।

संत जेवियर विद्यालय भी एक ऐसा ही विद्यालय है जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों हैं। अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए जिससे मानव जीवन सफल होए, कोई भी मनुष्य विद्यालय अथवा महा-विद्यालय में जाता है। मैंने भी एक मनुष्य होने के नाते अपना जीवन सफल बनाने के लिये अपना नामांकन ४ जनवरी १९७२ को संत जेवियर के पाँचवें वग में कराया, और अभी दसवें में पढ़ रहा हूँ।

अच्छी और अधिक विशेषता वाली चीज को सभी ग्रहण करना चाहते हैं। सभी सोचते हैं—मेरी कोट में गुलाब का फूल हो, बाल में गुलाब हो, यहाँ तक कि भ्रमर भी गुलाब का ही रस चूसने में जानबूझ पाते हैं। संत जेवियर भी एक ऐसा विद्यालय है जिसकी विशेषता दूसरे विद्यालयों से भिन्न होने के कारण, सभी को खींच लाती है।

कुछ लोगों का कहना है कि संत जेवियर विद्यालय में बच्चे रहने से वे अंग्रेज बन जाते हैं, उनकी मातृभाषा अंग्रेजी हो जाती है, परन्तु मेरे गत पाँच साल के अनुभवों का कहना है कि यह स्कूल केवल अंग्रेजी पर ही जोर नहीं देता परन्तु हिन्दी पर भी देता है। अन्य विषय तो साधारण तरीके से पढ़ाए जाते हैं। स्कूल एक ऐसी संस्था है जो जीवन

में नया मोड़ पैदा कर देती है। जो गढ़ा में जाना चाहे वह जा सकता है, या चाहे तो पहाड़ जैसी ऊँचाई तक आसानी से भी पहुँच सकता है। परन्तु मेरे अनुभव से यह विद्यालय सभी विद्यार्थियों को पहाड़ पर ही ले जाने का प्रयत्न करता है।

... अनुभव बहुत बड़ी चीज होती है। अनुभवों आदमी कभी ठोकर नहीं खाता है।

शिक्षक तो कहिये नहीं! भगवान से भी बड़कर हैं। चरित्र-निर्माण तो इस विद्यालय का मुख्य लक्ष्य है। यहाँ के सभी शिक्षक विद्यार्थियों के चरित्र को अच्छा बनाने में अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न करते हैं। खेल-कूद, गाना-बजाना, नाच, वाद-विवाद और दूसरे भी सांस्कृतिक कार्य-क्रम किये जाते हैं।

इस वर्ष निबंध प्रतियोगिता में हमें ३११ प्रतियोगियों द्वारा रचित, अंग्रेजी तथा हिन्दी कुछ बहुत अच्छे निबंध मिले। १५ फरवरी को हुई इस प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ यश आपके रसास्वादन के लिए प्रस्तुत हैं।

संत जेवियर स्कूल का मुख्य लक्ष्य है ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ जो उसका मुख्य चिह्न भी है। मैं जब इस विद्यालय में आया था तो उसके नियमों को नहीं समझता था परन्तु धीरे-धीरे मैं इस विद्यालय में मिल गया और नियमों को समझने लगा। छात्र-परिषद् इस विद्यालय की ऐसी संस्था है जो सभी कार्यक्रमों को देखती है और यह विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण में भी सहायक है।

अतः मेरा अनुभव यह कहता है कि यह विद्यालय अन्य विद्यालयों से अच्छा और चरित्र-निर्माता है। जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेगा, तब तक मैं इस विद्यालय को कदापि नहीं भूलूंगा।

जय शिक्षक! जय विद्यालय!

राज रावेश, दशम “अ”

“पटना के नागरिकों के लिये मिनी बस ईश्वर प्रदत्त वाहन है।” —पक्ष

हमारे देश में मिनी बस विज्ञान और टेक्नोलॉजी का एक कमाल और जीता-जागता उदाहरण है। मिनी बसों सभी जगह मिलती हैं, और ये शहर के सभी कोने-कोने में चलती हैं। बैठ जाइये किसी भी मिनी बस की सीट पर, आह! क्या अनोखा मजा है, फिल्मी गाने सुनिये और दो मिनट में कुल पहुँच जाइये और भाड़ा बस तीस पैसे। ये बसें हमारा समय बचाती हैं, और इसी कारण मैं इन मिनी बसों से अधिक प्यार करता हूँ कि “समय” सबसे मूल्यवान वस्तु है। दूसरी पैसे की वृत्त और तीसरा काम इसकी सुगमता। हमारे बिहार राज्य में इन मिनी बसों का सबसे पहला उद्घाटन पटना शहर में सन् १९७५ ई० में हुआ, इस समय पटने में मिनी बसों की संख्या करीब एक हजार की हो गई है, मिनी बस आगमन से

पटना के नागरिकों को बहुत लाभ हुआ है और इन्हीं कुछ कारणों से इस वाहन को मैं “ईश्वर प्रदत्त वाहन” की उपाधि देता हूँ।

आज मैं मिनी बस संदर्भ में यही कहूँगा कि हम सभी यात्रियों का यही कर्तव्य है कि हम इन मिनी बसों को अपना संपत्ति समझकर इनका हिफाजत करें ताकि इनके चलने में कोई विघ्न-बाधा न पड़े, और यह आजीवन हमारे पटने की चौड़ी-चौड़ी राहों पर सदा इठलाती हुई दौड़ती रहे और इस पटने के निवासियों को भरपूर और जी तोड़ सेवा करती रहे और हमें भी चाहिये कि हम इस मिनी बस की सेवा के प्रति कृतज्ञ रहें!

नीलांजन चंदर्जा, आठवीं ‘बी’

Fortune Favours the Brave

— But There Are Exceptions —

At 9:30 a.m. on 18 February the Xavier cricket squad, accompanied by the XL editors, biked off to Science College for a match which showed a lot of pluck and daring if nothing else. The Science College team boasted a few ex-Xaverians as well as some Ranji Trophy and Bihar-under-22 players.

At 9:55 the two skippers, Biswajit Jha of St Xavier's and Rakesh Prasad of the host team went for the toss. The Sci's won the toss and decided to bat as the Xaverians till lunch. They started hitting out, mistiming their strokes, taking foolhardy runs, and doling out easy catches to our side. But an overdose of vaseline, or something, gave our fielders the jitters and the Sci's ran up a formidable score of 168 runs for the loss of 7 wickets at the end of their 40 overs.

Our fielding, especially in the slips and in the mid-on, mid-off positions was poor. Yet Sanjeev Sinha did very well and it was he who dived to catch for us our first victim. Dhananjay Pt. Singh's wicket-keeping was of rare mettle and he took one catch and stumped one player, thus claiming two scalps. The Sci's captain, Rakesh Prasad, hit a sterling 56 and was aided in the effort by Ranjan Vedsen who hit a masterful 46 runs and Manoj Dubey 20. Hemant Sinha took 2 wickets for 21 runs and Sanjeev Sinha, 3 for 63.

When we went to bat we were simply mown down by the Sci's quickies, Gautam Chatterjee and Devashish Ghosh. Our openers, Biswajit and Kaushal, batted stolidly and put 20 runs on the scoreboard before Kaushal was run out with 9 runs to his credit. Hemant Sinha was the next victim

as he attempted a quick single. Then the sky fell on us and the score tumbled from 20 for no loss to 27 for 7. A bit later we returned to the pavilion with a paltry 36.

After the match words like "pitiful", "disgraceful" etc were used to describe our performance. In fact, given the calibre and experience of our opponents, we did not do badly. Former Xaverian Gautam Chatterji's speed was terrific and he cut and swung the ball to claim 5 wickets for 6 runs. Dhananjay scored 12 runs and Biswajit got 11. Thus bravely did we bow out of the N.I.S. U.C. Tournament.

Suraj Kumar, 10B

Late News

In the First Inter-House General Knowledge Contest held on March 26, the Panthers came out well ahead of the pack with 29 points. They were represented by Sanjeev Sinha, Sanjay Sankritayan, Biswajit Jha, and Suraj Kumar.

Leopards scored 19. Lions 16, and Tigers 15 points. Special thanks to our affable M.C., Fr George Thana, and to Mrs Rekha Srivastava who did the research on the questions.

On March 31st the Inter School Hindi Debate will be held in our school auditorium. Holding up the Xavier flag will be Varun Sindhu and Ajit Agrawal.



प्रतियोगिता के विजेता, बाएं से प्रथम पंक्ति:—नीलांजन चंडर्जी (प्रथम), राज राजेश (प्रथम), संजय बोस, राजीव (प्रथम), सुव्रत सरकार द्वितीय पंक्ति:—नागेश्वर बेनर्जी, संजय केसरी, श्रीवन्त संजय, (प्रथम) अहमदशाह कावकी, पार्वतिका मोहनोश, रंजनकु सिंह, मूहम्मद आरिफ, सुधाकर सहाय, संजय शर्मा, लवना संजय, राजीव मोहन प्रसाद।
अभिजीत चौधरी, संजय जमुजार, संजय सिन्हा।

अतीत

अमावस्या की वह भयावनी काली रात! बिना होश वह चला ही जा रहा था। उसे यह भी पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। उस वृद्ध के कदम डगमगाने लगे थे पर वह मानो भागा जा रहा था, अपनी दुःखद जिन्दगी से पीछा छुड़ाने के लिये भाग्य के कठोर हाथों से बचने के लिये। अतीत की काली यादें उसे सताये जा रही थीं। पर वह उन यादों से बचने के लिये भागा जा रहा था।

खुशहाली

कितना खुशहाल था वह। सिर्फ पाँच वर्ष ही दुःख भोगे उसने, पर असह्य दुःख। बीस वर्ष पूर्व की जिन्दगी अब उसे सपना प्रतीत होने लगी। उसका प्राणों के समान प्यारा भाई "द्वारिका" और वह सुखपूर्वक उस कुटिया में रहते थे। वह अमीर नहीं था पर मेहनती था। पच्चीस तीस वर्ष का नव जवान था। द्वारिका ही उसका सब कुछ था। द्वारिका भी युवक था और आई० ए० का मेधावी छात्र था।

फिर जीवन की जिन्दगी में आई मेनका। दोनों के बीच की दूरियाँ घटती गईं और अन्त में दोनों विवाह सूत्र में बंध कर एक हो गये। कुछ ही वर्षों में उसके घर बचन किलकियाँ भरने लगा। परन्तु इससे भी जीवन का द्वारिका के प्रति प्रेम न घटा। होली नजदीक थी और पैसे कम। किन्तु भ्रातृ-प्रेम ने उसे ओवर टाइम कार्य करने पर मजबूर कर दिया। कुछ ही दिनों में कपड़े और रंग जा गये। द्वारिका इन वस्तुओं का स्रोत न जान सका। फिर तो भाभी-देवर की होली देखने लायक थी। जीवन भी खुशी से रो पड़ा।

समय बीतता गया और जीवन ने द्वारिका का विवाह 'सुनमना' नाम की रूपवती कन्या से कर दिया। वह जितनी सुन्दर थी उतनी लड़ाकिन भी और शायद इसीलिये आज जीवन दर-दर की ठोकरें खा रहा है।

वह दुर्घटना

जीवन एक पुत्र का पिता था और द्वारिका दो पुत्रों का। सभी सुखी थे, परन्तु नियति से यह न देखा गया और एक दिन बचन स्कूल से लौटते समय मिनी बस का शिकार हो गया। मेनका की आँखों का तारा टूट गया। इधर सुनमना भी छोटी-छोटी बातों को लेकर लड़ पड़ती थी। इन सभी बातों से कुछ ग्रस्त होकर मेनका ने संसार सागर से विदा ले ली। सभी दुःखी थे पर सुनमना को ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे यही बूढ़ा सबको खा जाता हो। स्त्री हृदय कितना ईर्ष्यालु होता है और कितना अन्ध विश्वासी भी। क्या कठोर भी होता है? ऐसा ही होता होगा तभी तो सुनमना ने अपने पति से शिकायत की कि बुढ़े को घर से निकाल दिया जाये। दीवारों को भी तो कान होते हैं। यह बात जीवन ने सुन लिया और उस अमावस्या की काली रात को निकल पड़ा पर छोड़ के।

प्रेम का प्रतिदान

सुना था पुरुष हृदय कठोर होता है और स्त्री हृदय भावुक, पर यह विषय कौसा? जीवन का भविष्य बहुत संतप्त था। वह बोझिल कदमों से भागा जा रहा था। काल के गाल में। बिल्कुल थका हुआ, मौत की आशा में और अन्त में भगवान ने उसकी पुकार सुन ही ली। दुर्घटना का शिकार हो गया बेचारा जीवन।

उसका दुःख समाप्त हो गया पर वह भी दुःखद रूप से। उसके मुँह में का फल सड़क पर ठोकरें खाती हुई उसकी लाश। उस भ्रातृ प्रेम का फल, घर से निकाला गया। उस प्रेम का फल मृत्यु।

अब उसकी लाश को देखने वाला कोई न था। न भविष्य शेष था, न वर्तमान, न अतीत, न ही कोई उस अतीत पर विचारने वाला।

संजय केशरी, दशम "अ"



Arun Kumar Singh, VII A
Called to New Life
23-2-77

Xavier Life expresses heartfelt sympathy to the Mother and Father and two sisters of Arun. We pray that God, whose loving plan is sometimes mysterious and hard to understand, may strengthen them and heal the pain of their loss. He was beloved by his classmates and all his teachers. Today Arun is surely among the Blessed. That is our comfort and consolation.

THE SHUFFLED PACK

The Interact Club met on Feb 22 to elect a new President. The incumbent, Varun Sindhu, felt that he should resign, having earlier become president of the Student Council. Khanna Sanjay's name was proposed and seconded. Another name was proposed and not seconded, with the result that Khanna was acclaimed the new president. Khanna then reminded the club that since he was secretary he would also need a replacement. At this point Rajiv Ranjan Srivastava was proposed and, since his name carries a fair amount of weight, and no one else liked to keep minutes, he got the job by unanimous vote. These will be the torchbearers until fresh elections next July.

Xavier Quintet Caught by CRPF

On February 24 some excitement was promised at 3 p.m. in the form of a basketball match between St X and CRPF. Unfortunately our guests were late in arriving and the game did not start till 3:40. Xavier's team was a combination of staff and students, with Mr Kalley and Mr Sebastian leading the way. Four minutes went by before St X finally broke the ice and gave the scorekeeper something to do. At half-time we were trailing 12-10, but did not give up hope. However, we needed more than hope in the second half. Our defense got soft and our well disciplined opponents knew just where to attack. Final score: CRPF 44—SX 32.

SENIOR SOCIAL

Sat. 10 organized and carried through a Social Afternoon with the guests from St. Joseph's, Bankipore, on Feb. 20. Everybody turned up in their best outfits around 12:00 noon.

First there was a tour of the school, which wasn't too enlightening since it was Sunday and everything was locked up. From the school wing the tour proceeded to the Theatre Hall. There the sight of colourful posters and refreshments put people in a party mood. Varun was the M.C. and did a good job—when he could be heard above the din of laughter and music!

JOY RIDE

Early Sunday morning, January 16, quiet streets, ideal time for a cycle race..... AND THEY'RE OFF! In just a little over four minutes Nilotpal Das Gupta 9B pumped his Norton cycle from the Hotel Patliputra to our Xavier Gate and captured First Prize in the race sponsored by the Rotary Club. Twenty-five boys from six schools took part.

After Nilotpal, Dilip Kumar 7B glided in to take Second Prize, while Bishwa Ranjan 9B got Third, giving Xavier a sweep of the first three places. The winners were privileged to receive their prizes from Governor Jaganath Kaushal at the I. M. A. Hall on Feb. 27.

पथ में आती हैं बाधाएं



कनिष्ठ प्रशिक्षण नहीं, यह तो कनिष्ठ खेल-कूद समारोह में बाधा-दौड़ का दृश्य है।

Cricket Scoreboard

1976-1977

- 6 Nov : Principal's XI (71 all out)
Rector's XI (72 for 8)
- 17 Dec : K.C.C. (61 all out)
St X (62 for 3)
- 2 Jan : Old Boys (91 all out)
St X (93 for 7)
- 5 Feb : Lions (47 all out)
Panthers (48 for 7)
- 13 Feb : Tigers (56 all out)
Leopards (58 for 6)
- 18 Feb : Science College (168 for 7)
St X (36 all out)
- 26 Feb : Lions (112 all out)
Leopards (68 all out)
- 26 Feb : Tigers (75 all out)
Panthers (67 all out)
- 7 Mar : Panthers (112 for 7 D)
Leopards (91 all out)
- 7 Mar : Tigers walk-over Lions
- 12 Mar : St X '76 (39 all out)
St X '77 (42 for 3)

FR. CLEARY CRICKET TROPHY

- 16 Mar : FINALS
Panthers (44 for 7)
Lions (43 all out)
- 21 Mar : Lamba XI (137 all out)
St X (75 all out)
- 23 Mar : Krishna Nagar (87 all out)
St X (85 all out)

PDCA LEAGUE TROPHY

- 29 Mar : SEMI-FINALS
St X (133 all out)
Patna Collegiate (25 all out)

Basketball Scores

(1976-1977)

- 13 Sep: '77 Batch (25)—'76 Batch (9)
- 1 Feb: 9B (13)—9A (11)
- 2 Feb: 8B (16)—8A (2)
- 3 Feb: 10A (14)—10B (8)
- 7 Feb: 7B (32)—7A (4)
- 8 Feb: 6B (12)—6A (9)
- 9 Feb: 5B (8)—5A (2)
- 14 Feb: Best. 9th (37)—Best 10th (6)
- 21 Feb: Best 8th (12)—Best 7th (7)
- 24 Feb: CRPF (44)—St X (32)
- 3 Mar: Best 6th (14)—Best 5th (6)
- 12 Mar: St X (38)—Arrah (35)
- 13 Mar: St X (32)—Arrah (22)
- 14 Mar: St X (34)—Xav Hall (32)
- 24 Mar: Xav Hall (54)—SX Mini (40)

Strike Up the Band!

The Xavier Spring Fete is coming to town!

Come and Join the Fun on Sunday, April 3rd

Starting at 3 p.m. and rolling on till 8:00 p.m.

Bring Your Whole Family — Meet Your Friends

Dozens of Games / Delicious Food at the Canteen /

Grand Lottery Draw / Special Souvenir (with lucky number)

— All at Our St. Xavier Campus —

Arrah at St. X for Basketball Weekend

A lively and determined set of basketball players from Arrah Catholic High School met our team for the first time on the weekend of March 12-13.

The first game began at 4:00 Saturday afternoon. Early in the game Arrah grabbed the lead and held on to it all the way to the fourth quarter. They played a fast aggressive game, while St. X seemed to be just recovering from a siesta.

Arrah's zone defense was tight and effective. Very few passes got through to Xavier's tall ace, Braj Kishore. In the final eight minutes, however, Naveen Chandra began to get hot and by over-shooting the zone narrowed the gap and helped St X win by the skin of their teeth, 38-35.

Sunday morning St X fielded a different lineup for the 9 o'clock game. By this time Coach Sebastian had done some scouting, and the fresh set of players got serious from the opening jump. The rebounding of Rajiv Mohan Pd. (10 pts) and the fine dribbling of Mohit Ahluwalia (8 pts) were big factors in the final 32-22 victory.

As a team Arrah was impressive. They have been practising for only a few weeks on their new

court and have made great strides. Their coach, Br. Mathew, S. J., is excited about the future and sees great potential in his players. Clearly they enjoy the game and are a running energetic team. We look forward to meeting them again.

Army Wisdom

This is an experience my brother had soon after he joined the Armoured Corps College at Dehradun. In the Tank Commandeering Course there were three sessions or areas to cover: Movement, Communication, and Gunnery.

In the *Movement* class they were told that if a tank could communicate and shoot but not move, it was useless.

In the *Communications* class they were told that a tank which could move and shoot but not communicate was useless.

Finally, in the *Gunnery* class a bulky Lieutenant instructor thundered, "If ever, my lads, you get a tank which can move and talk, but is unable to shoot, you've got a 4.2 ton Portable Radio!"

Suraj Kumar, XB

Season Openers

The SX cricket team started the season with a bang, putting two feathers in its cap.

On 17 December, 1976, we played against K.C.C. at their ground and had no difficulty of snatching an easy win by 7 wickets. Score: KCC: 61 all out; SX: 62 for 8 (Sanjeev Sinha 15 n.o., Dhananjay 10 n.o., and Biswajit 18)

On 2 January there was a friendly match between our school team and the Old Boys (of recent vintage, 1973-75). They batted first and were dismissed for 91 because of the fine spin bowling of Rajnish Kumar.

But when our turn came the match almost slipped out of our hands due to a batting slump at the start. This put us 3 wickets down without a run on the board. But eventually Kaushal Kishore and Mr. Extras pulled us out of the ditch. Final score: Old Boys—91 all out (Amar Sinha 20, Bhuwan Sinha 19, Raghubir Upadhyay 10; Rajnish 6 for 17). St Xaviers—93 for 7 (Kaushal 22, Sanjeev Sinha 14, Indu Bhushan 10)

Biswajit K. Jha, 10A

Xavier Life



Vol. 26 No. 2

ST. XAVIER'S PATNA

Sept. 2, 1977

New Jesuit Superior for Patna

Fr. Abraham Puthamana, S.J. Principal, St. Xavier's, Delhi and a former Vice-Principal of St. Xavier's Patna (1971-72) has been chosen to be the new Jesuit Provincial of Patna. He will assume office in late September. Congratulations Father! We look forward to meeting you. May the Lord bless you and your work.

To quote XL Vol 21, No. 1: "He was" cool and.....able to sort out the essential from the non-essential. But always in a humble and reasonable way.....This was something we esteemed highly.

As for the future, when his task in Delhi is finished, the Xavier boys will be most ready to buy him a return ticket to Patna"

New Administrative Set-up A Principal and Two Vice-Principals

When school reopened we were surprised to discover there was now a new administrative set up. Fr. Scaria Mamootil, S.J. will continue as Principal. He will be assisted by two vice-principals Fr. Mani Thundathil, S.J. and Fr. George Thana. Fr. Mani will be mainly responsible for the day to day running of the office and all that it involves. He will meet the parents and teachers and those seeking admission. Fr. George will continue to function as formerly. To a very large extent discipline comes under his care so watch out! Fr. Scaria will now be more free to devote time to the teachers and to assist them in their teaching. He will continue to motivate and guide the school as he leads with the assistance of his two vice-principals, the staff and the boys. This set up has been necessitated by the fact that Fr. Scaria is the Director of Schools for all the Patna Jesuit and Diocesan High Schools. From time to time he will have to visit them.

XL Welcomes

FR. ABRAHAM

Bids Goodbye to

BR. DEVASIA

Thank you Brother

Film Criticism

The staff and the senior boys were introduced to the art of film appreciation by Fr. Scaria. His talks were deeply appreciated. All realised much more what went into the making of a film. More important was the fact that all of us realised how much more we could appreciate films. We even came to some knowledge as how to evaluate films. We sure do look forward to more such courses.

Compulsory Games! A Scholastic Requirement

Henceforth it will be necessary for the boys to take active part in at least two games and swimming. Marks will be allotted for Sports and will be part of the academic total of marks attained by a student. Sports will help you to exercise and develop your bodies. This in turn will help you to study better! Develop and educate yourself completely!

संगीत प्रतियोगिता

शनिवार २३ जुलाई को हमारी संगीत प्रतियोगिता हुई और मैंने सुना सभी मुक्त कंठ से सराहना कर रहे थे। वातावरण भी कुछ वैसा ही संगीतमय था और मल्हार की इंतजारी में बादल भी हमारे थियेटर हॉल पर रुके हुए थे।

साढ़े पांच बजे कार्यक्रम शुरू हुआ और माइक से छात्र परिषद् की ओर से स्वागत स्वर गूंज उठा। प्रतियोगिता शुरू हुई कनिष्ठ वर्गों के बच्चों से जिनमें से कइयों ने 'चलते-चलते' यह बता दिया कि सीनियर्स एक अच्छा प्रदर्शन दिखलाने वाले हैं।

इंटर्स के अनिरुद्ध मुखर्जी ने दर्शकों का दिल जीत लिया। सीनियर्स के भरत कुमार का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा। उठते हुए दर्शक समूह को उसने बंबस खींच लिया।

"आपको हमारी कसम लीट आइये।"

इस बार तबला, वैंजों और गीटार की भी प्रतियोगिता हुई और सबका प्रदर्शन उत्तम रहा।

अफताब अहमद ने धन्यवाद ज्ञापन किया और जन-गण-मन के बाद सभी उम्मीदवार सोमवार की इंतजारी में लौट पड़े। सभी के मन में ख़शी थी क्योंकि सभी को विश्वास था कि उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

बादल अब छुट रहे थे। शायद मल्हार की आशा लिए हुए लौट पड़े। देखें शायद अगले साल इनकी आशा शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता से पूरी हो जाये।

पुनीत कृष्ण

10 A

विद्यार्थी-जीवन

प्रिय मित्रो,

यह तो सभी जानते हैं कि विद्या का अभिलाषी विद्यार्थी होता है। पर विद्या क्या है? यह तो अपरिमित कोश है। पर साधारण बुद्धि उसे दो भागों में बाँटती है। भौतिक वस्तुओं का अन्वेषण और कला का अन्वेषण। विद्यार्थी को इन अन्वेषणों के पीछे लगे रहना है और 'काग चेष्टा, बको ध्यान', वाली बात सिद्ध करनी है।

भौतिक वस्तुओं के अन्वेषण यानि विज्ञान से तो आप परिचित ही हैं, पर कला क्या है? बहुतो हुई धाराओं को सीमा में बाँध लेना और इन्हें इच्छानुसार उतार लेना। इसका प्रयोजन उपनिषद् वाक्य बताते हैं—

विश्रान्तिर्पास्य संभोगे, सा कला न कला मता,

लीयते परमानन्दे भवात्मा, सा परा कला।

यह गुण कला में ही है और यह विद्यार्थी जीवन का अनिवार्य अंग। दूसरी महत्वपूर्ण कड़ी है ब्रह्मचर्य-तन से और मन से—

‘ब्रह्म’ चरति यः सः’

ब्रह्म का जिज्ञासु विद्यार्थी ही असली ब्रह्मचारी है, खर छोड़िये अध्यात्म को। आपका ब्रह्म है आपका अध्ययन, बिन्दु है आपकी पुस्तक और शब्द है आपका ज्ञानानुकूल भाचरण। इन्हीं साधनों को अपनाइये। पर यह न भूलिए कि आपका अनुशासन ही आपका दर्पण है। कहीं आपका बिम्ब विकृत न हो जाये।

अपने विद्यार्थी जीवन रूपी मकान पर अहंकार रूपी धूल न जमने दीजिए। उसे नील सद्भाव तथा ईश्वर अनुरागिता रूपी झाड़ू से बुहारते रहिए। विद्यार्थी का ध्येय होना चाहिए ‘सादा जीवन, उच्च विचार’।

आपका : ‘पुनीत’

From the time of our Independence, and with the formation of each new ministry, the question: Should English remain a compulsory language? has become more and more involved with politics.

There are great efforts being made to oust English from the Indian educational set-up. We consider English to be the Imperialists' language and therein lies our fault. If we dispense with English we are sure to suffer a set back in International relations and in scholarly pursuits.

English has done a commendable job in uplifting India from its age old conservatism and orthodoxy. For better or worse English is an International language and the language of diplomats. There is also the need of English for increasing our knowledge in the realm of science, technology and the arts. We have a galaxy of individuals who through their contact with and mastery over the English language have left a lasting impact on the World. Among them may be mentioned, Rabindra Nath Tagore, Radhakrishnan, Pt. Jawaharlal Nehru, Sarojini Naidu, Swami Vivekanand, Sir C.V. Raman and Sir J. C. Bose.

Should we be blind and oppose it merely on account of its past political association? Rather let us give English its due as a world language. Like most countries we ought to retain English in order to make ourselves citizens of the world.

But beware! We must not let English usurp the place of the regional and national languages. Priorities must be kept. At the same time we must have the wisdom and the courage to demand and keep English as a compulsory secondary language.

Agit Agarwal

Letters to the Editor

Dear Sir,

I think it would be good if we had special coaching classes for speaking English for all the students as some senior students cannot talk to their teachers and friends in English. Again when the boys announce something in the assembly they invariably make mistakes in pronunciation and grammar. So we earnestly request the authorities concerned to help us.

Thanking you Yours faithfully,
Sunil Ram, Shashank Priya and
Nilanjan Chatterjee, VIII B

Ed. We have English debates and elocutions. Why not talk over the matter with your English teacher. Listen more to the English version of AIR. You could also profitably make more use of the library. However, your suggestion is good.

Sir,

I was very sorry to see no interview of the new teachers in the previous issue of XL. This was the only way in which we could get familiar with them and that too was lacking. Does it show negligence or incapability?

Surprisingly enquiring
Rajiv Ranjan, 10A

Ed. Rajiv, It's good to know people but it may be dangerous to get familiar with them! We are glad we did not help you to do so. We gave you the important facts about each of them. The interviews were done. If what we presented did not satisfy you, you could have approached them for more details.

Dear XL Ed,

I was very sorry to read and to infer that XL had published wrong news: Vol. 26 No. 1 p. 1: "Hard Labour's Sweet Reward." The boys who stood first in their classes did not receive any prize and naturally their hopes were shattered. Here itself I would like to point out (with due apologies) that the standard of medals is going down with the passing of the years.

Without any malice,
Also expecting none,
Manoj Ram X B

Ed. Kindly get some better samples

News in Brief

* Frs. J.B. Thakur and Scaria Mamootil, and Mr. K.K. Mishra went to Bangalore in May to take part in a social awareness course. A small account of the seminar appears in the Hindi part of this issue. It was the first time that Fr. Scaria and Mr. Mishra were visiting Bangalore. All three found the seminar enlightening and they enjoyed themselves. Fr. Scaria had the added joy of paying a visit to his dear ones in Kerala.

* Just before school closed Fr. Faulstich went off to the States for a long looked forward to and much needed home visit. He promised to be back in the beginning of August. Faithful to his promise he's back in our midst. Glad and delighted to have you back with us, Father. We sure did miss you. Good to see you looking so well).

* Adult Literacy Camps were conducted by Fr. Philip Manthra at Bariarpur and Lakshmipur. 148 participants from all over India took part. 20 villages were covered by the camps.

* Despite the demands of teaching, four of our teachers appeared for this year's B. Ed. examination. They were Mr. Sudhir Seraphim, Remy Osta, Suresh Pathak and Miss Lakra. Such hard work is an inspiration to us.

* For more than a week Fr. George Thana, our amiable and lovable vice-principal was absent from our midst. An unrelenting fever necessitated his hospitalisation in Holy Family Hospital. The staff and the boys rejoice to see him back at work.

* Fr. Mani, formerly the acting principal and now one of the vice-principals returned in June. For the whole of July he attended to listening to parents and teachers and boys. He also taught economics to the seniors before leaving for Calcutta and Ranchi for some research work. The next issue of XL will welcome him back with great joy.

* On the occasion of her daughter's birthday Mrs Rekha hosted

a party for the staff. Talking of parties reminds us that the staff have interspersed their hard teaching work with a spate of parties provided by the newly weds and the new Doctor, Dr. S.D. Mishra.

* In the summer holidays Fr. Thothuvelil went home and visited his people in Kerala. His brothers and sisters, cousins and nieces, grand nephews and nieces were delighted to meet him.

* For a short while Fr. Mani Poovakott was in Allahabad conducting days of prayer for the sisters.

* In May and June Fr. Charles Carver was in the hills in Ranikhet. Amidst the peace, quiet, and coolness of the hills he directed groups through days of prayer. A memorable time for them and him. He recently conducted days of prayer for the teachers of St. Joseph's Convent.

* During the holidays Fr. Philip Poovattil had to move over again to Holy Family Hospital. He is once again back with us. Every now and then he disappears to the Examination Board he being one of the head examiners (watch out for your heads!). On his evening walks he is quite often mistaken for one of the big political bosses in town and is approached for help!

XPTA PROJECTS

* With the help of the Student Council which donated four steel racks, the XPTA has started a Junior Library for classes 1 to 4. Books were donated by several parents especially by Mr. Tarit K. Bose, Vice-President XPTA and Mr. Vinod K. Luthra, Secretary XPTA. They appeal for more books for the children. You can help them and your fellow students!

* Vocational Training: Typewriter Project: One typewriter has been bought but 3 or 4 more are needed. Do you know of anyone willing to sell second hand typewriters? Kindly inform XL or XPTA. Contributions of Rs 3 and more are called for.

* General Health Scheme: Under the leadership of Dr. S.K. Ashraf President of XPTA, a team of doctors will do a general medical check up of each of the students. "Each parent will receive a copy of the findings so that the necessary treatment, if needed, may be given to the children by their parents" (XPTA circular dated 4.8.77).

* Conducted the water festival held on Aug. 16th and is organising meetings between parents and teachers of the respective classes.

Academic Achievements

A New Doctor

* XL and the school congratulates Mr. S. D. Mishra for the laurels he brought to himself and the school when he successfully defended his doctoral thesis. He is now Dr. S.D. Mishra. Hearty congratulations, Sir. Well done indeed.

Zahidi Tops

Hearty congratulations to Mr. M.A. Zahidi who topped in his M.Sc. examination in Mathematics from Magadh University, Gaya. Well done, sir. Thank you for your interest in our studies and extra curricular activities.

100% Matric Results

Good show, friends of last year. Congratulations! You have brought honour to us and yourselves. Let us thank the Lord and our teachers.

1st DIVISION 47

2nd DIVISION 7

No failures.

Our sympathies to last year's editor, Sunil Agarwal, who missed making the merit list by a mere 3 marks! Hardlines and well done, Sunil!

Results of the Music Competition

Vocal:		
Juniors:	1. Swetotpal Das Gupta	3A
	2. Saikat Neogy	4B
	3. Subhojit Bose	2B
Inters:	1. Anirudh Mukherji	7B
	2. Pankaj Kumar	6B
	3. Kaka Pd.	6A
Seniors:	1. Bharat Kumar	10A
	2. Suresh Kumar Singh	9A
	3. Sunil Agarwal	10A
Instrumental		
Tabla:		
Seniors:	1. Sharad Rastogi	9A
	2. Nilotpal Das Gupta	9A
Juniors:	1. Sanjay Mehrotra	5B
	2. Indranil Chatterji	4B
Guitar:	1. Mukesh Ajmera	9A
	2. Sidharth Sharan	8B
	3. Rai Sanjay Krishna	10B
Banjo:	1. Sunil Agarwal	10A
	2. Sudhir Saraf	8A
	3. Amitabh Sinha	9A

Congratulations to the winners and to all who took part. It was wonderful to see the talents you displayed. Thank you for the musical evening. Thank you too to the appreciative audience which included parents, teachers and many students. The hall was packed. A special word of thanks to the artistes from All India Radio Patna for consenting to judge us and for the encouragement they give us.

Winners of the Hindi Elocution Contest

JUNIORS

Std I		A
First : Ashish Mehrotra		A
Second: Rakesh Lal		B
Third : Anurag Anand		B
Std II		B
First : Amarnath Pandeya		B
Second: Chetna Nand Singh		A
Third : Manoj K. Choudhury		B
	Biswadeep Bose	B
Std III		B
First : Alok Kumar		B
Second: Md Perwez Ashraf		B
Third : Raman Madan		B
Std IV		B
First : Sanjay O'Neil Shaw		B
Second: Prakash Ranjan		A
Third : Ravindra Pandey		B
Std V		B
First : Sd Shahabul Haque		B
Second: Braj Kishore Mishra		B
Third : Sanjay Maharaj		A
Std VI		B
First : Pankaj Kumar		B
Second: Vinay K. Sood		B
Third : Sanjay Singh		B

INTERS

Stds VII & VIII

First : Atul Aditya Pandey	8B
Second: Thakur Vikas Sinha	8A
Third : Kanchan K. Sinha	7A

SENIORS

Std IX & X

First : Sunil Agarwal	10A
Second: Rajiv Ranjan Das	9A
Third : Rai Madhurendra	
	Sahai 10B

The Seniors Lounge & Music !

The seniors lounge has become a comfortable and enjoyable place to spend one's free time. The relaxing sitting arrangements, the lights, and the designs combine to soothe and relax and reinvigorate one. Added to all this is the variety of music that is played over the stereophonic system. That's not all. Lately the Student Council has added 17 choice hits to the collection. Drop in and regale yourself to the full.

Varun Sindhu

DRAMAS GALORE

* Notre Dame Academy One-Act Play Festival: On July 28th we were invited for their English One-Act Play Competition. Eight of us went and enjoyed ourselves. It was a delightful feast ! We were particularly impressed by the stage settings and the make-up.

* The Patna One-Act Play School Festival was held at St. Joseph's Convent on Aug. 2nd and 3rd. The hall was packed to capacity. The schools that took part were Bankipur Govt. Girls' School, Notre Dame Academy, Hartmann Girls' High School, Mt. Carmel High School, St. Joseph's Convent and St. Xavier's School. Despite the creditable and praiseworthy performance of our actors the best Hindi play was won by Bankipur Govt. High School, and the best English play was presented and acted by St. Joseph's Convent. Congratulations to Varun Sindhu (at Xavier's) who was adjudged to be the best actor. Mr. Shyam and Mrs. Rekha and Ira did a grand job on the make up. Rashmi Sharan as Sheila and Kumar Alok as Veena could have competed with many a girl for the best actress and the most beautiful girl. So well were they made up.

* St. Michael's invited us for their Hindi drama, Pratishodh. More of us would have liked to attend but it was not possible. We were happy to see our friends performing.

A SPECIAL POOL-SIDE PARTY

On July 8th the Christian boys and their parents had a chance to meet the Fathers and brothers. Also present among the Fathers were Fr. Ben Osta and Norbert Rai. The turn out was very impressive. Most of the parents responded by being present. All were happy at the chance they had to meet one another. The boys and Fr. Rai enjoyed themselves in the pool while the others looked on and talked among themselves. All are looking forward to the next party.

A Thriller

Having already defeated St. Michael's in the first round of the All India Inter-College Principal's Tournament we met Engineering College in the next round. Biswajit lost the toss and the Engineering College skipper decided to bat first. In the beginning it seemed that we were in for a leather hunt. Their first wicket put on 36 runs. But with the introduction of young Avinash Kumar of the 9th into the attack the game swung our way. Engineering College were dismissed for 97 runs. Avinash had the very creditable analysis of 1 for 17 runs. Well done Avinash. Great Going!

When we went into bat after lunch we got off to a shaky start. Kaushal was very soon back in the pavillion with only 10 runs on the board. But Biswajit and Jitendra rose to the occasion and our victory within our grasp by adding 30 runs for the second wicket. Soon it became a tussle with the game likely to go any way. From a safe, strong position of 40 for 1 we were 79 for 8. The ground hummed with excitement and everyone was on pins and needles. The score board read 85 for 9 and our last pair were in. Victory was only 3 runs away! However, it was not to be ours. Avinash was caught by the wicket-keeper and we lost by a mere 2 runs. Our main scorers were Biswajit Jha 18, Jitendra Kikani 18, Rajnish 12, and Sameer Das 12.

Dhananjay Pratap Singh, 10 A

Mr. Editor,

Bhuwan Sinha (Ed. '75) obtained 729 marks and came 11th in the Bihar Matric Examination. He missed the merit list by just one mark.

Sunil Agarwal (Ed. '76) also came 11th missing the merit list by three marks while totalling 762 marks. He topped in Patna Dt.

Mathematically I can deduce that the '77 editor will secure over 800 marks and miss the merit list by five marks!!

Your sympathetically

**Uday Shankar, Shakib Aabibi,
Anup Pathak**

Coveted Inter-School Trophy Won by St. Xavier's

On the afternoon of April 7th even those who had not gone to witness the finals played at Chemistry Block Grounds between G.D. Pataliputra and St. Xavier's, knew that we had won. The team and its supporters were vociferous in expressing their jubilation. They wanted the whole world to learn of their triumph. From Science College to home they gave full vent to their victory. Well done but may be we need to somewhat moderate our victory joy. How many of us thought of those that had been defeated!!!

The morning was very pleasant as Biswajit and the opposing Captain walked onto the field for the toss. Biswajit won the toss and elected to bat. Very soon he must have been woefully regretting his decision as we were soon 34 for 4. However Kaushal was still there and going strong. He now found an able partner in Sanjay Singh. In 70 minutes of exhilarating and scintillating batting they changed the complexion of the game. Sanjay

was the first to go when he was out for 46 runs. Kaushal soon followed him when he was unluckily run out for 58 runs. Once they were out, the innings soon came to close and we were all out for 155. Kaushal and Sanjay put on 102 runs and together accounted for 114 runs!

When G.D. Pataliputra went to bat they were mowed down by our pacemen Sanjay and Jitendra. Very soon they were 25 for 4. There was some hope of a revival akin to ours when their 6th wicket put on 26 runs including two sixes by Mahesh. But this was a splash in the pan and our spinners Rajnish and Avinash (brothers) polished off the innings when they lured the batsmen into mistakes. Avinash and Rajnish shared the last three wickets, Avinash obtaining two of them. G.D. were all out for 55 runs leaving us victorious by 100 runs.

Congratulations! Well Done!

Sanjeev Sinha 10B

Iftekhar Uz-Zaman 10B

XAVIER CRICKET IN MY VIEW

We feel proud to say that St. Xavier's holds a prominent place in cricket at school level in Patna. We have been runners-up twice and bagged the championship cup this year in the Inter School Tournament sponsored by the Patna District Cricket Association.

We owe a tribute of thanks to Fr. Scaria and to Fr. George and Fr. Mani too for the interest they have taken in our matches. Mr. Sebastian's contribution too is much appreciated. But the main credit goes to Mr. Adhikari M.M. Prasad, who has done a lot for us, coaching us for the last two years, to raise the standard of our cricket. In a way he has led a 'renaissance' in Xavier Cricket.

But now comes the vital point. Though our cricket has attained great heights in the past few years

probably a slump will follow unless we take some substantial steps, so that a continuous flow of talent is maintained. Three of our best cricketers have moved on—Rajnish, Jitendra Kikani and Sanjay Singh. All the other recognised batsmen, who are in the tenth standard, will probably play in the coming year as sent-up students. We have, of course, a very good spinner in Abinash Kumar but there is no other spinner of the same standard. We have pretty accurate fast bowlers in Hemant Sinha and Sanjeev Sinha, but they lack hostility. Sunil Rai is hostile but he is erratic. Recently a very good batsman has been admitted Sanjay Chowdhary.

Nevertheless, something must be done. First we should have

(Contd on page 7)

नौजवान-एक शब्द चित्र

एक लोकल रेस्तरां में बैठा मैं चाय का 'कश' ले रहा था तभी कहीं के कुछ नौजवानों की एक टोली पहुँची। बड़े बाल, चौड़े मोहरे वाले पैट, लाल, पीले छोट के कपड़े और हाँ मुँह में सिगरेट। यही रंगरूप था उनका और मेरा उनके प्रति आकृष्ट होना स्वभाविक ही था।

एक टेबल पर वे विराजमान हुए और सम्य घड़ों की लड़कियाँ धीरे धीरे खिसकने लगीं। वाह रे नौजवान! मेरे मुँह से बरबस यह निकल गया। कहकहे पर कहकहे और मैं उनके नजदीक वाले टेबल पर जा बैठा।

पहला-यार आज तो मजा आ गया। तूने उसका फोन नम्बर रखा है?

दूसरा-भला ऐसे काम से हम कब चूके हैं।

पहला-तो हो जाए रेस्तरां से ही।

कौन चतुर ? ? ?

चतुरा चोरी में बड़ा उस्ताद था ऐसा हाथ साफ करता था कि किसी को पता ही नहीं चलता था। पर उसका पुत्र भोंडू ठीक उसके विपरीत। उसे चोरी से घृणा थी।

एक दिन चोरी सिखाने रात को चतुरा भोंडू को लेकर चल पड़ा। कौवे के घोंसले को देखकर चतुरा बोला-"देखो मैं कैसे कौवे जैसे चतुर पक्षी के अंडे चुरा लाता हूँ।"

धीरे धीरे वह पेड़ पर चढ़ा और बड़ी कुशलता से एक एक अंडे झोले में रखता गया, कौवी को तो पता भी नहीं चला।

घर आने पर भोंडू ने अंडे देखने को मांगा। पर यह क्या! झोले में तो अंडे नहीं थे। इस पर हंसते हुए भोंडू ने अंडे निकाले। चतुरा की आँखें चमक उठीं। वह कह पड़ा-बेटा तू मेरा नाम रौशन करेगा।

पर भोंडू तपाक से बोल पड़ा-"क्या चोरी से। चोरी से तो नाम बदनाम होगा। मैं नाम रौशन कहूँगा; पर सद-

तभी बैरा आया और चाय ही प्यालियाँ पटक कर चल दिया। अब सिगरेट का साथ चाय दे रही थी और उनकी बात-चीत चालू थी।

तीसरा-अरे यार, उसने तो हाथ चला दिया और बेचारा राजू, चबच, देखते रह गया।

चौथा-क्या समझता है मुझे! मेरा नाम है राजू, धूनियन का लोडर बन जाने दो। क्रांति ला दूँगा। क्रांति समझे! और फिर उसे भी देख लेंगे?

फिर वे फोन की तरफ लपके और मनेजर से कहकहाँ में अटके हुए थे कि मैंने अपनी चाय की अंतिम घुंटा खाली की और मेरे मुँह से फिर बरबस निकल पड़ा-वाह रे नौजवान!! वाह रे देश के भावी कर्णधार!! धन्य हो प्रभु!!

पंकज कुमार, १० A

कम से"।

चतुरा को हलाई आ गई और उसने भोंडू को हृदय से लगा लिया वह समझ गया था कि 'भोंडू' ही चतुर है।

विजय कुमार सिंह-५ 'अ'

लड़ाई

आज की लड़ाई
महाभारत की लड़ाई से
कुछ कम नहीं है

अन्तर
सिर्फ इतना ही है
कि उन दिनों की लड़ाई
पाँच गाँव के लिए थी
और आज
पाँच रोटियों के लिए!
जरूरत?
जरूरत के लिए
जरूरत की जरूरत नहीं है
जरूरत है
जरूरत को
खत्म करने की।

शैलेन्द्र कु० सिन्हा ९A

विद्यालय मेला-७७

शंकाओं-कठिनाइयों और अनिश्चितताओं के बन्धन को पार करने में सम्मिलित परिश्रम का एक अछूता महत्व है। और, कुछ ऐसा ही रंग लाया इस वर्ष विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का सहयोग-"वार्षिक विद्यालय मेला" में!!

विद्यालय के गेट से बेबी-फील्ड को जाता वह विशाल भीड़ का रेला-हमारी सफलता का प्रथम चरण!! ४ अप्रैल की संघ्या, लाऊडस्पीकर पर मधुर संगीत और विद्यालय तड़ाग के छलकते जल पर तैरता नाव, यानि-"नाव पर पटना की सैर"। तीन बजे दिन से लेकर आठ बजे रात्रि तक यह आयोजन चलता रहा। आइसक्रीम दोसे, शीतल पेय, कढ़ाव, मिष्टान्न बिकते रहे। काऊंटरो पर पुरस्कार के दीवाने दौब लगाते रहे। और सबसे अन्त में लाट्री का रोमांचक ड्रॉ।

महीने भर कठिन परिश्रम कर के इस मेला का आयोजन करने की, आगंतुकों का स्वागत एवं विदा करने में जो आनन्द मिला वह अनुपम था।

अन्त में मेरा हार्दिक धन्यवाद-सभी शुभचिन्तकों, सहयोगी छात्रों तथा शिक्षकों को।
वरुण सिन्धु-१० 'ब'

Junior Red Cross Camp in the Hills of Simla

Three Xaverians were among the eight members that represented Bihar at the Junior Red Cross Camp held at Taradevi in May. Mr. P.S. Thakur was the counsellor from the State. The three Xaverians who had the honour of representing their school and state were: Sindhu Ratna, Rajesh Singh and Varun Sindhu.

The Camp lasted for ten days. Fifteen States and eleven districts of Punjab participated in the camp. Bihar bagged most of the awards. Sindhu Ratna was judged the best extempore speaker and won the second prize in the quiz competition. Varun Sindhu did equally well in winning the quiz competition and standing second in the diary-writing contest. Well done Bihar and hearty congratulations to the Xaverians.

Xavier-Cricket

(Contd from page 5)

a proper ground. Our Gandhi Maidan pitch should be paid attention to and the concrete one in the 'Baby field' broadened. Our groundsman should be given more time for it. Secondly, House matches should have more official concern. Class matches should be arranged officially. We can easily arrange matches in January, when there are no Weekly Tests. Matting wickets ought to be provided for house matches. Stress should be laid on the search for talent rather than winning. For the school team apart from provision of a complete kit the ground-work, especially, fixing of mat and net should be done by the groundsman instead of players. Moreover, as in the last season, fielding practice should start from September.

Finally, I hope my suggestions will be considered seriously by the authorities concerned. If these steps are taken up, I am sure our standard will be high always. Cricketers from our school will emerge in 'big Cricket' and enlighten the name of our school. Thus only can we retain our good image.

Biswajit Kumar Jha, 10 A.

XAVIER'S PATNA ALL BIHAR BASKETBALL CAMPS

In May we won the All Bihar Mini Basketball Tournament. We defeated United Tata Club in the final. This enabled us to avenge the defeat at their hands in last year's final. The month of April found us practising very hard for the great event. Fourteen of us were selected to prepare for the tournament which was held at our school on April 30th and May 1st. The fourteen were : Mohit Ahluwalia, Hemant Bahri, Sanjay Kumar Sinha, Sujay Kumar Sinha, Vivek Luthra, Sumantra Sircar, Sanjay Kumar, Ramesh Tiwary, Shomnath Sen, John Paul Benedict, Devesh Harish Lal, Virendra Kumar Lal, Alok Sinha and Devashwar Sharan. Three of them were unable to take part in the tournament.

Five of the six teams announced took part in the tournament : Loyola School, DBMS School and United Club were from Tata ; St. Xavier's School came from Ranchi; St. Xavier's was a lone entry from Patna. We were unable to start on schedule as the trains from Tata arrived late. The first matches of the tournament were played in the evening. In the opening match of the tournament we faced DBMS and chalked up an easy and impressive victory 56 vs 2. In the second match

Loyola defeated St. Xavier's, Ranchi 52 vs 20. On the following day the results were: St. Xavier's Patna defeated United Club 50 vs 12; United Club defeated DBMS 15 vs 6; St. Xavier's, Patna defeated Loyola 42 vs 0; United Club defeated St. Xavier's, Ranchi 24 vs 10.

The final was played in the evening between United Club and our team. Though we felt confident of victory (we had defeated them in the morning) we went all out for victory. We improved upon our morning play and triumphed 54 vs 14. Congratulations to one and all especially to Mohit Ahluwalia who played a fast accurate game. Our special thanks to Mr. Kalley, Mr. Sebastian and Fr. Faulstich, S.J.

Mr. Vinay Kochar was the chief guest. Mrs. Kochar kindly consented to distribute the prizes. The winner's shield, donated by Mr. V.K. Luthra, was won by us. The runner's, donated by Mrs. Bimla Mehrotra, was won by United Club, Tata. After the prize distribution the names of those chosen for the Bihar team for the Nationals in Goa were announced, seven of our boys made it. Mr. Kalley proposed the vote of thanks.

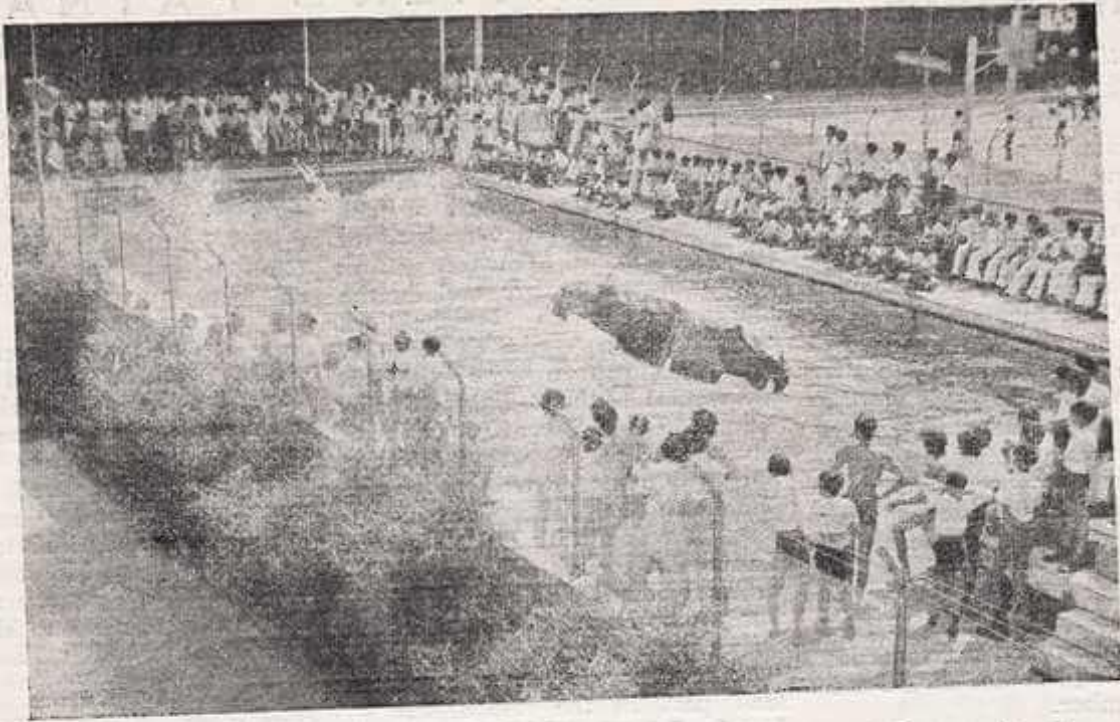
Shomnath Sen, VII B

Leopards Triumph

1 to R Standing : Sanjay Sinha (ump) Ajay Mathin, Surinder Prasad, Kumar Alok, Sanil Agarwal, Rajeev Mishra (Lions) Braj Kishore, Shailendra, Sudhakar Sahay, Raju Raphael, Arun (Leopards) Shomnath Sen, Mr. Sebastian; Sitting : Sujay Sinha (ump), Rajesh James, Mohit Ahluwalia (Lions) Amitabh Sinha, Satwar Prasad (Leopards) Ramesh Tiwari.



जल-महोत्सव



'गुड मॉर्निंग लेडीज एंड जेंटलमेन' ये आवाज खचाखच भरे हुए स्विमिंग पूल में १६ अगस्त को लगभग पौने दो बजे गूँजी और शुरू हुई हमारी तैराकी प्रतियोगिता। ५० मी० फ्री स्टाइल से यह प्रतियोगिता शुरू हुई और सभी अपने मित्रों को प्रोत्साहित करने में लगे हुए थे। इसी प्रकार कार्यक्रम पर कार्यक्रम होते गये और खास कर 'कप्तानों' के जोश के तो क्या कहने।

'अनाउंस' कर रहे थे अजित अग्रवाल और पुनीत कृष्ण जिन्होंने अपना कार्य ठीक ही से किया।

इस बार की विशेषता यह थी कि यह जेवियर पैरेंट टोचर्स एसोसिएशन द्वारा कराया गया था। दूसरी बात यह है कि पुरस्कार वितरण प्रतियोगिता के तुरन्त बाद कर दिया श्री बी० के० लुबरा ने पुरस्कार वितरण किया।

तैराकी में सौवर अग्रवाल का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा। वैसे चंलेन्द्र सिंहा, नारायण अग्रवाल और खशा संजय के भी प्रदर्शन अच्छे रहे।

टीम लेपर्ड्स की सर्वश्रेष्ठ रही और इसने रीले रेस में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अंकों में भी लेपर्ड्स ने ५० अंक हासिल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। पंथर्स ने ३७ और लायंस ने १९ अंक हासिल किए। पर पैंथर्स सिर्फ ४ अंक ही ले पाये।

इस तरह ये प्रतियोगिता शत प्रतिशत सफल रही और इसका शत प्रतिशत श्रेय सर सवाईराम को जाता है। इन्हीं के परिश्रम का यह परिणाम था।

खैर बधाई!! विजेताओं और विजिनी को।

अनंभ मिश्रा १० A

सामाजिक गोष्ठी बैंगलोर में

(कृष्णकान्त मिश्र)

यू तो मैं अपने देश के कई प्रमुख शहरों का भ्रमण कर चुका हूँ, परन्तु कर्नाटक प्रदेश की राजधानी बैंगलोर, जो अपनी स्वच्छता के लिए सम्पूर्ण देश में प्रथम स्थान प्राप्त करता है, जाने का मेरा पहला अवसर था। वहाँ भारतीय सामाजिक संस्थान प्रशिक्षण केंद्र में विभिन्न प्रान्तों के लगभग ४५ शिक्षक-शिक्षिकाओं ने "सामाजिक चेतना" पर होनेवाली गोष्ठी में भाग लिया। गोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य था धर्म-संघियों द्वारा संचालित विद्यालयों

के छात्र-छात्राओं में राष्ट्रीयता तथा सामाजिकता की भावनाओं को जागृत करना तथा उन्हें कार्यक्रम में परिणत करने की प्रेरणा देना। सामूहिक रूप से सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं जिनमें पुरोहित तथा धर्म-बहिर् भी थीं—दल में विभाजित होकर निस्संकोच अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र थे। लगभग एक पक्ष के कार्यक्रम में सभी सदस्यों ने बड़ी ही तन्मयता तथा सक्रियता से भाग लिया और अपने-अपने अनुभूत विचारों का आदान-प्रदान किया।

बैंगलोर में विभिन्न क्षेत्रों तथा भाषाविद् के साथ मिलकर सामाजिक विषयों की चर्चा करना तथा उन समस्याओं को सरलतापूर्वक संयुक्त रूप से हल कर लेना इस गोष्ठी की सबसे बड़ी विशेषता थी। इस प्रकार की गोष्ठी का आयोजन न केवल अध्यापक-अध्यापिकाओं के लिए लाभप्रद है बल्कि छात्र-छात्राओं के लिए भी ज्ञानवर्द्धक होगा।

Edited by : Ajit Agarwal,
Punit Krishna
with the help of many
Published by Sanjivan Press, Patna

पहला परम-प्रसाद दिवस

कक्षाओं-कठिनाइयों और अनिश्चितताओं के बन्धन को पार करने में सम्मिलित कार्यक्रम का एक अछूता महत्व है। और, इस प्यार ही रंग लाया इस वर्ष खीस्तीय विद्यार्थियों, उनके माता-पिता एवं शिक्षकों का सहयोग—“पहला परम-प्रसाद दिवस” के अवसर पर।”

दिनांक ३-१२-७७ को सुबह ५ बजे गिरजाघर में पहला परम-प्रसाद ग्रहण करने वाले खीस्तीय विद्यार्थीगण एक नये उत्साह और उमंग लिए अपने माता-पिता तथा शिक्षकों के साथ उपस्थित थे।

हमारे विद्यालय के प्रधानाध्यापक फादर स्कारिया मामुटिल एस० जे० दूसरे और पुरोहितगण के साथ मिस्सा-पूजा चढ़ाये और बच्चों ने पहला परम-प्रसाद संस्कार ग्रहण किया।

मिस्सा-पूजा खत्म होने के बाद ‘फादर रोल’ ने प्रधानाध्यापक तथा उपप्रधानाध्यापक सहित बच्चों के चित्र खिंचे।

पवित्र परम-प्रसाद ग्रहण करने वाले बच्चों के नाम इस प्रकार से हैं:—

कक्षा I B

डोननिन डेविड
रुज पीटर साह
राजेश साह

कक्षा II B

विजन कुमार
कोल्लिन डेविड
राजिव जोसेफ पिन्टू
विलफ्रेड हेन्ड्री
आनन्द कुमार सिन्हा

कक्षा IV B

एलेन जे० डेविड
देबप्रिया मित्रा

इस प्रकार वह ३-१२-७७ का महान दिवस धूम-धाम से मनाया गया। इस दिवस की तैयारी करने में ‘फादर मानी पुवाकोट’ का बड़ा हाथ रहा है। वे उस दिन की तैयारी करीब-करीब एक महिना पहले से ही शुरू कर दिए थे। विद्यार्थियों ने भी इस समारोह की सफलता में बहुत ही हाथ बटाया।

सुरेन्द्र कुमार, नवम् ‘ब’

Xavier Life



Vol. 26 No. 3 ST. XAVIER'S, PATNA December 9th, 1977

Xavier's Welcomes Sir Edmund Hilary



On Sept. 6th : The students and teachers of St. Xavier's were thrilled beyond words by the visit of Sir Edmund Hilary who with Tenzing had the honour of being the first men to conquer Everest. The visit was made possible due to the contacts of our Rotarian Principal, Fr. Scaria. He made it possible for Sir Edmund to come to the school despite the latter's

crowded schedule.

At 10-5 a.m. : Sir Edmund, along with his son Peter, fellow Ocean-to-Sky member Jim Winson and a few Rotarians, walked into St. Xavier's. In no time at all the school-staff and students, poured out to meet him. They looked at this towering personality with unbelievable and grateful
(Contd on page 4 col. 1)

TEACHER'S DAY

The Student Council and the senior students spared no effort in making this a day to remember. Days before the event Varun, Aftab and company worked untiringly. It was very interesting to see how they operated. Again and again they visited the class rooms for contributions. They exhorted, cajouled and even threatened with dire consequences those who did not meet the agreed upon stipulatory contribution towards a gift for the teachers as also for a high tea.

The gifts this year were better and were chosen with care. This was made possible on account of the funds from the fete and the generous contributions of the students. At last the long awaited day came and the wonder of wonders—the boys were easily squeezed into the aula. The confusion created by the tiny tots was soon calmed by Fr. George and a few teachers. The senior boys were grateful for this timely help, and appreciated a little more the arduous task of their teachers.

There was a lively variety in the fare provided—a mixture of anecdotes, jokes, songs—individual and group, and also instrumental music. Mukesh Ajmera was brilliant on the guitar as also Rastogi on the tabla. Saibal Neogi was superb and engaged our full admiration as he sang. Sanjay Sankri-tayan's "Phir-Meri Lad-Gaye" worked like laughing gas. Another good entertainer was the parody of the teachers by Aftab. The better halves of the staff brought a lady's finesse and touch to the proceedings with some delightful songs. Not to be out done were Mr. K.N. Pandey and S.D. Mishra.

The next item on the programme was the basketball match between the staff and the students. Despite having stalwarts like Mr. Ramesh Kalley, Mr. Sebastian and Fr. Faulstich, the staff came to grief. A great surprise for us was the ease with which the Rector of St. Xavier's Fr. J. B. Thakur scored his baskets. A wonderful, pleasant surprise indeed. Appetites having been worked up all enjoyed the high tea and went home with joy!

Teachers Day was a grand success. This was due to the indefatigable efforts of Fr. George Thana, Varun, Aftab and company Well done.

—Sanjay Narayan 10 A

अंतर्विद्यालयीय संगीत प्रतियोगिता

—राजेश सिंह-१० 'ब'

वर्ष में दो-चार दिन ऐसे आते हैं, जिन्हें संत जेवियर परिवार अपने बन्धु विद्यालयों के साथ गुजारता है। उन कार्यक्रमों के राग-रंग, सफलताएं, खुशियाँ किसी एक विद्यालय के नहीं रह जाते, बल्कि, विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राएँ उन्हें परस्पर सहयोग से बाँट लेते हैं।

१७ सितम्बर की संघ्या संगीत के सुरों और वाद्य-यंत्रों की झंकार से मधुमय हो गयी, संत जेवियर में। प्रतियोगिता के प्रारंभ होने का संदेश फादर स्कारिया ने दिया और साथ ही मुख्यातिथि महोदय का स्वागत भी उन्हीं के उद्-पुष्पों द्वारा हुआ। स्थानीय समाचार-पत्र—'संचलाइट', के संपादक, श्री एस० के० राव मुख्य अतिथि थे उस संघ्या के।

पश्चात् इसके, लाउड-स्पीकर पर श्री सर्वदेव मिश्र की बुलंद आवाज गूजी और मैदान में खचाखच भरी भीड़ घोषणा सुनने को उत्सुकतावश शांत हो गई। घोषणा में साथ दे रहे थे, मधुर-वक्ता, आफताब अहमद। प्रतियोगियों का ताँता साढ़े पाँच बजे से शुरू हुआ और खत्म हुआ ९ बजे रात्रि। इस बीच वरिष्ठ, मध्यम तथा तथा कनिष्ठ वर्गों के बाल एवं युवा कला-कारों ने अपने गायन एवं वादन-प्रतिभा से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस प्रतियोगिता में हर वर्ष से अधिक प्रतियोगी थे। कुल मिलाकर २६ स्कूलों ने भाग लिया। पुरस्कार-वितरण नॉट्रेडम स्कूल की प्राचार्या ने किया।

हमारे विद्यालय का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा। श्री कमल दास के कुशल निर्देशन में हमारे स्कूल के चार छात्र विजयी हुए:—अनिरुद्ध मुखर्जी (भजन), शरत रस्तोगी (तबला), मुकेश अजमेरा (गिटार)

तीनों प्रथम। बाल-कलाकार सुबोजित बोस को कॉन्सोलेशन पुरस्कार मिला।

प्रतियोगिता-कार्यक्रम का समापन छात्र-संघ के अध्यक्ष, वरुण सिन्धु के बन्धु-वाद, जापन के साथ हुआ।

इस प्रतियोगिता के आयोजन तथा विविध मनोरंजन कार्यक्रम में वंदना, झन-तालब तराना के कुशल संचालन का सारा श्रेय कमल दास जी को है।

Mr. Zahidhi

Mr. Zahidhi has been absent from St. Xavier's for nearly two months. He is still seriously sick. All along he has suffered from a very high temperature. The temperature has been due to various complications: typhoid, relapse of typhoid, asthma, etc. Despite intensive treatment including blood transfusions he continues to struggle to recover. His family and he are grateful for the support and prayers that the staff and students of St. Xavier's have extended to him. All are urged to continue to pray earnestly for his complete recovery. May the Lord heal him and send him back to the campus which he loves and wherein he is so loved. The latest news is that the temperature has come down. He is improving. Praise the Lord!

Fancy Dress

Children's Day and Nehru's birth anniversary were kept up with a fancy dress parade. The children and the audience enjoyed themselves for more than two hours. The following were the worthy winners:

- Std. I Rakesh Roshan (Fisherman)
- Std. II Rajiv Saran (Beggar)
- Std. III Manoj Agarwal (Prince)
- Std. IV Sanjay O'Neil Shaw (Servant Girl)
- Std. V Sandip Gupta (Beggar Girl)
- Std. VI Mritunjay Kumar, Amarjit Singh (Old Man & Old Woman)
- Std. VII Biswaranjan Chatterjee (Musician with the Dholak)

Home of the Brave

Those were the days (October 13 to 16) of pride and glory for all of us at St. Xavier's when our students successfully staged Arthur Laurents' HOME OF THE BRAVE, a three-act play. We owe our success to the competent direction of Gedric M. Kenny, S.J.

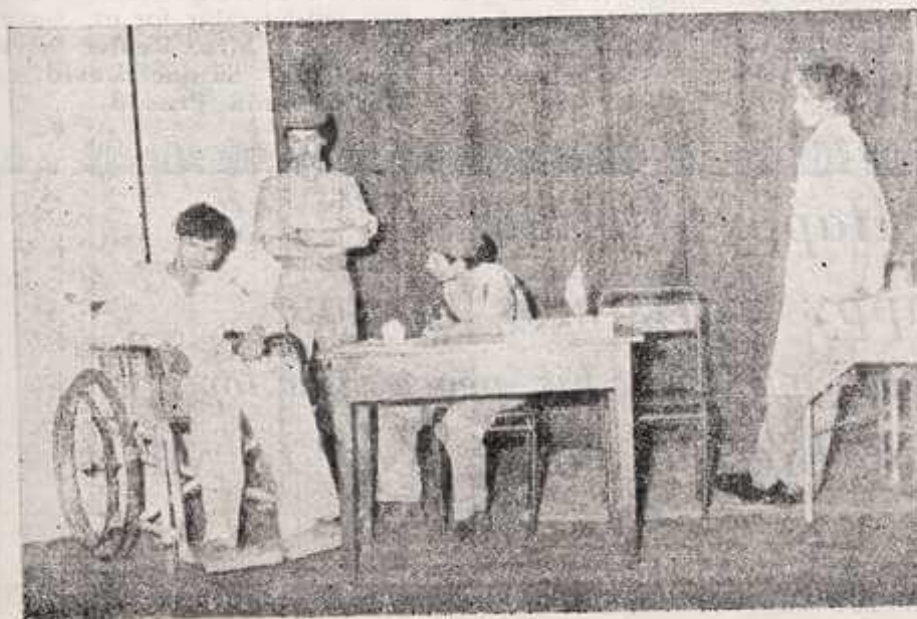
Set in the matrix of anti-semitism or racial intolerance, the play was found to be intensely gripping in presentation and its treatment deeply psychological. The skein of the plot is woven around a tough Jewish Marine. While on a mission on a Pacific island during world War II he retreats in to paralysing psychoneurosis which is climaxed with the death of his close friend and buddy. The doctor with the aid of narco-synthesis, a drug, and psychotherapy evokes a number of poignant flashback scenes which brings the case-history to a crescendo and lends dramatic suspense and excitement to the play.

The newspapers, in their reviews, commended highly the nuances of human feelings and the depth of emotions the **dramatis personae** were able to evoke on an almost professional level. **Varun Sinchu Kulkaumudi** who played the lead role as **Coney**,



(Jewish Marine), did a magnificent job. His emergence from his psychosomatic illness was an experience of **catharsis** experienced by the audience as they emerged from indifference to pity to pathos. As a psychiatrist, **Capt. Bitterger**, **Sanjay Narayan Khanna**, was excellent. His presentation of tenderness and the no-fooling-around firmness were a perfect

blend (of the medical profession) as he helped **Coney** realise and overcome his complexes. **Finch**, tortured by the Japs and in the throes of excruciating anguish and pain, played by **Prashant** kept the audience gripped and edged on their seats. Bloody and gasping he evoked many an empathetic gasp from the audience as he brought the play to a climax. **TJ** was a character to be reckoned with, and **Rajiv Ranjan Prasad** played the role most convincingly. His bursts of ill-temper accelerated the tempo of the play. Personal relations was a term he had never heard of. His resentment and anger for the Army had influenced and colored all his actions as well as his razor-edged tongue. Projecting diffidence and insecurity behind the mask of a Mr. know-it-all indeed delicate and difficult, and **Rai Madhurendra's** efforts in presenting **Major Robinson**, a tough officer with feet of clay, was superb. And there was a **Mingo**. The flamboyant **Mingo** who won the hearts of all by his quick wit and oozing Don



Contd. Page 4 col. 3

Xavier's welcome Sir Edmund Hilary

(Contd from page 1)

eyes. Here was a real giant of a man exuding confidence, strength, adventure, love for life and man. Teachers vied with each other in order to be snapped with the hero. He was greeted by Fr. Scaria and Garlanded by Ashish Mukherjee.

In his address to the school Sir Edmund urged each and everyone to get away from the crowded cities from time to time. He reminded his listeners that there were vast stretches of unexplored, virgin land in our country. He asked the youth to meet the challenges of life in the spirit of adventure. Not having been satisfied in his own life by just repeating what others had done he enthusiastically prodded us to be energetic, to set out on our own, to adventure.

After the address and thanksgiving by Varun Sindhu, Sir Edmund and his team were whisked away to the office by Fr. George. There he signed the visitor's book and as he did so he received a big surprise. The last person to have signed the book was Tenzing Norkay. Truly is it a small world.

The school cannot thank Sir Edmund enough for the time he gave them to come to know him better as also for his inspiring words on the spirit and need for adventure.

— Anup Pathak 10

BOOK-STORE BOOKS AVAILABLE

The St. Xavier's book store will be open from Tuesday Dec. 20th until Friday Dec. 23rd inclusive, i.e. on Dec 20th, 21st, 22nd & 23rd. Boys who buy books will be entitled to a 3% discount on all purchases over Rs. 20. Moreover, for each book bought at St. Xavier book label will be given free of cost. Avail yourself of this opportunity.



Feast of St. Francis Xavier

December 3rd., the feast of St. Francis Xavier, is the school's feast day. The day began with worshipping, praising and thanking the Lord for all his goodness to us. This year 11 students made their First Holy Communion at the morning Eucharistic Service. After the prayer service the students and the parents had breakfast with the teachers. In the evening the whole staff gathered together for a high tea in the Fathers's recreation room. Later on there was another party for the workers of the school and house.

(Contd from page 3)

Juan charm, and he was none other than **Rajiv Ranjan Srivastava**.

The play was indeed aesthetically 'outstanding' as some critics pointed out. Fame is gotten at the expense of hard labour, and it cannot be denied that the cast worked extremely hard at the expense of great personal sacrifice. For them it was more than just staging a play, it was an experience. As they struggled to master their scripts and painfully done on the socks of the characters they came to realise with greater insight the idiosyncrasies that make them. The more they understood themselves the deeper was their personal awareness and the better was their projection of the characters. They learnt to nurture values such as teamwork, punctuality, concern and dedication. Their positive response to these values have matured them into men with a vision for a happy future. St. Xavier's takes pride in wishing them well.

And this is no postscript. The assistance received from our teaching staff was very exemplary. Their inspiration, guidance, and off-stage manual work made the play a reality. While thanking each of the members of the staff for their timely contribution towards the play we make special mention of the nucleus who worked indefatigably for its success. They are: **Mrs. Rekha Srivastava, Mr. Samuel David and Mr. Shyama Prasad.**

Happy Holidays

A Happy Christmas to you

May Jesus fill you with his peace and love,

A Happy & Blessed New Year to you

May God Bless you.

SENIOR ENGLISH ELOCUTION CONTEST

Despite unavoidable postponements, the senior English contest (classes V-X) was held on September 1st. The contestants were divided into three groups: juniors (V-VI), inters (VII-VIII) and seniors (IX-X). The theatre hall began to fill up at 6.45 p.m. Just a few parents turned up. The audience admired the beautiful background scene of the school. It was a fitting backdrop for St. Xavier students. The contest began on the dot of 8.00 p.m. It was good to see that the judges had taken up different advantage points.

The juniors were the day's best fare. Abhas K. Jha (5 B) was the well deserving winner. In the inters group Partha Ray and Nilanjan Chatterjee, both of VIII B, jointly shared the honours for the first place. The seniors were slightly disappointing as some got stage nerves and forgot their pieces. In fact this probably cost one of them the first place for the judges were impressed by the portion which he had recited. Sunil Agarwal thrilled his admirers by coming first, and Varun Sindhu, the hero of many a past elocution contest, had to be content with the second place. The evening ended with a well deserving cool drink for the judges from St. Michael's, Notre Dame St. Joseph's - a small reward for cool accurate judgements.

Murphy Memorial

This year the Murphy Elocution Memorial Contest was held in Bettiah in St. Theresa's. There were 13 contestants from Patna. The schools which took part from Patna were: St. Joseph's, Notre Dame, Hartmann School, Carmel High School, St. Xavier's and two youngsters from Maner. Representing St. Xavier's were: Sunil Agarwal (X) who bagged a second prize, Pankaj Kumar (VIB) who very nearly won the first prize but had to be satisfied with the second, Atul Pandey (VIII) who brought down the house with laughter and Kanchan (VII A).

Debates

Rotary Club Inter-School Debates: Congratulations to Sanjiv Sinha and Agit Agarwal for winning this year's championship. The contest was held at the show piece Mauraya-Clarks Hotel. Sanjiv Sinha was declared the best speaker of the evening and Agit Agarwal placed third. They found it difficult to carry the huge shield themselves so they requested the help of Fr. George Thana.

Club Debate: Suraj Kumar and Punit Krishna represented the school. They, however, could not prevail over last year's champs, namely St. Joseph's Convent. Congratulations to the girls for their triumph and better luck to the Xaverians for the coming year.

Inter-Mural Debate: The debates were not of a very high standard. Leopards were unanimously judged to be the winners. Panthers were then runners up. Lions came third, with Tigers placing last and resolving to do better next time. Varun Sindhu and Agit Agarwal were adjudged to be the best speakers.

Four-Cornered Debate: This year's four-cornered debate was held at St. Michael's School. Sanjiv Sinha, Suraj Kumar, Agit Agarwal and Punit Krishna were sent from St. Xavier's. They did pretty well. The number of visitors in the audience was very poor making one suspect that St. Joseph's, the original organisers, have a greater crowd pulling appeal.

—Varun Sindhu 10 B



Matters of Interest

• In October Fr. Scaria attended a three weeks administrative seminar organised by the Jesuit Educational Association. He intends sharing some of his experiences with the school in time to come.

• There were more than 800 applications for the 80 seats available in Class 1. While congratulating and welcoming those that will be admitted we extend our sympathies to the parents and boys who failed to make it. This time applications from Patna City and Dinapur areas were not accepted. The reason for this is to make St. Xavier's more and more a neighbourhood school.

• Mr. S.C. Mittal of the Bank of India gave an interesting talk to the students of the 9th class as to how the bank could help them.

• The senior students after appearing for their sent up examinations attended days of motivation conducted by Fr. George Peter. They were split into two groups and put in two days each of intensive work. This workshop proved enlightening and profitable. The students came to know themselves

better as also some of their capabilities. There were discussions and games of learning on various topics: prayers, ideals, poverty, service to the country, etc.

• Provision was also made for the teachers to benefit from the expertise of Frs. Joe Puraiyadam and George Peter. They want more such days!

• The junior library has begun to function. Donations of books and magazines are always welcome. You help others and others will help you.

• Fr. George Thana very smoothly and calmly attended to all school business in the absence of Fr. Scaria. He was greatly helped by Fr. Mani Poovakott, who did much of the vice-principal's work, and by the other members of the staff.

• The school has made a generous contribution to the needs of their brothers and sisters in the cyclone hit states of the south. Mr. Shyam Lal needs to be congratulated for the posters he prepared. They touched the hearts of very many.

Inter School Table Tennis Tournament Mountfort Cup

Loyola High School, Patna took the initiative and began an Inter School T. T. Tournament. Mr. Sebastian informed the St. Xavier boys about the tournament which commenced on October 5th at Loyola School, Kurji. Quite a few wanted to take part in the tournament as representatives of the school. After a keen elimination contest the following were selected to represent the school :

Pradeep Saraf (capt), Sudhir Saraf (vice-capt.), Ratan Sarf, Prakash, Hemant Bahri, Sanjay Krishna, Sunil Agarwal, Sanjay Ram, and Uday Shankar.

Five schools participated in the tournament: Loyola, St. Michael's R. M. R. Seminary Patna High School and St. Xavier's. The matches were played at Loyola High School and started at 2:30 p. m.

All the enteries from St Xavier's made it to the second round. Four of our stalwarts entered the doubles semi-finals. In fact they clashed for a place in the finals. The Saraf brothers Pradeep and Ratan overcame the challenge of Hemant Bahri and Prakash. In the final they came up against Dilip Gandhi and Anwar Prasad. The RMRS boys were the winners and Pradeep and Sudhir had to be content with being the runners up.

In the singles too it happened that one of the semi-finals was an all St. Xavier's affair. Sudhir had to meet his brother Pradeep. Playing very coolly and impressively Sudhir entered the finals. The finals were played on September 17th in the presence of Mr. S. S. Das. In a keenly contested match Sudhir Saraf was defeated by the experienced Dilip Gandhi (RMRS). The result was 21-18, 21-16, 18-21, 21-15.

School Tournament: In the school tournament Pradeep emerged victorious. He defeated his brother Ratan in the final.

—Sudhir Saraf 8 A
and Hemant Bahri 8 A

Basketball Snippets:

St. Xavier's Win : St. Xavier's won the Patna District Inter School Basketball Tournament defeating St. Michael's in the final 42-21. Thus they became the proud possessors of the shield presented by Mohit's Father, Mr. B. M. Ahluwalia.

Bihar State Junior Basketball Tournament: In the tournament held at Jamshedpur St. Xavier's won one match and lost two. They were handicapped by injuries. Three of the players were invited to the coaching camp: Braj Kishore, Mohit Ahluwalia, and Navin Chandra.

—Somnath Sen 7 B

St. Xavier's defeated the ex-alumni 36-21.

Cricket News :

• Nothing as exciting as the Packer matches or the India Australia Tests all the same the season has begun with some very good news. Abhinash Kumar, Faiz Karim and Sanjay Choudhary were selected for the Patna District School's team.

* Abhihash went one better when he was selected to play for the Bihar State School's Team in the Cooch Behar Inter-School Tournament.

* Facile Victory : Class V of St. Xavier's easily defeated Class V of Christ Church by 172 runs. A feature of the match was the unbeaten century, 104 not out, by little Sabas Karim. It seems that he will one day be emulating and outdoing his older brother. The final scores were: St. Xavier's 204 for 5 decl. and Christ Church 32 all out.

Another Bedi
In the
Making !
Abhinash Kumar
Has Been Selected
To Represent
East Zone's
School Team
Congratulations
Abhinash



Wrong Hand Sir !

Navin is the Handball Champ
In the long awaited handball final Navin Chandra overcame the keen opposition of Surendra Prasad to emerge as this year's handball champ. He won by three games to one. It was a fast thrilling game. Sudhakar Sahay was third.

Thank You

• A special word of thanks to Varun Sindhu, President Students Council, for helping to bring out this edition of Xavier Life. Thank you Varun.

Inter School Quiz Competition

On October 25th a bus load of students from the senior class went to St. Michael's for the Quiz Contest. Four schools participated in the contest: Notre Dame Academy, Carmel High School, St. Michael's and St. Xavier's. St. Xavier's School was represented by Syed Jawaid Haider, Golam Shahid, Anand Bhadur, and Shashank Priya. The contest was dominated by the students who were comfortable winners in the end. St. Xavier's secured the second place but were a good 30 points behind the Michael's. Congratulations to the Michael's and well done St. Xavier's. However, as the St. Michael's boys are G. K. seriously the St. Xavier's need to do so too. True there are G. K. Classes. May be what is

Xavier Life



Vol. 27 No. 2 ST. XAVIER'S PATNA Dec. 8, 1978

needed is more organisation and interest. It would also be useful to introduce it as a subject which carries marks. There could also be inter-class, intra-class, and inter-house quiz competitions.

Music Festival at Xavier's

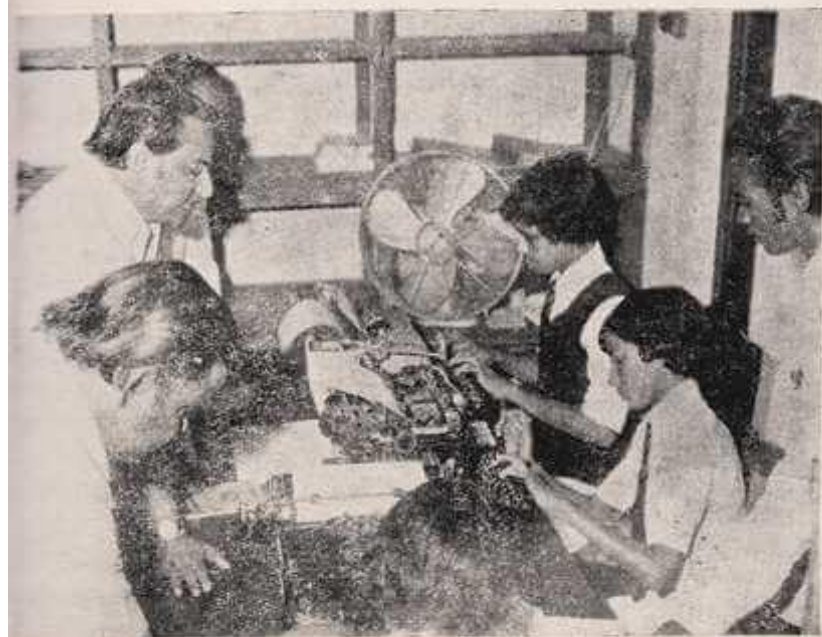
On Sept. 16th 20 schools took part in the "Fourth All Patna Schools Music Festival." Mr. S. L. Khanna was the chief guest, and Mrs. Khanna gave away the prizes. Mr. Khanna commended the boys and teachers for their performance. He was happy at the encouragement given to the students by the various schools.

There was many an excellent performance in each division. The competition was keen and the judges were hard pressed to come up with the winners. Despite this all were pleased with the results announced. To the credit of Mr Kamal Das and the students of St. Xavier's our boys did very well. Swetotpal bagged the first prize in the classical song group. Anirudh Mukherjee did equally well in the senior division. Prasoon Kumar and Rastogi romped away with the first places in the guitar and tabla groups.

Given the high standard of performance and the richness of talent displayed by the boys and the girls from the various schools Patna can look forward to some excellent music in the years to come. The town could do with more such cultural shows.

Syed Jawaid Haider XB

XPTA Launches Career Course



Fr. George Thana, S. J. (cut), Mr. S. K. Ashraf, President XPTA, Mr. Sukhdev Chandra, Mr. Samuel David, Sanjeev Kumar, and Prakash Rukhaiyar at the inauguration of the Typing Classes which began in November this year.

Editorials

St. Xavier's & Social Service

Social service is the service rendered to man by his fellow human beings. It is essential that the seeds of social service be planted and nourished in and during student life itself, *the child being "the father of man"*. Our school provides opportunities and encourages us to come to the aid of our brothers and sisters and to help in their total human development.

Xaverians have done yeomen's service in social work in the past. The present Xaverians are urged to emulate their seniors and to fulfil their school motto, "For God and Country" by coming to the help of others. Although many boys have shown considerable zeal, not all is rosy. The reason for this is twofold. First, generally those take an active interest who are already engaged in other extra-curricular activities of the school. Secondly, quite a few of the projects, though initially taken up with great zest, are left unfinished.

The nature of the school's social service activities changes from time to time. At present there are two main projects going on within and beyond the school. Within the school, there is the Shoe-Shine Department. It serves a twofold purpose. It sees that the shoes of individuals are polished and shining. In the process it collects funds for the services they provide. The money they collect is contributed to the welfare of the poor and the needy. More noteworthy is the project undertaken by the Interact Club. They moved into part of our neighbourhood and let people know that St. Xavier's was willing to admit even very poor students from the neighbourhood. The response was quite good. Coaching classes were arranged for these toddlers. At the end of the coaching an exam was administered to them and 30 students were chosen

for next year's First Class. But it is sad to note that the Interactors were not very active in the second phase of this programme and could have done much more to help out in the after-school coaching.

The Interactors also collect magazines for hospitals and run film shows as a means for collecting funds for the poor, flood victims, etc. However, film shows are not the best means for us to demonstrate our love and concern for our brothers and sisters. For in the name of charity we have, and look for, our own entertainment.

It is hoped that the Social Service League and the Red Cross Society will be fully revived and come alive in 1979.

A great service is rendered by arousing social awareness among all those with whom we come into contact. We can speak out against corrupt practices and injustice. We can discourage and oppose it. More than that, we can let our deeds speak for us by pledging that we will not harm our brother and sister, that we are concerned about their welfare and their inalienable rights. In our own lives, in the work we do, and the service we seek from others, we can make sure that no injustice is done or evil practice condoned or encouraged.

Our main concern ought not to be doing but loving. Again let's not wait for great demands to be made or great things to happen. Let's rather do small things in a great way, namely, with love and generosity. A holy person says that even the lifting of a broomstick could be great if it is done with love. *Let us then serve with love by asking not what the school and society can do for us but what we can do for the school and society, for our brothers and sisters.*

Sanjay Bose X B

हमें ऑक्सीजन चाहिये !

छात्र-वर्ग का अनुशासन शिक्षकों के अनुशासन पर किला बनकर खड़ा है। जिस दिन किले का आधार धरती के अन्दर गिरा किला भस जायगा। और तब रह जायेंगे खंडहर। इस खंडहर को जब कोई देखे तब वह उसे 'भूतहा-महल' कहकर डर भागेगा। आधार की एक ईंट भी खिसक कि किला भंसा।

यह ईंट शिक्षक का प्रतीक है। वे ही, विद्यालय किसी देश के निर्माण और विकास के प्रथम सोपान का काम करता है शिक्षक के आत्म-त्याग और अनुशासन ही किसी देश का भव्य महल बन कर खड़ा होता है।

इसीलिये प्रत्येक ईंट को मजबूत बना है। केवल तभी उसपर खड़ा आलीशान महल अपनी छत के नीचे खड़े रहने वाले को सुरक्षा के प्रति आश्वस्त कर सकेगा सुरक्षा का सवाल अपने समय का आज का बड़ा सवाल बना हुआ है। पूरा का- पूरा छात्र-वर्ग अपने को अरक्षित महसूस कर रहे हैं भविष्य के प्रति शंका लु है। छात्रों के अरक्षित रहते हुए देश फिर सुरक्षित रह सकता है ?

शिक्षक को अनुशासन के प्रति छात्रों भी अधिक सतर्क रहना पड़ेगा। एक खराब होता है तो पुर्जा खराब होता मगर जब एक शिक्षक ढीला पड़ता है, मशीन खराब हो जाती है।

भीतरी अनुशासन और बाहरी प्रकीर्ण से कभी बहुत मशहूर रहे विद्यालय में, इधर एक हवा चली है धीरे-धीरे बवंडर का रूप लेती जा रही दुर्भाग्य यह है कि उस हवा में जीवन ऑक्सीजन नहीं है, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड की मात्रा अधिक है। सबका दम घुटने लगा समुचित विकास और प्राण-रक्षा के छात्रों को फिर शुद्ध ऑक्सीजन चाहिए।

इन कार्बनडाइऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड गैसों का वातावरण में इस फैल जाना शिक्षकों के "एक्सपेरिमेंट" में थोड़ी भूल के कारण हुई है। उस मस्तिष्क में यह बात नहीं आ पायी

(Contd. on Page 3)

मासुली-सी असावधानी 'एक्सपेरिमेंट' परिणामों को इस भयंकर रूप में सामने लाती है।

उन्हीं भी काफी समय है। 'एक्सपेरिमेंट' को अक्षर कर अपेक्षित परिणामों को हासिल कर सकता है और शुद्ध ऑक्सीजन को प्रयोग के संरक्षण और विकास के लिए प्रयोग कराया जा सकता है। नहीं तो, प्रयोग नडायकसाइड और हाइड्रोजन प्रयोग के विषाक्त दबाव में सबको घुट-घुट कर मर जाना पड़ेगा।

—अजय सिंह
दशम 'ब'

Letters to the Editor

महोदय,
जेवियर लाईफ,

हमने आपका संपादकीय पढ़ा। काफी अच्छे-बुरे करने पर मैं इस सीमा तक कहूँ कि आपकी वार्ता शत-प्रतिशत सही है। मगर मैं यह कहना चाहूँगा कि पहले संत जेवियर के विद्यार्थी बहुत रुचि लेते थे। परन्तु अब हमारे पास पूरे साधन हैं। हम भी विद्यार्थी रुचि नहीं लेते जो कि हमारे लिए बड़ी दुख की बात साबित हो रही है। जिस प्रकार आज हमें अभ्यास के लिए आना है मगर आधे से अधिक विद्यार्थी नहीं आते और जो आते भी तो हँसी-मजाक के मन्त्र गँवा देते। विद्यार्थी तो गलती करते हैं मगर शिक्षकों की भी इसमें गलती है। विद्यार्थियों के संग कड़ाई नहीं बरतते। शिक्षक को किसी विद्यार्थी से अधिक अन्यायी होती वह विद्यार्थी घमण्डी हो जाते हैं। इसलिए शिक्षक को सभी विद्यार्थियों के साथ समानता बरतनी होगी। यह भी देखा जाता है कि जो विद्यार्थी कुछ माहिर हो जाते तो उनमें घमण्डी की भावना जाग उठती जो उन्हें बरबाद कर देती। इस कारण कुछ ऐसे कठिनाइयाँ हैं जो कि हमारे सामने आ पहुँची है और इसे सिर्फ विद्यार्थी ही दूर कर सकते हैं।

राजेश जेम्स
१० "ब"

महोदय,

इस बार विद्यालय पत्रिका में आपका संपादकीय लेख मैंने पढ़ा। उस लेख में आपने विद्यालय के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के बारे में अपने कुछ सुझाव दिए थे। आपका कथन कुछ हद तक सही था कि खिलाड़ियों को विद्यालय से उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता है। फिर भी आपने इस लेख में काफी भूलें की हैं। सबसे पहले हम क्रिकेट को देखें। हमारे विद्यालय में अंतर्दलीय मैचों के अलावा भी कक्षाओं के बीच भी मैच का आयोजन किया जाता है। कभी-कभी किसी प्रशिक्षक को भी आमंत्रित किया जाता है। यही बात वास्केटबॉल में और कुछ हद तक टेबिल टेनिस में भी लागू होती है। बाकी खेलों में आपने हॉकी, फुटबॉल और लॉन-टेनिस का नाम लिया है। पर आपको यह ध्यान में रखना होगा कि लॉन-टेनिस और हॉकी तो विद्यालय में दिखाई भी नहीं देती और फुटबॉल और बैडमिंटन तो इसी साल शुरू किए गए हैं। अभी से ही आप उज्ज्वल परिणाम की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हाँ यह सही है कि हमें कुछ प्रशिक्षक भी बुलाने होंगे। आपका यह लेख भ्रामक चित्र प्रस्तुत करता है।

आपका,
उज्ज्वल।

संपादक 'जेवियर लाईफ,'

हमने आपका संपादकीय पढ़ा। आपने जो कुछ भी लिखा है वह करीब-करीब ठीक ही है। परन्तु पूर्णतया नहीं। क्रिकेट के बारे में आपने लिखा है कि हमारा स्कूल काफी अच्छा कर रहा है। मैं कहूँगा काफी अच्छा तो नहीं, हाँ 'कुछ' अच्छा जरूर हुआ है। परन्तु और सुधार लाना आवश्यक है। आपने लिखा है कि केवल उन्हीं लड़कों को प्रोत्साहन दिया जाता है जो कुछ खेलते हैं। तो मैं कहूँगा क्या सभी लड़के खेल में रुचि लेते हैं। दस में केवल चार लड़के ही ऐसे होंगे जो रुचि लेते हों। जहाँ तक मैं सोचता हूँ कि आपकी भी रुचि खेल-कूद में न होगी। केवल चयन के समय हाथ में बल्ला पकड़ लेने से आप भारत के भावी खिलाड़ी नहीं बन सकते। इसके लिए आपको घर पर ही अभ्यास करनी चाहिए। तभी चयन सम्भव है। विद्यालय में केवल अभ्यास ही कराया जाय तो शायद एक वर्ष में जो दो-तीन महीने क्रिकेट खेले जाते हैं उतने समय में क्रिकेट की पूरी टीम भी न बन पायेगी।

बास्केट बॉल के बारे में आपने लिखा है कि हमारा स्कूल बहुत पिछड़ा हुआ है। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने बास्केट बॉल के लिए खेले गए सारे मैचों को ध्यान में रखते हुए लिखा या केवल ऐसे ही? खैर उसे भी एक बार आपके द्वारा देख लेना चाहिए। हाँ, तो हमारे स्कूल की बास्केट बॉल टीम अच्छी तो नहीं है परन्तु पटने के और सभी टीमों से (कुछ को छोड़ कर) कहीं अच्छी है। मैं सोचता हूँ आगे से आप इन बातों पर ध्यान देंगे।

सैयद अरसद मोकिम
दशम "ब"

आदरणीय महाशय (खेल जगत)

हमारा देश खेल जगत में काफी पिछड़ा है। दल में केवल पुराने खिलाड़ी हैं। हमारे नये खिलाड़ियों को अपनी कला दिखाने का अवसर नहीं मिलता है। हमारे विद्यालय का भी यही हाल है। केवल दल के पुराने खिलाड़ियों को ही खेलने का अवसर दिया जाता है। हमारा विद्यालय इसी कारण काफी पिछड़ा है। जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी अत्यावश्यक है। केवल अध्ययन के क्षेत्र में लोग आगे नहीं बढ़ सकते हैं। खेल का महत्व पढ़ाई से ज्यादा है। हमारे विद्यालय में खेल-कूद की उचित व्यवस्था नहीं। सभी लड़कों के साथ उचित न्याय नहीं होता है। हर प्रकार के खेल में हमारा विद्यालय पीछे हैं। खेल के बाद पढ़ने में मन नहीं लगता है। इसीलिये लड़कों को अंतिम घंटी में खेलने का अवसर देना चाहिए। एक लड़का सब खेल नहीं खेल सकता है अतः सबको किन्हीं दो खेलों में भाग लेना चाहिए। मैनव जीवन में खेल-कूद का अधिक महत्त्व है। वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में भी लड़कों को उचित अवसर नहीं मिलता है। एक ही लड़का अनेक प्रतियोगिता में भाग लेकर पुरस्कृत होता है। यह सरासर अन्याय है। अतः इस पर रोक लगाना चाहिए कि प्रत्येक लड़का दो या तीन प्रतियोगिता में भाग लें। इस प्रतियोगिता के अध्यक्ष लड़कों के साथ बेईमानी करते हैं। इन पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। कहा जाता है परिश्रम का फल मीठा होता है लेकिन यहाँ तो उल्टी गंगा बहती है।

एक प्रार्थी
राशीद अहमद

(Contd. from Page 2)

क मायूली-सी असावधानी 'एक्सपेरिमेंट' रेणुओं को इस भयंकर रूप में सामने लाती।

अभी भी काफी समय है। 'एक्सपेरिमेंट' धार कर अपेक्षित परिणामों को हासिल जा सकता है और शुद्ध ऑक्सीजन को के संरक्षण और विकास के लिए तैयार कराया जा सकता है। नहीं तो, कार्बनडाइऑक्साइड और हाइड्रोजन गैस के विपाक्त दबाव में सबको घुट-घुट कर मर जाना पड़ेगा।

—अजय सिंह
दशम 'ब'

Letters to the Editor

संपादक महोदय,
जेवियर लाईफ,

हमने आपका संपादकीय पढ़ा। काफी अच्छे-बुरे करने पर मैं इस सीमा तक कहूँ कि आपकी वार्ता शत-प्रतिशत सही है। मगर मैं यह कहना चाहूँगा कि पहले संत जेवियर के विद्यार्थी बहुत रुचि लेते थे। लेकिन कूद में, मगर अब हमारे पास पूरे साधन हैं। हमारे लिए बड़ी दुख की बात साबित हो रही है। जिस प्रकार आज हमें अभ्यास के लिए आना है मगर आधे से अधिक विद्यार्थी आते आते और जो आते भी तो हँसी-मजाक के समय गँवा देते। विद्यार्थी तो गलती करने ही मगर शिक्षकों की भी इसमें गलती है। वे विद्यार्थियों के संग कड़ाई नहीं बरतते। शिक्षक को किसी विद्यार्थी से अधिक सख्त नहीं होती वह विद्यार्थी घमण्डी हो जाते हैं। इसलिए शिक्षक को सभी विद्यार्थियों के समान नमानना बरतनी होगी। यह भी देखा जाता है कि जो विद्यार्थी कुछ माहिर हो जाते तो उनमें घमण्डी की भावना जाग उठती जो उन्हें बरवाद कर देती। इस प्रकार कुछ ऐसे कठिनाइयाँ हैं जो कि हमारे सामने आ पहुँची है और इसे सिर्फ विद्यार्थी ही दूर कर सकते हैं।

राजेश जेम्स
१० "ब"

Letters to the Editor

महोदय,

इस बार विद्यालय पत्रिका में आपका संपादकीय लेख मैंने पढ़ा। उस लेख में आपने विद्यालय के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के बारे में अपने कुछ सुझाव दिए थे। आपका कथन कुछ हद तक सही था कि खिलाड़ियों को विद्यालय से उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता है। फिर भी आपने इस लेख में काफी भूलों की हैं। सबसे पहले हम क्रिकेट को देखें। हमारे विद्यालय में अंतर्दलीय मैचों के अलावा भी कक्षाओं के बीच भी मैच का आयोजन किया जाता है। कभी-कभी किसी प्रशिक्षक को भी आमंत्रित किया जाता है। यही बात बास्केटबॉल में और कुछ हद तक टेबिल टेनिस में भी लागू होती है। बाकी खेलों में आपने हॉकी, फुटबॉल और लॉन-टेनिस का नाम लिया है। पर आपको यह ध्यान में रखना होगा कि लॉन-टेनिस और हॉकी तो विद्यालय में दिखाई भी नहीं देती और फुटबॉल और बैडमिंटन तो इसी साल शुरू किए गए हैं। अभी से ही आप उज्ज्वल परिणाम की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हाँ यह सही है कि हमें कुछ प्रशिक्षक भी बुलाने होंगे। आपका यह लेख भ्रामक चित्र प्रस्तुत करता है।

आपका,
उज्ज्वल।

संपादक 'जेवियर लाईफ,'

हमने आपका संपादकीय पढ़ा। आपने जो कुछ भी लिखा है वह करीब-करीब ठीक ही है। परन्तु पूर्णतया नहीं। क्रिकेट के बारे में आपने लिखा है कि हमारा स्कूल काफी अच्छा कर रहा है। मैं कहूँगा काफी अच्छा तो नहीं, हाँ 'कुछ' अच्छा जरूर हुआ है। परन्तु और सुधार लाना आवश्यक है। आपने लिखा है कि केवल उन्हीं लड़कों को प्रोत्साहन दिया जाता है जो कुछ खेलते हैं। तो मैं कहूँगा क्या सभी लड़के खेल में रुचि लेते हैं। दर में केवल चार लड़के ही ऐसे होंगे जो रुचि लेते हों। जहाँ तक मैं सोचता हूँ कि आपकी भी रुचि खेल-कूद में न होगी। केवल चयन के समय हाथ में बल्ला पकड़ लेने से आप भारत के भावी खिलाड़ी नहीं बन सकते। इसके लिए आपको घर पर ही अभ्यास करनी चाहिए। तभी चयन सम्भव है। विद्यालय में केवल अभ्यास ही कराया जाय तो शायद एक वर्ष में जो दो-तीन महीने क्रिकेट खेले जाते हैं उतने समय में क्रिकेट की पूरी टीम भी न बन पायेगी।

बॉस्केट बॉल के बारे में आपने लिखा है कि हमारा स्कूल बहुत पिछड़ा हुआ है। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने बॉस्केट बॉल के लिए खेले गए सारे मैचों को ध्यान में रखते हुए लिखा या केवल ऐसे ही? खैर उसे भी एक बार आपके द्वारा देख लेना चाहिए। हाँ, तो हमारे स्कूल की बॉस्केट बॉल टीम अच्छी तो नहीं है परन्तु पटने के और सभी टीमों से (कुछ को छोड़ कर) कहीं अच्छी है। मैं सोचता हूँ आगे से आप इन बातों पर ध्यान देंगे।

सैयद अरसद मोकिम
दशम "ब"

आदरणीय महाशय (खेल जगत)

हमारा देश खेल जगत में काफी पिछड़ा है। दल में केवल पुराने खिलाड़ी हैं। हमारे नये खिलाड़ियों को अपनी कला दिखाने का अवसर नहीं मिलता है। हमारे विद्यालय का भी यही हाल है। केवल दल के पुराने खिलाड़ियों को ही खेलने का अवसर दिया जाता है। हमारा विद्यालय इसी कारण काफी पिछड़ा है। जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी अत्यावश्यक है। केवल अध्ययन के क्षेत्र में लोग आगे नहीं बढ़ सकते हैं। खेल का महत्व पढ़ाई से ज्यादा है। हमारे विद्यालय में खेल-कूद की उचित व्यवस्था नहीं। सभी लड़कों के साथ उचित न्याय नहीं होता है। हर प्रकार के खेल में हमारा विद्यालय पीछे हैं। खेल के बाद पढ़ने में मन नहीं लगता है। इसीलिये लड़कों को अंतिम घंटी में खेलने का अवसर देना चाहिए। एक लड़का सब खेल नहीं खेल सकता है अतः सबको किन्हीं दो खेलों में भाग लेना चाहिए। मानव जीवन में खेल-कूद का अधिक महत्त्व है। वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में भी लड़कों को उचित अवसर नहीं मिलता है। एक ही लड़का अनेक प्रतियोगिता में भाग लेकर पुरस्कृत होता है। यह सरासर अन्याय है। अतः इस पर रोक लगाना चाहिए कि प्रत्येक लड़का दो या तीन प्रतियोगिता में भाग लें। इस प्रतियोगिता के अध्यक्ष लड़कों के साथ वैरमानी करते हैं। इन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। कहा जाता है परिश्रम का फल मीठा होता है लेकिन यहाँ तो उल्टी गंगा बहती है।

एक प्रार्थी
राशीद अहमद

Intra Mural Music Contest

The parents, teachers and students were entertained to some enjoyable and delectable music on the afternoon of Sept. 9th. To see and experience the varied and rich talent of the boys was an experience in itself. Even those who performed for the first time displayed great and rich talent. The juniors sang very well indeed. There should be some great musicians emerging from their ranks in the near future. The standard and performance of the inters and the seniors was more varied. In the instrumental division, Praseon Kumar excelled on the guitar. Jawaid Haider concluded the programme with a vote of thanks to all and special commendation to the music teacher, Mr. Kamal Das, for all his hard work and encouragement given to the boys.

Vocal (Juniors)

1. Subhojit Bose III B
2. Swetotpal Das Gupta IV A
3. Dinesh P. N. Pathak IV A

Instrumental (Tabla) (Juniors)

1. Swetotpal Das Gupta IV A
2. Manoj K. Chowdhury III B
3. Manish K. Jaiswal I A

Vocal (Inters)

1. Kumar Rajoy Sinha VI A
2. Rabindra K. Pandey V B
3. Sandeep Gupta VI B

Instrumental (Inters)

1. Indranil Chatterjee V B (Tabla)
2. Sanjay Mehrotra VI B (")
3. Fredrick Antony VI B (Banjo)

(Seniors) Vocal

1. None
2. Bishwaranjan Chatterjee X B
2. Somnath Sen VIII B
3. Gyanendra Yadav X B
3. Gyanendra Yadav X B

Instrumental (Seniors)

1. Praseon Kr. IX A (Guitar)
2. Vikram Kesri VIII A (Tabla)
2. Siddharth Sharan X B (Guitar)

3. Sharad Rastogi X A (Tabla)
3. Pankaj Kikani X A (")

Consolation Prizes

- Amitabh Sinha (Guitar)
Nilotpal Das Gupta (Tabla)
by Afaq Ahmed IX B

English Elocution

Juniors

1. Braj Kishore Mishra VI B
2. Sanjiv Shanker VI A
8. Kaushik Talapatra VI A

Inters

1. Abhas Jha VII B
2. Somnath Sen VIII B
3. Kanchan Sinha VIII A

Seniors

1. Shashank Priya IX B
2. Prashant IX A
3. Sanjay Jhun Junwala
by Sanjay Sinha IX A

Teacher's Day

This year Teacher's Day was anticipated to September 1st. Syed Jawaid Haider, the Student Council President, Gynendra Yadav, the Secretary, and their friends spared no effort to see that the day would be a success, and a most successful day it was. At the appointed hour the teachers and the boys gathered together in the school auditorium. Jawaid and Sudhakar Sahay spoke respectively in English and Hindi on the importance of teacher's Day. The speeches were followed by a variety entertainment given by the boys in honour of their teachers. Boys from various classes made their contribution to the success of the day and in the process displayed their wonderful talents. Mention is made of a few of them. Mukesh Ajmera on his guitar thrilled and regaled the audience. This was kept

up with a Bhakti song by Subhojit Bose, Swetotpal Das Gupta's "Saranga Tery Yad Mein," Anirudh Mukerjee's "Kya Karoon Sajani Balam Naa Aaye," Sanjay K. Pandey's parody, the pop music of Arunabh Bose and company, Pankaj Kikani on his Banjo and a host of others. Many considered that Biswaranjan Chatterjee stole the show with his parody of "Twinkle, twinkle Little Star" and "Musafir Moon Yaaron." The boys would have liked to have had some items from their teachers.

After the entertainment in the hall there was a basketball match between the teachers and the students. Younger blood once again triumphed and the teachers went down gamely to the students (39-19). Play at times was a little rough as some were not fully conversant with the rules. However, the match was played in good spirits and the boys enjoyed themselves.

The day was brought to an end with a high tea for the teachers and the Student Council. As a token of gratitude and esteem for the teachers the students presented a small but precious and meaningful gift to each teacher.

Nitai Kapoor XB

Only 1st Divisioners Go To College

The Debating Society conducted an English debate on the topic "Only First Division Matric Passed Students Should Be Admitted to Colleges." Leopards and Tigers defended the proposal and Lions and Panthers were the two teams that opposed the adoption of the resolution. Each team had four members. All did well but for the members of the Tigers Team. The judges and the house felt that those who argued against the resolution did the better job of convincing and rebutting. The final results were:

1. Lions, 2. Panthers, 3. Leopards, 4. Tigers.

Amar Kumar Sinha & Sanjay
Jamuar IX A

माननीय सम्पादक महोदय,

अजय सिंह द्वारा लिखी गयी रचना से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। उन्होंने विद्यालय खेल-कूद का सच्चा चित्र उभारा है। इन्टर हाउस क्रिकेट, फुटबॉल में अनेक खिलाड़ी चुने चुन लिए जाते हैं जो अच्छी तरह खेलना नहीं जानते। इसका कारण यह होता है कि कप्तान या उपकप्तान का वह दोस्त होता है। विद्यालय में केवल जो खिलाड़ी खेलना जानते हैं उन्हीं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सप्ताह में सिर्फ एक घंटी ही गेम्स के लिए दी जाती है। इस घंटी में वे शिक्षक ही अधिक आते हैं जो खेल-कूद के बारे में बहुत ही कम जानते हैं। चार्ली फुटबॉल दे देता है या स्वीमिंग पूल का ताला खोल देता है। उसके बाद छात्र क्या कर रहे हैं इसका ध्यान किसी शिक्षक को नहीं रहता है। जब तक पूर्ण रूप से छात्रों को प्रशिक्षण नहीं दिया जाएगा तबतक वे खेलना कैसे जानेंगे। इस कारण मैं विद्यालय से यह अनुरोध करना चाहता हूँ कि एक खेल-कूद परिपद बनाया जाए जो छात्रों के खेल-कूद के विकास पर ध्यान दें।

आपका
रतन कुमार
अष्टम् 'अ'

कोई भी देश यह नहीं चाहता कि वह हमारे देशों से खेल-कूद में पिछड़ा हुआ रहे। वह हर समय अपने अन्दर बसे हुए खिलाड़ियों को ऊँचा उठाना तथा उन्हें अपना नाम ऊँचा करने के लिए खेल-कूद में भाग लेने के लिए निश्चित करता है। परन्तु अगर वो खिलाड़ी ही अपने अन्दर गुण रखते हुए आगे न बढ़े तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने से कतराए तो यह देश की तथा समाज की गलती नहीं परन्तु यह खुद उनकी अपनी गलती है।

उसी प्रकार एक स्कूल यह कभी नहीं चाहता कि वह खेल-कूद के क्षेत्र में दूसरे स्कूलों से पीछे रहे। हर स्कूल अपने अन्दर के अच्छे-से-अच्छे खिलाड़ियों को मैदान में उतारना चाहता है, परन्तु अगर उस स्कूल के छात्र (खिलाड़ी) जो कि अच्छे हैं अपने आप को सामने प्रकट न करें तो यह उस स्कूल का दोष नहीं बल्कि उन खिलाड़ियों का दोष होगा।

इसी प्रकार हमारे स्कूल में बच्चे जो अच्छा खेलते हैं, विद्यालय में प्रकट ही नहीं होते, वो अपने गुणों को दबाए रखते हैं, तो अगर छात्र ही खेल-कूद में भाग लेना न चाहें तो यह उनका ही दोष है।

हमारे जेवियर लाइफ में यह प्रकाशित हुआ है कि स्कूल खेल-कूद के क्षेत्र में दिलचस्पी नहीं लेता। लेकिन यह बात सरासर गलत है, बच्चे ही खेल-कूद में भाग लेना पसंद नहीं करते।

बैडमिंटन के क्षेत्र में गलती हमारे विद्यालय की है, क्योंकि हमारे स्कूल में कोई ऐसा निश्चित प्रबंध नहीं है कि लड़के यहाँ बैडमिंटन खेल सकें।

इसलिए मेरा यह विचार है कि अगर विद्यालय तथा लड़के दोनों ही खेल-कूद में दिलचस्पी लें तो हमारा स्कूल खेल-कूद के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है, क्योंकि ताली एक हाथ से नहीं दोनों हाथ से बजती है।

आपका सहयोगी
मो० आरिफ

सम्पादक महोदय,

जेवियर लाइफ में सम्पादकीय स्तंभ में आपका लेख पढ़ा। आपके इस कथन से मैं सहमत हूँ कि "हमारे विद्यालय में सब कुछ होते हुए भी उचित निर्देशन और प्रोत्साहन के अभाव में हम कुछ नहीं कर पाते।"

क्रिकेट में तो हमारा विद्यालय इस समय काफी ठीक कर रहा है। पर अब यह देखा जाये कि यह भविष्य में कैसी बनी रहेगी। यह बात ठीक है कि प्रत्येक क्लास को रोज एक घंटी गेम्स के लिए होनी चाहिए। पर यह सुविधा विद्यालय की ओर से नहीं दी जा रही है। उदाहरण के तौर पर हमारी कक्षा ९ बी को सप्ताह में एक भी घंटी गेम्स की नहीं है। गेम्स की घंटी में हम अभ्यास करेंगे।

बास्केट बॉल का अभ्यास छुट्टी के बाद केवल स्कूल-टीम के बच्चे ही करते हैं। हमारे विद्यालय में एक-दो योग्य शिक्षक हैं। बैडमिंटन खेलने की कोई व्यवस्था नहीं है। केवल बैडमिंटन प्रतियोगिता में साल में एक बार रैंकेट दिखाई देते हैं। लान-टेनिस तो हमारे विद्यालय में अनेक बच्चे खेलते हैं पर स्कूल में कोई नहीं खेलता है, बल्कि दूसरे स्कूल के बच्चे आकर खेलते हैं।

आपने हमारे विद्यालय के खेल-कूद के हाल का सजीव चित्रण किया है। मैं इससे पूरी तरह सहमत हूँ। जिन बच्चों को खेलना नहीं आता है, उन्हें उचित निर्देशन और प्रोत्साहन की जरूरत है। धन्यवाद,

संजय प्रकाश
९ बी

सम्पादक महोदय,

आपके द्वारा लिखित निबंध को मैंने 'जेवियर लाइफ' में पढ़ा, और इससे काफी प्रभावित हुआ। आपका यह कथन अक्षरशः सत्य है कि खिलाड़ियों को यहाँ उचित प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। यद्यपि क्रिकेट, बास्केट बॉल, फुटबॉल, टेबुल टेनिस, लॉन टेनिस, जैसे खेलों की सामग्रियाँ हमारे विद्यालय में उपलब्ध हैं, परन्तु उचित मार्ग-दर्शन के अभाव में उनका पूर्ण सदुपयोग नहीं कर पाते हैं। स्कूल टीम के चंद इने-गिने छात्र उनका उपयोग कर पाते हैं।

यह भी सर्वमान्य सत्य है कि पर्याप्त निर्देशन और प्रोत्साहन के अभाव में प्रतिभाएँ कुंठित हो जाती हैं, अतः यदि विद्यालय अधिकारियों को संत जेवियर का खेल स्तर ऊँचा उठाना है तो उन्हें इसकी ओर उचित एवं पर्याप्त ध्यान देना होगा। इसके लिए विद्यार्थियों में खेल के प्रति आकर्षण एवं जागरूकता उत्पन्न करता होगा।

प्रवीण राघवेन्द्र नवम् 'ब'

सेवा में, सविनय निवेदन है

सम्पादक महोदय का ध्यान अपनी इस महत्त्वपूर्ण बात की ओर खींचते हुए मैं यह कहना चाहूँगा कि हिन्दी के वरिष्ठ सम्पादक (अजय कृष्ण सिंह, दशम् 'ब') ने अपने जो विचार विद्यालय क्रीड़ा दल के संदर्भ में दिया है, वह कुछ कम ही है।

मैं इनके विचारों का समर्थन करते हुये कुछ अपने विचार भी देने चाहूँगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए, मुझे आपबीती घटना याद आती है।

यह कोई फरवरी के शुरू का माह रहा होगा। हमारे स्कूल के चारों टीमों के नये कप्तान तथा उपकप्तान की नियुक्ति हो चुकी थी। वे अब अपने ऊपर सारे-भार लें चुके थे। जाड़े के महीने में चूँकि क्रिकेट का ज्यादा महत्व रहता है, इसलिए सभी कप्तान अपनी टोली के लड़कों में से खिलाड़ियों को चुन रहे थे। मैं भी इस चुनाव में गया मगर कुछ लोगों ने कप्तान से चापलूसी कर मेरा नाम सूची से निकलवा दिया। मुझे इस बात का बहुत दुख था।

इसलिए हिन्दी के सम्पादक ने बिल्कुल ठीक कहा है। —आलोक सिंह दशम् 'ब'

माननीय सम्पादक महोदय,

अजय सिंह द्वारा लिखित एक रचना जो आपने अपने पत्रिका में छपवाई इससे मैं पूर्ण रूप से सहमत हूँ।

परन्तु उनके द्वारा लिखित रचना में उन्होंने लिखा है कि स्कूल हमलों के लिए सब तरह से मदद कर रही है। परन्तु कहाँ ?

न यह हमें योग्य खेल सिखाने वाले शिक्षक रखता है न पूर्ण खेल का सामान। अगर लड़के कोई खेल खेलना चाहें तो पहली बात कि उन्हें पूर्ण खेल का सामान नहीं मिलता अगर मिलता भी है तो लड़के बिना शिक्षक के जैसे-तैसे खेलते हैं। जिससे कि वे खेल को एक मजाक समझ लेते हैं और उससे पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते हैं।

मेरे दोस्त अजय सिंह का कहना है कि स्कूल प्रतिदिन हर वर्ग को एक खेल की घण्टी दे परन्तु किस लिए? उस समय न कोई खेल सिखाने वाला शिक्षक होता है न खेल का पूर्ण सामान। लड़के खेल की घण्टी में इधर-उधर सिर्फ घूमते रहते हैं। और अपना समय बरबाद करते हैं।

इसके लिए सभी खेल का शिक्षक स्कूल में रखना चाहिए।

जानेन्द्र यादव अष्टम 'अ'

महोदय,

इस जेवियर पत्रिका के सम्पादकीय में विद्यालय के खेलों का विश्लेषण किया गया है। परन्तु लेखक ने अपने लेख में वातावरण का उल्लेख नहीं किया है। खेलों को विकसित करने के लिए वातावरण का प्रभाव आवश्यक है। लड़के खेलों का अभ्यास क्यों नहीं कर पाते हैं? उत्तर है कि उनके माता-पिता अथवा अभिभावक उन्हें करने से रोकते हैं। वस्तुतः वे खेलों के प्रति उदासीन हो जाते हैं और पढ़ाई में भी अच्छा नहीं कर पाते हैं।

खेल तभी विकसित हो सकते हैं जबकि उन्हें परिवार प्रोत्साहित करे और अभ्यास के लिए आवश्यक समय देने से न हिचकिचायें।

विवेक नारायण नवम् 'ब'

Dear Sir,

In reference to the Hindi Editorial in the last issue of "Xavier Life" I would like to state that some of your observations are misleading and baseless. The comments in regard to cricket are distorting. It is not true that nothing is being done for those who do not play on the school team. There are inter house junior and senior matches, inter class matches, inter school friendly class matches, etc. Moreover, regularly can we see boys of various ages joyful and seriously playing cricket at every moment they get: before school, during the intervals and after school. The question of having one games period within the school time-table is simply not feasible. Already there is trouble getting in enough periods for the many subjects that

the seniors have. The fact is that the boys should be more ready to turn up regularly for games after school hours. Then and then only can the school help us more than what it is doing so now.

The Basketball facts too are misrepresented. All the boys, and very much so the juniors, are given opportunities to practise regularly. Good instructors too are on hand. We have a number of basketball stars in the making. Our school is far ahead of most of the other schools in respect to basketball. Very few schools could boast of a court like ours not to mention the standard achieved by our boys.

There is some truth to the fact that table-tennis has become the monopoly of a few. It would be good if another playing area was found for the table-tennis second tables. Again, some more players could be chosen and 'A' and 'B' teams be formed to play against each other at least once a month.

The games-in-charge can do much more if there is more interest and less apathy shown by us boys. We boys show up one day and fail to do so the next day....Sanctions should be given. The school provides us with the opportunities to play many games: football, cricket, tennis, badminton, chess, carrom, table-tennis, basketball, swimming and athletics and....last but not least (for it is tremendously popular) handball.

With more interest and co-operation from the boys and more organisation from the school we can progress much more in the field of sports.

Shashank Priya IX B

Physical Education

For the boys of classes (1-9), Physical Education is compulsory. It carries 100 marks. The distribution of marks reads as under—

1. Drill & P. T.....20 marks.
2. Gymnastics or Yoga.....20 marks.
3. Athletics20 marks.
4. Two major games :
(Football, Cricket, Hockey, Badminton, Basketball, swimming etc.40 marks.

Marks obtained in this subject are added to the total and hence vitally affect the overall percentage.

At times we fail to realise the importance of this subject. "A healthy body houses a healthy mind."

Syed Jawaid Haider, 10

संत जेवियर हाई स्कूल

संत जेवियर हाई स्कूल, पटना के गुरु मंदिर के पश्चिम में अवस्थित है।

इस स्कूल में १०० छात्र तथा लगभग ४० शिक्षकगण हैं। अधिकांश शिक्षक एम० ए० तथा एम० एससी० योग्यता वाले हैं। अभी यहाँ के प्रधान अध्यापक कादर जौन थाना हैं। इस विद्यालय के पढ़ाई-व्यवस्था बहुत अच्छी है। छात्रों को गृह-कार्य दिया जाता है। यहाँ परीक्षा हर शनिवार को होती है तथा वार्षिक अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ भी होती हैं। परीक्षा में किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं होता है। अन्तिम कक्षा में विशेष पढ़ाई की व्यवस्था की जाती है। यही कारण है कि अधिकतर छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं।

इस विद्यालय में एक अच्छा पुस्तकालय है जिसमें सभी विषयों की पुस्तकें मिलती हैं। इस विद्यालय में एक बड़ा-सा आयताकार मैदान है जिसमें छात्र क्रिकेट, फुटबॉल इत्यादि खेलते हैं। शायद ही कोई ऐसा वर्ग रहे हो जिसमें यह विद्यालय कोई भी शील्ड नहीं जीता हो।

यह पढ़ने का एक अच्छा स्कूल है।

—प्रभात कुमार सिन्हा

कक्षा—पंचम 'ब'

लेख

लड़के संत जेवियर स्कूल में इसलिए पढ़ना चाहते हैं क्योंकि इसकी प्रशिक्षण-पद्धति अन्य स्कूलों से भिन्न है। इस विद्यालय (स्कूल) में चरित्र-निर्माण, आत्म-विश्वास आदि गुणों के विकास के साथ-साथ शिक्षा के उच्च स्तर पर भी ध्यान दिया जाता है, ताकि छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। इस विद्यालय में छात्र-गण स्वतन्त्र रूप से खेल भी सकते हैं (बेल की घंटी में)।

फिर यहाँ के छात्र अनुशासनबद्ध रहते हैं। इस विद्यालय में ऐसी शिक्षा दी जाती है, जिससे वे आगे चलकर देश, समाज एवं राष्ट्र की सेवा कर सकें। इसलिए लड़के संत जेवियर विद्यालय में पढ़ना चाहते हैं।

—प्रभात कुमार

कक्षा पंचम 'ब'

National Sporting Star Visits St. X.

On 27th September the boys of St. Xavier's had the honour of meeting a colourful and interesting person—Mr. Joshi Varkey, a great sportsman and at present the Head of Physical Education, Birla Public School, Pilani. He has an outstanding sports record. He has won national awards in the 100 metres, 800 metres, long jump, high jump, and shot put. He was the captain of the Kerala State National Winning Volleyball Team (1966). His informative and interesting talk on "Modern Trends in Education and Sports" held the audience of teachers and boys spell bound. He also spoke about the spirit of sportsmanship and showed us how to fall without hurting ourselves and to come to a dead stop even when running at a speed. As he shared his ideas with us he interspersed his comments with very humorous and apt anecdotes. The school looks forward to more such inspiring talks. Fr. George Thana, S. J. thanked him and said that the talk had been profitable not only for the students but also for the teachers as they learned just not about the importance of sports for themselves and the students but also how to make their classes more interesting and inspiring. — Sanjay Bose X B

EVS Moves Ahead



Above : Mr. Shyam and Mrs. Ira Sinha so encouraged and stirred up the interest of the boys that they took great delight not only in doing but also in explaining what, how and why they carried out their EVS projects.

वाक्पटुता प्रतियोगिता

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी २५ सितम्बर को वार्षिक हिन्दी वाक्पटुता प्रतियोगिता हुई। इसमें पाँचवीं से दशमी कक्षाओं के छात्रों ने भाग लिया। तीन दल बनाए गये, पंचम् एवं षष्ठम्, सप्तम् एवं अष्टम्, तथा नवम् एवं दशम वर्गों के छात्रों के बीच यह प्रतियोगिता हुई।

भाग लेने वाले सभी छात्र अपनी पूरी तैयारियाँ कर आये थे। लम्बे मध्याह्न के बाद प्रतियोगिता शुरू हुई। प्रतियोगिता की शुरुआत पाँचवीं कक्षा के छात्रों ने की सभी छात्रों ने अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। निलांजन चटर्जी ने बहुत ही अच्छी कला का प्रदर्शन किया और वह सीनियर्स में प्रथम रहा।

परिणाम इस प्रकार रहा—

जुनियर्स—प्रथम—संजय ओ० शॉ ५ 'ब'
द्वितीय—रवीन्द्र पाण्डे ५ 'ब'
इंटर्स—प्रथम—इन्द्रप्रताप ७ 'अ'
द्वितीय—प्रणय सिन्हा ७ 'अ'
सीनियर्स—निलांजन चटर्जी ९ 'ब'
मनोज कुमार १० 'ब'
सुधाकर सहाय
दशम 'ब'



Miss Lakra and Mrs. Gilbert (cut) with some of their EVS students

The Bread Story

It happened during last summer's vacation. A friend of my father came to visit us for a few days, along with his family. The family included a young son and daughter. The son, a teenager, was typically mod. He dressed in the latest fashions and said things like "probs" for probably and "let's melt" for let's go. His sister Mona was always drooling over him. My mother thought he was being a bad example to me and looked forward to the family's speedy departure.

One morning we were all taking breakfast together when the boy suddenly turned to his mother and said, "Mom, I want some bread." My mother, who was sitting next to his mother, looked pleased. After all, he was asking for something a growing boy needed. "Shall I toast it for you, and will you take some home-made jam with it?" She asked in an affectionate tone, as she rose from the table to go to the kitchen.

The boy, however, didn't seem to hear. He repeated, "Gimme some bread." Mona began to giggle. My mother shot an angry disapproving glance at her and then spoke to her brother: "Have a little patience, the toast will be ready in a minute."

Hearing this Mona nearly fell off her chair with laughter, then steadied herself as she saw the look on my mother's face.

The boy then said, "Toast? No thanks, I don't want anything more to eat."

"But you just said you wanted some bread, didn't you?" My mother was really perplexed. Meanwhile Mona tried hard to suppress her giggles.

The boy now resolutely turned to his mother. "Cough it up, Mom!" he demanded. His mother with an understanding smile reached for her purse. She proceeded to explain apologetically to my mother that "bread" did not mean bread, but instead meant MONEY. Hearing this we all had a good laugh and shared the extra uneaten piece of toast with home-made jam.

Sanjay Sinha, IX A

Pray for the Living (Dead)

In the last few months the school has seen a few of its dear ones answering the call of the Lord to enter into the next life. On September 20th Chandra Shekar Bahari IX B suffered the tragic loss of his father. Though ailing for a year with a serious kidney complaint he had shown signs of improvement. But this was but temporary.

Another parent who had been ailing for a very long time was the father of Sanjay Singh X A. He died on November 16th.

On November 27th Father Charles Saldhana, S. J., who had earlier taught here, died in Delhi. He was 87 years old.

We thank the Lord for each of them and for all the good they did in their life time. May the Lord bless and reward them abundantly. We also extend our condolences to the bereaved families and pray the Lord to comfort them and to make up for the great loss in their lives. Death is the one thing from which none of us can escape. As it comes at an unknown hour to us it is hoped that we will be ready for the moment. In a manner it is the final healing from the ills of this world. It is the main exam of life being far more important than the exams that we are writing these days. May our good lives prepare each of us for a happy death when we go to meet the Lord in a fuller and more personal manner. May they Rest in Peace.

Interact Club

At present the Interact Club of St. Xavier's, Patna is busy implementing two of its own projects: social service projects and promoting International Understanding.

Social Service: Members of the club are helping Fr. Mani Poovakot and other teachers to coach our less fortunate brothers and sisters. They also collect magazines, medicines, and clothes for those in need. At times a film show is conducted and the proceeds go towards the alleviation of the sufferings of our less fortunate brothers and sisters.

The club members also help in conducting some of the cultural functions held in the school. The members work in close cooperation with the Student Council.

International Understanding: The Interact Club being an international movement effort is made to come to know more about each other through various means: contact-visits, letters, etc. The Interact Club is sending some of the paintings of the Painting competition to various units and will be meeting the expenses involved.

The club has about 38 boys as its members. Mohit Ahluwalia is the President and Dharam Pandey, Nilanjan Chatterjee and Sudhir Saraf are the other officers. The club is particularly indebted to Fr. Scaria and to Mr. Sen and Mr. Anand who give much of their time and energy to encourage the young members. Many do not know that the Interact Club is a junior counterpart of the Rotary Club.

Syed Jawaid Haider

An Important Day

On Independence Day, Aug. 15th Fr. George Thana, S. J., our Vice Principal, and Fr. Joseph Kurupam S. J., the Rector of St. Michael's, made their final profession (commitment with vows) in the Society of Jesus. There was a celebrated mass in the school auditorium. Fr. Abraham Puthumana, the Patna Provincial, was the chief celebrant. Many other Jesuits and priests concelebrated at the special mass. Also present to thank and praise the Lord and to pray for the two priests were relatives, teachers from the schools as also many religious sisters and friends. Fr. George's brother came from Sikkim and Fr. Joseph's sister and niece came from Vijaywada. The enchanting, devotional hymns sung by the choir made the ceremonies all the more meaningful and delightful. After the religious ceremonies there was a tea party for all present. Congratulations Fr. George. Thank you for committing yourself to serve the youth in a special manner. Thank you for your love and concern for us. May God bless you abundantly.

Surendra Kumar X I

सफलता के सोपान

पवन का दिमाग चेतनाशून्य होता जा रहा था। वह फटी-फटी आँखों से कभी अपने पिता की लाश को देखता और कभी अपनी माँ को। लाश पर पछाड़ें खा-खा कर गिर रही माँ को मुहल्ले की कई औरतों ने पकड़ रखा था। लेकिन उनका दिलो-दिमाग काबू में नहीं था। नाते-रिश्तेदारों को इतला किया जा चुका था और सभी की आँखें हरिकिशन बाबू की असामयिक मौत पर नम थीं। परन्तु पवन को जैसे काठ नार दिया था उसकी आँखों के झरने सूख गये थे। जब मनुष्य अत्यन्त दुःखी रहता है तब उसकी आँखें नहीं बल्कि हृदय ज़र-ज़र रोता है। पवन की भी यही इजा थी। उसके मस्तिष्क में यही बात बज रही थी कि उसके पिता समय पर दवा न मिलने के कारण चल बसे। कल रात उनकी हालत अचानक खराब हो गयी और मौत के लक्षण दिखायी देने लगे। पवन चौड़ा-दोड़ा डा० आर० पी० गुप्ता के पास गया तो उन्होंने दवा लिख दी पर २०० रुपये पवन के पास न थे। उसने मुहल्ले के सभी धनी व्यक्तियों के पास हाथ फैलाया, पर एक निधन पर कोई विश्वास न किया और दवा न मिलने पर हरिकिशन बाबू परलोक सिंघार गए। उनकी मृत्यु पर सभी लोग सहानुभूति के दो शब्द कहने आए पर कोरी सात्वना से कुछ नहीं होता। शमशान में पिता को आग उनके इकलौते पुत्र पवन ने दी। चिता पर जलते शरीर को पवन सूनी आँखों से देखता रहा। जब शमशान से चलने का वक्त हो गया तब उसकी नन्दा टूटी। उसने जले हुए भस्म की एक कूटकी अपनी आँखों से लगायी और बोझिल सदमों से घर वापस लौट पड़ा। पिता की मृत्यु ने उसे सहसा निस्सहाय और अकेला कर दिया। अभी उसकी उम्र मात्र अठारह वर्ष की थी। इतने अल्पवयस्क उम्र में वह अपनी और माँ का जीवन-यापन कैसे करेगा ?

पवन ने निश्चय किया कि पैसा उपलब्ध होने पर वह डाक्टरी पढ़ेगा और उन निस्सहाय तथा निर्बलों की मदद करेगा जो बिना दवा के तकलीफ भोगते हैं।

समय का काफिला गुजरता गया और समय रूपी मलहम ने पवन के घाव को भर दिया। अपने पिता के प्राविडेंट फंड से पचीस हजार रुपये निकाल कर उसने डाक्टरी पढ़ी और पढ़ने में एक दवाखाना और 'किशन नर्सिंग होम' की स्थापना की। ये दोनों

संस्था गरीबों तथा निस्सहायों के लिए मुफ्त सेवा प्रदान करती थी।

पवन एक आज वैभवशाली डॉक्टर है। अपना सपना पूरा कर उसने अपने जीवन को सार्थक बना लिया।

राकेश कुमार सिन्हा
अष्टम 'अ'

Badminton

In spite of the weather and human weakness the Badminton Tournament has been completed this year. It stirred up quite a bit of interest. Matches took place during the lunch break and immediately after school. The man who worked indefatigably for the success of the tournament was Sanjay Sinha IX A. Incidentally he annexed both the singles and doubles events.

Teaming up with Sharique Habibi he formed a winning combination against Sanjay Ram and Hemant Sinha X A. In the Juniors Section Somnath Sen (VIII B) and Vivek Luthra (VIII A) defeated Akash Kumar and Rajeev Roy (VII A). A special thank you and well done to Sanjay Sinha, Rajeev Roy, and Prakash Rukhaiyar for all their interest and labours for having conducted the tournament.

Junior Table-Tennis Tournament

The Junior Table-Tennis Tournament was ably conducted by Hemant Bahri and Prakash Rukhaiyar IX A. Many besides the players took an active interest in the games. The following were the winners.

Singles : Champion :

Akash Rukhiyar VI A

Runner-up : Sanjiv Shanker VI A

Doubles : Akash Rukhaiyar and Satish Kumar VI A

Runners-up : Sanjiv Shanker and Avinash Sahay VI A

Also in the news again and again are Hemant Bahri (IX A) and the Saraf brothers Sudhir, Deepak and Ratan. Hemant Bahri was selected to represent Bihar State in the Autumn Games. Congratulations and keep it up.

Cricket 1977-78

1977-78 was a good season for the cricketers of St. Xavier's. The team was runners-up in the two tournaments in which it participated, the P. D. C. A. and the B. B. Yadav Tournaments. It also achieved some notable victories in the friendly matches played with teams in town.

A notable feature of the team is that it is composed of players from various classes. In fact the baby of the team and a regular member of it is none other than Sabba Karim VI B. He is the wicket-keeper and a dependable batsman. His brother Faiz is one of the main batsmen of the team. Both the brothers along with Abinash Kumar, the captain, play for the Patna Schools District Team. Abinash Kumar is also captaining the Patna Schools District Team. Congratulations to Abinash and to the brothers.

Here are the results of some of the matches :

In the opening match the Vice-Principal's XI defeated the Principal's XI. Deepak Thakur was the highest scorer with 39 runs to his credit.

—vs XPTA : St. Xavier's 132 for 4 declared. Faiz Karim 37 not out.

XPTA 71 and 52. Mr. S. K. Mehrotra 31 and 12. Abinash took 4 wkts in each innings.

—vs Loyala : We won by 20 runs. St. Xavier's 59 all out. Sanjay Choudhary 22.

Loyala 39, Sudhakar Sahay 4 for 8.

—vs St. Michael's : We won by 48 runs.

St. Xavier's 123. Faiz Karim 59.

St. Michael's 75. Abinash 4 for 7.

—vs St. Michael's We lost by 67 runs.

St. Michael's 105. Sudhakar 3 for 18 and Abinash 3 for 23.

St. Xavier's 38. Sanjay Chaudhary 18.

—vs St. Michael's (P. D. C. A.) : We won by 38 runs.

St. Xavier's 93. Somnath Mukherjee 17.

St. Michael's 55. Suhakar 5 for 13.

—vs Bhojpur XI. We won by 37 runs—

St. Xavier's 119 for 9 decld. in 40 overs. Faiz Karim 29. Bhojpur XI 82. Sudhakar 4 for 20. Abinash 4 for 17.

—vs Patna High School : We lost by 5 wickets. (B. B. Yadav Final).

St. Xavier's 90. Sabba Karim 26.

P. H. S. 92 for 5. Hemant Sinha 2 for 37.

—vs R. M. Seminary : We won by 16 runs.

St. Xavier's 117. Faiz Karim 17.

Seminary 101. Abinash 7 for 26.

—vs Patna High School : Lost by 6 wickets (P. D. C. A. final)

St. Xavier's 40. Abinash 14. P. H. S. 41 for 4. Sudhakar 2 for 19.

The Intra Mural champions were Tigers. However, the most noteworthy item of the intra murals was the new record established by Abinash Kumar. The old record for the tournament was 15 wickets in 3 matches, established by Sanjay Singh S. T. ('75).

Abinash took 19 wickets in the 3 matches. Congratulations Abinash :

St. Xavier's can look forward to a bright future. There is a host of promising players in the line-up for 1978-79.

Sudhakar Sahay XB

Football

In a rather drab tournament the Tigers reigned supreme : Football skills were very conspicuous by their absence. Most of the matches ended in draws. Some boys, however, did show great budding talent and zeal. It is hoped that they will form the nucleus for the coming year, a nucleus on which the House and School teams can build stronger and more able teams for the future.

In a match against St. Michael's our 'B' team, composed mostly of boys from class VIII, was defeated 6-1 by the St. Michael's 'A' team.

Their senior team was too good for us. They had more stamina and far more skill. All the same our boys put up a plucky fight.

Sanjay Sinha IX A

Swimming Fiesta

Despite the encouragement of Mr. A. V. Sebastian, our hardworking sports-in-charge, and the number of boys who have been using the pool regularly, the actual number of competitors was low. Part of the reason could be that the festival was postponed twice. Much of it is also due to the lack of a competitive and sporting spirit among the students.

About ten boys took part in the senior division, and fifteen each in the junior and sub-junior divisions. No one opted to compete in the inters division. Sanwar Agrawal X B was unanimously declared to be the champ of the meet. Mohit Ahluwalia was the runner up. The junior champ was Lawrence Pascal VII B, and the sub-junior ace was Manish Sinha III A. The relay was won by the Lions with the Leopards as the runners-up.

The Tigers under the able guidance and inspiration of their captain, Hemant Sinha annexed the championship. The final team positions were : Tiger 67, Lions 63, Panthers 57, and Leopards 51.

Ajay Maitin IX A

Amitabh Sohan VIII A

Handball Champ : Surendra Prasad

This year's championship drew an enthusiastic group of spectators. Many of them are themselves regular players of the game. The exciting, intelligent games played by the eventual winners as also by many of the losers thrilled one and all. In the senior singles Surendra Prasad

overcame the challenge of Vivek Narayan IX B. Vivek made good this defeat when he teamed up with Subodh Kumar IX B to dampen the hopes and aspirations of Mohan Ahluwalia IX B and Sanjay Sinha IX A.

In the junior section the singles champion was Sharat Sinha VIII A. The runner-up was Alok Kumar also of VIII A. Sharat was just too strong for Alok and never gave him a chance to settle down. He attacked relentlessly from beginning to end. The doubles was won by Divy David VIII B and Alok Sinha VIII A. They defeated Devashish and Ajay Jha VIII B.

Afaq Ahmad IX B

St. Xavier's Hosts Basketball Tournament

A no-trophy-no tears basketball tournament was held on our St. X court in early November. Teams came from as far away as Bettiah and Arrah and made the weekend a colourful and exciting one. With three victories in three attempts, St. Michael's emerged as winners of the tournament. Arrah Catholic High School was runners-up. "Old" coaches Ramesh Kalley and Joe Swamy happened to in Patna that weekend and generously acted as referees in many of the matches. Nine games were played in two and a half days. The results are given below :

Round-robin series—

Arrah Cath. H. S. (41), St. Xavier's (30)

St. Xavier's (57), Bettiah P. Y. T. (34)

St. Michael's (36), Arrah Cath. H. S. (18)

Arrah C. H. S. (42), Bettiah P. Y. T. (40)

St. Michael's (54), St. Xavier's (41)

St. Michael's (60), Bettiah P. Y. T. (30)

Special competition between the "second five" of each team—

St. Michael's (24), Bettiah P. Y. T. (18)

St. Xavier's (28), Arrah C. H. S. (18)

All-Star Game—

REDS (Xavier & Arrah)—41

BLUES (Michael's & Bettiah)—38

Xavier Life



28 No. 1 ST. XAVIER'S, PATNA 27 April, 1979

Students in the Saddle

What would happen if one fine morning all the alarm clocks of our school went kaput and no one woke up for class? Awhile back such a situation would have been conceivable. But now (at least if you are a senior) there's no cause for worry. A whole squadron of them was trained up on April 10.

What was the day like when the seniors took over the reins in every department of the school? Well, in the office of the principal and the vice-principal could be seen the faces of the president and secretary of the Student Council respectively. The staff room was buzzing with teachers, some eager to go to their classes, and some feeling a bit apprehensive and nervous.

But once we had launched ourselves into this new task and completed one or two classes, the fears and apprehensions melted. By the time the last bell rang many were dejected at the swiftness with which the day passed. Some were even heard suggesting that we should have one

more Students' Day in the next term.

Barring a few stray incidents, the behaviour of the boys was surprisingly good. At last, a special tribute is due to Vivek Narain and Narayan Agrawal who cheerfully took up the sweepers job, a task that some seniors had avoided for reasons best known to themselves.

Shashank Priya, 10B

Twelve Winterspring Awards

The Winterspring Essay Contest was held on March 5. This annual feature is sponsored by Xavier Life in the hope that good writers will be discovered and given encouragement.

The seniors (9&10) wrote on the theme: "My advice to a new boy who is beginning his schooling at St Xavier in Std. VII." Eighty one boys wrote in Hindi and 59 chose English.

The junior (7&8) topic was: "The person who has meant most to me in my life." In this category 158 out of 167 contestants wrote in Hindi.

New Principal: Fr. George Thana

Like a book with many chapters, St Xavier's history continues to be written. On Dec. 23 the Jesuit provincial of Patna, Fr Abraham Puthumana, announced that Fr George Thana would become our new principal. This appointment followed the decision whereby Fr Scaria would be working full time as Director of Schools for Patna Province. Fr. Mani Poovakot has been appointed vice-principal.

A farewell programme was held for Fr Scaria on Feb. 22. A capacity crowd filled the auditorium that morning and many wonderful tributes were paid to Fr Scaria for the loving and skillful way in which he headed St Xavier's for the past eight years. We will miss him, but we are glad to know that his talents will now be at the service of many schools over a wide area. We wish him God's blessing in every task and journey.

Altogether 307 boys took part. XL is very grateful to each of the fourteen judges who gave of their time to evaluate the essays.

The lucky winners are as follows
SEN. HINDI: Rajan Thakur, I; Md. Arif, II; Gyanendra Harshwardhan, III; Honourable Mention: Vivek Narain, Pravin Raghavendra, and Sanjay Jamuar.
SEN. ENGLISH: Prashant, I; Abhijit Chowdhury, II; Thakur Vikas Sinha, III; Hon. Mention: Anjan K. Ghosh, Surendra Rajeev, and Somnath Sen. JUNIOR HINDI:

(Contd. on page 4)

It seems no secret that for the past three or four years a science wave has been sweeping our senior classes, and so strong it is that a number of seniors have turned their backs on the arts subjects.

Apart from social studies, the subjects to suffer the biggest neglect are the various languages. How can we be comfortable with this new emphasis? Have we forgotten that language is the most formidable tool for communi-

editorial

WHY THIS SCIENCE WAVE?

cating our ideas to others? As such, we should be working overtime to develop and sharpen it to a fine edge.

We may possess a tremendous amount of scientific knowledge, but it will never take us far if we express it in a clumsy, faltering way. Many boys (though I am certain that they are not aware of it) become crammers only because they do not have full confidence in their ability to express themselves with clarity and precision.

The quality of language we develop in school is going to play a vital role in every sphere of our future life. In this competitive age our skill and poise in language is going to have a lot of consequence in the career we take up.

Why not, therefore, take full advantage of what the school is offering us in Sanskrit, Hindi, English, Urdu, or Bengali? We can mention here that books are just one way of developing a language. Active participation in debates, elocution, and dramatics are also vital means for making progress.

In short, now is the time for taking a look at our study programme to see if it is balanced. Perhaps it is time for the science wave or cyclone to be reduced to a gentle breeze. In that way we'll be able to smell the fragrance of other subjects, too.

—Shashank Priya, 10B

Dear Editor,

Some of us would be very glad if you carried cartoons in the paper. They would add a lot of humour and give the artists a chance to use their talents. Perhaps you could set aside a special "cartoon corner".

Sincerely,
Deepak Manchanda, 10A

Dear Editor,

I would like to suggest that you carry articles in XL by boys from Stds IV and V. You know it is quite interesting to read the feelings of small boys. It is not a difficult task. I think the boys will surely give articles for Xavier Life, in either Hindi or English.

Sincerely,
Akhil Yadava, 10A

Our friends write

Dear Editor,

I would like to say that the school has only one good ping-pong table. Since many boys like to play, there may be quarrels in which we seniors always get the upper hand. The rush is most noticeable at tournament time. Do you think we could get some more tables so that more boys will have a chance to play?

Sincerely,
Sudhir Saraf, 10A

संपादक महोदय,

मैं आपसे सविनय निवेदन करता हूँ कि "जेवियर लाइफ" पत्रिका के छात्रों के रोचक संस्मरण देखने को नहीं मिलते हैं। इसलिए मेरा आपसे यही अनुरोध है कि "जेवियर लाइफ" के आगामी अंक में एक ऐसा संस्मरण हमेशा रहे। ऐसा संस्मरण आप किसी भी कक्षा के छात्र से प्राप्त कर सकते हैं। पर मैं आपको यह ध्यान दिलाना चाहूँगा कि ऐसे संस्मरण रोचक और दिलचस्प हों। विद्यालय के प्रमुख घटनाओं के साथ-साथ ऐसे संस्मरण, चुटकुले, कहानी आदि ही "जेवियर लाइफ" की शोभा बढ़ा सकते हैं।

धन्यवाद,

राजन ठाकुर, दशम् कक्षा

Xavier's rector, Fr J. B. Thakur, has returned after a three months' leave. He completed a special course in spirituality in Rome. We are delighted to have him back with us.

A Cap For Each House

There are some who say that one house is as good as another. What makes the difference is a good captain. The four houses began their search on Jan. 18. Boys from Stds. 5-10 took part in the election which produced the following leaders: LEOPARDS: Devash H. Lal, Captain and Ajay Jha, Vice—Captain; LIONS: Mohit Ahluwalia, Captain and Alok Sinha, Vice-captain; TIGERS: Sanjay Choudhary, Captain and Ratan Kumar, Vice—captain; PANTHERS: Hemant Bahri, Capt. and Sanjay Prasad, Vice-capt. The new leaders received their badges and house colours before the start of the Sports Day programme, Feb. 24.

36th Annual Athletic Meet

This year's Senior Athletic Meet was held on Feb. 24. Preliminary rounds, especially in field events, were completed on our campus. The main show began at 1:30 p.m. on the Gandhi Maidan. Prior to the march-past, Fr. George Thana presented the school flag to the new SC president, Prashant, and also gave the house colours to the four new captains.

We were privileged to have Shri M. Rahman, R.D.D. (E), Patna Division, as our chief guest. He distributed the prizes to the winners and gave a speech in which he explained some aspects of the new syllabus and encouraged us in our efforts.

By day's end the Panthers amassed 410 points and were

awarded the shield. Leopards followed at a distance with 304, Lions 297, and Tigers 276 points.

In the Fr. Murphy Memorial Inter-School Relay St. Michael's came first and St. Xavier's second.

In the senior group, Sanjay Kumar I took first place in shot-put, high jump, 100 & 400 metres, and was declared individual champion. A few other big prize winners were: Md. Arif and Lawrence Paschal (track events), Sharat Sinha and Somnath Sen (long distance), Sanjay Choudhary and Vijay Swaroop (long jump), Krishna Sinha (discus) and Vivek Narain (javelin).

Among the Inters, Rajesh Ambastha emerged as the individual champion. Varun Kumar stood first in shot put and high jump. Amikar Dayal was first in long jump, second in discus and third in high jump and javelin.

Debeshwar Sharan and Manoj Kumar were two of the many promising Junior performers. Manoj picked up four prizes and became champion of his group. Allan David was the champion of the Sub-Juniors.

A hearty note of thanks to Mr. A. V. Sebastian who coolly organised both the Junior and Senior Sports days so successfully.

Nalin Chandra, 10A

वाद-विवाद प्रतियोगिता: कुछ परिणाम

हमारे विद्यालय में इस अन्तराष्ट्रीय स्तर वर्ष की पहली वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन गत ७ मार्च को किया गया जिसका माध्यम हिन्दी था।

कनिष्ठ वर्ग के छात्रों के लिए आयोजित इन प्रथम वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था, "गृह-कार्य देना बन्द करो।"

इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत दोनों ही पक्षों ने अच्छी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। फिर भी हार-जीत का जहाँ तक प्रश्न है, उस दल को विजयी घोषित किया गया। सर्वश्रेष्ठ वक्ता की उपाधि संजय शाँ को मिली।

इसके कुछ ही दिनों पश्चात् अर्थात् १२ मार्च को वरिष्ठ वर्ग के छात्रों के लिए हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका विषय कुछ और ही रोचक था जिसपर दोनों पक्षों ने जमकर विवाद किया; विषय था, "सह-शिक्षा विद्यार्थियों के लिए लाभदायक है।"

विपक्ष दल को अपेक्षाकृत उत्तम प्रदर्शन के आधार पर विजयी घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ वक्ता प्रशान्त रहे।

इस वाद-विवाद प्रतियोगिता की एक विशेषता यह रही कि सदन के अधिकतर श्रोता उत्सुक एवं जागरूक थे।

यदि हमारे विद्यार्थी इसी प्रकार से वाद-विवाद में रुचि लेते रहें तो कोई कारण नहीं कि हम अधिक से अधिक प्रतियोगिताएं आयोजित करने में सफल न हों।

आशा है वे हमारा साथ अवश्य देंगे।

नीलांजन, दशम् 'ब'

In the Juniors' debate on March 29 the affirmative team won by a narrow margin. Akash Rukhaiyar was best speaker for the negative side and Abhas Jha was best speaker for the affirmative and for the debate. The topic was "The

recent demolition of the roadside hutments is justified."

The seniors met during the last two periods on April 2 and debated the resolution which stated: "The

(Contd. on page 6)

★ जुनियर स्पोर्ट्स ★

दो दिन पूर्व तक आशा का रवि श्वेत-श्याम जलद पटल के उस पार लज्जा, अथक घमंड या शायद शोखी से छिपा था। फिर भी, अगर आशा जगने या उगने के लिए नहीं होती, तो शायद उसे एक दूसरा, संभवतः कम सुन्दर पर्यावरण मिला होता।

कुहासा भरी, सलोनी, गोरी-सी सुबह अनायास याद दिला गई कि १० फरवरी की सुबह आ चुकी है। अध्यक्ष के स्वागत भाषण के पश्चात् मार्च-पास्ट शुरू हुआ। मार्च-पास्ट खत्म होते न होते लड़कों के मस्तिष्क के समक्ष एक, केवल एक लक्ष्य था। वह था विजय-मंच.....प्रथम स्थान.....प्रसिद्धि (!) और थोड़ा-सा संतोष। सभी के चेहरे बोल रहे थे- हृदय प्रफुल्लित, मस्तिष्क एकाग्र और दोनों पैर कार्यरत।

एक के बाद एक जीवन की मूलभूत सत्य की सत्यता का प्रमाण देते हुए आघा कार्यक्रम प्रतिपादित हुआ। तत् पश्चात् एक छोटे जलपान के बाद, खेलकूद का शेष कार्यक्रम क्रमशः सामान्य गति से समाप्ति की ओर अग्रसर हुआ। यदि एक विहंगम दृष्टिकोण से हम इस कार्यक्रम की समीक्षा करें, तो अंततः "सुखद" और "संतोषप्रद" ये दो विशेषण ही सम्पूर्ण कार्यक्रम की

Winterspring Awards (Contd. from page 1)

Syed Karar Hussain, I; Braj Kishore Mishra, II; Avinash, III; Hon Mention: Abhay Kanoria, Avinash Km. Sahay, and Bibhuti Bhushan Singh. JUNIOR ENGLISH Abbas Jha, I; Suryikant Rajan, II; Mahtab A. Khan, III; Hon. Mention: Kshitij Mohan, Sudhir K. Thakur, and Shaheen Akhter.

We hope to print some of the essays in the next issue of XL. In addition to handsome certificates, the ranking winners will be given a group photograph and other prizes (to be announced later).

परिभाषा दे पायेंगे। "म्यूजिकल चेयर" "पासिंग दि बॉल" आदि कार्यक्रम काफी उत्तेजक और मनोरंजक रहे। राकेश कुमार (पैन्यर्स) सीनियर्स दल का चैंपियन रहा। आशीष कुमार वर्मा (टाइगर्स) उसी प्रकार, इन्टर्स का चैंपियन रहा।

अंकपट की अन्तिम झलक कुछ इस प्रकार रही—

पैन्यर्स—१५०
टाइगर्स—१२५
लेपर्ड्स—१००
लायन्स—८८

परितोषिक-वितरण की मुख्य बात रही जेबियर-अभिभावक-शिक्षक-संघ की ओर से चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष पुरस्कार दिया जाना।

प्रशान्त, दशम 'अ'

Some Changes Introduced '79 spring fete

Although postponed to a dubious date, March 25, this year's Spring Fete found many seniors rallying to make it a success.

The fete began several hours earlier this year and concluded by sunset. Hence no fear of power failure and the gloom which that brought two years ago.

There was no "Patna by Boat" due to the rarity of small boats. But there were plenty of canteen and food stalls. The ice cream cone and soft drinks department had record sales thanks to the weather.

The Grand Draw of the lottery took place on March 31. SC president, Prashant, informs us that a decent sum was collected through this means which will aid a number of council projects in the school.

—Xavier Profile—

Mr. Remy Osta

I ran up and down the school campus searching for a teacher. Just then none were free. At last I met Mr. Osta over by the "X Entry" drums and to my surprise he agreed to meet me a few minutes later for an interview.

Sir Osta was born north of Bettiah on August 27, 1947. He has seven sisters and two brothers. I asked him: "Didn't you have any problem dealing with such a large number of brothers and sisters?"

"Not at all," he replied. He said that they behaved with each other like friends. In fact, he guessed that he was the most short tempered person in the family. He admits that he had a lively family with a religious environment.

"Our father loved us very much though he was a very carefree man. Our mother was a lady who meticulously studied the needs of each of us. She was strict at times, yet always kind. Since I was a very short tempered chap, my mother never let me through her strictness. Both mother and father tried hard to give all of us equal treatment. It was my elder brother who often got after me to check my activities!"

As a boy, Mr. Osta was a student of Khrist Raja High School Bettiah, from where he did his matriculation. He finished his B. A. in the year 1969.

For some time he looked after the mechanical workshop belonging to his uncle. Then in 1969 he came to Patna to see his sister and remained on. In 1970 he joined St. Xavier's. And in December, 1975, he gave up his bachelorhood.

We were sitting opposite one another, with the "Staff Only" table of the school library in between. I had my pen and copybook open and he held a magazine in his hands.

(Contd. on page 5)

Fr. Carver Moves North

After barely two years at St. Xavier's, Fr. Charles Carver has been reappointed to Bettiah. In his parting speech during assembly he said, "I hope that after a year or so of more formal study of Hindi I will be of greater service to more boys."

That is a noble aim and we praise him for it, although we miss him very much. No one doubted the concern and love of Fr. Carver for each boy, the seniors particularly.

XL is especially indebted to him for the hard work he put into the school paper, along with editors Sanjay Bose and Ajay Singh. The "new management" headed by Shashank Priya takes over with this issue.

Mr. Remy Osta
(Contd. from page 4)

He has a handsome young son, just a year and a half old. Anu (that's his pet name) is much attached to his mother, since he is with her most of the day. But when his father is at home he never leaves him for a second. Anu has a strong voice and likes to greet people. When Mr. Osta leaves for school, someone has to hold his son. In the evening when Anu sees the school boys returning home, he rushes to the gate and waits till his father arrives. I've seen him do this myself many times. And so no wonder that his father boasts, "Anu is much more mature than you'd expect for his age."

(Contd. on page 6)

SX Officialdom

Here is a list of some of the officers either elected or appointed for the '79 school year :

STUDENT COUNCIL : Pres., Prashant ; V-Pres., Bipin kumar ; Secr., Sudhir Saraff ; Asst. Secr., Yuvraj Suri;

HOUSE CAPTAINS : See separate article.

DEBATING SOCIETY : Pres. (Hindi) Nilanjan Chatterjee; (English) Shashank Priya.

ELECTRONICS CLUB : Pres., Khalid Moquim ; Secr., Abhijit Chowdhury.

INTERACT CLUB : Pres., Mohit Ahluwalia ; Secr., Sudhir Saraff.

FINE ARTS CLUB : Pres., Dharmnath Pandeya
GEN. KNOWLEDGE SOCIETY : Pres., Sanjay Sinha

Fr. Scaria Bids Farewell



What SC president Prashant tried to express in words, others got across with flowers. The above representatives of 6B are seen presenting floral goodbyes to Fr. Scaria on Feb. 22. Left to right: Anil Chand Chuni, Saikat Neogi (face hidden), Frederick Anthony, Shahid Imam, Bibhuti Bhushan 7A, Kumar Manish, and (enjoying the scent) Fr. Scaria.

CLASS TEACHER	1st MONITOR	2nd MONITOR
1A Mrs Dipti Mitra	Atulya Mani	Anjani Kumar
1B Mrs Teresa Gilbert	Yogendra Pd. Dubey	Sumit Osmand Shaw
2A Miss Albertina Lakra	Amit Kumar	Amar Kasera
2B Miss Rose Sukh	Ajay Agrawal	Pankaj Roy
3A Mrs H. G. Sharma	Dhananjay Kumar	Rakesh Lall
3B Miss Margaret Paul	Rakesh Pandey	Sudama Prasad
4A Mrs M. Mehrotra	Rajiv Ranjan II	Tausefuddin Asraf
4B Mrs. Ira Sinha	Ashok Kumar	Rajesh Kumar
5A Mrs Uma Verma	Lokesh Sharma	Rajesh Sahni
5B Mr Md. Sami	Sanjay S. Kumar	Anil Kumar
6A Mrs Neelam Paschal	Kamal Prakash	Parijat Agarwal
6B Mr K. K. Mishra	Rajiv Srivastawa	Syed Haider Raja
7A Mr Sudhir Seraphim	Rajesh R. Ambastha	Praveen Kumar
7B Mrs Bimla Mehrotra	Pradeep Kumar	Md. Tariq Anjum
8A Mr Samuel David	Akash Rukhaiyar	Amresh D. Singh
8B Fr Philip C., S. J.	Rajesh Verma	Fravin Kumar
9A Mr K. Pandey	Sanjay Prasad	Bipin K. Singh
9B Mr Remy R. Osta	Surojit Bose	Somnath Sen
10A Fr. P. Faulstich, S. J.	Rajan Thakur	Ratan Saraf
10B Fr. P. Faulstich, S. J.	Sanjay Prakash	Mohit Ahlawalia

Mr. Remy Osta

Continued from p. 5

In his spare time, which he gets occasionally, he visits his many friends and chats with them. This has been his habit from childhood. But most of his spare time is devoted to his son.

He plays cards a lot and reads only certain books in which he has a keen interest. (I forgot to ask him his favourite author.)

"Now, Sir, if you don't mind, I would like to ask you....."

"Sure, go ahead."

"Sir, why are you so strict with us especially when you are a class teacher?"

"Well, you see, dear Reporter, this is where you may misunderstand me. I am never strict with you. When I talk to you, you feel as if I am scolding you. But, in fact, it is not so. It happens that all of our family members have strong voices, so it's nothing personal. Secondly, I want each of you to be frank, resourceful, and ready

to struggle in life. And that is why I always inspire you to be thorough gentlemen. Actually, this is my aim as a teacher."

Sir Remy Osta has a friendly nature and likes just about everyone. He holds no grudge against anyone.

Let's now peep into his daily routine. He wakes up at six and then looks after his son in order to let his wife do the household jobs. Then he has to wash his clothes and by that time it is half past eight. At 9 a. m. he reaches school. When he returns home at 4 p. m. he takes some rest and then goes to the market. Till nine at night he has to hold his son until he goes to sleep.

Then he takes his supper and, after ten, he goes to study. After one hour of study, he bids good-night to the day!

"Sir, what do you do when you feel totally disgusted?"

"I just keep silent for hours without any talk."

Sir Osta goes to films occasionally. He loves music, and

in his "younger" days used to play the mouth organ. He acted twice in English plays when he was in high school.

Every one or two months he goes to Bettiah to visit with his sick father. His father looks forward to these visits very much.

I have been a student of Mr. Osta since 1976. I regret that only recently I have begun to understand him. He is a frank person and inside very different than I used to think of him.

At one point he said, "You know, I feel I have more affection for my brothers and sisters nowadays than I had when I was young."

Recalling his childhood, he said "I had too many friends in those days and I think my mother was really fed up with me, but she didn't scold me badly."

When I asked him about his hobbies, he said, "I have got a very interesting hobby, and that's to gossip with my friends."

On that candid note our interview came to an end. If only more people had such hobbies, I thought, a reporter's life would be an easy one!

Nilanjan Chatterjee, 10B

Hindi-English Debates

(Continued from p. 3)

practice of wearing a school uniform at St. Xavier's is good and beneficial." In this debate the judges declared Yuvraj Suri the best speaker for the negative side and Somnath Sen as best speaker for the affirmative and the debate. Good performances were also turned in by Abhijit Chowdhury and Sanjay Sinha. The result was that the affirmative won by a comfortable margin.

The championship match to decide ownership of the Fr. Gerry Cricket Cup for the coming year took place on the Gandhi Maidan, Sunday, April 8. The Tigers won both the opening toss **and** the match, thanks to their deft bowling, good fielding, and very strong batting. They have taken the cup for the second year in a row! A full report on this season's scores can be found on page 8.

In the All-India School Games at Nagpur, Jan. 2-7, 120 boys and girls from Bihar took part. Xavier was well represented by Mohit Ahluwalia in the game of basketball. He was the only player chosen from Patna. The Bihar team reached the quarter finals, falling finally to a strong Rajasthan team.

Congratulations to our office P. A., Mr. Albert, and his wife on the birth of a new son, on Feb. 22.

That well known drill-master, chef, and class teacher, Mr. Sudhir Seraphim, was married to Kusum on Dec. 28. What's more, his brother Alfred married Dorothy in the same ceremony, and a few days later (Jan. 4) their sister Pushpa was married in Patna. Congratulations to Sudhir and the whole family!

Taking the place of Mrs. Rekha Srivastava, Mrs. Nilam Paschal, and Mrs. Meera Sinha for some weeks are three dedicated teachers named Miss Shobha Uppal, Mrs. S. Suri, and Mrs. M. Mehrotra. A warm welcome!

Boys with musical talents are signing up for a new programme of after-school coaching. Mr. Kamal Das and another skilled musician will offer classes in tabla, vocal, and guitar from 3:45 to 5:15. Nilanjan Chatterjee, 10B deserves credit for helping this programme get started.

We welcomed one more Jesuit to our campus in January. Formerly posted at Khrist Raja H. S. in Bettiah, Fr. Kuruvilla has come to Xavier to assist in the English department and in the teaching of character. He earned his M.A. in Jaipur and his B. Ed. at Ajmer.

highlights and sidelights

A recent bit of news informs us that Varun Sindhu Kulkaumudi of the 1977 batch secured 5th position in the arts section of the 1978 Bihar State Examination. That is a tremendous accomplishment. A great honour for Varun, his parents, and St Xavier's!

March 7-11 the Bihar Lawn Tennis Assoc. held a big tournament at the New Patna Club courts. Players from all over India took part. Seven Xaverians entered the tournament. In the sub-junior category Sanjay Sinha made it all the way to the finals, before being dropped by Ajay Malik of Tilaya Sainik School.

Those who depend on cycles for getting to school are grateful to Sanjay Sinha, 10 A, for his gift of a cycle pump. It is kept in the portico, ready for any emergency. No longer any excuse for getting home late.

The school cricket team began its season on Jan. 10th with a challenge from the Old Boys on the Gandhi Maidan. The alumni appeared to be still in a holiday mood and this was to our advantage. Final score: Alumni 43 all out (Avinash-5 for 3 runs); St. Xavier's-44 for three wickets (Sabba Karim-18 runs).

Congratulations to Mrs. Rekha Srivastava on the birth of her son, March 23. After not too many years you might look for his name in XL.

On Jan. 12 members of Xavier's Interact Club acted as hosts for a Rotary programme in our school. Interactors from four other schools joined us and had the opportunity to meet and listen to six delegates from the U.S.A. Mohit Ahluwalia, president of the Xavier unit, said the meeting was very beneficial.

"घर...अपना घर"

३१ जनवरी की वह सुहावनी घड़ी श्रीमती उमा वर्मा के मानस पटल पर सदा अंकित रहेगी, जब उन्होंने सपरिवार अपने नये मकान में पदार्पण किया। म्यारह वर्षों के विवाहित जीवन के बाद एक अपना मकान होने का उनका यह स्वप्न साकार हो सका।

१० महीने में बनकर तैयार हुआ यह निवास नई पाटलीपुत्र कॉलोनी में अवस्थित है।

विजय की माला संत जेवियर के गले

धूप ने चारों ओर अपना दामन फैला रखा था। बादलों का अम्बर में कोई नामोनिशान भी न था। वातावरण में शान्ति थी परन्तु खेल के मैदान में अस्थिरता व्याप्त थी।

यह माहौल था १५ फरवरी की सुहावनी सुबह का, जब हमारे संतजेवियर की क्रिकेट टीम ने संतमाइकेल की टीम को उनके ही मैदान पर बहुत दिनों बाद पराजित किया था। भीड़ के समर्थन से वंचित होते हुए भी हमारी टीम का उत्साह व साहसपूर्ण प्रदर्शन चिरस्मरणीय रहेगा।

हमारे कप्तान, संजय चौधरी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। हमारे मध्यक्रम के बल्लेबाजों ने धुआंधार बल्लेबाजी कर अपने कप्तान के निर्णय की बुद्धिमता को शत-प्रतिशत सही कर दिखाया। निर्धारित चालीस ओवरों के अन्त में नौ विकेटों के पतन पर एक सौ छियासठ (१६६) रन का एक सम्मानजनक स्कोर का सारा श्रेय हमारे मध्यक्रम के बल्लेबाजों को जाता है।

जब हमारे प्रतिद्वन्द्वी बल्लेबाजी करने आए तो हमारे विशाल स्कोर के समक्ष वे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ नहीं खेल पा रहे थे। परन्तु सन्दीप सिंह की आक्रामक तथा मनोज सिंह की रक्षात्मक बल्लेबाजी ने उन्हें एक सुरक्षित स्थिति की ओर अग्रसर कर दिया। लेकिन ऐन मौके पर हमारे स्पिनर गेंदबाजों ने अपना कमाल दिखाया जिसके परिणाम स्वरूप संतमाइकेल की टीम निर्धारित चालीस ओवरों में नौ विकेट के नुकसान पर मात्र एक सौ सत्तावन (११७) रन बना सकी।

और इस प्रकार हमलोगों ने विजय श्री प्राप्त की।

अन्तिम रन संख्या कुछ इस प्रकार थी:—संतजेवियर : ४० ओवरों में १६६ रन (संजय चौधरी : ४५, फैज करीम : ३८, विजय स्वरूप : ३०) संत माइकेल : ४०

- 13-1-79, Ex-Xaverians vs St Xavier's : SXAA 43 all out, St. X 48
Saba Karim scored 18 runs and Sanjay Jamuar 12. A took 5 wkts in 3 overs.
- 28-1-79, St Xavier's 9A vs Patliputra 10 : St X 45 all out, Pat 45 for 3. Balaji took 2 wkts. Niten Chandra and Ravi scored the highest, 5 runs each.
- 3-2-79, Panthers vs Lions : Panthers 110 all out, Lions 53
Sanjeev Srivastava (Panth) scored 30 runs, Santosh (Panth) took 5 wkts in 3 overs.
- 3-2-79, Tigers vs Leopards : Tigers 88 all out, Leopards 17
Shishir Ranjan (Tig) 20 runs; Sanjay Choudhary (Tig) for 1 run.
- 10-2-79, XPTA vs St Xavier's : XPTA 55 all out, St Xavier's out. Faiz Karim scored 25 runs, Ajay Jha 23. The latter 4 wkts including a hat trick.
- 17-2-79, Panthers vs Leopards : Panthers 146 for 7, Leopards 18
out. Somnath Sen (Panth) scored 40 runs, and Ajay Jha scored 18 runs.
- 18-2-79, St. Xavier's vs St Michael's : SX 166 for 9, SM 159
Sanjay Choudhary scored 45 runs, Faiz 38, and Vijay S 30.
- 5-4-79, Lions vs Tigers : Lions 99 all out, Tigers 100 for 3. Saba (Lions) 41 runs, Faiz Karim (Tig) 5 wkts for 25 runs, S Ranjan (Tig) 23 runs.
- 8-4-79, FR. CLEARY CRICKET CUP: Tigers vs Panthers: Pa all out for 66 (Somnath Sen and Sanjeev Srivastava 1 each, Faiz Karim 5 for 11); Tigers 70 for 2 wkts (Jamuar 30, Varun Kumar 14, Somnath Sen 2 wkts for 1
- Compiled by Nalin Chand:

T. T. Tournament Goes Into Last Round

A mere fourteen hopefuls took part in this year's tournament. The organiser is Hemant Bahri, who in an earlier tournament became the sub-juniors champion of Bihar.

Both the singles and games in the Junior Division been played and the results follows: SINGLES: Satish is champion and Satyajit the runner-up. DOUBLES Kumar and Satyajit Sahay Sanjiv Shankar and Avinas

In the Senior Division, we have news only of the games. The champions a Saraf and Akash Rukhai defeated Hemant Bahri kash Rukhaiyar-

ओवरों की समाप्ति पर नौ विकेट खोकर ११७ रन (सन्दीप सिंह : ५६ रन, संजय चौधरी : ६० रन देकर ४ विकेट)

संजय जमुआर, दशम् 'अ'

New Officers for an Old Council

January 19th dawned on our eyes and 299 SC voters alone knew how the day would end for the Student Council. Or perhaps they did not know. Perhaps not all the campaign speeches were over, were the voters able to make up their mind.

One thing we noticed was that the candidates had to declare themselves earlier this year. They could also use posters for the first time. Even if the posters didn't give us much information, they were a beautiful exercise in design and all the painters deserve a pat on the back.

The closest contest was between Prashant and Shashank, rivals for the presidency. From this duel Prashant emerged the winner and as the new president of the Student Council he will have the task of inspiring and organising us in a number of important activities. The other elected members are: Sudhir Sriff (Secretary), Bipin Kumar (Vice-president), and Yuvraj Suri (Asst. Secretary).

CAMPAIGN

SPEECHES



In this photo Prashant answers one of the many questions fired at the candidates during the afternoon of the Student Council elections.

—हमारी हार्दिक सहानुभूति—

□ काल के क्रूर हाथों से न जाने कितने मनुष्य असमय ही काल कलवित हो जाते हैं ! इसी का शिकार विद्यालय के हिन्दी शिक्षक डा. सर्वदेव मिश्र की आदरणीय माता हुई। जीवन के १०० वसंत देखने के उपरान्त यह संसार शायद उन्हें भा न सका और २३ दिसम्बर १९७८ को वे सदा-सदा के लिए इस संसार से विदा हो गईं। मृत्यु के कुछ समय पूर्व तक वे काफी स्वस्थ और हँसमुख थीं, पर नियति को तो कुछ और ही मंजूर था। ईश्वर से हम सबों की यही प्रार्थना रहेगी कि स्वर्ग में उन्हें सुख और शांति मिले।

Senior Badminton Concluded

Some warm discussions regarding the fixtures brought summer on a little early, but all the same the badminton tournament came to a successful end for the seniors.

Sanjay Sinha defeated Udit Prasad for the singles championship. Later Sharique Habibi and Sanjay Sinha defeated Hemant Bahri and Mohit Ahluwalia to take the doubles crown. Results of the junior rounds are pending.

□ मृत्यु की असामयिक पाश ने विद्यालय के छात्र अतुल कुमार शाह के पिता को भी अपने पास से बचने नहीं दिया और अतः उसकी विभिन्निका ने स्वर्गीय श्री आर. एल. शाह की जीवन लीला समाप्त कर दी। उनकी मृत्यु २० जनवरी १९७९ को स्थानीय कुर्जी अस्पताल में एक लंबे अरसे तक बीमार रहने के बाद हो गई। उनकी मृत्यु से केवल उनके परिवार को ही नहीं वरन् विद्यालय समाज को भी एक जबरदस्त धक्का लगा है जिसकी क्षति-पूर्ति शायद असंभव है ! ईश्वर से विद्यालय समाज की यही प्रार्थना रहेगी कि ईश्वर उन्हें स्वर्ग में शांति और सुख प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को इस मृत्यु को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

राजन ठाकुर, दशम् 'अ'

BASKETBALL SCORES

(Inter-Class Tournament)

16.1.79	5B (10)	VS	5A (8)
17.1.79	6B (32)	VS	6A (12)
24.1.79	7A (22)	VS	7B (20)
29.1.79	8B (18)	VS	8A (12)
16.2.79	9B (23)	VS	9A (11)
28.2.79	Best: 10 (23)	VS	9 (12)
7.3.79	Best: 9 (20)	VS	8 (11)
8.3.79	Best: 7 (33)	VS	6 (6)
3.4.79	Best: 6 (20)	VS	5 (6)

Junior Handball

This year's tournament has been organised by Vivek Narain, Subodh

Kumar and Salimullah. Considering the large number of players in the tournament, the courts were in constant use during the noon break and after 3:35.

Games in the Junior Division have been completed. The singles champion is Kamal Prakash (6A) and the runner-up Barun Kumar (8A).

The senior results will be printed in our next issue.

—March 3— For Painters Only

School painters of every size and description met at St. Xavier's on Saturday, March 3, and made the Ninth All-Patna Painting Competition a big success.

This year's competition was co-sponsored by Bajaj Electricals Ltd. and the Xavier Fine Arts Club. Over 900 boys and girls from 25 different schools in Patna participated. The Bajaj officials worked extra hard to advertise the event and to give it a professional touch.

The painters were given an hour and a half to create something beautiful. Afterwards there was a chance to relax and watch a film called "Tarzan Safari".

Among the many prizes given away by the chief guest, Shri Thakur Prasad, Minister for Higher Education, were two prizes for the best artist—one presented by Bajaj Electricals and the other by the XPTA. The latter is fittingly called the "Fr. Scaria Medal" and is meant to be an annual award. The Dr. S. Sen Memorial Shield is given to the school with the highest aggregate and St. Xavier's was the lucky recipient this year.

Group A

- I Anunaya Chaubey (St. Michael's)
- II Sanjay Ojha (Loyola)
- III Urvashi Mala (St. Joseph's)

Group B

- I Ashok Bhaskar Pandey (St. X)
- II Ambuj N. Choubey (St. X)
- III Sangeeta Paul (Carmel H. S.)

Group C

- I Anil Kumar (St. X)
- II Ranjeet Kumar (St. X)
- III Manjata Jain (Carmel Primary)

Group D

- I Anupam Majumdar (St. Joseph's)
 - II Jayant Kumar (St. X)
 - III Mona Gupta (Notre Dame)
- Best Artist: Anupam Majumdar

One Day For Our Republic

Man has such limited power. His life is full of ups and downs. He rises to the top of glory and sometimes is in the depth of sorrow. Sometimes he plays with diamonds, and at other times does not get a piece of bread to eat. Always he applies his little strength and intellect and fights against the odds. He succeeds but sometime fails. And when he fails he becomes restless and conscious that he needs more power. It is then that he prays to the Almighty who is all-powerful and all-knowing. As Bunyan describes it, "Prayer is a sincere, sensible affectionate pouring out of the soul to God."

On January 26 we came together and prayed in the auditorium. The boys of Std 9 prepared a service for all those of Std. 7 and above. Gandhiji's devoted life of service was recalled. A few bhajans helped us to pray better. Some boys took it more as a programme than as a prayer service. The clapping after



Mr. Umesh Jha and Mr. Remy Osta enjoy a chuckle as they watch boys dash for chairs in the musical-cycle-race.

different speeches was out of place. In this respect the second service for Stds 1 to 6 was more successful. There was less talking and you could see a better attitude of prayer. Well, we can learn from our mistakes. And, for sure, God deserves our best efforts when we take time out to talk to Him.

Sudhir Saraff, 10A



Plenty of brawn, grit, and encouragement helped the Leopards overcome the Lions in the tug-of-war on sports day.

Xavier Cricketers Win Renown in Ranchi

It all started in mid-November. Xavierians were selected as members of the Patna District team which won the Inter-District trophy in Ranchi after matches played between Nov. 25th-Dec. 2. Skillfully coached by Mr. Adhikari, our Xavierians gave a good account of themselves.

Syed Faiz Karim was especially impressive and will captain the team in the Cooch Behar Trophy series to be played at Guwahati. Sanjay Choudhury and

Ajay Jha have also gained berths on this team. They will contend first with Assam (Dec. 7-9) and, if they win, will go on to meet Bengal. Meanwhile the other half of our "famous six" are looking forward to the important "Under 15 School Boys Tournament" which will be held in Calcutta in late January. This list includes Syed Saba Karim, Santosh Tripathi, and Amikar Dayal. SX corridors are buzzing with congratulations. They are well deserved.

Xavier Life



Vol. 28 No. 2 ST. XAVIER'S, PATNA 7 December, 1979

Drama Shield Returns to Xavier

Xavier dramatists are back on their feet again and they proved it to the hilt on September 27 at the Bharatiya Nritya Kala Mandir. Their entry of "Vidambana" in the Hindi section of the All-Patna One-Act Play Festival received the Best Play Award. It was a moment of great joy for the cast, their director Mr. S. D. Mishra, and all young and old Xavierians in the audience.

For his excellent portrayal of the role of Rajan in the play, Prashant was given the Best Actor prize in the Hindi division.

Kanchan Sinha entered into a difficult role and portrayed Pushpa

(the wife of Rajan) in a convincing way. Sushil Kumar could have easily been mistaken for a battered old Colonel. Prakash Rukhaiyar and Faiz Karim had supporting roles.

Backstage, Mr. Shyama Prasad did a masterful job in the makeup department, aided by Mrs. Ira Sinha; and Mr. Paul Osta made sure the tape recorder and sound effects were in perfect order. A considerable amount of practice and hard work went into the play and it was an experience which the cast particularly will long remember.

□ Ajay Maitin X A.

Democ. Weighed on the Scales

What could be more democratic than a free-wheeling debate about the pros and cons of democracy? While you are thinking up an answer to that puzzler, we will pass on the results of the Intramural English Debate which was conducted in two sessions on Oct. 31.

"Mr. Chairman, Sir, democracy is ruining India." So argued the affirmative teams as one reason after another was taken down from their shelf. The judges were convinced by the Lions most of all. That team consisted of Mohit Ahluwalia, Abhas Jha, and Shashank Priya. The Tigers, Panthers, and Leopards followed in that order. Best speaker awards went to Abhas Jha (Lions) and Prashant (Panthers).

By the way, the answer to our opening question is: "Two free-wheeling debates..."

A Prize for the Best Disguise

November 14, Children's Day. One by one they come down the front steps and perform...witches, newlyweds, sheikhs, panwallas, knitting teachers, even Hanuman and not-so-little Red Riding Hood. What an array of characters! Congratulations to all and to the many make-up artists behind the scenes. Here are some of the prize winners (those who scored Firsts): Anup Bhawnani (1A), Sumit (1B), Amitabh Pandey (2A), Manish K. Jaiswal (2B), Rajesh Pd. & Party (3A), Kumar Sunil (3B), Chetanand Singh & Asit (4A), Subhojit and Biswadeep (4B), Rishi Madan (5A), Sanjay Jhunjhunwala (5B), Kamal Prakash (6A), Rakesh and Haider (6B), Vivek Luthra (9A).

□ Kanchan Sinha, 9A

Crisp autumn November days are back again. And perhaps nowhere are they relished more than on our Xavier campus. What joy just to sit in the sun and talk to friends. To swing and bang away on the cricket pitch. The body comes alive and lungs breathe deeply the fresh beautiful air.

A glance around our campus shows that November is the time for wrapping up and the time for getting started. By two's and three's boys are out revising their sums, their physics, their grammar, and what not.

editorial

THE FOND FAREWELL... WHO WILL POSTPONE IT?

The need is acute, but how easily come the distractions. There's that "Registration" sign leading folks into the Music Room. There's the sight of hundreds of proud and hopeful parents swarming about the campus with their tiny sons. They file into the big forbidding Hall--some smiling, some tearful

It is the beginning of the great solo flight. We all faced it once. Doting parents would go in and sit alongside and help with the tough ones. But no. It is the time of sifting. Some--all too few--will emerge triumphant. Call them the future Xaverians, call them the fortunate ones. They have many happy times to look forward to.

We who read these lines know the corridors of Xavier well. Perhaps too well. Today we are reminded by the hundreds of tiny tots seeking entrance that we have a real treasure on this campus. What that treasure is cannot be spelled out in one easy sentence. Some would call it discipline, some would call it academic excellence. But we, the Senior Class of 1979, know it is infinitely more than that. The treasure we have mined these past ten years is something intangible, something of the heart, and definitely something meant to be shared with others.

We have a feeling that we must invest this treasure, not bury it. Only in this way will we be true to our Alma Mater and spend ourselves "for God and Country". With deep feelings of regard for our school and our teachers and our parents who brought us here, we prepare to take our leave from this beloved campus. The years have taught us so many things, especially how to be grateful.

We are that.

□ Shashank Priya

दलों में 'विवाद'

"गैर-सरकारी विद्यालयों का सरकारीकरण किया जाए"—आखिर यह विवाद-स्पंद विषय संत जेवियर के छात्रों में भी विवाद खड़ा कर ही गया। यह 'घटना' १८ अक्टूबर की है जब दो विभिन्न स्थानों (ऑडिटोरियम और थियेटर हॉल) में प्रत्येक 'हाउस' से चार-चार छात्रों का दल एक-दूसरे से तर्क-वितर्क करने को एकत्र हुआ।

जी ! यह और कुछ नहीं बल्कि हमारे वार्षिक हिन्दी-वाद-विवाद-प्रतियोगिता है जिसमें प्रज्ञान, ठाकुर विकास, नीलाञ्जन चटर्जी और सोमनाथ सेन से बनी पैन्यस की टीम विजयी रही। पक्ष और विपक्ष दल के सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में क्रमशः प्रज्ञान और शशांक पुरस्कृत किये गए। अन्य दलों में द्वितीय स्थान लायन्स को प्राप्त हुआ जबकि टाइगर्स और लेपर्ड्स क्रमशः तृतीय व चतुर्थ स्थान पर रहे।

English Elocution

Two separate English Elocution programmes were conducted during this term. The Primary boys (Stds I-IV) appeared first and the following gave outstanding performances : Std. I : Sumit Shaw (1st), Ranjit Chandra (2nd), Vipul Raj (3rd); Std. II : Manish Kumar Jaiswal (1st), Sumit Ranjan (2nd), Minoy Kuruvilla (3rd); Std. III : Ashish Mehrotra (1st), Kartik Kumar (2nd), Asit Ranjan and Amit Ranjan (3rd); Std. IV : Biswadeep Bose (1st), Vivek Tiwari (2nd), Ravi Joseph Pinto and Tauseefudin Ashraf (3rd).

The senior contest took place on October 16 during the early hours of the afternoon. The piece

(Continued on Page 6)

Dear Editor,

In your previous editorial you talked about a "science wave" all around us. But I have observed just the opposite. We have things like the All-Patna Drawing Competition and the All-Patna Music Competition every year. But I can't remember us organising any large scale Science Exhibition. Even the Electronics Club (which started with so much enthusiasm) is almost dead. Could we not have a science exhibit in the near future?

Sincerely

Thakur Vikas Sinha, 10A

Ed. Note: You'll agree, no doubt, that competitions and exhibits are only one yardstick by which to measure student interest. A Xavier "science wave" is possible without an exhibition, or even an electronics club. And I say it's not only possible but really exists. Ask your friends. Check your own homework routine.

Dear Editor,

I would like to suggest something regarding our school debates. The debaters are judged and marks are given, but they themselves have no knowledge about why they are judged best or second best. I would like to suggest that the participants be told how many marks they scored. In this way they can become aware of the shortcomings in their speeches. Further, they should be guided in ways of improving their debate style.

Sincerely,

Yuvraj Suri, 9A

Ed. Note: It's good to hear from a debater who is keen to improve his style. As a start, take up again your cyclostyled notes "Debating---what it's all about."

Our friends write

These notes explain a lot and also encourage you to ask the judges afterwards for their frank impressions.

एक अच्छा सुझाव

विद्यालय में सभी चीजों की अच्छी व्यवस्था के बावजूद एक बात आँखों में खटकती है—वह है 'वेबी-फील्ड' में विद्युत-घंटी का अभाव।

इसके नहीं होने के कारण वहाँ खेलते बच्चों को प्रायः समय का ध्यान नहीं रह पाता और फलस्वरूप वे कक्षा में कई बार देर से पहुँचते हैं। इस प्रकार अपनी ओर से कोई गलती न करने पर भी उन्हें मुफ्त में दंड भी झेलना पड़ता है और पढ़ाई में भी हानी उठानी पड़ती है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से मैं विद्यालय-अधिकारियों से यह निवेदन करूँगा कि वे शीघ्रताशीघ्र 'वेबी-फील्ड' में भी एक विद्युत-घंटी का प्रबंध कर दें।

धन्यवाद,

□ घमोन्द्र कुमार, दशम् 'अ'

WE OFFER our prayers and sympathy to Mr. Remy Osta whose father, Mr. Raphael Osta passed away in Bettiah on Nov. 25. He was hard-working and much beloved, not only by his family but by his neighbours and the whole town. May the Lord grant him peace and eternal rest.

Rajesh Sinha '75

Friends of Rajesh and all Xaverians were deeply saddened to hear of his sudden death in Delhi on 20th Oct.

Rajesh belonged to the 1975 batch and was in the last group to sit for the AIHS exam. He was House Captain of the Leopards and an avid cricketer. He was declared best batsman and fielder of the school team for 1975.

We offer our sympathy and prayers to his bereaved Mother and all the family members.

FAREWELL TO MR SEBASTIAN

Friend of small boys, director of Sports Days, and ever-ready substitute wherever he was needed... that was Mr. A. V. Sebastian, who has been with us for the past nine years. Fortunately for him (unfortunately for us) he got married on May 3 to a lovely lady named Leclamma. Together they will now set up house in the Bronx, New York. We wish them a future full of happiness and success!

B. M. P. Boys Club vs St. X

As if to give Mr. A. V. Sebastian a farewell present that would delight his heart, Xavier's basketball team swept past the B. M. P. Boys Club on October 19th by a score of 71-21. SX's second and third team players got ample chance to play. The future looks as bright as the present on the basketball court.

Junior Badminton

The results of the Junior Badminton Tourney (promised in the previous number of XL) are as follows:

SINGLES: Akash Rukhaiyar (Winner) and Amikar Dayal (Runner-up); **DOUBLES:** Rajiv Rai and Akash Rukhaiyar (Winners) and Chandan Sinha & Amikar Dayal (Runners-up).

Mrs. U-Vee

Xavier Profile

"Har khushi ho wahan, tu jahan bhi rahe..." That famous song from "Upkar" is her favourite. She likes it the best of all. But who is this SHE?

Well, you must have seen her around the classrooms!

She is a class teacher, very good in English, and...you say you still can't guess this famous personality? All right, then, one more clue which will make it as easy as falling off a log: This SHE is lucky to have her own sister also on the staff.

Aha, now you have it! It's none other than Mrs. U-Vee.

Quiz Contests

Thanks to the lead and interest shown by the General Knowledge Club, more boys are memorizing more facts than ever before.

During the recent term this knowledge was tested on four different occasions.

Nearly a hundred boys sat for the 22nd All India United Schools Information Test on 31 August.

The All-Patna One-Act Play & Cultural Society sponsored a Quiz Contest at our campus on August

Staff Room

With our direct telephone hookup to the Staff Room, XL is able to pass on the following news: Mrs. Teresa Gilbert and Mrs. Brett are the proud mothers of new sons. Mrs. Brett, by the way, began teaching here in July and is the class teacher of 4A.

Br. Philip Cheruthuruthy, S. J. has been replaced by Br. V. A. Swamy, S. J. in the Science and Character departments. Br. Philip endeared himself to his students by giving them a lot of personal attention. He has gone on to Delhi.

Teen-Can Alley Gets a New Look

There's an old saying which claims that "An army marches on its stomach." Ridiculous? Not at all. It means that only an army which feeds its soldiers well can hope to march ahead and win the war.

Was it this saying which prompted the XPTA to go all out and refurbish our Xavier Canteen? No doubt about it, it has become a new and very inviting room. The T. T. tables have been shifted to the old Xavier Hall. All around the room cement stand-up tables have been constructed. A screen divides the eating room from the cooking area. And in the screen there is an efficient serving counter. The walls have been whitewashed. Bring on the samosas!

Intramural Basketball

Basketball fans surrounded the court on Oct. 24th in order to see once and for all whose team was best. It was Lions vs Panthers. By half-time the Lions were out front 23-18 and most of the fans took it for granted that the gap would increase. Instead, the Panthers came

alive, tied the score, and would not let go of the surprised Lions. When the final whistle blew, it was Lions (43) and Panthers (42). A great Victory for the team of Mohit. But the Panthers made them really work for it.

Leopards Capture Junior B. B. Title

As soon as the Senior Basketball Tourney was over, the Juniors (Stds 5-7) were ready and raring to go. The first game of the round-robin series was played on Nov. 5. Br. V. A. Swamy planned and organised the tourney in a very efficient way. Senior players were seen toting whistles and keeping track of the scorebook. Fair weather and the interest of the players (not to mention the organiser) made possible a second round of games. The tournament concluded on Nov. 21 with a well-played match between the Leopards and Panthers. The Leopards made it a perfect season by winning 42-23. In this exuberant state they went on to challenge "The Rest" on Nov. 23 and won decisively by a score of 34-16.

A look at the HOUSE POINTS for the year 1979



	1535	1583	1531	1538
Weekly Tests	399	392	400	384
March Past	0	1	3	5
Hindi Debate	0	3	5	1
English Debate	6	9	4	17
Music Programme	6	8	8	26
Table Tennis	6	1	8	6
Basketball	2	0	4	6
Football	0	6	16	21
Handball	8	10	24	6
Badminton	3	1	5	0
Quiz Contest	0	5	0	0
Drama	5	45	50	38
Swimming	3	5	3	13
Chess				
GRAND TOTAL	1973	2069	2061	2061

Alumni on the March

On July 15th the '78 batch were invited back to the campus and were treated to a high-tea by the Xavier Parent Teacher Association. The boys were congratulated for their fine performance in the Bihar State Exam (61 firsts; 10 seconds). They have the distinction of being the largest class ever to pass out from the school.

Syed Jawaid Haider topped his classmates with an aggregate of 768 out of 970. He was given the 'Fr. Marshall D. Moran Award for Excellence in Studies' and enrolled as a life member in the St. Xavier Alumni Association.

Sanjay Bose, Arshad Moquim, Deepak Thakur and Amaresh Kumar, are a few of those enrolled at Science College. Three have joined BHU, two have leap d as far as Chandigarh, and one has entered the plus-two programme at St. Michael's.

While wishing every member of the '78 batch success, we pray that they keep alive the good things they learned at St. X and be ever true to their Alma Mater.

English Elocution

(Continued from Page 2)

were well practiced and some visitors were heard commenting that the standard of spoken English was "surprisingly high". Credit for this goes to many teachers, not least to Mrs. H. G. Sharma whose classes in phonetics are very popular and very formative in the junior and middle school.

Prize Winners : Juniors : Sunit Chandra (1st), Shyamal Gupta (2nd), Rajesh Sahni (3rd) Inters : Abhas Jha (1st), Braj K. Mishra (2nd), Kaushik Talapatra (3rd); Seniors : Thakur Vikas Sinha (1st), Krishna Kumar Sinha (2nd), and Somnath Sen (3rd).

विनीत पुष्पांजलि

दिनकर की भाँति प्रकाशमान शिक्षक तथा उनकी आभा से आलोकित छात्र ! इस अद्भुत प्रकाश पुंज का अद्भुत संगम पवित्र सितम्बर के दिन विद्यालय के हॉल में हुआ। शिक्षक-दिवस के उपलक्ष्य में संत जेवियर के छात्र, शिक्षक समुदाय के प्रति सम्मान एवम् श्रद्धा व्यक्त करने एकत्र हुए थे।

मनोरंजन के साधनों की विद्यार्थियों ने अपनी श्रद्धा का द्योतक मान उस दोपहर को चिरस्मरणीय बना दिया। कनिष्ठ कक्षा के बाल्य-मुखों द्वारा प्रस्तुत गीत व भजन बड़े ही कर्णप्रिय रहे। अगर तबला व 'गीटार' जैसे वाद्ययंत्रों पर कुछ छात्रों ने अपना कौशल दिखाया तो अन्य ने अपने गायन प्रतिभा से ही श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। मो० आरिफ, दीपक मनबन्दा तथा अनिरुद्ध मुखर्जी के गीतों एवं गजलों ने तो सबों पर जादू ही चला दिया। नवम् 'ब' के संजय पांडे ने अपने खट्टे-मीठे चुटकुलों द्वारा सर्वत्र हँसी की लहर फैला दी। अततः डा० सर्वदेव मिश्र के एक ज्ञानवद्धक भाषण के साथ यह सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात् छात्रों व शिक्षकों के बीच आयोजित 'फुटबॉल मैच' भी काफी मनोरंजक व रोमांचक रहा। एक-एक गोल कर दोनों दल अन्ततः बराबर ही रहे।

□ सजय जमुआर, दशम् 'अ'

Xavier Profile

(Continued from Page 4)

her brother. They are lovable and take up a lot of her time at home, a new one, by the way, in New Patliputra Colony. Mrs. Uma ordinarily comes to school by rickshaw (though she has got a new scooter!)

Reflecting on her husband, she has plenty to say in praise of him. She describes him as quite an informal person, affable, and in the habit of often bringing his friends home for snacks or dinner. After hearing this, I was tempted to drop the question about how she spent her leisure, but I ventured forth anyway, prepared to dodge any flying missiles.

She answered with a chuckle : "Sooner or later you reporters always get around to the topic of leisure. Well, some of the things I enjoy in off-hours are cooking and reading novels—especially Mills & Boons. Then there are movies, mainly Hindi ones, which my husband adores!"

Recalling her primary days, she said with a sigh, "Those were the days—the sunny days—which I'll never forget. How I loved to sing." Today she frequently attends cultural programmes and musical concerts.

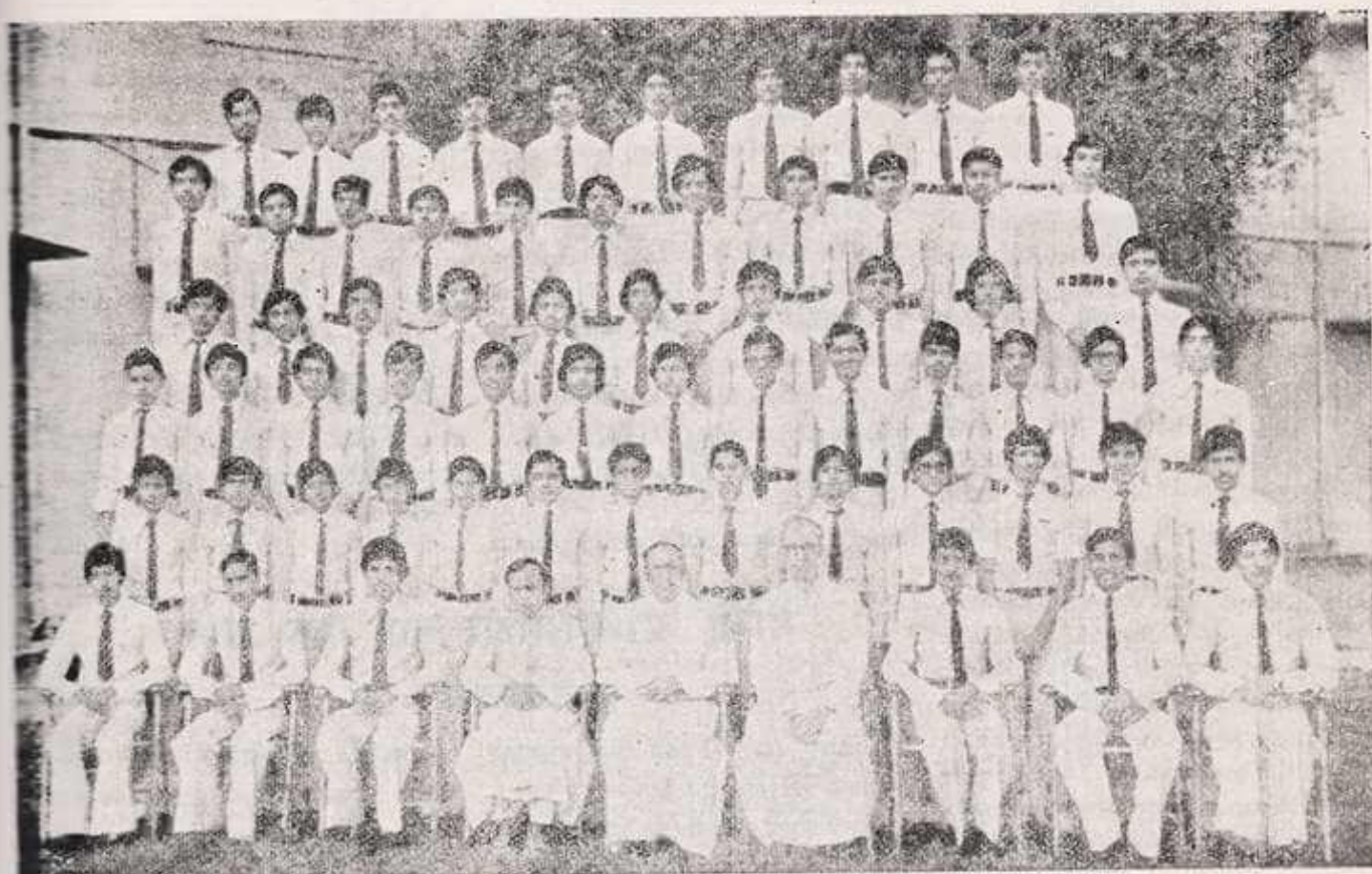
(Continued on Page 8)

विजय : एक फिसलती मछली

१० मई को खेला गया बी० बी० यादव क्रिकेट का निर्णायक मैच एक तरह से गत वर्ष का पुनरावृत्ति रहा। पटना हाई स्कूल के हाथों हमें एक बार फिर हार का मुंह देखना पड़ा। पटना हाई स्कूल के ११८ रनों के जवाब में संत जेवियर १०३ रन बना पुनः दूसरे स्थान पर रहा।

इस मैच के पश्चात् १ जून को संत जेवियर दूसरी बार पटना हाई स्कूल से लोहा लेने को पटना कॉलेज मैदान पहुँचा।

परन्तु आश्चर्यजनक बात यह रही कि विपक्षी दल का एक भी खिलाड़ी मैदान में दृष्टि-गोचर नहीं हुआ। अतः नियमानुसार तो संत जेवियर को ही विजयी घोषित करना चाहिए था। लेकिन इस विषय पर पत्र-व्यवहार करने के बाद भी पी० डी० सी० ए० के अधिकारियों की चुप्पी आज तक विराजमान है। न जाने विजयी दल की घोषणा करने के लिए वे किस मुहूर्त का इन्तजार कर रहे हैं ! □ शशांक प्रिय



Class of 1979

TOP ROW : (Left to right) Nalin Chandra, Nilanjan Chatterjee, Chandra S. Bahri, Partha Ray, Vinay Kumar, Prashant, Sanjay Januar, Anil Jha, Pravin Raghavendra, Devesh H. Lall.

FIFTH ROW : Amar K. Singh, Thakur Vikas Sinha, Sanjeev K. Sinha, Kailash K. Agarwal, Laxmi N. Mishra, Sanjay Choudhary, Krishna K. Sinha, Sanjay Kumar, Arun Kumar, Vivek Narain, Sumantra Sircar.

FOURTH ROW : Samir Rohatgi, Indrajeet Singh, Sanjay Agarwal, Ajay Maitin, Jitendra Kumar, Ratan K. Saraf, Md. Sharique Habibi, Atul Aditya Pandey, Md. Arif, Akhil Narayan.

THIRD ROW : Rajiv Pd. Singh, Chandra S. Shimpri, Prasoon Kumar, Deepak Manchanda, Dharmnath Pandeya, Manikant Gupta, Kamal K. Bidsaria, Rajan Thakur, Salimullah, Sd. Khalid Moquim, Rashid Ahmed, Tariq Husain, Dharmendra Kumar.

SECOND ROW : Sanjeev Kumar, Abhijit Chowdhury, Pushpanshu, Jainendra Kashyap, Sanjay Prakash, Sanjay K. Agarwal, Afaq Ahmad, Pranavendra D. Sinha, Subodh Kumar, Ratan Jha, Mohit Ahluwalia, Rajat Sinha, Sudhir Saraff.

SEATED : Maharaj Singh, Shashank Priya, Prakash Pukhraj, Fr. John B. Thakur S. J., Fr. George Thana, S. J., Fr. Paul Faulstich, S. J., Amlan Gupta, Sanjay Sinha, Narayan K. Agarwal. Absent : Sushil Kumar.

Staff Room

(Continued from Page 4)

Raj Niwas Marg, Delhi 110054.

Fr. Mani Poovakot has been appointed Chaplain of the Christian boys and also Director of the programme for preparing neighbourhood boys to attend St. Xavier's. In July Fr. Paul Faulstich succeeded him as vice-principal.

Our teachers' annual picnic turned out to be double-the-fun. Halfway to Rajgir on Nov. 3 their chartered bus broke down. The spot was just 10 kilometres north of Bihar Sharif. The rest of the journey was made on the back of a lorry which took them to the mission school in Bihar Sharif, where they set about preparing their picnic lunch. Meanwhile a small band of noble volunteers stayed with the bus and eventually brought it limping into town behind a hired tractor. As partial reparation for all this 'tamasha', the tourist company offered another bus on Nov. 17. Happy to report, this time they reached Rajgir!

Our jovial Principal, Fr. George Thana, forgot to mention in assembly on Nov. 16 that it was his birthday. Immediately afterwards, though, he was reminded of what an important day it was as dozens of small tikes brought him hand-crafted birthday cards and expressed their affection. The staff greeted him during the first morning break and at 12:30 all were treated to the exciting Hindi film "Ram Bharose".

Great News

As this issue of XL was on the way to the printer we just happened to hear about it—the news that Fr. G. P. Grace, S. J. will be joining our school staff in January. For many years he was stationed at St. Xavier's School in Jaipur, serving both as Rector and teacher in the senior school. We welcome him to our campus!

A Vanishing Species ?

swimmers at xavier

According to Oxford, a festival is a "celebration, a time for merry-making." On August 18 we had our 26th Annual Water Festival at Xavier. Truly it was a festival for all those who took part. The weather was perfect, and arrangements all up to the mark. But where were the swimmers? For some obscure reason the number of entries was down this year. Especially in the sub-juniors and inters group. Surely this is an area, an important

sport, where we need to improve and train more rigorously.

Some highlights of the festival: By virtue of his swift breast-stroke and free-style performance, Mohit Ahluwalia was declared the champion of the Senior Group. Kumar Rajay Sinha, bagging First in breast-stroke and butterfly, was the Junior champion. In the 25 metre free-style for Sub-Junior boys, Ashwini Sinha of the Tigers came first. □ Nalin Chandra, 10A

भावी अभिनेताओं की एक झाँकी —संतजेवियर में—

म्यारह अगस्त की शाम हमारे मस्तिष्क पर एक अविस्मरणीय छाप छोड़ गयी। विद्यालय-प्रांगण के मनोरंजन-कक्ष में आयोजित अन्तर्दलीय-एकांकी-प्रतियोगिता विद्यालय में छिपे अभिनय-प्रतिभाओं का एक सुन्दर गवाक्ष सिद्ध हुआ। चारों दलों द्वारा प्रस्तुत एकांकियों में टाइगर्स दल द्वारा प्रस्तुत हास्य-रस से सराबोर, 'रूपहला पर्दा' सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। इसमें अभिनय करने वाले कलाकार थे—प्रकाश खड्गार, संजय जमुआर, रजत सिन्हा, कुमार रजय और शिशिर राजन। अन्य प्रस्तुत एकांकी थे—लक्ष्मी का स्वागत (पैन्थर्स), अधिकार का रक्षक (लेपड्स) और वावर की ममता

(लायन्स)। एक सर्वदलीय सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार के स्वान पर प्रत्येक दल से एक सर्वश्रेष्ठ अभिनेता चुना गया। इस प्रकार चार सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे—टाइगर्स के प्रकाश खड्गार, लायन्स से मुशील कुमार पैन्थर्स से प्रज्ञान्त और लेपड्स से कृष्ण कुमार।

इन पुरस्कार विजेताओं के अलावा अन्य छात्रों का अभिनय भी उच्च-कोटि का रहा। आशा है आने वाले वर्षों में भी संत-जेवियर के छात्र अभिनय कला की दिशा में इसी तरह के अच्छे प्रदर्शन प्रस्तुत कर सकेंगे। □ अमर कुमार, दशम् 'अ'

Xavier Profile

(Continued from Page 6)

Speaking of her present assignment, she assured me that teaching small boys was a joy but, at the same time, was far tougher than teaching the big ones. Now there's a good debate topic for our teachers to start researching on!

Mrs. Uma is very frank and sincere. She endeavours to treat us like younger brothers and loves us

as her own children. She is human, of course. Sometimes she becomes angry and impatient with us when our work is sloppy, and especially when we don't tell the truth. This is not because she doesn't love us. It is the behaviour of a true friend. I hope we (I speak now for the seniors) will always remember her as such, no matter where we travel in future or what high posts we may attain.

□ Nilanjan Chatterjee, 10B

वाक्-चातुरी पर पुरस्कार

जीवन में वाक्-पटु होने का अपना ही एक विशेष महत्व है। अपनी भावनाओं को समुचित अभिव्यक्ति वचनों द्वारा ही सम्भव है। इसी दिशा में कुशल बनाने हेतु कनिष्ठ व वरिष्ठ दलों की अलग-अलग वाक्-पटुता प्रतियोगिता हर वर्ष होती है।

कनिष्ठ दल (कक्षा प्रथम से चतुर्थ) की प्रतियोगिता का आयोजन इस वर्ष ६ अगस्त को हुआ जिसमें विभिन्न वर्गों से पुरस्कार विजेताओं की सूची कुछ इस प्रकार रही:—

प्रथम कक्षा : सुमित अंसमन्द शा (प्रथम), संजीत चन्द्र और विकास कुमार (द्वितीय), अभिषेक कुमार (तृतीय)।

द्वितीय कक्षा : अमित सिन्हा (प्रथम), सुमित रन्जन (द्वितीय), मिनाय कुरुविला तथा ज्ञानेन्द्र पाण्डे (तृतीय)।

तृतीय कक्षा : कुमार सुनील (प्रथम), अमित रन्जन और राकेश कुमार लाल (द्वितीय), रीतेश रज्जु (तृतीय)।

चतुर्थ कक्षा : चेतनान्द सिंह (प्रथम), शाहनवाज खान (द्वितीय), तौसीफुद्दीन अशरफ और जॉर्ज सी० फीलिप (तृतीय)। वरिष्ठ दल (कक्षा : पंचम से दशम) द्वारा भाषण-कला का प्रदर्शन १० सितम्बर को हुआ। प्रतियोगिता

में गांधीय व हास्य रस का समावेश श्रोताओं के लिए काफी मनोरंजक सिद्ध हुआ। प्रतियोगिता-परिणाम कुछ इस प्रकार रहा:—

जूनियर : गौतम मोदी (प्रथम), सुनीत चन्द्र (द्वितीय), संजय ओ० नील शाँ (तृतीय)।

इन्टर्स : विनय सूद (प्रथम), ब्रजकिशोर मिश्र (द्वितीय), इन्द्र प्रताप और प्रणय सिन्हा (तृतीय)।

सीनियर्स : सुशील कुमार (प्रथम), नीलांजन चटर्जी (द्वितीय), अतुल आदित्य पांडे और सोमनाथ सेन (तृतीय)।

□ संजय जमुआर, दशम 'अ'

Senior Handball

True to our promise in Vol. 28, No. 1, we now give a full report on how the senior handball players finally fared.

Singles : Sanjay Sinha, 10A, scraped past Vivek Narain, 10B, to claim the crown.

Doubles : Vivek Narain and Subodh Kumar combined well to overpower Mohit Ahluwalia and Sumantra Sircar for the doubles award.

Vivek and Subodh were the hard-working organisers of the tournament. They deserve a special crown for this.

Better Show in Montfort Cup

One tournament we look forward to eagerly each year is the Montfort Cup Table Tennis Tournament conducted at Loyola High School. It is an example of fine organisation and planning. This means a lot when many different schools take part in a tournament. This year's finals were played on August 31st. The "TT Brothers" Prakash and Akash Rukhaiyar represented St. Xavier's. They played hard but finally bowed to a superior pair from Raja R. M. Roy Seminary. Last year we made it to the semi-finals, this year to finals, so there seems to be no doubt about next year!

HOW VALID THE 4-WAY TEST ?

The Rotary Club of Patliputra invited us to the Hotel Maurya Clarks on July 20 in order to debate with other schools a topic dear to their heart: "Is the four-way test of Rotary a convenient way of judging all our thoughts, words, and deeds?"

Seniors Prashant and Thakur Vikas Sinha were the Xavier spokesmen. Notre Dame walked off with the best team award. Sapna Nangia figured as best speaker. Prashant, speaking against the motion, secured an honourable second.

FORMER TEACHER : 50 Golden Years

On August 15 a special Mass was held in our auditorium and Fr. George Ziebert was honoured in a golden way. This year Fr. Ziebert celebrates his 50th year as a Jesuit. For many years he taught English and Character at St. Xavier's and introduced hundreds of boys to the joy of good reading in the library. He left St. Xavier's in 1972, but has frequently returned for brief visits in the meantime. We offer him our sincere congratulations and best wishes!

Time Out for a Picnic

There's no better time for a picnic than the month of November. For further details, talk it over with the boys of 4 A & B who, guided by Mrs. Ira Sinha, spent a delightful Saturday at the Botanical Gardens on Nov. 10.

And they were just preparing the way for 3 A & B who went to the same garden spot on Nov. 24. Miss Margaret Paul, Mrs. H. G. Sharma, and Mr. Shyama Prasad made sure that arrangements were near perfect.

Just Brothers Helping a Brother

The boy's name was Vipat Kumar. It stood for all of him, but that "all" was much less since his legs had been amputated by the doctors. Fr. Mani Poovakot visited him often at Holy Family Hospital and learned that the boy's parents were poor and unable to pay for the operation and all the medical treatment. Several kind people started coming to Vipat's rescue. At a meeting in July his condition was explained to all the members of the Student Council. Their hearts went out to him and they resolved to contribute Rs 501 towards his hospital and medical expenses. Truly, "A brother helping a brother is like a strong city."

संतजिवियर...प्रथम

विगत २० अप्रैल, ७९ को लायन्स क्लब, पाटलीपुत्र ने बाँकीपुर बल्ल के प्रांगण में "नशाबन्दी राष्ट्र के लिए लाभदायक है," विषय पर एक अन्तर-विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता में चार विद्यालय, संत जेवियर्स, संत जोसेफ्स, राम मोहन राय सेमिनरी तथा संत माईकेल के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने विद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में अनुल आदित्य पाण्डेय, दशम् 'ब' तथा कंचन सिन्हा, नवम् 'अ' थे।

परिणामस्वरूप, दलीय तौर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया संत जेवियर्स ने। व्यक्तिगत तौर पर सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित हुई संत जोसेफ्स की छात्रा नाहिद शीरी तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया संत जेवियर्स के अनुल आदित्य पाण्डेय ने।

आयोजन के मुख्य अतिथि थे पटना आकाशवाणी के निर्देशक। उन्होंने ही पुरस्कार वितरण तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्यारे डब्बा

सात बच्चों ने मिलकर,
पाला एक कुत्ता प्यारा।
नाम रखा डब्बा उसका,
स्नेह उड़ेला अपना सारा।
पढ़कर विद्यालय से जब लौटते,
सर्वप्रथम डब्बा की खोज करते।
एक दिन किस्मत का मारा,
डब्बा मर गया बेचारा।
लौट कर जब सातों घर आए,
अम्मी ने सोचा, "बिना बताए
कैसे रहा जाए?"
भोजन के वक्त अम्मी ने बताया,
कि डब्बा मर गया है।
प्यारी दुनियाँ को छोड़कर,
जन्नत को चला गया है।
खुश हुए सातों बच्चे, खाना खाए
चटपट,
खाना खाकर चल पड़े, खेलने
को झटपट।
पर वापस सातों बच्चे लौट आए,
और बताया अम्मी को,
'डब्बा मर गया, हाय!'

अम्मी ने कहा कि मैंने खाते वक्त
ही बताया था कि मर गया है डब्बा;
बेटों ने कहा कि तुम डब्बा बोली की
हमलोग समझ पड़े थे डब्बा।

फिल्मी गपशप

दो व्यक्तियों के बीच वार्तालाप हो रहा था।
पहले ने कहा, 'तुम्हारा नाम क्या है?'
'मुक्कदर का सिकन्दर,' दूसरे ने अकड़कर
कहा।

'कहाँ रहते हो?' पहले ने फिर पूछा
'झील के उस पार।'

'काम क्या करते हो?'

'चोरी मेरा काम।'

'कल तुम्हारे घर में कौन आया था?'

'चोर के घर चोर ही तो आते हैं।'

'झील के उस पार कहाँ रहते हो?'

'घरींदा में।'

'कल लड़ाई क्यों कर रहे थे?'

'खेल-खेल में।'

'तुम्हारे हाथ में क्या है?'

'शालीमार।' कहते हुए दोनों 'उड़न खटोला'

पर सवार होकर 'हावड़ा बृज' देखने गये।

□ क्षितिज मोहन, सप्तम् 'अ'

Oct. 8 : J. P. AT REST

Early on the morning of Oct. 8 our neighbour, our leader, our "nation's conscience", Jayaprakash Narayan, passed to his well-earned reward. On arrival at school we found the flag at half-mast and during assembly we had a special memorial service in his honour. Fr. J. B. Thakur, our Rector, addressed us and reminded us of J.P.'s immense contribution to our country. Mr. Kamal Das directed the singing of two bhajans, and Sudhir Saraff, 10A gave a fine speech in Hindi, paying tribute to the man who had stirred the hearts of so many young people.

Chess Finalists

Whether you play the game or watch it, you need patience. And lots of it. But eventually even chess tournaments come to an end. This year's finals took place on October 24, with Jainendra Kashyap, 10A, defeating Sumantra Sircar, 10B, to become the 1979 senior champion.

Among the Inters, Anjani Kumar, 8A, took First Place and Jamal Ahmad, 8B, was runner-up.

The Junior champion was Dwi-jendra Kumar Kashyap, 5B, and his close second was Rajesh Kumar, 5A.

Special thanks and acknowledgement are due to Kailash Agrawal and Jainendra Kashyap for organising and bringing the tournament to a successful end.

Xavier Life



Vol. 29 No. 1 ST. XAVIER'S, PATNA 17 May, 1980

NCC Finally Lands at Xavier

The NCC flight might be compared to a rocket trip into outer space. The distance is not measured in miles but in light-years. Present seniors will recall that the rocket was launched in XL's issue of Feb. 10, 1972 (page 4).

Now we are happy to report that flight NCC-SX-1980 has landed safely on the campus. A National Cadet Corps unit has been sanctioned for St. X and Mr. K. N. Pandey is making them work for their stripes.

The unit got organised on Jan. 16. The cadets come entirely from Class VIII. Parades and special classes are held regularly after school on Wednesday and Friday.

Of late each cadet has been issued a blue-gray uniform which includes an attractive belt, cap, and badge. As for fringe benefits, they have not been overlooked. After every session refreshments are served to the weary troops from the school canteen.

So far the unit has shown much promise. We are sure they can deliver the goods under the guidance of Mr. K. N. Pandey and the other officers who come here from the Headquarters in Rajendra Nagar.

—Kau-hik Talapatra, SA

क्रिकेट : ऊँचाइयों के शिखर पर

१३ अप्रैल को अभियांत्रिकी महाविद्यालय के क्रीड़ा स्थल पर संत जेवियर और राम मोहन राय सेमीनरी के बीच २० वी० यादव अन्तर्विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल मैच संपन्न हुआ।

सेमीनरी टीम के कप्तान ने टॉस जीता और संत जेवियर को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। सर्वप्रथम विजय स्वरूप

और अमीर दरवाल ने पानी की गुरुआन की ओर दशतपूर्वक संत जेवियर को बिना किसी अति के ७६ रन प्रदान किये। दोनों की व्यक्तिगत रन संख्या उनके आउट होने तक क्रमशः ३० एवं ३७ थी। इसके बाद "लिटिल मास्टर" साबा कलीम ने आकर अपनी सशक्त एवं श्लाघनीय बल्लेबाजी से (शेष पृष्ठ ५ पर)

Fr John Thakur Appointed Bishop of Muzaffarpur

The official announcement came on March 28: Our Xavier Rector, Fr. J B. Thakur, was appointed Bishop of the new Diocese of Muzaffarpur!

In the assembly the following morning Fr. George Thana conveyed the good news to all of us and explained that the appointment was made by Pope John Paul II.

The bishop's task or responsibility is to be the spiritual head of the



Catholic diocese entrusted to him. The Muzaffarpur Diocese includes 13 districts of Bihar (north of the Ganges). Formerly this area was part of the Patna Diocese. It has now been given independent status and the city of Muzaffarpur will be the centre of activity.

Since 1947 Bishop Augustine Wildermuth has been looking after the needs of the far-flung Diocese of Patna. After years of devoted work, he has now retired. In his place Fr. Benedict Osta has been appointed as the new Bishop of Patna.

(Continued on Page 4)

सम्राट् कीय

वर्तमान समाज—एक झलक

भिन्न-भिन्न अवसरों पर प्रगति की नवीन व्याख्याओं एवं संकल्पनाओं को सुनने का सौभाग्य हम सभी को प्राप्त हुआ है। पर 'प्रगति' के इस चोले के अन्दर का मानव कितना खोखला और अमानुषी है, इसपर हमने विचार नहीं किया।

समाचार पत्र एवं अन्य पत्रिकाओं में भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार जैसे शब्द निरन्तर प्रयुक्त हो रहे हैं। आये दिन हमें समाज के उच्चवर्ग द्वारा पददलितों पर पाशविक अत्याचार के समाचार सुनने को मिलते हैं। गरीबों की झोड़ियाँ स्वाहा कर दी जा रही हैं; हरिजनों को मरा-अधमरा आग में झोंक दिया जाता है; अबला नारियों की इज्जत लूट ली जाती है। गरीबों की जिदगी दो कौड़ी की भी नहीं। फादर मैथ्यू की क्रूर हत्या, पिपरा, दोहिया और पारस भीषा के अग्निकांड इन्हीं अमानुषी घटनाओं के चन्द उदाहरण हैं। पर मानव व्याघ्र की करुण कहानी का अन्त यही नहीं। यह तो स्वयं समाज और कानून के ठेकेदारों द्वारा पाली-पोसी जा रही है। नागरिकों के रक्षक ही आज भक्षक बने बैठे हैं।

आज हमारे समक्ष एक प्रश्न है—क्या इन सामाजिक बुराइयों को दूर नहीं किया जा सकता और क्या हम छात्र इसमें अवना योगदान नहीं दे सकते? क्या हम नहीं कर सकते इनका निर्मूलन? तो इसके लिये इनके मूल का अन्वेषण अवश्य है। हमारे आस-पास शिक्षक की अनुस्थिति में कक्षा में शोर-गुल क्यों होता है? उत्तर सीधा-सा है—“क्योंकि हम अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से नहीं समझते।”

समाज के सभी स्तर पर यही बात लागू है। मानव अपने कर्त्तव्य को नहीं समझता। दूसरे मानव के साथ उसका क्या कर्त्तव्य होना चाहिए, वह नहीं जानता। वह यह नहीं जानता कि मनुष्य मनुष्य के बीच समता एवं प्रेम का पारस्परिक सम्बन्ध नितान्त आवश्यक है।

यह तो समस्या का सामान्य रूप हुआ। अब हम छात्रों का इसमें क्या योगदान होना चाहिए? अपने क्षेत्र में अपने सम्पर्क के व्यक्तियों के संग भेद-भाव की भावना को त्याग हमें भी बराबरी एवं प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। आइए, हम और आप आज से अपनी ऊँच-नीच, भेद-भाव की पुरानी आदतों को तिलांजलि दे अपनी जिम्मेदारियों को समझें ताकि देश और समाज में शांति एवं व्यवस्था बनी रहे।

—कंचन सिन्हा

—ज्ञानेन्द्र हर्षवर्द्धन
(दशम् 'अ')

To Bettiah & Back

There is a shaded, modern, well-furnished basketball court in the heart of Bettiah and on March 14 Xaverians invaded it for the second time in the past three years.

The Baba McGlinchy Basketball Tournament was organised by Fr. Henry Rebello in

1978 to pay tribute to Fr. Vincent McGlinchy who was for many years the headmaster at St. Stanislaus Middle School.

This year's tournament drew teams from far-off places, such as St. Xavier's School (Kathmandu), and St. Michael's
(Continued on Page 4)

इन्टर-एक्ट—उद्देश्य एवं गतिविधि

शिक्षार्थी-वृन्द के हेतु इन्टर-एक्ट क्लब जिस नियमितता और दृढ़ निश्चय से सृजनात्मक कार्यों को करता आया है, उससे छात्र-समाज की अभिरुचि इसमें जाग गयी है—कम से कम इस बहुचर्चित संस्था के नाम से हमारे विद्यालय का कोई छात्र अपरिचित न होगा। परन्तु इस संस्था में अभिरुचि रखते हुए भी अधिकतर छात्र इसके उद्देश्य एवं गतिविधि से पूर्णरूपेण अवगत नहीं हैं। इस संस्था का उद्देश्य छात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों को सशक्त बनाकर उनकी सामूहिक शक्ति को देश के साधनहीन समाज की सेवा में अर्पित करना है।

रोटरी क्लब एक समाज कल्याणकारी संस्था है। इसकी स्थापना १९०५ ई० में हुई थी। विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए अद्भूत इन्टर-एक्ट क्लब इसी का एक अंग है।

सम्प्रति पटना के सिर्फ छः विद्यालयों में इन्टर-एक्ट संस्थाएँ हैं। वे विद्यालय हैं :—

(१) संत माईकल हाई स्कूल (२) संत जेवियर हाई स्कूल (३) रघुनाथ गर्ल्स हाई स्कूल (४) संत जोसेफ कॉन्वेंट (५) बाँकी पुर गर्ल्स हाई स्कूल एवं (६) नोटरे डेम अकादमी।

२३ फरवरी को रोटरी क्लब के ७५वीं वर्ष गांठ पर सभी उपरोक्त विद्यालयों के इन्टर-एक्ट संस्थाओं ने रोटरी क्लब के प्रति अपना-अपना आभार प्रकट किया। जन-सेवा के प्रत्येक काम में इन्टर-एक्ट रोटरी क्लब को सहयोग प्रदान करता है।

मेरा यह अटल विश्वास है कि इन्टर-एक्ट एवं रोटरी जैसी संस्थाओं के सतद् अध्यवसाय से जनता काल-कालान्तर तक लाभान्वित होती रहेगी।

—आलोक सिन्हा

दशम् 'अ'

PANTHERS DO IT AGAIN

Never in recent memory was the weather more favourable. The Xavier Senior Sports Programme started at 10.30 a.m. on February 23. Despite this "early" Saturday morning hour, there was a good turnout under the shamiana.

The show got moving with the presentation of the colours by Fr. George Thana to each of the house captains and the SC president.

The marchpast and preliminary drills were conducted by Mr. S. D. Mishra with true precision.

This year the Junior and Senior Sports programs were organised by Mr. Paul Osta who has taken over as games instructor. His careful planning and diligent work on the field paid dividends. There were few delays and fewer complaints which is one of the best compliments he could hope to receive.

Here are a few of the highlights of the day. Somnath Sen proved invincible in the short sprints, as he won the 100, 200, and 400 m. race. Field events were dominated by Somnath Mukherjee who used his girth to advantage with the discus and shot put. Among the seniors, Sharat picked up 11 out of 15 points and was thereby judged the senior champion. The Inters Juniors champions were Barun Kumar and Deveshwar Sharan.

The Panthers finished 62 points ahead of their nearest rival and had a total of 263. Behind them followed the Tigers (201), Leopards (164), and Lions (155).

The chief guest, Sr. M. Rose (Principal of St. Joseph Convent High School) distributed the certificates and trophies to all the lucky sportsmen.

—Sudhir Agrawal, 10A

(Not So) Old Boy News

▼ As you can see, XL doesn't—and never will—look the same again after losing its 1979 editor to the Bihar Secondary Exam Board. Despite his own private counter claims, Shashank Priya most likely passed in the February examination and is looking forward to climbing higher peaks.

▼ Prashant (another keen contributor to XL), Rajat Sinha, Sanjay Jamuar, Sudhir Saraff, and Sanjay Sinha are proving that the game of tennis can be fun to play and fun to watch; Sanjay, by the way, is not a lad to get in a rut. Besides tennis, badminton, G. K., and handball, he has distinguished himself on roller skates. On Sunday April 20 he dodged the potholes on the river road and covered the distance between Danapur and the Patna Radio station in 64 minutes, five minutes ahead of his 2nd place rival! Akhil Yadav was his cycle escort. We think he deserves a share in the handsome prizes—at least a new set of tires for his cycle.

Feb. Xpta Meeting Draws Many Parents

XPTA's 6th Annual General Body Meeting was held on Feb. 24. During the two weeks prior to the meeting the majority of the parents signed up as contributing members. The meeting turned out to be lively and rewarding.

New officers for 1980 are: PRESIDENT: Mr. Triloki Nath Mehrotra; VICE PRESIDENTS: Dr. B. Choudhary & Mr. Remy R. Osta; SECRETARY: Mr. Sukdeb Chandra; JOINT SECR: Mr. A Paul Osta; TREASURER: Mr. Samuel

David; JOINT TREAS: Mr. Ramesh Gandhi; ELECTED MEMBERS: Dr. J. C. Jha, Dr. A. N. Sinha, Mr. Sudhir Seraphim, and Mr. M. A. Zahidi.

A highlight of the evening was the distribution of certificates and prizes to 1979 winners of Best Boy and Regular Attendance awards.

The Executive Committee plans to have its third meeting in the early part of May. The XPTA sponsored renovation of the canteen continues. The second phase should be completed shortly, leaving only one more phase to be tackled in the coming term.

SPRING 1980	
INTER-CLASS BASKETBALL	
6A (14)—6B (4)	
7B (50)—7A (5)	
8A (30)—8B (11)	
9A (29)—9B (22)	
5B (10)—5A (8)	
10B (17)—10A (10)	
"BEST OF" Matches	
6th (24)—5th (4)	
8th (19)—7th (18)	
10th (26)—9th (16)	

कनिष्ठ क्रीड़ा-दिवस

अंशुमाली की किरणों से द्वितीय फरवरी का मलयजी प्रभात आरक्त हो चला था। संत जेवियर के बाल-क्रीडांगन (बेबी फील्ड) में कनिष्ठ कक्षाओं की नवम् वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता आयोजित हो रही थी। नन्हें बालकों के हृदय में आशा और उत्साह की एक नवीन लहर थी। लाल, हरी, पीली, नीली गंजियों में वे तालके इधर-उधर चहकते दिखाई दे रहे थे।

कार्यक्रम का श्रीगणेश मार्च-पास्ट से हुआ। तदुपरान्त विभिन्न प्रकार की दौड़ एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। 'म्यूजिकल चेयर' एवं 'पार्सिंग द बॉल' अत्यन्त मनोरंजक कार्यक्रम रहे।

छोटे बच्चे इस दिवस पर अपनी सक्रियता एवं स्फूर्ति का आशोचान्त परिचय देते रहे। अभिभावक गण एवं अन्य दर्शकों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस खेल-कूद प्रतियोगिता में दिल-चस्पी दिखाकर द्वितीय फरवरी को एक सफल दिवस बनाया।

अंकपट पर विभिन्न दलों के अंतिम अंक इस प्रकार थे—

पैथस—१०८ लेपडंस—६९

लायन्स—७७ टाइगर्स—७८

—सोमनाथ सेन
दशम् 'अ'

STUDENT COUNCIL

1980 OFFICERS

(Elected by Stds 6-10 on
January 18)

President : Somnath Sen
Vice Pres : Rajiv Rai
Secretary : Yuvraj Suri
Asst. Sec : Pranay Sinha



STAFF ROOM

▼ Less commotion than usual is reported from the staff HQ. We have quickly taken to our hearts three new substitute teachers : Miss Shobhana M., Fr. Thomas Kartanam, and Br. Tony Mattapilly.

▼ We miss the laughter and interesting science classes taught by Br. V. A. Swamy last term.

▼ Mr. Paul Osta is now our dedicated Games Instructor and a newcomer Mr. Vijay Sylvester has become the assistant Librarian.

▼ Mrs. Meera Sinha (former class teacher) sends greetings to one and all from Nigeria. She is delighted with her appointment as an English teacher in the Government Secondary School in New Varte. To quote her own words : "My experience at St. Xavier's was a great help to me and I am very thankful to the institution and to you all." In turn, many boys at St. X remember Mrs. Sinha with affection and love.

To Bettiah And Back

(Continued from page 2)

and St. Xaviers (Patna).

The Bettiah Youth Team was in excellent form and after winning some close ones (e.g. PYT 64-SX Patna 61) they took the tournament shield.

Thanks to the keen interest of our new basketball coach, Fr. Jerry Grace, Xavier's team was well prepared. But the absence of Sumantra Sircar, who was busy writing an exam that weekend, was felt. Xavier's

FR. JOHN THAKUR

(continued from page 1)

The ordination of Fr. Osta has been fixed for June 21 in Patna (at our St. Xavier's Campus). Fr. Thakur will be ordained in his home town of Bettiah on June 24. Cardinal Picachy of Calcutta will preside at both ceremonies.

When interviewed by XL Fr. Thakur appeared confident and even joyful about his new assignment. He views it as a very important work and he seems to have his heart and soul in it already.

As our Rector for the past four years, Fr. Thakur has earned our affection and gratitude. He has felt at home here and demonstrated continually his love for the school-staff and students.

When asked whether he had any special message to impart, he said simply: "I hope that everyone at Xavier will see the school as a second family. We have to keep on growing in love and cooperation and forgiveness if we are going to be a happy family." These words we shall take to heart as we congratulate, and beg God's blessing upon, our beloved father, the new Bishop of Muzaffarpur.

Until a permanent replacement is named, Fr. Provincial has appointed Fr. Zacharias Varikamakil as Acting-Rector of St. Xavier's.

Kanchan Sinha, 10A
Agam Kumar, 10A

team consisted of Somnath Sen, Sanjay K. Sinha, Sujay K. Sinha, Sanjay Kumar, Rajesh Ambastha, John Paul Benedict, Deveshwar Sharan, Avinash Sahay, Lawrence Paschal, and Prashant.

Somnath Sen, 10B

T.E.P. RESULTS

▼ **TENNIS.** Through the month of March we held a singles tournament for which twenty players signed up. Fr. Jerry Grace kept tab of the scores (as well as the walkovers;) and on March 30, as it turned out, Sanjay Sinha met Yuvraj Suri to decide the championship. The match had some exciting moments and Sanjay took two successive sets to win the title. The awards were made by the chief guest, Mr. B. N. Dey, convener of the Bihar Players Association. The third place award went to Manoj Pandey, 10B.

▼ **ESSAYS** The annual Winter-spring Essay Contest was held on Feb. 20. This year's contest kept the nice round number of 350 writers busy for one and a half hours. The senior topic was "No greater treasure than a true friend." Sub-seniors wrote on "One day in my life which I shall always remember." First Place Hindi awards went to: Shishir Ranjan, 9A and Neeraj R. Singh, 7B. First Place English awards were captured by Jaggi Kalyani, 10B and Subhendu Mukherjee, 8B. XL is sincerely grateful to the Judges who spent a good bit of time evaluating the essays.

▼ **PAINTING.** A favourite theme this year was the solar eclipse. Some 800 boys and girls brought their brushes and water colours to St. Xavier's on March 15 for the annual painting competition. Xavierian winners in Group C: Pramod Kumar, Chetanand Singh, and Ashwani Jaiswal; in Group D: Krishna Ram, Sumit Osmond Shaw. Thanks, perhaps, to the large number of participants from the host school, the Dr. S. Sen Memorial Shield went to St. Xavier's. The Fr. Scaria Silver Medal presented by XPTA to the "Best Artist" of the day was won by Anita Lal (Group B) of Notre Dame Academy.

HOUSE CAPTAINS

(To lead the Xavier troops in 1980)

LIONS

Captain : Balaji Mohinish

V. Capt : Amikar Dayal

LEOPARDS

Captain : Ashutosh Pandey

V. Capt : Rajesh

PANTHERS

Captain : Sharat K. Sinha

V. Capt Pankaj Kumar

TIGERS

Captain : Sudhir Agrawal

V. Capt : Shishir Ranjan

OFFICERS CLUB

In the course of the First Term the following boys were elected or appointed to school clubs and societies :

L. T. S. President : Sanjay K. Pandey

Interact Club : Alok Sinha

Hindi Debating : Somnath Sen

English Debating : Agam Kumar

Gen Knowl Society : Surojit Bose., Vijay Swaroop

Xavier Life : Gyanendra Harswardhan, Kanchan Sinha

क्रिकेट : ऊँचाइयो के...

(पृष्ठ १ से आगे)

अधिकतम (८७) रन बनाए। इस प्रकार संत जेवियर की समग्र रन संख्या नौ विकेट पर ३० ओवरों सीमित में १७६ तक पहुँची। सेमीनरी की ओर से अविनाश कुमार की गेंदबाजी श्रेष्ठ रही। उन्होंने अपने सटीक "ऑफ स्पिन" से मात्र ३३ रन पर ६ विकेट प्राप्त कर लिया।

३० मिनट के अंतराल के उपरान्त सेमीनरी ने बल्लेबाजी शुरू की। मध्यम गति के तेज गेंदबाज, शरत सिन्हा की पहली पेनी गेंद पर सेमीनरी को तीव्र झटका लगा, जबकि उनके सर्वश्रेष्ठ-बल्लेबाज दिलीप दाम बिना खाता छोले, 'क्लीन बोल्ड' हो गये और दूसरी गेंद पर अहसान अहमद 'रन' [जेष पृष्ठ ६ पर]

FR. KEVIN CLEARY INTRAMURAL CRICKET CUP

—1980—

1. Panthers defeated Tigers.
Tigers : 87 all out (Varun 18 Ratan 11, Sharat 4 for 16).
Panthers : 88 for 2 wickets (Sanjiv 32, Somnath Mukh. 29).

2. Panthers defeated Leopards. Leopards 65 all out (Ajay Jha 16, Sharat 7 for 11) Panthers : 66 for 8 wickets (Santosh 21, Sujay 16, Ajay 5 for 9)

3. Panthers defeated Lions.
Lions : 80 all out (Vijay 20, Saba 17, Sharat 6 for 20)
Panthers : 156 for 9 wickets (Santosh 45, Somnath Mukh. 28, Sanjiv 22)

4. Lions defeated Leopards. Lions : 158 all out (Amikar 44, Saba 20, Pranay 26 not out, Ajay 5 for 55)

Leopards : conceded the match at the score of 53 for 8.

5. Lions defeated Tigers.
Tigers : 92 all out (Lawrence 32 not out) Lions : 94 for 2 wickets (Saba 44 not out, Vijay 15).

Champions : PANTHERS

Runners-up : LIONS

Highest number of wickets: Sharat K. Sinha.

Best Batsman : S. Saba Karim

Best Fielder : Amikar Dayal

—Statistics compiled by
Somnath Sen, 10B

क्रिकेट : ऊँचाईयों के ..

[पृष्ठ ५ का शेष]

आउट' घोषित कर दिये गये। इस प्रकार सेमीनरी ने शून्य रन पर दो विकेट खो बैठे। तीसरे ही ओवर में फिर शरत सिन्हा ने अपने घुमते हुए तेज गेंदों से मात्र ७ रनों पर रणवीर को अपना शिकार बनाया और वे पग बाधा घोषित कर दिये गये। इसके उपरान्त सेमीनरी टीम के कप्तान सौरभ चक्रवर्ती बल्लेबाजी के मैदान में आए। इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा प्रदर्शन किया और ठोस बल्लेबाज अविनाश कुमार की सहायता से सेमीनरी की रन संख्या को ४३ तक पहुंचाया। पर वे भी कुछ समय बाद अजय झा के खतरनाक घुमती हुई 'लेग स्पिन' को समझ नहीं सके और दोनों अपने विकेट खो बैठे जिनमें उनका योग क्रमशः १७ और २१ का था। अंत तक शरतसिन्हा और अजय झा ने अपने ज्ञानदार प्रदर्शन से चार-चार विकेट मात्र क्रमशः २६ और १५ रन देकर लिए। इस प्रकार सेमीनरी की सम्पूर्ण रन संख्या ७३ रही फलतः संत जेवियर १०३ रनों से विजयी घोषित हुआ।

तत् पश्चात् विभिन्न पुरस्कारों का वितरण हुआ। कुछ विशेष पुरस्कार भी प्रदान किये गये वे थे—

- (अ) 'मैन ऑफ द मैच'—संत जेवियर के संयद साबा करीम
- (ब) सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज—संत जेवियर के शरत कुमार सिन्हा
- (स) सर्वश्रेष्ठ ओलराउण्डर—सेमीनरी के अविनाश कुमार
- (द) सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज—सेमीनरी के दिलीप दास।

इस वर्ष के कठिन परिश्रम और खिलाड़ियों की अच्छी खेल भावना से संत जेवियर यह महत्त्वपूर्ण क्रिकेट ट्राफी अर्जित कर पाया। इसके पहले इसी प्रतियोगिता में संत जेवियर पिछले लगातार तीन वर्षों से द्वितीय स्थान पर रहा।

इसके लिए सभी को मुख्यतः खेल प्रशिक्षक श्री ए० पी० ओस्टा तथा प्राचार्य महोदय फादर जार्ज थाना को विजयी दल की ओर से हार्दिक बधाई।

—अगम कुमार एवं भूतपूज्य सिंह
दशम "अ"

मेरे जीवन की अभिलाषा

गत कुछ दिवस पूर्व जेवियर लाईफ ने अपने नन्हें पाठकों के समक्ष कुछ आम परन्तु आकर्षक निबन्ध-लेखन-हेतु विषय प्रस्तुत किए। परिणाम स्वरूप इन नन्हें पाठकों की नन्हों परन्तु सशक्त लेखनी से कुछ बहुत अच्छे निबन्ध दृष्टिगोचर हुए। स्थानाभाव के कारणवश हम इस अंक में सर्वश्रेष्ठ उद्धरणों की ही प्रकाशित कर सके हैं। हमें पूर्ण आशा है कि आप इन सुमधुर अंशों का रसास्वादन कर सकेंगे।

पुनश्च : सम्भवतः अगले अंक में हम शेष श्रेष्ठ उद्धरणों की आपके समक्ष ला पाएँगे। □

... अभी मात्र कल्पना ही है जिसे कड़ी मेहनत ही साकार कर सकती है। मेरी अभिलाषा है कि मैं बड़ा होकर विज्ञान का प्रोफेसर बनूँ। पढ़ने में मेरी विशेष रुचि है और मैं इसे हमेशा बनाए रखना चाहता हूँ। विज्ञान मेरी रुचि का विषय है। कहा जाता है कि विज्ञान का शिक्षक नास्तिक होता है। ऐसी बात नहीं है क्योंकि इस युग के महान वैज्ञानिक आइन्सटाइन ने ही तो कहा था कि एक वैज्ञानिक ही सही अर्थों में ईश्वर को समझता है।

—सर्वेश कुमार सिन्हा —चतुर्थ 'अ'

... कि मैं एक शिक्षक बन जाऊँ और बच्चों को पढ़ाकर उन्हें ज्ञान और सच्चाई का रास्ता बताऊँ। आज के बच्चे ही तो कल के नेता होंगे; कोई इंस्पेक्टर बनेगा तो कोई राष्ट्रपति। शिक्षक बनकर मैं पैसा कमाने की कोशिश नहीं करूँगा। मुझे दूसरों को पढ़ाने में अच्छा लगता है। मेरे पढ़ाने का यही कारण है कि कोई भी अनपढ़ न रह सके।

—राजेश पाण्डे —चतुर्थ 'अ'

... क्रिकेट में शायरी लिखने की है। मेरी अभिलाषा इतनी प्रबल है कि मैंने कुछ शायरियाँ अभी से ही लिख डाली हैं। लीजिए इन्हें पढ़कर तो देखिए।

उन्ते हुए सूरज को भास्कर कहते हैं।

भारतीय क्रिकेट के सितारे को गाँव कर कहते हैं।

जली को आग कहते हैं

बुझी को राख कहते हैं

गली से जो 'कट' निकाले

उसे विश्वनाथ कहते हैं।

मम्मी की मम्मी को नानी कहते हैं

भारत के क्रिकेटकीपर को किरमानी कहते हैं

—सजय प्रोवर —चतुर्थ 'ब'

... .. अभिनेता बनने की है। कभी-कभी जब मैं अभिनय के 'मूड' में रहता हूँ तो ऐसा होता है कि मैं समझती हूँ कि मुझे कोई चोट लगी है; परन्तु जब वे मुझे दवा लगाने आती तो मैं खूब जोरों से हँसने लगता हूँ, और तब मैं मुझे आशीर्वाद देती हूँ कि बेटा तुम भी पृथ्वीराज कपूर की तरह सफल अभिनेता बनो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मैं फिल्मी पदों या स्कून् के रंगमंच में जो पात्र चुना जाऊँ उसे सकल अभिनेता की भाँति निभाऊँ।

—आशीश मेहरोत्रा —चतुर्थ 'अ'

... .. है कि मैं डाक्टर बनूँ। मैं डाक्टर इसलिए बनना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पापा का कहना है कि गाँव में अच्छा डाक्टर नहीं मिलने के कारण मेरी माँ मर गई थी। जब मेरी दादी गाँव से शहर आ रहा थी तब वे रास्ते में ही मर गई क्योंकि उन्हें कैंसर हो गया था। मेरी इच्छा है कि मैं कैंसर जैसे भयानक रोग का सरल उपाय खोजूँ जिससे लोग एक या दो दवा खाकर ही कैंसर रोग से मुक्त हो जाएँ।

—राकेश लाल —चतुर्थ 'अ'

Xavier Life



Vol. 29 No. 1 ST. XAVIER'S, PATNA 17 May, 1980

NCC Finally Lands at Xavier

The NCC flight might be compared to a rocket trip into outer space. The distance is not measured in miles but in light-years. Present seniors will recall that the rocket was launched in XL's issue of Feb. 10, 1972 (page 4).

Now we are happy to report that flight NCC-SX-1980 has landed safely on the campus. A National Cadet Corps unit has been sanctioned for St. X and Mr. K. N. Pandey is making them work for their stripes.

The unit got organised on Jan. 16. The cadets come entirely from Class VIII. Parades and special classes are held regularly after school on Wednesday and Friday.

Of late each cadet has been issued a blue-gray uniform which includes an attractive belt, cap, and badge. As for fringe benefits, they have not been overlooked. After every session refreshments are served to the weary troops from the school canteen.

So far the unit has shown much promise. We are sure they can deliver the goods under the guidance of Mr. K. N. Pandey and the other officers who come here from the Headquarters in Rajendra Nagar.

—Kaushik Talapatra, 8A

क्रिकेट : ऊँचाइयों के शिखर पर

१३ अप्रैल को अभियांत्रिकी महा-विद्यालय के क्रीडा-स्थल पर संत जेवियर और राम मोहन राय सेमीनरी के बीच १० वी० यादव अन्तर्विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल मैच संपन्न हुआ।

सेमीनरी टीम के कप्तान ने टॉस जीता और संत जेवियर को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। सर्वप्रथम विजय स्वरूप

और अमीर दयाल ने पारी की गुरुआत की और दक्षतापूर्वक संत जेवियर को बिना किसी क्षति के ७६ रन प्रदान किये। दोनों की व्यक्तिगत रन संख्या उनके आउट होने तक क्रमशः ३८ एवं ३७ थी। इसके बाद "लिटिल मास्टर" साबा करीम ने आकर अपनी सशक्त एवं श्लाघनीय बल्लेबाजी से (शेष पृष्ठ ५ पर)

Fr. John Thakur Appointed Bishop of Muzaffarpur

The official announcement came on March 28. Our Xavier Rector, Fr. J. B. Thakur, was appointed Bishop of the new Diocese of Muzaffarpur!

In the assembly the following morning Fr. George Thana conveyed the good news to all of us and explained that the appointment was made by Pope John Paul II.

The bishop's task or responsibility is to be the spiritual head of the



Catholic diocese entrusted to him. The Muzaffarpur Diocese includes 13 districts of Bihar (north of the Ganges). Formerly this area was part of the Patna Diocese. It has now been given independent status and the city of Muzaffarpur will be the centre of activity.

Since 1947 Bishop Augustine Wildermuth has been looking after the needs of the far-flung Diocese of Patna. After years of devoted work, he has now retired. In his place Fr. Benedict Osta has been appointed as the new Bishop of Patna.

(Continued on Page 4)

सम्पादकीय

वर्तमान समाज—एक झलक

भिन्न-भिन्न अवसरों पर प्रगति की नवीन व्याख्याओं एवं संकल्पनाओं को सुनने का सीमाव्य हम सभी को प्राप्त हुआ है। पर 'प्रगति' के इस चोले के अन्दर का मानव कितना खोखला और अमानुषी है, इसपर हमने विचार नहीं किया।

समाचार पत्र एवं अन्य पत्रिकाओं में भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार जैसे शब्द निरन्तर प्रयुक्त हो रहे हैं। आये दिन हमें समाज के उच्चवर्ग द्वारा पददलितों पर पाशविक अत्याचार के समाचार सुनने को मिलते हैं। गरीबों की शोषणियाँ स्वाहा कर दी जा रही हैं; हरिजनों को मरा-अधमरा आग में शोंक दिया जाता है; अबला नारियों की इज्जत लूट ली जाती है। गरीबों की जिंदगी दो कोड़ी की भी नहीं। फादर मैथ्यू की क्रूर हत्या, पिपरा, दोहिया और पारस गीधा के अग्निकांड इन्हीं अमानुषी घटनाओं के चन्द उदाहरण हैं। पर मानव व्याषा की करुण कहानी का अन्त यही नहीं। यह तो स्वयं समाज और कानून के ठेकेदारों द्वारा पाली-पोसी जा रही है। नागरिकों के रक्षक ही आज भक्षक बने बैठे हैं।

आज हमारे समक्ष एक प्रश्न है—क्या इन सामाजिक बुराइयों को दूर नहीं किया जा सकता और क्या हम छात्र इसमें अपना योगदान नहीं दे सकते? क्या हम नहीं कर सकते इनका निमूलन? तो इसके लिये इनके मूल का अन्वेषण आवश्यक है। हमारे आस-पास शिक्षक की अनुस्थिति में कक्षा में शोर-गुल क्यों होता है? उत्तर सीधा-सा है—“क्योंकि हम अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से नहीं समझते।”

समाज के सभी स्तर पर यही बात लागू है। मानव अपने कर्तव्य को नहीं समझता। दूसरे मानव के साथ उसका क्या कर्तव्य होना चाहिए, वह नहीं जानता। वह यह नहीं जानता कि मनुष्य मनुष्य के बीच समता एवं प्रेम का पारस्परिक सम्बन्ध नितान्त आवश्यक है।

यह तो समस्या का सामान्य रूप हुआ। अब हम छात्रों का इसमें क्या योगदान होना चाहिए? अपने क्षेत्र में अपने सम्पर्क के व्यक्तियों के संग भेद-भाव की भावना को त्याग हमें भी बराबरी एवं प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। आइए, हम और आप आज से अपनी ऊँच-नीच, भेद-भाव की पुरानी आदतों को तिलांजलि दे अपनी जिम्मेदारियों को समझें ताकि देश और समाज में शांति एवं व्यवस्था बनी रहे।

—कचन सिन्हा
—ज्ञानेन्द्र हर्षवर्द्धन
(दशम् 'अ')

To Bettiah & Back

There is a shaded, modern, well-furnished basketball court in the heart of Bettiah and on March 14 Xaverians invaded it for the second time in the past three years.

The Baba McGlinchy Basketball Tournament was organised by Fr. Henry Rebello in

1978 to pay tribute to Fr. Vincent McGlinchy who was for many years the headmaster at St. Stanislaus Middle School.

This year's tournament drew teams from far-off places, such as St. Xavier's School (Kathmandu), and St. Michael's (Continued on Page 4)

इन्टर-एक्ट—उद्देश्य एवं गतिविधि

शिक्षार्थी-वृन्द के हेतु इन्टर-एक्ट क्लब जिस नियमितता और दृढ़ निश्चय से सृजन-आत्मक कार्यों को करता आया है, उससे छात्र-समाज की अभिरूचि इसमें जाग गयी है—कम से कम इस बहुचर्चित संस्था के नाम से हमारे विद्यालय का कोई छात्र अपरिचित न होगा। परन्तु इस संस्था में अभिरूचि रखते हुए भी अधिकतर छात्र इसके उद्देश्य एवं गतिविधि से पूर्णरूपेण अवगत नहीं हैं। इस संस्था का उद्देश्य छात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों को मजबूत बनाकर उनकी सामूहिक शक्ति को देश के साधनहीन समाज की सेवा में अर्पित करना है।

रोटरी क्लब एक समाज कल्याणकारी संस्था है। इसकी स्थापना १९०५ ई० में हुई थी। विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए अद्भुत इन्टर-एक्ट क्लब इसी का एक अंग है।

सम्प्रति पटना के सिर्फ छः विद्यालयों में इन्टर-एक्ट संस्थाएँ हैं। वे विद्यालय हैं :—

(१) संत माईकल हाई स्कूल (२) संत जेवियर हाई स्कूल (३) रघुनाथ गर्ल्स हाई स्कूल (४) संत जोसेफ कॉन्वेंट (५) बाँकी पुर गर्ल्स हाई स्कूल एवं (६) नोटरे डेम अकादमी।

२३ फरवरी को रोटरी क्लब के ७५वीं वर्ष गांठ पर सभी उपरोक्त विद्यालयों के इन्टर-एक्ट संस्थाओं ने रोटरी क्लब के प्रति अपना-अपना आभार प्रकट किया। जन-सेवा के प्रत्येक काम में इन्टर-एक्ट रोटरी क्लब को सहयोग प्रदान करता है।

मेरा यह अटल विश्वास है कि इन्टर-एक्ट एवं रोटरी जैसी संस्थाओं के सतत अध्यवसाय से जनता काल-कालान्तर तक लाभान्वित होती रहेगी।

—आलोक सिन्हा
दशम् 'अ'

PANTHERS DO IT AGAIN

Never in recent memory was the weather more favourable. The Xavier Senior Sports Programme started at 10:30 a.m. on February 23. Despite this "early" Saturday morning hour, there was a good turnout under the shamiana.

The show got moving with the presentation of the colours by Fr. George Thana to each of the house captains and the SC president.

The marchpast and preliminary drills were conducted by Mr. S. D. Mishra with true precision.

This year the Junior and Senior Sports programs were organised by Mr. Paul Osta who has taken over as games instructor. His careful planning and diligent work on the field paid dividends. There were few delays and fewer complaints which is one of the best compliments he could hope to receive.

Here are a few of the highlights of the day. Somnath Sen proved invincible in the short sprints, as he won the 100, 200, and 400 m. race. Field events were dominated by Somnath Mukherjee who used his girth to advantage with the discus and shot put. Among the seniors, Sharat picked up 11 out of 15 points and was thereby judged the senior champion. The Inters Juniors champions were Barun Kumar and Deveshwar Sharan.

The Panthers finished 62 points ahead of their nearest rival and had a total of 263. Behind them followed the Tigers (201), Leopards (164), and Lions (155).

The chief guest, Sr. M. Rose (Principal of St. Joseph Convent High School) distributed the certificates and trophies to all the lucky sportsmen.

—Sudhir Agrawal, 10A

(Not So) Old Boy News

▼ As you can see, XI, doesn't—and never will—look the same again after losing its 1979 editor to the Bihar Secondary Exam Board. Despite his own private counter claims, Shashank Priya most likely passed in the February examination and is looking forward to climbing higher peaks.

▼ Prashant (another keen contributor to XI.), Rajat Sinha, Sanjay Jamuar, Sudhir Saraff, and Sanjay Sinha are proving that the game of tennis can be fun to play and fun to watch; Sanjay, by the way, is not a lad to get in a rut. Besides tennis, badminton, G. K., and handball, he has distinguished himself on roller skates. On Sunday April 20 he dodged the potholes on the river road and covered the distance between Danapur and the Patna Radio station in 64 minutes, five minutes ahead of his 2nd place rival! Akhil Yadav was his cycle escort. We think he deserves a share in the handsome prizes—at least a new set of tires for his cycle.

Feb. Xpta Meeting Draws Many Parents

XPTA's 6th Annual General Body Meeting was held on Feb. 24. During the two weeks prior to the meeting the majority of the parents signed up as contributing members. The meeting turned out to be lively and rewarding.

New officers for 1980 are: PRESIDENT: Mr. Triloki Nath Mehrotra; VICE PRESIDENTS: Dr. B. Choudhary & Mr. Remy R. Osta; SECRETARY: Mr. Sukdeb Chandra; JOINT SECR: Mr. A Paul Osta; TREASURER: Mr. Samuel

David; JOINT TREAS: Mr. Ramesh Gandhi; ELECTED MEMBERS: Dr. J. C. Jha, Dr. A. N. Sinha, Mr. Sudhir Seraphim, and Mr. M. A. Zahidi.

A highlight of the evening was the distribution of certificates and prizes to 1979 winners of Best Boy and Regular Attendance awards.

The Executive Committee plans to have its third meeting in the early part of May. The XPTA sponsored renovation of the canteen continues. The second phase should be completed shortly, leaving only one more phase to be tackled in the coming term.

SPRING 1980	
INTER-CLASS BASKETBALL	
6A (14)—6B (4)	
7B (50)—7A (5)	
8A (30)—8B (11)	
9A (29)—9B (22)	
5B (10)—5A (8)	
10B (17)—10A (10)	
"BEST OF" Matches	
6th (24)—5th (4)	
8th (19)—7th (18)	
10th (26)—9th (16)	

कनिष्ठ क्रीड़ा-दिवस

अंशुमाली की किरणों से द्वितीय फरवरी का मलयजी प्रभात आरक्त हो चला था। संत जेवियर के बाल-क्रीडांगन (वेवी फील्ड) में कनिष्ठ कक्षाओं की नवम् वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता आयोजित हो रही थी। नन्हें बालकों के हृदय में आशा और उत्साह की एक नवीन लहर थी। लाल, हरी, पीली, नीली गंजियों में वे तालके इधर-उधर चहकते दिखाई दे रहे थे।

कार्यक्रम का श्रीगणेश मार्च-पास्ट से हुआ। तदुपरान्त विभिन्न प्रकार की दौड़ एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। 'म्यूजिकल चेयर' एवं 'पार्सिंग द बॉल' अत्यन्त मनोरंजक कार्यक्रम रहे।

छोटे बच्चे इस दिवस पर अपनी सक्रियता एवं स्फूर्ति का आश्चर्यान्त परिचय देते रहे। अभिभावक गण एवं अन्य दर्शकों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस खेल-कूद प्रतियोगिता में दिल-चस्पी दिखाकर द्वितीय फरवरी को एक सफल दिवस बनाया।

अंकपट पर विभिन्न दलों के अंतिम अंक इस प्रकार थे—

पेयर्स—१०८ लेपडंस—६९

लायन्स—७७ टाइम्स—७८

—सोमनाथ सेन
दशम् 'अ'

STUDENT COUNCIL

1980 OFFICERS

(Elected by Stds 6-10 on
January 18)

President : Somnath Sen
Vice Pres : Rajiv Rai
Secretary : Yuvraj Suri
Asst. Sec : Pranay Sinha



STAFF ROOM

▼ Less commotion than usual is reported from the staff HQ. We have quickly taken to our hearts three new substitute teachers : Miss Shobhana M., Fr. Thomas Kartanam, and Br. Tony Mattapilly.

▼ We miss the laughter and interesting science classes taught by Br. V. A. Swamy last term.

▼ Mr. Paul Osta is now our dedicated Games Instructor and a newcomer Mr. Vijay Sylvester has become the assistant Librarian.

▼ Mrs. Meera Sinha (former class teacher) sends greetings to one and all from Nigeria. She is delighted with her appointment as an English teacher in the Government Secondary School in New Varte. To quote her own words : "My experience at St. Xavier's was a great help to me and I am very thankful to the institution and to you all." In turn, many boys at St. X remember Mrs. Sinha with affection and love.

To Bettiah And Back

(Continued from page 2)

and St. Xavier's (Patna).

The Bettiah Youth Team was in excellent form and after winning some close ones (e.g. PYT 64-SX Patna 61) they took the tournament shield.

Thanks to the keen interest of our new basketball coach, Fr. Jerry Grace, Xavier's team was well prepared. But the absence of Sumantra Sircar, who was busy writing an exam that weekend, was felt. Xavier's

FR. JOHN THAKUR

(continued from page 1)

The ordination of Fr. Osta has been fixed for June 21 in Patna (at our St. Xavier's Campus). Fr. Thakur will be ordained in his home town of Bettiah on June 24. Cardinal Picachy of Calcutta will preside at both ceremonies.

When interviewed by XL Fr. Thakur appeared confident and even joyful about his new assignment. He views it as a very important work and he seems to have his heart and soul in it already.

As our Rector for the past four years, Fr. Thakur has earned our affection and gratitude. He has felt at home here and demonstrated continually his love for the school-staff and students.

When asked whether he had any special message to impart, he said simply: "I hope that everyone at Xavier will see the school as a second family. We have to keep on growing in love and cooperation and forgiveness if we are going to be a happy family." These words we shall take to heart as we congratulate, and beg God's blessing upon, our beloved father, the new Bishop of Muzaffarpur.

Until a permanent replacement is named, Fr. Provincial has appointed Fr. Zacharias Varikamakil as Acting-Rector of St. Xavier's.

Kanchan Sinha, 10A
Agam Kumar, 10A

team consisted of Somnath Sen, Sanjay K. Sinha, Sujay K. Sinha, Sanjay Kumar, Rajesh Ambastha, John Paul Benedict, Deveshwar Sharan, Avinash Sahay, Lawrence Paschal, and Prashant.

Somnath Sen, 10B

T.E.P. RESULTS

▼ **TENNIS.** Through the month of March we held a singles tournament for which twenty players signed up. Fr. Jerry Grace kept tab of the scores (as well as the walkovers;) and on March 30, as it turned out, Sanjay Sinha met Yuvraj Suri to decide the championship. The match had some exciting moments and Sanjay took two successive sets to win the title. The awards were made by the chief guest, Mr. B. N. Dey, convener of the Bihar Players Association. The third place award went to Manoj Pandey, 10B.

▼ **ESSAYS** The annual Winter-spring Essay Contest was held on Feb. 20. This year's contest kept the nice round number of 350 writers busy for one and a half hours. The senior topic was "No greater treasure than a true friend." Sub-seniors wrote on "One day in my life which I shall always remember." First Place Hindi awards went to : Shishir Ranjan, 9A and Neeraj R. Singh, 7B. First Place English awards were captured by Jaggi Kalyani, 10B and Subhendu Mukherjee, 8B. XL is sincerely grateful to the Judges who spent a good bit of time evaluating the essays.

▼ **PAINTING.** A favourite theme this year was the solar eclipse. Some 800 boys and girls brought their brushes and water colours to St. Xavier's on March 15 for the annual painting competition. Xaverian winners in Group C : Pramod Kumar, Chetanand Singh, and Ashwani Jaiswal; in Group D : Krishna Ram, Sumit Osmond Shaw. Thanks, perhaps, to the large number of participants from the host school, the Dr. S. Sen Memorial Shield went to St. Xavier's. The Fr. Scaria Silver Medal presented by XPTA to the "Best Artist" of the day was won by Anita Lal (Group B) of Notre Dame Academy.

HOUSE CAPTAINS

(To lead the Xavier troops in 1980)

LIONS

Captain : Balaji Mohinish
V. Capt : Amikar Dayal

LEOPARDS

Captain : Ashutosh Pandey
V. Capt : Rajesh

PANTHERS

Captain : Sharat K. Sinha
V. Capt Pankaj Kumar

TIGERS

Captain : Sudhir Agrawal
V. Capt : Shishir Ranjan

OFFICERS CLUB

In the course of the First Term the following boys were elected or appointed to school clubs and societies :

L. T. S. President : Sanjay K. Pandey

Interact Club : Alok Sinha

Hindi Debating : Somnath Sen

English Debating : Agam Kumar

Gen Knowl Society : Surojit Bose.,
Vijay Swaroop

Xavier Life : Gyanendra Harswardhan, Kanchan Sinha

क्रिकेट : ऊँचाइयो के...

(पृष्ठ १ से आगे)

अधिकतम (८७) रन बनाए। इस प्रकार संत जेवियर की समग्र रन संख्या नौ विकेट पर ३० ओवरों सीमित में १७६ तक पहुँची। सेमीनरी की ओर से अविनाश कुमार की गेंदबाजी श्रेष्ठ रही। उन्होंने अपने सटीक "ऑफ स्पिन" से मात्र ३३ रन पर ६ विकेट प्राप्त कर लिया।

३० मिनट के अंतराल के उपरान्त सेमीनरी ने बल्लेबाजी शुरू की। मध्यम गति के तेज गेंदबाज, शरत सिन्हा की पहली पेनी गेंद पर सेमीनरी को तीव्र झटका लगा, जबकि उनके सर्वश्रेष्ठ-बल्लेबाज दिलीप दाम बिना खाता खोले, 'क्लीन बॉल्ड' हो गये और दूसरी गेंद पर अहसान अहमद 'रन' [शेष पृष्ठ ६ पर]

FR. KEVIN CLEARY INTRAMURAL CRICKET CUP

—1980—

1. Panthers defeated Tigers.
Tigers : 87 all out (Varun 18 Ratan 11, Sharat 4 for 16).
Panthers : 88 for 2 wickets (Sanjiv 32, Somnath Mukh. 29).
2. Panthers defeated Leopards. Leopards 65 all out (Ajay Jha 16, Sharat 7 for 11) Panthers : 66 for 8 wickets (Santosh 21, Sujay 16, Ajay 5 for 9)
3. Panthers defeated Lions.
Lions : 80 all out (Vijay 20, Saba 17, Sharat 6 for 20)
Panthers : 156 for 9 wickets (Santosh 45, Somnath Mukh. 28, Sanjiv 22)
4. Lions defeated Leopards. Lions : 158 all out (Amikar 44, Saba 20, Pranay 26 not out, Ajay 5 for 55)
Leopards : conceded the match at the score of 53 for 8.
5. Lions defeated Tigers.
Tigers : 92 all out (Lawrence 32 not out) Lions : 94 for 2 wickets (Saba 44 not out, Vijay 15).

Champions : PANTHERS
Runners-up : LIONS
Highest number of wickets: Sharat K. Sinha.

Best Batsman : S. Saba Karim

Best Fielder : Amikar Dayal

—Statistics compiled by
Somnath Sen, 10B

क्रिकेट : ऊँचाईयों के...

[पृष्ठ ५ का शेष]

आउट' घोषित कर दिये गये। इस प्रकार सेमीनरी ने शून्य रन पर दो विकेट खो बैठे। तीसरे ही ओवर में फिर शरत सिन्हा ने अपने घुमते हुए तेज गेंदों से मात्र ७ रनों पर रणवीर को अपना शिकार बनाया और वे पग बांधा घोषित कर दिये गये। इसके उपरान्त सेमीनरी टीम के कप्तान सौरभ चक्रवर्ती बल्लेबाजी के मैदान में आए। इन्होंने अग्नी प्रतिभा का अच्छा प्रदर्शन किया और ठोस बल्लेबाज अविनाश कुमार की सहायता से सेमीनरी की रन संख्या को ४३ तक पहुंचाया। पर वे भी कुछ समय बाद अजय झा के छतरनाक घुमती हुई 'लेग स्पिन' को समझ नहीं सके और दोनों अपने विकेट खो बैठे जिनमें उनका योग क्रमशः १७ और २१ का था। अंत तक शरत सिन्हा और अजय झा ने अपने ज्ञानदार प्रदर्शन से चार-चार विकेट मात्र क्रमशः २६ और १५ रन देकर लिए। इस प्रकार सेमीनरी की समग्र रन संख्या ७३ रही फलतः संत जेवियर १०३ रनों से विजयी घोषित हुआ।

तत् पश्चात् विभिन्न पुरस्कारों का बितरण हुआ। कुछ विशेष पुरस्कार भी प्रदान किये गये वे थे—

- (अ) 'मैन ऑफ द मैच'—संत जेवियर के सयद साबा करीम
- (ब) सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज—संत जेवियर के शरत कुमार सिन्हा
- (स) सर्वश्रेष्ठ औलराउण्डर—सेमीनरी के अविनाश कुमार
- (द) सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज—सेमीनरी के दिलीप दास।

इस वर्ष के कठिन परिश्रम और खिलाड़ियों की अच्छी खेल भावना से संत जेवियर यह महत्वपूर्ण क्रिकेट ट्राफी अर्जित कर पाया। इसके पहले इसी प्रतियोगिता में संत जेवियर पिछले लगातार तीन वर्षों से द्वितीय स्थान पर रहा।

इसके लिए सभी को मुख्यतः खेल प्रशिक्षक श्री ए० पी० ओस्टा तथा प्राचार्य महोदय फादर जार्ज थाना को विजयी दल की ओर से हार्दिक बधाई।

—अगम कुमार एवं मृत्युन्जय सिंह
दशम "अ"

मेरे जीवन की अभिलाषा

गत कुछ दिवस पूर्व जेवियर लाईफ ने अपने नन्हें पाठकों के समक्ष कुछ आम परन्तु आकर्षक निबन्ध-लेखन-हेतु विषय प्रस्तुत किए। परिणाम स्वरूप इन नन्हें पाठकों की नन्हीं परन्तु सशक्त लेखनी से कुछ बहुत अच्छे निबन्ध दृष्टिगोचर हुए। स्वानाभाव के कारणवश हम इस अंक में सर्वश्रेष्ठ उद्धरणों को ही प्रकाशित कर सके हैं। हमें पूर्ण आशा है कि आप इन सुमधुर अंशों का रसास्वादन कर सकेंगे।

पुनश्च : सम्भवतः अगले अंक में हम शेष श्रेष्ठ उद्धरणों को आपके समक्ष ला पाएँगे। □

... अभी मात्र कल्पना ही है जिसे कड़ी मेहनत ही साकार कर सकती है। मेरी अभिलाषा है कि मैं बड़ा होकर विज्ञान का प्रोफेसर बनूँ। पढ़ने में मेरी विशेष रुचि है और मैं इसे हमेशा बनाए रखना चाहता हूँ। विज्ञान मेरी रुचि का विषय है। कहा जाता है कि विज्ञान का शिक्षक नास्तिक होता है। ऐसी बात नहीं है क्योंकि इस युग के महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने ही तो कहा था कि एक वैज्ञानिक ही सही अर्थाँ में ईश्वर को समझता है।'

—सर्वेश कुमार सिन्हा —चतुर्थ 'अ'

... कि मैं एक शिक्षक बन जाऊँ और बच्चों को पढ़ाकर उन्हें ज्ञान और सच्चाई का रास्ता बताऊँ। आज के बच्चे ही तो कल के नेता होंगे; कोई इंस्पेक्टर बनेगा तो कोई राष्ट्र-पति। शिक्षक बनकर मैं पैसा कमाने की कोशिश नहीं करूँगा। मुझे दूसरों को पढ़ाने में अच्छा लगता है। मेरे पढ़ाने का यही कारण है कि कोई भी अनपढ़ न रह सके।

—राजेश पाण्डे —चतुर्थ 'अ'

... क्रिकेट में शायरी लिखने की है। मेरी अभिलाषा इतनी प्रबल है कि मैंने कुछ शायरियाँ अभी से ही लिख डाली हैं। लीजिए इन्हें पढ़कर तो देखिए।

उगते हुए सूरज को भास्कर कहते हैं।

भारतीय क्रिकेट के सितारे को गाव कर कहते हैं।

जली को आग कहते हैं

बुझी को राख कहते हैं

गली से जो 'कट' निकाले

उसे विश्वनाथ कहते हैं।

मम्मी की मम्मी को नानी कहते हैं

भारत के विकेटकीपर को किरमानी कहते हैं

—सजय घोवर —चतुर्थ 'ब'

... अभिनेता बनने की है। कभी-कभी जब मैं अभिनय के 'मूड' में रहता हूँ तो ऐसा होता है कि माँ समझती है कि मुझे कोई चोट लगी है; परन्तु जब वे मुझे दवा लगाने आती तो मैं खूब जोरों से हँसने लगता हूँ, और तब माँ मुझे आर्शीवाद देती है कि बेटा तुम भी पृथ्वीराज कपूर की तरह सफल अभिनेता बनो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मैं फिल्मी पर्दे या स्कून के रंगमंच में जो पात्र चुना जाऊँ उसे सफल अभिनेता की भाँति निभाऊँ।

—आशीश मेहरोत्रा —चतुर्थ 'अ'

... है कि मैं डाक्टर बनूँ। मैं डाक्टर इसलिए बनना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पापा का कहना है कि गाँव में अच्छा डाक्टर नहीं मिलने के कारण मेरी माँ मर गई थी। जब मेरी दादी गाँव से शहर आ रहा थी तब वे रास्ते में ही मर गई क्योंकि उन्हें कैंसर हो गया था। मेरी इच्छा है कि मैं कैंसर जैसे भयानक रोग का सरल उपाय खोजूँ जिससे लोग एक या दो दवा खाकर ही कैंसर रोग से मुक्त हो जाएँ।

—राकेश लाल —चतुर्थ 'अ'



Xavier Life



Vol. 29 No 2 ST XAVIER'S, PATNA Sept., 1980

Fr. Stan Moves In

A tall, slim, 48-year-old man impressed us with his cheerful and spontaneous speech in the assembly on the 21st of July. He was none other than Fr. Stanley D'Souza, who accedes to the office of rector after Fr. John B. Thakur, S. J., now Bishop of the newly-erected diocese of Muzaffarpur.

Born and brought up in Africa, Fr. D'Souza left his motherland at the age of 14, and did the last two years of schooling and then two years of inter-science at Bombay, from where he moved to Poona for a four-year engineering course. Later, he earned his post-graduate degree in engineering from Notre Dame University in America.

Fr. D'Souza joined the Society of Jesus in 1957. He was the acting Principal at St. Xavier's, Jaipur, for some time. He was fully engaged in retreat work when he was appointed as Rector of St. Xavier's, Patna.

Asked if he wishes to convey any message to the students of St. Xavier's, Father said he longed to see each student strive to make the most of life, develop deep-rooted love for his country and above all, possess an awareness of God and unflinching faith in Him.

Informal and friendly, Fr. D'Souza with his suave, soft-spoken manner is a lovable man. Naturalness, joviality, enthusiasm and besides all these, a keen relish for life, hallmark his pleasing personality. And we feel very certain that in a short time, he will find a place in the hearts of many Xavierians.

—Gyanendra Harshwardhan, X A

एक चिरस्मरणीय स्वर्गिक यात्रा

प्राकृतिक सौन्दर्य—सुपमा का पालन करता हुआ, हिमालयीय वादियों में बसा हुआ यह प्रान्त आज भी भारत का स्वर्ग माना जाता है। प्रकृति की प्यारी गोद में पला हुआ कश्मीर आज तक अनेक भारतीय नरेशों की क्रीड़ा तथा विहार की भूमि रहा है।

इसी क्रीड़ा-स्थल का आनन्द उठाने गत २१ मई को संत जेवियर विद्यालय के कक्षा ५ से १० तक के ५२ छात्र बिहार टूरिज्म डेवलपमेन्ट कांसिल के सौजन्य से भारत के मुरघाम, "कश्मीर प्रान्त" की ओर खाना हुए। इस दल में विद्यालय के ८ शिक्षक साथ गए थे। हम भी इस दल के सदस्य थे। यह दल आगरा, दिल्ली तथा जम्मू होता हुआ कश्मीर की उस लुभावनी राजधानी में पहुँचा जो श्री नगर के नाम से प्रसिद्ध है।

जेलम नदी के द्वारा दो भागों में बँटा हुआ वह अलौकिक स्थान आज भी भुलाए नहीं भूलता है। चारों ओर पर्वतों से घिरे हुए इस शहर की शान है शालीमार निशांत उद्यान और डल लेक। शालीमार तथा निशांत सीढ़ीनुमा बाग हैं। दोनों उद्यानों के मध्य एक झरना बहता है। बाग में चारों तरफ खिले हुए विभिन्न प्रकार के फूलों की सौम्यता को देखकर लगता था कि प्रकृति वास्तव में कितनी चित्र-विचित्र है। डल लेक में शिकारा पर सैर करने का एक अपना ही आनन्द है। उसके अलावे चार चिनार, फ्लोटिंग गार्डन तथा चश्माशाही भी अद्भुत हैं।

इन सब के अलावा श्रीनगर के आस-पास के अन्य अविस्मरणीय स्थान सोनमार्ग, गुलमार्ग तथा पहल गाँव इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।



“रिश्ता”

भावी अभिनेता—एक नजर

इस वर्ष संत जेवियर का वार्षिक एकांकी नाटक समारोह ९ अगस्त को अपने विशालयीय रंगशाला में सम्पन्न हुआ। चारों दलों ने अपने एकांकी रंगमंच पर प्रस्तुत किये। रंगशाला दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी।

सर्वप्रथम लेपर्ड ने अपना नाटक “बिना दुल्हन की शादी” को प्रस्तुत किया जिसने दर्शकों का हास्य-विभोर कर दिया। तत्पश्चात् पैन्थर्स ने अपना नाटक “शेरशाह” दर्शक-वृन्द के समक्ष रखा। “शेरशाह” की भूमिका निभाते हुए कंचन सिन्हा ने दर्शकों का मन मोह लिया। उन्हें ही इस प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के रूप में पुरस्कृत किया गया। पाँच मिनट के मध्यान्तर के बाद “टार्जर्स” की बारी आयी। डॉ० जितेन्द्र सहाय लिखित “रिश्ता” में भारत की विवाह पद्धति के दोषों पर प्रकाश डाला गया।

सभी कलाकारों के पारस्परिक समन्वय से यह एकांकी अत्यन्त मनोरंजक साबित हुई। अंत में “लायन्स” ने “सिंहासन खाली है” के द्वारा भारत की अत्यन्त पतित और खोखली राजनीति का स्वरूप सामने रखा। बालाजी मोहिनीश नेता के रूप में अत्यन्त सफल रहे। अंत में निर्णायक गण ने “लेपर्ड्स” के “बिना दुल्हन की शादी” को सर्वश्रेष्ठ एकांकी घोषित किया। लेपर्ड्स, पैन्थर्स, टार्जर्स और लायन्स के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता क्रमशः आशुतोष पाण्डेय, कंचन सिन्हा, युवराज तुरी और बालाजी मोहिनीश घोषित हुए। उसके बाद डॉ० सर्वदेव मिश्र के धन्यवाद-ज्ञापन के द्वारा समारोह का समापन हुआ।

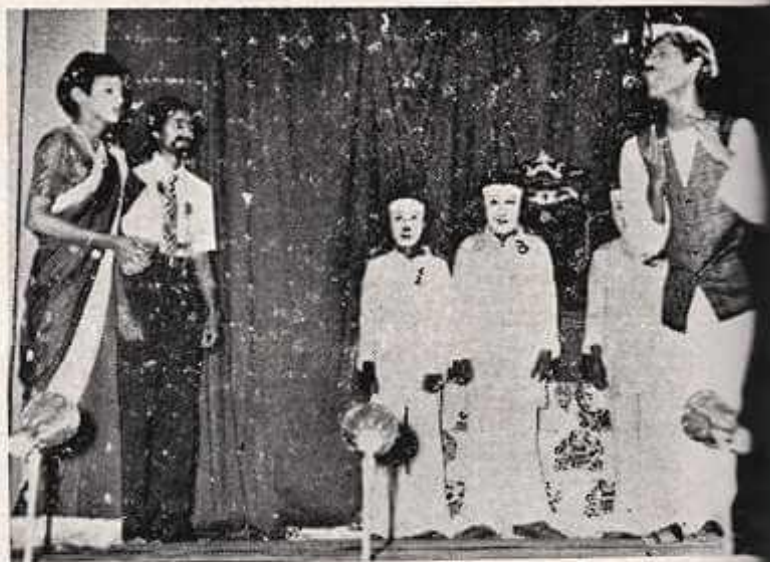
सुरोजीत बोस, X ‘B’



“बिना दुल्हन की शादी”



“शेरशाह”



“सिंहासन खाली है”

editorial

Xavier Library— A panorama

A visit to the school library provides a Xaverian with a true sense of delight and wonder. What scores of books on science, literature, history, travel, biography and what not. Thousands of books with interesting facts and thought-provoking material indeed make this library worth-while.

A patient glance through the library furnishes one with a clear picture of it. To start with the easternmost end, there is a shelf of new books and reference items. Unscrupulously the boys approach it for mere light reading. Next to that shelf lies the larger shelf filled with encyclopedias, world books and dictionaries. Close to that shelf lies the elegant reference almirah, rich with an invaluable store of knowledge. Beside this are the sections on biology, chemistry, physics and maths respectively, moving towards the north. The importance of these sections for boys simply can't be over-stressed. The far end corner, i.e., the north-east end, is occupied by the books of art and architecture. Shifting towards the west, one finds the magazine shelf with the most recent periodicals and journals. Then one finds the Hindi and English fiction, meant for the tiny-tots. There are Bengali and Urdu fiction sections also. The patient yet eager searcher discovers once again the reference almirahs and English and Hindi fiction for senior classes. One also comes across the different sections of English literature, biography and travel in the course of his walk through the entire library.

Now the question is, what are all these books for? Why such a painstaking selection of the books before making their way into the library? After some assiduous brooding, one arrives at the same answer: to make the boy aware of the world around him and to nourish him with the correct knowledge of this world, nature, and life here on the earth. Books are the 'king's treasures' as Ruskin calls them. Milton was right to say, 'A good book is the precious life-blood of a master-spirit, embalmed and treasured up on purpose to a life beyond life.'

Do we, the Xaverians, really use the school library in this sense? Certainly not. The tattered and torn books plainly explain the lack of care for them; and most important of all, respect for them. Brevity being the soul of wit, we prefer to be brief in asserting the duty of a true Xaverian. As true Xaverians we must cultivate the habit of respecting the books and using them as our best friends, the best guardians and the best teachers.

—Kanchan Sinha, X A

—Gyanendra Harshwardhan, X A

Letter to the Editors

Sirs,

In the editorial of the last issue of *Xavier Life*, you wisely portrayed modern society in a nutshell. Your editorial provoked me to go a little deeper into the subject. What I concluded was that the main factor behind all social evils—carnage, molestation of women, exploitation of harijans and other weaker sections of society—is the YOUTH of today.

Our youth are without an aim in life and are like a rudderless boat. Not worried about their future, the youth of today enjoy chaos, demonstrations and confusion. A number of factors have contributed to this disappointing phenomenon. There is no denying the fact that the cup of tea of some of them is cheap and sensational films. They easily get enticed by their false glamour and are exposed to their evil influence. Most of the movies of today are not aimed at moulding their character, or widening the horizons of their knowledge, or imparting moral instructions. Fictional themes exhibiting naked and stark love and sex, indecent dances, vulgar songs, blood-curdling violence and new methods of committing crimes corrupt the youthful minds and lead to moral degeneration.

Another factor is some of the books that are flooding the book-stalls today. These books, with attractive covers and alluring titles, lead the youth to reading trash. This sort of reading stirs them up. They are unable to resist temptations and indulge in corruption, chaotic behaviour and illegal actions.

Idle and useless talk also incites the youth to wrong and useless action. Being accustomed to idle talk, they lose the capacity for sustained effort which can be termed the basis of success in life. Our youth should have a proper conception of time and its use. They should become refined by reading useful literature. They should read books and see movies that have a profound meaning in them. Our youth should endeavour to give their time and energy to the pursuit of something noble and should mould their lives to become great and noble citizens, leading a sublime life.

—Sudhir Agarwal, X A

श्रद्धांजलि

गत छः जुलाई को प्रशान्त वर्मा, दशम 'ब' की माता का देहान्त हो गया। वे नासूर (कैंसर) रोग से पीड़ित थी।

गत सोलह जून को नरेश कुमार, षष्ठम् 'अ' की माता का देहान्त हो गया। ऑपरेशन असफल होने के कारण उनकी मृत्यु हुई।

ईश्वर इन छात्रों को दुःख सहन करने की शक्ति एवं इनकी माताओं को असीम शान्ति दे।

आशुतोष पाण्डेय, X 'A'



Fare Thee Well !

In the transfer of our former Vice-Principal, St. Xavier's loses a man of high calibre. Fr. Faulstich was a good teacher, an efficient administrator, and above all, a very affable man. As he leaves to take charge of the rectorship he has been offered, with a warm handclasp in spirit, we wish him farewell and all success in his future life.

We are thankful to Sudhir Agarwal, X A, who took pains to collect his biodata.

Profile : Fr. Faulstich, 43, was born in Danville, Illinois. He completed his high school studies from Schlarman Catholic High School in his home town. Later he joined the Jesuit Society in 1955. In addition to the philosophy and theology courses which he has done in different colleges, Fr. Faulstich also has an M. A. degree from Loyola University, Chicago, to his credit.

He came to India in 1964. He was at St. Michael's in 1969-70 after which he arrived at Xavier's. A teacher of English in senior classes, Fr. Faulstich has a profound knowledge of his subject. He would often delve deep into the origins of words, on the lookout for their appropriate meaning.

As the XL moderator, Fr. Faulstich discharged his duties wonderfully well. Sufficiently equipped with wit and wisdom as he is, he always provided us with novel ideas and lent us proper guidance for which we will remain grateful forever.

Fr. Faulstich assumed the office of Vice-Principal in July, 1979. And during his tenure here as Vice-principal, in which he ceaselessly strove to bring perfect discipline in the school, he has earned renown for his extraordinarily efficient style of functioning.

With his recent appointment as Rector, K. R. High School, Bettiah, Fr. Faulstich left us in July this year, after completing exactly one year as

Winning Cartoon

by Shekhar
VIII B



चिरस्मरणीय यात्रा

(पृ० 2 से क्रमशः)

सोनमार्ग में घोड़े पर सवार जब बर्फ पर हम पहुँचे तो एक हल्की सी ठण्डी लहर हमें चीरती हुई निकल गई और तब हमें ज्ञात हुआ कि हम बर्फ के प्रदेश में पहुँच चुके हैं। उसके पहले तो मैं उस सुरम्य स्थान के सौन्दर्य को ही निहार रहा था। वहाँ हममें एक होड़ सी लगी हुई थी कि कौन सबसे ऊपर तक जाता है, और ज्यादा से ज्यादा ऊँचाई पर चढ़कर अपनी वीरता को प्रदर्शित कर फूले नहीं समाता है।

गुलमार्ग, हरी घास से भरा समतल मैदान और कहीं टीले के समान उठा धूभाग, चारों तरफ पर्वतों से घिरा, यह प्रदेश वास्तव में स्वर्ग का एक टुकड़ा दीखता है।

पहलगांव की विशेषता यह है कि वह एक घाटी है जिसके पास से एक ठण्डा झरना बहता है। उस झरने के स्वच्छ निर्मल जल को पीकर ऐसा लगता था, जैसे सुरघाम से किसी ने पृथ्वी के लिए सुरभोग का घड़ा उड़ल दिया हो।

चार दिनों तक उस प्राकृतिक सौन्दर्य-मुषमा का पान कर जब हम वहाँ से चलने को तैयार हो रहे थे, तो मेरा दिल बँठा जा रहा था। खैर, वापस तो लौटना ही था तो हम सब विद्यार्थी पुनः बसों पर सवार हो जम्मू पहुँचे। वहाँ से अमृतसर का गार्डन देखते हुए हम फिर से ग्रीष्म की प्रचण्डता में फँसे हुए ७ जुन को सुबह पटना पहुँच गए।

गुवराज सूरी एवं

Sidelights

St Xavier's proudly congratulates its 64 stars of the 1979 class, all of whom got first division in the Bihar Secondary School Exam of 1980. Brightest star was Rajan Thakur, with a total of 754. Future classes, follow their lead.



XL takes pleasure in announcing the innovations in the school canteen. The canteen has been furnished with some new chairs and tables. The formal inauguration of the canteen was done by the XPTA President, Mr. Triloki Nath Mehrotra, on July 19th. The Secretary, Mr. Sukdeb Chandra, and the executive teacher members were also present.



Fr. Jerry Drinane is now to be seen in the Vice-Principal's office, trying to fill the shoes (many pairs)

Holiday's—

Past and Future

घर की मुर्गी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारा ग्रीष्मावकाश हुआ। यदि गौर किया जाय तो हम यह देखेंगे कि इस वर्ष के ग्रीष्मावकाश में कुछ खास ही बात थी। जनवरी से लेकर मई तक स्कूल में कार्य रत रहने के बाद जब मैं अपने ग्राम पहुँचा तब जाकर मुझे शान्ति मिली। हमारे गाँव में एक छोटा सा मलेरिया विभाग का आफिस है। वहाँ पर एक बड़े बाबू हैं और दो कर्मचारी। उनमें से एक हमारे घर के पिछवाड़े रहता है, नाम है घनश्याम दास। उनकी गृहस्थी कोई बड़ी नहीं है सिर्फ़ मियाँ बीबी व एक पुत्री है। उनकी पुत्री की तबीयत कई दिनों से खराब चल रही थी परन्तु वे महाशय उसे डाक्टर के पास ले जाने का नाम ही नहीं ले रहे थे। रोज की तरह वे उस दिन अपनी बीबी से ताने सुन रहे थे कि बेटी को डाक्टर के यहाँ ले जाओ परन्तु उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। उल्टे वे अपनी बीबी से ही झगड़ने लगे और बात हाथापाई तक आ गई। तभी उनके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और घनश्याम जी ने पूछा बड़े बाबू ने कहल-वाया है कि उनकी कुतिया की तबीयत खराब है सो आप उसे दिखा लायें। घनश्याम जी ने यह बात सुनते ही तुरन्त अपनी पतलून चढ़ाई और चपरासी के साथ चले गये। उनकी पत्नी मूक होकर उन्हें जाते हुए निहारती रही।

रक्षित शरण, VIII 'B'

On the Wrong Track

I had been to my friend's house for some help in physics. When I came out of his house, I found that my cycle had a flat tyre. I glanced at my watch and saw that it was 7.45 p.m. So I decided to leave the cycle at his house and walk along the railway track, which was the shortest route to my home. I had my torch with me, but I did not use it, as it was a moon-lit night. No sooner had I walked a kilometre than I saw about six men doing something on the railway track. I could not clearly see what they were doing. As they saw me approaching, they talked among themselves and then hurried away. Suddenly the atmosphere began to grow ominous. A layer of cloud was slowly covering the stars. Fearing rain, I began to walk fast. In no time I reached the spot where I had seen

scattered on the track. I lighted my torch and found that the fish plates had been removed. The next train coming on that track would surely meet an accident. I glanced at my watch and found that it was time for a train from Delhi to arrive. Then from far away I could see the headlight of the approaching train. If I were to save the train, I had to act fast. I looked helplessly around. The signal post had given the green signal. Suddenly an idea flashed into my mind. I raced towards the signal post and climbed the post in a second. I broke the green light and lighted my torch in front of the red glass of the signal post. The train slowed down and stopped. I ran quickly to the engine driver and told him the whole story. He thanked me for what I had done. I was proud that I had done my job.

Taxi Treasure

Last summer vacation, I went to my native place at Howrah where I had an experience which I shall remember all through my life. My elder brother had just returned from Delhi with his family. A short time after he reached home, it was found that the attache case containing most of the ornaments of my sister-in-law was missing, perhaps left behind in the taxi. As the number of the car had not been noted, there was no possibility of tracing it. Shortly after, a car stopped at our door, and the door-bell rang. As I went out, what was my amazement to find the taxi driver, who had brought my brother from the station, with the precious case in his hand. While picking up another passenger, he had noticed it lying inside, and hastened to return it. The case was opened and the contents were found all intact. Of course, great was our joy at this unexpected recovery of the valuables. But stronger was our feeling of admiration at the honesty of the young taxi driver. Here was almost a fortune lying at his door-step, but he would not be tempted. And he was one of those we sometimes look on as uncultured.

Abhijit Bose, VIII A

Rajgir Rope Tricks

My most exciting experience was riding the Rajgir rope-way. We made plans to visit Rajgir on May 27th. As we reached there, we went straight for the rope-way, because after a while it would become too hot to walk. It was my first opportunity to ride on a rope-way. At first my heart became full of horror,

I got on the chair. As we went higher and higher, the sight of the forest below seemed really frightening. Then, as we were going upwards, suddenly the rope-way stopped, and I shouted at once with fear. I thought something had gone wrong with the rope-way. But after a few minutes, when the rope-way started again, I took a breath of relief, and we reached the top safely. When we got back to Patna at evening, I asked my father about the reason for the rope-way stopping, and he said it was due to a failure of the electricity.

—Avinash K. Sahay, VIII A

A Live Wire

The wind was blowing wildly and there was a heavy downpour. There was a tough competition between wind and rain. It was the night of June 22nd when all the people of the locality were sleeping. Suddenly there was a loud noise near my house. In a second we were out on the front verandah. We saw that our neighbours were out of their house, and they were all panicky. There was a loose connection in their house and because it was raining, the current ran through the walls. The main reason for their panic was that the back part of the house had started burning. All the telephones were dead, so no one was able to call the police or the fire brigade. They were also alarmed because one of their children was inside. But the situation was brought under control. The fire brigade arrived and the fire was extinguished. The child was also taken out; she was not harmed. The next morning the news spread like wild fire. People came to see the house. The owner of the house was given some remuneration to repair the loss.

Space Encounter

I was having my breakfast when my secretary rushed in and said a bit breathlessly, "Sir, there's an urgent call: some beings from outer space have attacked New Zealand." I was shocked, but collected myself in a minute, and told my secretary to get my helicopter ready. I then hurried to my radio control room, and switched on my transmitter. As soon as I got through to the Calcutta centre, I told the operator to tell the pilot to get my spaceship ready. Then I switched off the wireless set, and hurried to my underground helipad, to find the flight doors already open, and the pilot ready to take off. I jumped in, and said shortly, "Calcutta—full speed."

Within a few minutes I was aboard my spaceship, when the radio crackled alive, and the operator's familiar voice said, "They're above Australia, sir." "Roger," I replied, and pressed the ignition button. Minutes later, I had the first of the three alien spaceships in my sights. I fired, and the laser beam found its mark. Wasting no time, I turned to the other, and again my laser was on target. I turned to face the third ship. Once more I pressed the button activating the laser gun. Nothing happened—it had jammed. As I sweated, there was an explosion, and the red danger light went on. My ship had been struck.

I lunged for the blue button near my left hand and pressed it. The next moment, there was nothing but a blob of spacedust where the last enemy ship had been. I wiped my brows, and started landing procedure. I had just commenced the primary landing procedure when disaster struck. I woke up.

By Super Express

Many experiences do we have in our lives, but only a scanty few matter, and perhaps little more than just a tinker's cure. But the experience I'm going to recount was unique, exciting and, I suppose, quite enriching too. The (mis) adventure begins with fifty students and some guides going for a leadership camp in Jamalpur. We were to board our train, the Danapur Fast Passenger, at Danapur. I was given charge of reaching Danapur before-hand and buying the tickets. I left home at 7.30 a.m. for school, and waited for my friend there. We took a minibus. The first one we took was o.k., but the one we took to Khagaul was horrible. The jam-packed, tortured vehicle rumbled on, creaking as though the next moment would see it falling to pieces. And a piece of it did. The back of a seat on which my friend was leaning gave way, suddenly causing him to fall on my half-crouching figure and thus breaking the glass-plate of my satchel. So slow were we that the rest of the party arrived just as we stepped out.

The train was due at the platform at 11.45 a.m. but to our utter dismay, it was seven hours late. After a day on the platform, we started at 7 p.m. and on reaching Patna Junction (and this took us an hour), a few of us got down to buy some snacks. All had returned but two boys when the guard told us the train was to start within two minutes. We relaxed when the boys returned, but now the train wouldn't budge. Ten minutes to go, the guard said. The two boys went out again to collect something they had forgotten when the guard announced

that the train was to start immediately. I ran up the stairs to look for the two. Just then I happened to look down to see two trains moving in opposite directions. I stood there at my wits' end. I gathered my strength and ran down the staircase and sprinted towards the train. Then, I was relieved to see a red torch signalling at me frantically and a little surprised, too, when the holder started running towards me, for I had never seen a guard running before. Well, it wasn't the guard, it was one of our party, Brother R

We boarded the next east-bound train—the Upper India Express. We started off well but after some time the train would go for 5 minutes, and stop for 10..... Enquiry revealed, "Danapur Fast passenger aage hai."

Thus we went on, looking for our train at each and every stop, the frequency of which was really getting on my nerves. Mokameh—The T.T.I. who was eyeing us curiously for quite some time demanded an explanation. The name of the train got him, and we were no less baffled to hear him tell us that we had overtaken the Danapur Fast Passenger back at Barh. The clock said 11.36 p.m. It took till 1 a.m. for the train to reach Mokameh. I got into the train, wished everyone a 'Good morning', and found out that my share of snacks was gone. We reached Jamalpur at 7 in the morning, while I hoped all the time that, if it took almost a day to reach Jamalpur, it shouldn't take more than two days more to reach Howrah on that train. Anyway, a nice train—pretty fast!

—Somnath Sen, X B

Taking in the Taj

My experience, gained in the recent summer holidays, is of "human craftsmanship". I visited that great monument of sentiment and love, the Taj Mahal of Agra—one of the seven wonders of the world, and the pride of India. Naturally, I was flushed with excitement when I first beheld it. The monument has both human softness and heavenly liveliness of beauty. The marble has been cut and re-cut into the thinness of pigeon feathers and moulded into various delicate shapes and sophisticated designs. This enigma has immortalized the love of Shahjahan for his divine queen Mumtaz. Engrossed and enchanted, I was almost lost and bewildered by the excellence of human craftsmanship but could not help retracing my steps once more when it was time to go back.

—Sanjive Shanker, VIII A

A Glimpse of Gulmarg

I was happy beyond words when I saw Gulmarg in Kashmir. It held such beauty of nature as I had never seen before. Gulmarg is situated in Kashmir valley. Nature has made the place so beautiful and man has developed it in such a way that one does not like to leave such a place. Green grassy fields surrounded by mountains make Gulmarg a paradise. I was so happy that I enjoyed the green grass by running round and round. I felt as if I were in heaven. The cool, calm weather affected me very much. It is a very good place to take holidays—but of course needs a lot of money. I would like to say that the beauty of nature should not be destroyed by industrialization.

—Ratan Kumar, X A

Holy Cats !

Our school closed on the 10th of May for summer holidays. We were very happy and full of joy. We started thinking of how to spend our holidays. It was impossible for us to go out of Patna, because I had decided to join the coaching classes which started from June 6th in our school. So, in the holidays I went to Kankerbagh where my grandmother lives. She loves me very much. But she is the most superstitious woman that I have ever seen in my life. One day we were going to buy some vegetables from the market. I was holding the basket and moving with her as she directed me. But at that time, all of a sudden a black cat crossed our path. She told me to return home at once because in her mind something bad would happen if a black cat crossed our path. I tried my best to explain the truth to her, but she wouldn't agree, and that night we ate our food without vegetables.

—Dharmendra K. Singh, VIII B

Saved by a Cycle

Every day we come across some strange happenings. Not all of them are exciting; yet some interesting things do happen sometimes. One such happening occurred on June 2nd. I suppose if it had not happened, I would be on a hospital bed now. It was evening, and I was cycling from my home to the railway station. In the course of my journey, I came to a blind turn. There I was not very attentive. Suddenly I was hit by a cyclist. Hardly had I been hit than a speeding jeep passed by, and just touched the other cycle. If I had not been hit by the cyclist, I might have been carried away on a hospital stretcher.

—Jyoti Swarup, X A



A Bride Forsaken

My friend's sister was to be married to a young man of Muza-farpur. The wedding was to take place in the first week of June. I, along with a few friends, reached the spot on the auspicious day. Joy and enthusiasm filled the atmosphere. Everyone was happy. But sadly, it did not last long. As soon as the wedding ceremony began, the father of the boy popped in, asking for Rs. 30,000 more. My friend's father was dazed, because he was not in a position to give that much money; but despite his requests, the former's heart did not show pity. The marriage was cancelled and the joyful atmosphere had changed to a hue and cry of despair. Their dreams were shattered. I was amazed to see this. How low can a man stoop for the sake of money? Does a boy marry money or a girl? Is it a religious ceremony or a money-making business? Several questions flashed through my mind. But I could do nothing. I raised my voice, but no one heard me. When would this dowry system disappear? Men like Raja Ram-mohan Roy got 'Sati' and infanticide abolished. When will God give us another leader to abolish this curse? Will it be any one of us?

—Kshitij Mohan, VIII B

Up from the Deep

During my last summer vacation, my parents planned to go to our village home. Near our residence in the village there is a pond. Because of a few accidents which happened quite some time back, we were always forbidden to go near the pond. But forbidden things have the most attraction, and the first thing I did was to accompany my brothers for a swim without even knowing how to swim. Recklessly I followed them into the pond; my foot slipped, and I found myself drowning. All the world seemed to be closing in around me, and the first fear of death gripped my heart. It was only a matter of moments, yet the experience of the accident ever remains vivid in my memory. Words cannot express such an experience. I lost consciousness and when I opened my eyes, found many anxious eyes all around me.

—Subhendu Mukherjee, VIII B

Dreams of Darjeeling

I propose to have a pleasant excursion to Darjeeling with my parents in the Puja holidays. Darjeeling is a good hill station which is rich in natural beauties. There are scenes at Darjeeling which can appeal even to a callous heart. The journey up by the toy train, and the return journey by road on a bus will be very pleasant. The scenes of the Himalayas are quite exciting. People are relieved from tiredness and feel refreshed. After returning from Darjeeling, I will try to form a social group and do some social work. I will teach the ignorant people and help the poor and needy ones. Thus this is the programme of my Puja vacation.

—Ravi Shekhar, VIII B

Calcutta Capers

For the first three or four days of the Puja holidays, I shall enjoy the pleasure of the company of my parents, brothers and sisters at home. Then I will leave for Calcutta to witness and enjoy the famous celebration of Puja in Bengal. My friend Binod will be at Calcutta with his parents, who are in government service there. I have talked to him already, and he has assured me that his parents will be glad to receive me as well. I shall stay up to Vijay Lakshmi day and enjoy the famous Puja. I will return to Patna the next morning. I will devote the remaining two days of these holidays to preparing my school tasks.

—Pankaj K. Sinha, VIII B

No Place Like Home

Now either the Puja holidays are waiting for me, or I am waiting for the Puja holidays. For these holidays I am planning a new scheme and that is to stay in Patna. What I'm going to do these days is the real scheme. Firstly, I'll have to fulfil the demands of that troublesome chap 'homework'. And even then if my brain ever thinks of reading, I'll just put away the idea and remain brainless; but if it thinks of reading periodicals, it'll be most welcome. As all intelligent men and doctors say, 'Health is wealth'. To improve health we should play. I am a weak man and I want to improve my health and become more or less like an elephant from a match stick. So, all play, most of the time. The most important thing is food. Without it nothing can work at all. So I'll also eat, just like an elephant. Some people even

if they do that, suggest that it is wrong. I can't think what is wrong with it. Is it wrong to play and eat to improve health, or to read periodicals and increase our general knowledge, or to remain in Patna and meet friends? Finally, is it right to study physics and make the brain tired so that it can't work in the future? Holidays are meant for enjoyment and rest, and so I'll do that—but not forget God, the almighty.

—Braj Kishore Mishra, VIII B



Sea and Surf

It was a Sunday. The sky was unusually blue, and the sun was shining in all its glory. We— the four of us, my father, mother, sister and myself— reached the seashore at sunrise. The sun's early rays silhouetted the endless rows of tall palm trees, miraculously spreading streaks of gold, red and silver on the water surface. The silver sand which was beginning to get a little hot, tickled my feet and through me ran a thrill of joy and happiness. The wide panorama of the rippling blue sheet was indeed breath-taking. In less than fifteen minutes we were able to hire a motorboat. The small boat swayed gently as we got into it. "Phut, phut" roared the engine, and off we went for a beautiful ride on the sea. The cool breeze brushed my cheeks and dishevelled my hair. However, this did not seem to bother me at all as I was very much engrossed in watching

the beauties of Mother Nature around me and the wide expanse of sea. Off and on I busied myself with the binoculars in whose circumference I could see the sea birds as they lodged themselves lightly against the water surface. It seemed to me like magic the way they caught tiny fishes and swallowed them in the twinkling of an eye. My father, mother and sister busied themselves in a long session of cards. In the midst of a tricky hand when my father was going to be the ultimate loser, he gave a wistful look at the lunch pack and then shifted his eyes a bit uneasily back to the cards. My mother understood the cause for his restlessness and threw me an amused look. Finally, my father could go no further and announced that he was hungry. We all ate to our hearts' content on a swaying dining table—the bench on the boat. To add a little more flavour to my fun, I dived from the boat and swam to the shore, panting a little. A hot cup of coffee was the perfect ending to a lovely day, and through the rising steam of my cup, I saw the waves dancing upon the sea and the white surf forming on them.

—Anjum Abidin, IX B

Puja Plans

Durga Puja has a very long history behind it. It was started from the period of Shri Ram Chandaraji, when he invaded Lanka, killed Ravan and after his victory, worshipped the goddess Durga. This festival has come down to us from that time. This festival is celebrated in all parts of India by Hindus. This is celebrated either in September or October, and goes on for nine days, concluding on the tenth. Many devout Hindus keep a fast by taking only fruit. Then during the puja, they worship the goddess Durga

and chant 'mantras', read by the priest. All offices and schools are given a week of holidays to enjoy this festival, and as the Puja holidays come, everything seems new and happy. Everybody wears new clothes, new things are bought, and most important..... everybody is smiling and happy—and why shouldn't they be so? They have waited with great patience for a whole year, passing through problems and pain, and have dreamt of new things. It is the time when enemies become friends, people laugh and one heart meets another. This year I also have some plans for the Puja holidays. I had thought I would keep it a secret, but I am telling it to you. I will study hard in this week of holidays, because my exams will be near. But, I will surely enjoy the Puja, for my sister is coming with her husband to Patna, and I will go to Rajgir with them one day. After returning, I will visit the different statues of Durga, I think I will get a lot of presents in these holidays and so I suppose it will be a pleasant time and a happy one.

Kaushik Dass, IX B

Joker's Cure

In my childhood, I always used to play practical jokes on my friends so that all of us could laugh together. I used to hide the shoes of my friends, or sometimes I would just dash against a running boy, or I would write some funny things on the back of my friends' shirts. All these were innocent jokes for me. A similar joke led to such a consequence, that I can never forget it, even now. One day I pulled away a chair on which my friend was about to sit.

He fell down and I had a real good laugh. Then I lent my support to him so that he could get up. But he started crying loudly and expressed his inability to stand. I couldn't understand what had happened. I got frightened and called my parents. When they came, the boy was still sobbing. My parents took him in their lap, and put him on the bed. He complained of severe pain in his leg, and his leg was gradually getting swollen. His sobbing didn't stop.

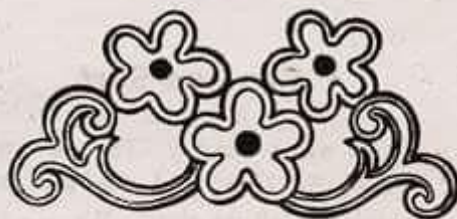
Then I got very worried. My parents took him to a doctor immediately. The doctor said that it was a case of fracture. Then his parents were informed. His leg was

plastered. All the time I was feeling guilty; more shocking was the fact that he was unable to walk for a month, and our examinations started during this period. Then he lost one year of his studies due to this innocent joke of mine.

I always felt myself responsible for it. Lack of foresight on my part had resulted in a grim situation. During all those days I used to visit him. I apologized for what I had done—but 'what's done cannot be undone'. That was the only thing that I could do. Of course my friend had a golden heart, for he forgave me. But I promised before him, "I'll never do that again."

—Tarun Sinha, VII A

Olympic Boycott in Patna!



It was the 4th of August. The senior English debate for the first time during this year was held in the auditorium. The auditorium was packed with the boys of standards IX and X. The topic for the debate was, "The U. S. decision to boycott the Moscow Olympics is not justifiable". The members of the affirmative side were: Abhas Jha, IX B, Surendra Rajeev, XA, and Vinay Sood, IX A; the members of the negative side were: Kanchan Sinha, X A, Mahtab Ahmad, IX B, and Thakur Subhash Sinha, X A. Result: the winning team was the negative. The best speaker of the negative was Thakur Subhash Sinha, and the best speaker of the affirmative side was Abhas Jha.

The atmosphere of the debate was very heated. Everybody, especially the participants, were carefully listening to each speaker—with a view to denounce him and criticize his points during the rebuttal. There was a tough contest between the two sides. The deliveries of Mahtab A. Khan, a germinating talent, and Thakur Subhash, were highly eulogized. As for the result, which was anxiously waited for, the affirmative team was trampled on, and the negative team proved superior.

In spite of the grand success of the debate, it was, however, sad to note that a couple of debaters did not prepare their speeches well due to which the house was irritated. I think that the organizers and the other authorities concerned will bear it in mind and try to improve the debating style of our future debaters.

A special word of thanks to the fathers who kindly acted as the juries: Frs. Kuruvilla, Poovakar and Varikamakil.

Xavier's Rector Becomes a Bishop

It was a great day in Bettiah—June 24—when our former beloved rector, Fr. John Baptist Thakur became a bishop. The members of Fr. John's family and many of his friends were present there, to see Cardinal Picachy of Calcutta and ten other Bishops of the Hindi-speaking region place their hands on Fr. John's head in the solemn ceremony. Now he is Bishop John, but we feel that he is still ours, even though he resides in Muzaffarpur. He returned to St. Xavier's for a visit on August 30, and the students and staff literally covered him with garlands and affection. A purse had also been collected, and it was presented to Bishop John. He is deeply grateful to the staff and students. We hope he will return to visit us often. After all, Muzaffarpur is not so far away.



Bishop J. B. Thakur

On 21 June, 1980, St. Xavier's school compound was the scene of the consecration of Fr. Benedict J. Osta as the new bishop of Patna. Fr. Varikamakil supervised all the arrangements—a huge shamayana, lights and decorations—and the place was transformed for the great occasion. About 3,000 people were present. We congratulate Bishop Osta, and we cannot forget to thank Bishop Wildermuth for his interest in our school over the past 33 years.



**The consecration of Bishop Thakur in
Bettiah on 24 June 1980**



**Bishop Benadict J. Osta
New Bishop of Patna**



Inter-Class Struggle

This year the inter-class football tournament started a few days after the school re-opened after the summer vacation. Classes V to X participated in it. They were divided into two groups—Group A consisting of classes V, VI and VII, and Group B consisting of classes VIII, IX and X. From Group A, classes VII B, and VI B scored maximum points. of these, VII B was the winner. In Group B, classes IX A and X B earned maximum points. IX A was the winner. The final was played between VII B and IX A. The seniors were of course the better, and won by two goals to nil. Congratulations to IX A who won the title of Inter-Class Football Champions. We must also thank Shri A P. Osta for his hard work in making the tournaments successful. Barun Kumar of class IX A scored the highest number of goals with four goals to his credit.

— Agam Kumar, X A



The victorious IX A class team with Fr. Grace

"At Last"

You may wonder, and think, "At last!"—what? Yes, at last our Indian hockey team won a gold medal after a lapse of 16 years. This was a proud moment for India. But nothing so great because Pakistan, Germany, Holland and Australia did not come, as they boycotted the Moscow Olympics with America. The Indian team was led by Bhaskaran, who had 16 other players with him.

India played their first match against Tanzania. The Tanzanian team was taking part for the first time in the Olympics. They were routed by the Indian team with a score of 11-0, which is the second highest number of goals in Olympic history. The existing record of maximum goals is 24-1 when India defeated America. They played their second match with Poland against whose strong defence the game ended in a draw, 2-2.

India was lucky to get a penalty corner in the last four minutes to end the match in a draw.

The third match was played with Spain. This match also ended in a draw, 2-2. But the Indian team was unjustly hammered by the umpire. The umpire was in favour of Spain, but India drew the game. The fourth game was played with Cuba. India defeated them by 13-0, and came to play the fifth match with Russia, another powerful team, but India defeated them by 4-2.

At last India entered the finals for the gold against Spain. India played very well, and Spain replied well. India defeated Spain by 4-3 to regain the gold medal, a mark of prestige for India. Spain placed in second position with Russia, Poland, Cuba and Tanzania following.

In my view, if India wins all other major hockey matches like the world Cup, the Asian Cup, etc., in the presence of the four major teams of Pakistan, Germany, Holland and Australia, then we can say that India has got the strongest hockey team.

— Abraham Alexander, IX B

Xavier Life



Vol. 29 No. 3 ST XAVIER'S, PATNA Nov., 1980

~~~~~

## PANTHERS ARE CHAMPS



On the 26th of September afternoon, the basketball fans surrounded the court to see the battle for the intramural basketball crown. This time it was Panthers vs. Tigers. The Panthers were leading by 19-15 at the interval. After the interval the Tigers fought back, and were very close to victory. The final score was Panthers - 54, Tigers-41. Congratulations to the Panthers team !

This year the tournament was played on the league basis. The Leopards finished third, and the mighty Lions were fourth. Thanks to Fr. Jerry Grace and Mr. A. P. Osta for making the tournament a success. Summarised results of the Inter-House Basket ball Tournament are on page 12.



Sumit Osmand Shaw, 2-B

### वाक् प्रतियोगिता

#### एक सफल समारोह

वक्तृत्व शक्ति का जीवन में अपना ही महत्व है। जीवन की लम्बी व कठिन उड़ान में अधिकाधिक उच्चता प्रदान करने में वक्तृत्व शक्ति मनोनुकूल सहायता प्रदान करती है। आप जीवन के किसी भी दौर से गुजर रहे हो अथवा आप किसी भी क्षेत्र में संलग्न हो आपकी मुखरित आत्माभिव्यक्ति सदैव आपको प्रगतिशील बनाए रखती है। चाहे आप विज्ञान के व्याख्याता हों या अधिवक्ता हों अथवा समाज-सेवा में रत हों आपको इस,

कला की नितान्त आवश्यकता पड़ेगी। हम छात्र भी इस बात में परे नहीं हैं। हमें भी आत्माभिव्यक्ति को प्रभाव-पूर्ण शब्दों में प्रदर्शित करने की उत्कट अभिलाषा होती है। हमारा विद्यालय भी छात्रों की इस मनोकामना से पूर्णतः परिचित है और शायद इसीलिए विद्यालयीय डायरी में वाक् प्रतियोगिता का स्थान अवश्य रहता है। १२ सितम्बर का मध्याह्न—संत जेवियर नाट्यशाला छात्रों, शिक्षकवृन्दों तथा निर्णायक गणों से खचाखच भरी थी। प्रतियोगी प्रदर्शन कर रहे थे उत्कृष्टता से, श्रोता सुन रहे थे सजगता से व निर्णायक अंक दे रहे थे बुद्धिमता से। सभी सजग, सभी मौन व सभी उत्सुक-पूर्ण सफलता के साथ प्रतियोगिता आ योजित हुई।

( पृष्ठ २ पर क्रमशः )





## वाक् प्रतियोगिता (पृष्ठ १ से)

उत्साहवर्द्धक परिणाम ये रहे—

जूनियर्स :

प्रथम : दिनेश प्रताप VI A

द्वितीय : तौसिफुद्दीन अहमद V B

तृतीय : राजेश साहनी VI A

इन्टर्स :

प्रथम : ब्रज किशोर मिश्र VIII B

द्वितीय : श्यामल गुप्ता VII B

तृतीय : परवैज करीम VII B

सीनीयर्स :

प्रथम : सोमनाथ सेन X B

द्वितीय : कल्याण शर्कर IX A

तृतीय : संजय कुमार पाण्डेय X B

## A Pledge Redeemed

### It's Tigers This Time

'Ladies and Gentlemen' was the sound that rent the air over the swimming pool on the 23rd of August this year where the whole school gathered to witness the feats of the Xavier 'fishes.' The day got rolling with the 50 m. free style. There was a tough fight between Balaji Mohinish of the Lions, and Lawrence Paschal of the Tigers. Their timings differed hardly by a second. This was followed by other events which included the 50 m. breast stroke, the 50 m. butterfly, etc.

The intermediate group was dominated by Rajoy Sinha. The juniors surprised everybody by their performance, and they are not less talented than their senior counterparts.

The most thrilling part of the day was the 4x25m. free style and medley relays. Both of these were captured by the Tigers, with the Panthers as runners-up. The individual champion in senior, inter and junior sections were Balaji Mohinish (Lion's Captain), Kumar Rajoy Sinha (Tigers) and Sanjay Gupta (Panthers) respectively. Sujay Sinha Vivek Luthra and Navin Kumar also contested well for the championship.



The day belonged to the Tigers, who came first with 52 points, followed by the Panthers (36 points), Lions (34 points) and Leopards (8 points). A special mention goes to the Panthers who with very few swimmers got the second place. When asked to comment on this victory, beaming Tiger's Captain Sudhir Agarwal replied, 'Well, for me, it's the redemption of a pledge—the pledge that "We shall do it again", taken by our former captains has been redeemed this year.' (Mind you, the Tigers have been winning this championship since its birth with very few exceptions, such as last year.) Finally, hats off to Fr. G. P. Grace and Mr. A.P. Osta who worked very hard to make it successful.

—Sharat Kumar Sinha, X A



# editorial

## It Depends on You

As we are getting on in the year 1980 (but not badly of course), we are getting closer to the end of it. The boys will remember this year as a sweet year with days full of relish and relaxation. But never will they forget to call it a year full of hardships and muscle-straining work. The winter gale rattles classroom windows, suggesting the end of still one more landmark in the history of St. Xavier's.

On this very occasion, we dare to enumerate some of our achievements and also, nonetheless, the spirit dampening defeats of this year.

First of all we would like to pay our sincerest thanks to Mr. A.P. Osta for his indefatigable and relentless work on the games fields under the scorching sun. Under his very keen guidance, St. Xavier's games' department may rightly be said to have received a blood transfusion.

In view of our display in the extra-curricular activities and excellence in the games' department, the year was, after all, full of mixed feelings for us.

We began with the Baba McGlinchy Basketball Tournament in Bettiah, first organized by Fr. Henry Rebello in 1978. Our performance there was not up to the mark. The other teams were better prepared. Next we stepped down to the All-Patna Painting Competition in which our school laudably earned the Dr. S. Sen Memorial Shield for this year. Getting along further our cricket kids did a remarkable job by bringing the B.B. Yadav Trophy back home. The long summer vacation ended, and then St. Xavier's became a venue for scores of competitions still left. St. Xavier's could really boast after winning the All-Patna One Act Play Shield (Hindi) for the second consecutive year. The results of the music competition also were encouraging as far as St. Xavier's was concerned.

We cannot do any eulogising job in terms of tennis, and football this year. Where we stand in these fields is not concealed from us. The prospects as things go to not seem to be bright. We are placed in a tight corner.

Yet the overall impression of a keen observer is not so bad a one. Moreover, it is sort of bright and encouraging. No doubt our standard is slipping, but that is true of most of the schools around us. The rumour that spread over the Xavier campus a few years back, that the present Xaverians are merely a shadow of their former selves, was not fully true, but at least an eye-opener. We have maintained our status but we have to do more than that. We have to excel.

There is no gainsaying the fact that to excel we need to work hard. Then only can we bring perfection in our standards. Let us take a firm attitude from the beginning. That is the secret of all success.

—Kanchan Sinha, X A

—Gyanendra Harshwardhan, X A

## Letters to the Editors

महाशय,

अत्यन्त खेद के साथ आपलोगों को यह सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय की पत्रिका 'जेवियर लाइफ' के गत संस्करण में सूत्रनात्मकता व बौद्धिकता को महत्व प्रदान करने हेतु समाचार का गला घोट दिया गया। ऐसा करने से हमारे विद्यालय की पत्रिका 'जेवियर लाइफ' की लक्ष्य-प्राप्ति में बिध्न आ जाती है।

सधनवाद

—राजेश कुमार, XB

Sirs,

*It has been the tradition of Xavier Life to publish news and nothing else. Granted XL needs a bright outlook; but filling up the pages with meaningless stories only serves to bring this esteemed paper down to the same level as that of other schools. Publishing the news of India's deserved (?) glory in hockey at the Moscow Olympics does not concern our school. Travel experiences were all right, but the other stories seem to be misfits in this paper. Barring these aberrations, the reports on news were good. The art paper used for this issue, was also a welcome change.*

Surojit Bose, X B

Sirs,

*Congratulations for publishing many thought-provoking articles in your XL issue of September. The one that particularly caught my fancy was 'A Bride Forsaken' by Kshitij Mohan, VIII B. Kshitij*

(contd. on page 4)



### Letters (Con'd. from p. 3)

wanted to know when God was going to give us a leader to abolish the curse of dowry. Answering his question, I would say that God has already given us the leader who can exterminate this curse. It's me, you and all of us who can put an end to this evil practice. Until or unless we make up our minds, the dowry system cannot be eradicated. After all, it is we who have to marry. Let us pledge that we shall not allow anybody to crucify mankind upon a cross of gold.

Sudhir Agawwal, X A

Sirs,

Apropos of 'At Last', I would like to point out that besides being out of place, the article was misleading too. India defeated Tanzania 18-0 and not 11-0. The article was not fit for a school newspaper, and more of a Searchlight type news item. Some other articles were unrealistic and unimaginative. I hope you will avoid such articles in the future.

Vijay Swaroop, X B

Sapan Jha, X B

(Ed.—We are sorry for our mistake, Vijay and Sapan. The match scores were a misprint by the printer's devil. We welcome your comments.)

Sirs,

Am I proud of being a Xaverian? A major portion of the library books are torn by the students. One may consider himself lucky if he finds a National Geographic magazine which is not torn. Tennis exists only in name in the school. Tennis rackets are seen once in a blue moon. The Camera Club is confined to a mention in our school diary. The Interact Club has also vanished into thin air. We do not have the annual Fete any more. Our school General Knowledge team has lost for two consecutive years. Our school loses the Murphy Memorial Cup almost every year. Am I still proud of being a Xaverian?

Anjan Sinha, X A

## Soccer Tournament Blooms

At last the much awaited competition, the Intramural Soccer Tournament, came in the last week of August. Once again the four teams, along with their captains, were on the field to show their skill. This year's tournament was a bit unusual. The uniqueness of the tournament was the innovation of the Olympic system. Of course it was planned and executed by our able Mr. A. P. Osta.

On the 21st of August, the Lions showed their supremacy over the Leopards by defeating them for the 3rd place with a near margin of 1-0. After much tussling, the two teams that could make their way to the finals were the Panthers and the Tigers.

Amidst much applause, on the 25th of August, the two teams met once again to decide the tourney. It was a clash between the two giants. The Panthers were confident of clinching the title for the second consecutive year. But the absence of their captain, Sharat Sinha, and another player Shanku Chatterjee, was too heavy for them to bear.

At the beginning the Panthers showed their ability and scored the first goal of the match through Deveshwar Sharan. But soon Ashok of the Tigers netted the ball magnificently and brought the score to one each by the half time. After the half time, the faces of the coin changed. Immediately Sanjay Kumar, the Tigers' centre forward showed his talent by scoring two consecutive goals

splendidly, and increased the margin to 3-1. Many thrilling moments were witnessed during the match. One worth mentioning was the penalty shot taken by Barun Kumar, which brought the score to 4-1. A few minutes after this incident, a long whistle was heard and the game ended in favour of the Tigers, who routed the Panthers by 4 goals to 1.

There were many things that contributed to the Tiger's victory. The mutual cooperation and the technique of passing the ball among the Tigers simply outclassed their rivals. Another major factor for the Tigers' victory was the fine leadership they got from their captain, Sudhir Agarwal. Despite the valiant efforts of Sapan Jha, Shahid Imam and Somnath Mukherji, the Panthers could not sustain the absence of their efficient captain, Sharat Sinha.

When asked to comment on this victory, Sudhir Agarwal said, 'We could not have done it without the help I got from Sharat. In spite of being my arch-rival, he helped me tremendously. A real sportsman indeed.' When I asked Sharat if he was disappointed at losing the tourney, he firmly replied, 'Absolutely not. Rather, I am happy for the victory of the Tigers, and my team's performance in my absence.' Finally, I specially thank Mr. A. P. Osta who worked really hard to make this tournament a grand success. He infused life into the tourney.

— Yuvraj Suri, X A



## Expanding Horizons

We are told that cramming all the matter that is written in books is not just what we came to school for. It is necessary to have a wider outlook on all fields of human endeavour on the national and international front. Therefore, to shake up our brains, this year's intramural quiz contest was held on the 9th of September.

The four teams, adequately represented, met in the auditorium along with the other boys of the school at 1.35 p.m. The hall was packed with boys ready to support their respective teams.

The four teams seated themselves in a semi-circle around the quiz-master. Fr. George Thana read out the rules of the competition. Thereafter, the quiz-master, Mrs. Rekha Srivastava, started off in her mellifluous voice. 30 seconds were given to a team in which to answer the questions. In case of a team failing to do so, the question was passed over to the next team. In the first half, three teams—Lions, Leopards and Tigers—went forward neck to neck, lustily cheered by their supporters. But in the second half, the Tigers pulled ahead and left the others standing far behind. The Panthers, too, came out of their rut to occupy a respectable third place. Last year's champions, the Lions, came last; the majestic roar of the previous two years failed to be heard. The Tigers (consisting of Sudhir Agarwal, Surendra Rajiv, Ramchandra Bannerjee and Promod Kumar) had clear sailing to the first position. The final points were as follows: Tigers—42; Leopards—28; Panthers—27; and Lions—19. We hope that in the coming years the boys will keep up this spirit of keen competition and co-ordination.

—Surojit Bose, X B

## Grand Slam

Never in the recent history of St. Xavier's had any house the honour of performing a Grand Slam. But it has been done. Yes, the ferocious Tigers have won four consecutive championships. They are swimming, football, music and general knowledge competitions. This remarkable feat has been achieved because of Sudhir Agarwal, the Tiger's Captain, who has successfully manoeuvred his team to the top. Bravo, Tigers! Keep it up!

—Sharat Kumar Sinha, X A

—Balaji Mohinish, X A

## TEACHERS' DAY CELEBRATION

It is in very few schools that one day is reserved completely for the teachers, and St. Xavier's is one of the lucky few. We observe Teachers' Day every year on the 5th of September and have celebrations one day before. This year was no exception and so we trooped into the auditorium at 1.00 p.m. on the 4th of September. Each student 'manned the battle stations' and prepared themselves. For what? To give each teacher a personal, lusty cheer, a small but very heart-warming thanks for what each of the teachers has given to each of us.

Well, the programme started at 1.00 p.m. sharp with a welcome speech by the Student Council President, Somnath Sen. Most of the classes had something to present. Standard V was represented by the tabla genius, Sandip Dass. Really, the school has a future maestro in this small but gifted boy. IX A and B were represented by Ashok Bhaskar Pandey on the violin. Kanahaiya Priyadarshi, VII B, brought the house down with his imitation of Amitabh Bachan. Vishal Narain, representing Standard VI, performed beautifully on the guitar, and Sanjay Pandey provided some excellent jokes.

But by far the best presentation (besides the individual effort of Sandip) was by X B. Sanjay Pandey proved himself to be an absolute marvel at humour. At the end of the programme each teacher was given a small present on behalf of the students, and Shri Kemy Osta brought the celebrations to a close with his speech thanking the students. Everything finished at about 2.30 p.m., but the proposed basketball match between the staff and students was cancelled due to rain.

—Abhas Jha, IX B

## statistics live again

After remaining virtually dead for several years, the Xavier Statistics Club is again blooming on the campus, thanks to the guidance of Mr. K. N. Pandey and the enthusiasm shown by Somnath Sen. Although a very short time has passed since its reawakening it is heartening to see the Xavier Bulletin Board filled with various charts relating to diverse subjects. It is our sincere hope that the Xavier Statistics Club will not collapse again, and will always get such members who want to benefit from this constructive organisation.

—Deepak Maitin, X A



# PROFILE



Born on the 17th of May, 1954, he passed his Bihar Higher Secondary in '68. He finished his M. Sc. in '75 (First Class First) and now, he also has a B. Ed. to his credit. This wonderful person who sat opposite me at one of the library tables was **Mr. Abumonawwar Zahidi**.

Maths is in his family, and thus he has a hobby of collecting science and maths books. Mr. Zahidi is the eldest of the family, and all his brothers and sisters are studying at present.

As his physique reflects, he is an excellent sportsman. His fields of specialization were high-jump, long jump and football. He told me that he is very good at sprinting too. (Be careful, boys—don't try to run away from his class.)

Mr. Zahidi joined St. Xavier's in February 1976. He likes the atmosphere here very much. 'I enjoy teaching', he said. Speaking of society, he said that it is the selfishness in our countrymen which is a barrier to harmony.

He likes travelling and also used to go for movies, but now 'they lack reality'. We were running short of time, So I put a last question. 'If you don't mind my asking, are you married?' 'No I'm single.'

—Somnath Sen, X B

## They Captured the Throne

The intra-mural one act play festival was over, and it was time to get ready for the All-Patna Play Festival. It was announced that 'Sinhasan Khali Hai' would represent our school at the festival. After a bit of reshuffling in the cast, the play was rehearsed under the direction of Mrs. Ira Sinha. The play was put on at the Bharatiya Nritya Kala Mandir on the 17th of September, after Dr. S. D. Mishra had added his veteran touches to the production. The role of 'Netaji' won Balaji Mohinish the Best Actor's Award. All the others—Alok Sinha, Sanjay K. Panday, Indra Pratap, Pranay Sinha and Agam Kumar—were awarded certificates of merit for their standard of acting. The sound-effects were handled by Mr. A. P. Osta and Fr. Drinane. Mrs. Rekha Srivastava and Mr. Samuel David did a good job on the lighting. This is the second consecutive year we have won the Best Play Shield (Hindi), and we hope to see it back next year again, never to be returned. Kudos to all.

—Somnath Sen, X B

## Pedal Pushers

I along with five classmates decided to make a cycle tour from Patna to Rajgir and back. The programme was fixed, complete with a place and time to start our tour. Some of the boys took a cycle pump, wrench, valves, tubes and repairing supplies. It was the rainy season. So we had to take our rain-coats, and something to eat on the way. We started happily on a pleasant sunny day. At about 2 o'clock, it began to rain. Anyway, we put on our rain-coats and went on our tour.

One of my friends fell ill on the way, and two of the cycle tyres burst. So we had to face a bit of trouble. We consulted a doctor who gave some tablets to bring down his temperature, and advised us to break our tour, at least for a night. We stayed at an inn. We nursed him the whole night. Luckily he was cured of his illness and said that he was quite well. He got ready to start the tour again. Anyhow, we reached Rajgir and stayed there in a rented house. We enjoyed the natural scenery of Rajgir and took our bath in the hot springs for two days happily. Our sick friend was well. After two days, we started our tour back to Patna.

Pradeep K. Singh, VIII B

I have been very much interested ever since my childhood, in touring the world on a cycle. I always kept thinking how I would cover the world by cycle—even in the classroom. One day, in a certain period, I was listening to the teacher. Suddenly, I saw that Daddy had bought me a new racing cycle. Then I went to Mummy and asked for Rs. 500 for my own expenses, and strangely, Mummy gave me that money with a smiling face.

So I went out for my cycle tour. I saw that I had crossed the Atlantic Ocean on my cycle...then I reached America.

Suddenly, I again found myself in the classroom. I began to think how it was possible. But before that, I heard the voice of the teacher saying to me, 'If you want to sleep, then go and sleep in the corridor.' It was only a dream. That day, I promised myself that I'd never think again about my great cycle tour.

—Kaushik Talapatra, VIII A



## Hail to the L. T. S. Movement

Founded in 1959, the Leadership Training (for) Service has by now become a potent force in animating the youth with the true spirit of leadership. More a movement than an association it has succeeded to a great extent, in shaking off the apathy of youth towards social crises and diverting them to the noble and selfless service of 'God and Country'. The L. T. S., originally called 'God's Leader Squad', saw its inception at Goethal's Memorial School, Kurseong, on the auspicious day of 15 August, 1959. And with its gradual deployment, it has now more than 100 units all over India.

The L. T. S. came to St. Xavier's some two years ago with a talk given by Fr. George Peter, S. J. (co-ordinator of the Patna units) in which he briefly explained the broad outlines of this movement. A group of twenty-five boys of VIII class (the present X standard) was eventually formed and put under the guidance of Br. Sebastian, S. J. Presently, however, this group runs under Fr. G. P. Grace, S. J. who is the animator of the Xavier L. T. S. unit. To maintain continuity, a

junior L. T. S. group has been formed recently. The guide of this group is Br. Lourdes, S. J.

There is also an executive committee for Patna consisting of representatives sent from different school units to make decisions on an all-Patna scale. Another feather in Xavier's cap, the Xavier representatives have been presiding over this body for the past two years. The present leader is Agam Kumar, X A.

Seeking to bring about an all-round development: moral, spiritual and social—at all levels, both individual and collective, the L. T. S. has recently embarked on the 'Grow to Give' programme which is meant to foster personality development and spiritual insight and to promote social understanding. Off and on, the L. T. S. also holds orientation courses and camps to train its members to grow the L. T. S. way.

For all that it has done in a relatively short period of 21 years, the L. T. S. merits wide acclaim. May it continue making progressive strides in the future!

—Gyanendra Harshwardhan, X A

—Jayant Tiwary, X A

## कबड्डी

“कबड्डी” खेल संत-जेवियर शिक्षा संस्थान के लिए एकदम नया है। परन्तु इसी कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेकर संत-जेवियर इस खेल में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लेगा, यह सुन कर एक ओर हमें बहुत आश्चर्य होता है, तो दूसरी ओर विद्यालय के साहसी कदम तथा खेलों के प्रति रुचि बढ़ते हुए देखकर मेरा मन आश्चर्यचकित भी होता है।

फादर जार्ज थाना तथा श्री पॉल ओस्टा द्वारा नवम् बर्ग के 14 छात्र इस प्रतियोगिता के लिए चुने गये।

ता० २७ सितम्बर १९८० को इस प्रतियोगिता का प्रथम मुकाबला संत-जेवियर तथा मिलर उच्चतर विद्यालय के बीच मिलर उच्चतर विद्यालय के प्राण में ही सम्पन्न हुआ।

इस कबड्डी प्रतियोगिता में संत-जेवियर के खिलाड़ी शुरु से ही मिलर उच्चतर विद्यालय के खिलाड़ियों पर हावी रहे तथा उन्होंने अपने खेल प्रदर्शन द्वारा दर्शकों के हृदय को मोह लिया। अंततः वाजी संत-जेवियर के ही हाथ रही।

इस प्रतियोगिता में वरुण कुमार (नवम् 'अ') का खेल अत्यन्त सराहनीय रहा, तथा अन्य खिलाड़ियों का खेल भी अति उत्तम रहा जो अंत तक संत-जेवियर को विजय दिलाने की इच्छा से जी जान लगाकर खेलते रहे। इन सभी चीजों का श्रेय संत-जेवियर के खेल-शिक्षक श्री पॉल ओस्टा को जाता है, जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम द्वारा खिलाड़ियों को इस लायक बनाया।

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे संत-जेवियर उच्च विद्यालय

६४ अंक

मिलर उच्च विद्यालय

३२ अंक

—इन्द्र प्रताप, IX A





## Is India Heading for Disaster ?

The condition of the people of India has become worse today. They have lost all hope of solution for any of their burning problems. Essential commodities are beyond the reach of the common man because of sky-rocketing prices. The number of unemployed youth has crossed the 20 million figure, which has in turn added to the law and order problem of the country. The educational system has become corrupt. Due to frequent power break-downs, factories and mills are being closed, causing more unemployment. Also due to power failure, the irrigation system has suffered. Communal riots, rapes, and atrocities on weaker sections of the people have become the order of the day. Over and above, floods and droughts are badly affecting the economy of the country. But not least is the fact that the politicians whether in or out of the government are doing little for the welfare of the country and the people. Instead, they are amassing wealth through corrupt practices. Money power is ruling the country these days.

The present crisis of the country indicates that it is heading towards disaster unless some strict measures are adopted by the government with the co-operation of the general public to improve the situation.

— Arvind Nath Sahay Singh, X A

India has never faced such serious crises as she faces now. But of course, the next few decades are going to be more dangerous than ever. The main problem is the political system which is almost dead. Each election provides a new and corrupt political institution. Political leaders have a lust for power and money. There are about 2 million people living on political jobs. Different governments have proved

so brutish that dictatorship seems to be the best alternative.

Secondly, India is facing an economic crisis. The rate of economic growth has declined from 4.5% per annum to 3% in 15 years. The rate of technical progress has declined due to reliance on imports. The rate of growth of productivity is less than  $\frac{1}{2}\%$  per annum. India loses about 40 million man-days every year owing to slow deliveries of inputs and services, strikes and lockouts. The number of unemployed people is increasing every year. More than 70% of the population is dependent on agriculture but the land per head is only 0.74 acre. Natural calamities like floods and droughts also hinder Indian agriculture.

There has also been a massive generation of black money. This dislocates resources and shifts them from investment to consumption. India is facing the most disastrous social violence. There is no respect for law and order, and the law appears as an instrument of oppression and violence. People have lost faith in the police. The news of rapes, dacoities and murders can be seen in any newspaper, any day.

The people living below the poverty line are increasing. Only 39% of the people get a balanced diet while 41% get unbalanced food, and 20% get food worse than animals. Today the poor are paying for the health and education of the rich.

Besides, India's foreign policy is going to be a failure. The Soviet invasion of Afghanistan, the U. S. Gulf doctrine, the nuclear bomb of Pakistan, the Chinese manouvers in support of the U.S.A., have put great pressure on India.

But the worst conditions are yet to come. Let us see...

— Agam Kumar, X A







## भेरा रोचक अनुभव



उस दिन जब मैं विद्यालय से घर पहुँचा तो पाया कि घर के बाहर एक पुरानी साईकिल लगी है। मैंने तुरंत कपड़े बदल डाले और झट नाश्ता कर बाहर निकल ही रहा था कि पिताजी की आवाज कानों में गुंज गयी—बेटे धरम जरा इधर आओ। मैं ठिठक गया, और जब पहुँचा तो उन्होंने आये हुए नए मेहमान को सम्बोधित कर कहा—“बेटे जरा चाचाजी के लिए पान ले आओ”, और न चाहते हुए भी मैंने जल्द ही दूकान की ओर कदम बढ़ाए। खैर, पान लेकर पहुँचा और झट उनकी हाथों में देकर बाहर चला आया। अब मेरी ललचाई नजरोँ का केन्द्र वह साईकिल था जो न जाने कब से मेरी इंतजार कर रही थी चुपके से मैंने साईकिल को अहाते के बाहर निकाला और अपनी इस सफलता प्राप्ति पर गर्वित हो साईकिल पर बैठ गया। मेरे अंदर अब एक नए जोश का संचार हो रहा था।

साईकिल की गति तेज थी। अचानक सामने एक मोड़ आ गया, मैंने हल्के से ब्रेक दबाना चाहा परन्तु हाय यह क्या ब्रेक तो काम ही नहीं कर रहा था। अब क्या करूँ! हाय भगवान, धड़क ... .. एकाएक मेरी साईकिल सामने से आते हुए एक रिक्शे से टकरा गयी, और ऊपर से उस रिक्शे वाले की डाँट भी पड़ी। टांगों में बड़ी जोर से चोट आयी थी। खून बह रहा था। खैर, मैंने वापस घर की राह ली। आगे जाने की हिम्मत नहीं थी। तभी सड़क पर पड़े एक पत्थर पर चढ़कर साईकिल असंतुलित हो एक बुढ़िया से टकरा गयी। बेचारी गिर पड़ी। मैंने आगे बढ़कर उसे उठाया और क्षमा मांगकर अपराधी भाव से उसे कारण बतला दिया। मेरी हालत देखकर उसने मुझे क्षमा कर दिया वरना उस दिन तो ... ..

खैर मैं आगे बढ़ा तभी मेरी साईकिल को पीछे से एक जोरदार धक्का लगा। “क्षमा करना भाई ब्रेक नहीं है। मेरी भी वही हालत थी क्या करता? मन ही मन उसे कोसता हुआ आगे बढ़ा। और आह! घर आ ही पहुँचा लेकिन ओह साईकिल तो रुक ही नहीं रही थी। एक जोरदार आवाज के साथ मैं साईकिल सहित चाहारदीवारी से जा टकराया। मैं धक्के खाते-खाते लहु-लुहान हो गया था, और साईकिल भी पड़ा दम तोड़ रहा था। मैंने चुपके से साईकिल यथास्थान लगा दिया, परन्तु अंत में गलती पकड़ी गयी। नए मेहमान ने मेरी नादानी को माफ कर दिया था। पिताजी के गुस्से से भरी लाल-आँखों से मुझे देखा तो अब भी डर लग रहा था। परन्तु मम्मी की दया से कुछ नहीं हुआ। बस हल्की डाँट भर पड़ी, पिताजी ने साईकिल बनवाने का खर्च उन्हें सौंप दिया और मेरी मरहम पट्टी भी हुई।

कल फिर वही साईकिल मेरे घर के पास लगी थी, चलाना तो दूर मैं अब उसे धृणित निगाहों से घूरता रहा।

— धर्मेन्द्र कुमार सिंह, VIII B



वास्तव में तो मैंने अंतरिक्ष यात्रा नहीं की है मगर मैं इसकी कल्पना अवश्य कर सकता हूँ। कुछ पत्रिकाएँ और अखबारों को पढ़कर मैंने भी अंतरिक्ष में जाने का सपना देखा है किन्तु जान सका। खैर, अब आप भी हमारी कल्पना के आकाश में उड़ान भरिये।

हाँ, तो बात सन् 1959, जून की है जब अमरीका द्वारा एक उपग्रह चाँद पर भेजा जा रहा था; और मुझे तथा मेरे एक साथी को वहाँ भेजा जा रहा था। हम दोनों यान के सबसे उपर ‘कैप्सूल’ में बैठे थे। कम्प्यूटरों, में शून्य अंक तक आने से 9 सेकेंड पहले यान को ‘स्टार्ट’ कर दिया गया और शून्य तक आते-आते हमारा यान धरती से उठने लगा। उस वक्त मेरी हालत का अंदाजा आप लगा सकते हैं। करीब दस मिनट बाद हम लोग धरती के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकल गये। अंतरिक्ष में बाहर बिल्कुल अंधेरा था। तभी संयोग कहिये या ‘राकेट’ की खराबी कहिये हमारा यान बुरी तरह काँपने सा लगा। यान की दिशा भी बदल गई और धरती से हमारा रेडियो-संबंध भी बिगड़ गया। ऐसा लग रहा था कि कोई चुंबकीय तरंग हमें अपनी ओर खींच रही है। हम दोनों ही नये ‘ऐस्ट्रोनौट’ थे और इन चुंबकीय तरंगों से से अपरिचित थे। अतः हम दोनों ने बचने की आशा छोड़ दी। तभी शायद यमराज जी को हम पर दया आ गयी और हमारा यान एकाएक ठीक हो गया। तभी हम लोगों के यान की ‘टेलीविजन स्क्रीन’ पर एक अजीबो गरीब यान जाता नजर आया। हम समझ गये कि किसी अन्य विकसित ग्रह के लोग हमारा निरीक्षण कर रहे थे। खैर किसी प्रकार दोनों सकुशल अपने अभियान को पूर्ण कर वापस आ गये। और अब आप इसे यमराज को दया कहिये या उन ग्रहवासियों की दया कहिये जो हम आपके सामने उपस्थित हैं।

संदीप गुप्ता, VIII B



## ✓ The 21st Century

Nature is changeable. But in this great age of science, the changing forces of nature have been overpowered by man with the help of science and technology. The 20th century saw the dawn of science. And seeing the progress in the 20th century, it is really thrilling to imagine what the 21st century and human life will be. Following the present trend, it is possible to draw a picture of the 21st century.

There will be tremendous changes in the life of human beings. A tablet or capsule, and there won't be any need of food for that day—so there will be no question of starvation. The present modes of dress and fashion will be treated as of the medieval age. Such clothes will be developed which need no washing. A train moving with the speed of sound will be an ordinary thing in the 21st century. Thus we will cover the distance between Patna and Bombay within three hours or even less.

The political system will also undergo certain changes. Elections will be conducted through electronic computers. No chance of unfair means. Religious and cultural life will also change with the passage of time. New gods will be there. The present day culture will be outdated.

This is one side of the coin. The other side of the coin may be something different. It is definite that man will find himself alone. Social life will be tense due to the breakup of the family system. With the help of science, the world may see many Hitlers, in spite of Gandhi and Kennedy. The creation of a test-tube baby in the 20th century has brought a new phase into the world of science. So we may ask, what will that new baby—the 21st century—be like?

— Mritunjay Singh, X A

## मॉडर्न स्टूडेंट—राष्ट्र के भावी कर्णधार

हमारे समक्ष हमारे अभिभावक भी नतमस्तक हो जाते हैं। आज हर क्षेत्र में हमारी महानता की गूँज है। बस—कण्डक्टर से लेकर सरकार तक सर्वत्र हमारे तेजस्वी व्यक्तित्व की चमक व्याप्त है।

हम हैं भी महान ! हम प्राचीन काल के धोती-धारी एवं आश्रम में रहकर विद्योपाजन करने वाले संकुचित मनःस्थिति वाले छात्र नहीं हैं। हम वैज्ञानिक शिक्षकों से मजाक कर सकते हैं और, कक्षा में शोरगुल भी मचा सकते हैं। हम हैं २०वीं सदी के पूर्ण विकसित और पूर्ण आधुनिक छात्र !

जी हाँ, मॉडर्न स्टूडेंट।

यह चिन्ता करना व्यर्थ है कि हममें अपने बुजुर्गों के लक्षण नहीं हैं। हमने अपने आप को नई विचारधारा एवं नई धारा के साँचे में फिट किया है।

सर्वप्रथम हमारे लंबे बालों के सम्बन्ध में अटकलें लगाई जाती हैं। लेकिन लोग यह नहीं समझते कि बाल बढ़ाने से हमारा तात्पर्य फैशन कदापि नहीं है। अध्ययन की तपस्या में हम इतने लीन रहते हैं कि हमारा ध्यान बालों पर जाता ही कहाँ है? वैसे कवियों, दार्शनिकों, साधु-सन्तों को देखिए सब के सब के सब लम्बे बालों वाले हैं। फिर हम भी तो किसी से कम नहीं हैं।

हमारे परिधान को भी कोई कोसे बिना नहीं रहता है। अब आप ही बताएँ, आज के वैज्ञानिक युग में धोती कहाँ तक उपर्युक्त है? अगर हम धोती पहनने लगे तो पुलिस द्वारा खदेड़े जाने पर भागते समय, सिनेमा हॉल में टिकट कटाते समय एवं चलती ट्रेन से उतरते समय हम कहीं होंगे और धोती कहीं और।

अब देखिए, लोग हमपर लड़कियों जैसे कपड़े पहनने का इल्जाम लगाते हैं। अरे भाई ! हम लड़के-लड़कियों के भेद को हटाना चाहते हैं। सामाजिक समानता हमारा सिद्धांत है। यही कारण है कि हम लड़कियों-से कपड़े पहनते हैं। है कोई ऐसा दूरदर्शी समाज-सुधारक ?

ज्ञान की हमारे पास कमी नहीं है। गुलशननन्दा, प्रेम बाजपेयी और कर्नल रंजीत की किताबों से हमारे स्टडी रूम की आलमारियाँ सुशोभित हो रही हैं। आखिर विश्वयुद्ध के कारण, पहाड़ के प्रकार, ब्लीचिंग पाउडर के अणुसूत्र इत्यादि जैसी फालतू चीजों के जानने से होता ही क्या है ?

हमारे धैर्य और सहनशीलता का कहना ही क्या ? एक वर्ग में पष्ठवर्षीय योजना समाप्त करने के बाद भी यदि 'गेट वे ऑफ क्रिस्मत' नहीं खुले तो हम विचलित नहीं होते हैं।

आशा है उपरोक्त महानताओं से आप भी हमारे प्रशंसक हो गए होंगे। ध्वराइए नहीं बहुत जल्द ही हमारे नेतृत्व में आप सब 'मुनहरे कल' की ओर बढ़ेंगे।

अमिताभ रंजन एवं देवाशीष सिन्हा X B

## Prize Winners

XL clicks its heels and congratulates the boys who got prizes in the Gandhi Sangrahalaya Cultural Competition, and those conducted by the Wild Life Preservation Association. The following boys were awarded prizes :

**Gandhi Sangrahalaya :** Painting - Ashutosh Pandey, X A (2nd prize), Shekhar D'Costa, VIII B (4th

prize) and Sanjeev Kumar, VIII B (6th prize).

**Wild Life Preservation :** Essay : Bhargeshwar Banerjee, XB (Rs. 200); Painting—Sanjeev Kumar, VIII B (1st Prize, Rs. 50), Shambhu Pratap, III A (2nd prize, Rs. 35), Rajesh Kumar, IB (4th prize) and Ashutosh Pandey, X A (from Group C, 4th prize).



संगीत लहरी—

कुछ क्षण

सुमधुर



मानव का स्पन्दनशील हृदय कदाचित् अतिशय भावुक हो उठता है—अतिशय कोमल। इन्हीं कुछ क्षणों में उसके अन्तर को सत् चित् आनन्द से ओत प्रोत करने के हेतु संगीत प्रमुख भूमिका निभाता है। मानव की इसी नुकोमल स्निग्ध भाव ज्योत्स्ना में निखार एवं उदारता चाने हेतु सतजैवियर नाट्यगृह में अन्तर्दलीय संगीत प्रतियोगिता का सफल आयोजन हुआ।

६ सितम्बर के एक बजे मध्याह्न की उस शुभ बेला में इस प्रतियोगिता ने प्रथम सोपान पर कदम रखा। प्रथम से षष्ठम् वर्ग के छात्रों ने अपनी कला का उत्तम प्रदर्शन किया। तत्पश्चात् सप्तम् व अष्टम् वर्ग के छात्रों की बारी आई जो कला-क्षेत्री में किसी प्रकार से काम नहीं थे। नवम् व दशम् श्रेणी

के छात्रों की उत्कृष्टता ने बची हुई कला में चार चाँद लगा दिए गायनोपरान्त वाद्यवादन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तबले की ताल पर बैजो एवं गिटार की ध्वनि सचमुच श्रोताओं को आह्लादित कर रही थी। सम्पूर्ण प्रतियोगिता में टाईगर्सेटल का प्रदर्शन सराहनीय रहा। अनिरुद्ध मुखर्जी गायन में विशाल आनन्द गिटार पर तथा संदीप दास तबले पर प्रशंसा योग्य रहे।

—संजय सिंह, दशम् 'अ'

इसी मास २० तारीख को अन्तर्विद्यालयीय संगीत प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

संत-जैवियर की तरफ से अनिरुद्ध मुखर्जी, संजय सिन्हा, संदीप दास तथा संजय सिंह का विशेष योगदान रहा।

—सम्पादक गण

## A New Trick

One morning, I arrived at school a bit early, and found a couple of my friends occupied with a new game—tossing toffees in the air, and catching them in their mouths. When offered a try at the game, I unwrapped my toffee and flung it high into the air. It came downwards, struck my nose, and fell to the ground.

Determined to learn the art of catching a projectile descending from the air, I started to practise

at home. Slowly, I got into the habit of tossing anything I had in my hand into the air, and trying to catch it in my mouth. I never succeeded.

One day, I happened to be putting up a poster in my room, when I absent-mindedly tossed a thumb-tack into the air, and opened my mouth in an attempt to catch it, still unaware that it was a thumb-tack that was on its way to my open mouth. Well, this time the

thumb-tack sailed right into my throat. I had a horrible sensation that reminded me of a lizard eating a live cockroach. I was rushed to a doctor, who managed to fish the thumb tack out of my throat with the help of a pair of forceps.

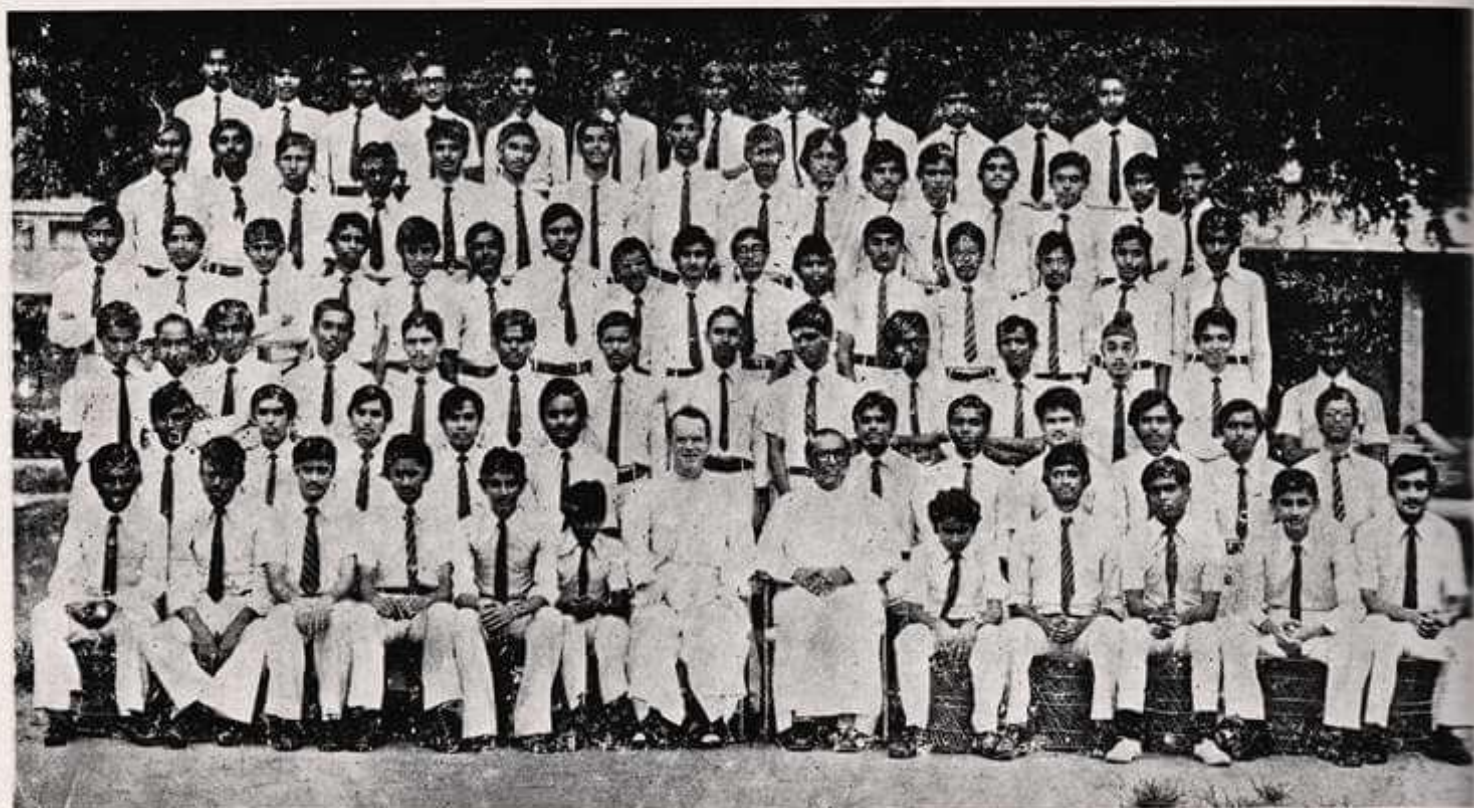
Ever since that incident, if a friend ever happens to offer me a toffee to catch in my mouth, I very politely and pleasantly advise him to sit on a thumb-tack.

—Suryakant Rajan, IX B



## God Bless You and Be With You

To our departing seniors, we will miss your smiling faces, your leadership and your presence. We will miss you for what you are, and what you have been to us.



- Top Row :** Devanand Sahay, Sunjay Kumar (B), Virendra K. Lall, Indrajeet Bose, Rajeev K. Jha, Alok P. Lall, Thakur Subash Sinha, Deepak Maitin, Rajesh Kumar, Surojit Bose, Sanjay Kumar (A), Vivek Luthra.
- 5th Row :** Aniruddha Mukherjee, Agam Kumar, Balaji Mohinish, Sharat K. Sinha, Somnath Mukherjee, Ratan Kumar, Sanjay K. Pandey, Alok Sinha, Gayanendra Yadav, Bipin K. Singh.
- 4th Row :** Sanjay K. Sinha, Ravi Ranjan, Santosh Tripathi, Raj K. Singh, Sanjay K. Ghose, Subash Chandra, Mritunjay K. Singh, Faisal Iqbal, Rajiv Tiwary, Ramchandra Bannerjee, Pradeep Kumar, Anjan K. Ghosh, Abhijit Kumar, Adil Hussain, Jayant Tiwari, Sanjay Pandey.
- 3rd Row :** Devashish Sinha, Gurdeep Singh, Kanchan K. Sinha, Gyanendra Harshwardhan, Shivendra Kashyap, Niten Chandra, Arbind N. Sahay Singh, Binay Kumar, Manoj Pandey, Surendra Rajiv, Dilip Kumar, Harjeet Singh, Jaggi Kalyani, Ajit Singh.
- 2nd Row :** Gopal Shanker, Rajeev K. Mehrotra, Purnendu Singh, Rajeev Kumar, Faiz Karim, Rajeev Mohan, Raj Kumar Sinha, Prashant Verma, Sanjay Singh, Navin Kumar, Prem Prakash.
- Sitting :** Sanjay Prasad, Jyoti Swaroop, Asifur Rahman, Vijay Swaroop, Sapan K. Jha, Sharad Kumar, Fr. Jerry Drinane, S. J., Fr. George Thana, S. J., Atal Kumar, Ajay Jha, Binod Kumar, Amitabh Ranjan, Bhargeshwar Banerjee.

### Panthers Champs *(from page 1)*

1. Panthers 44—Leopards 24
2. Tigers 49—Lions 43
3. Panthers 61—Tigers 39
4. Tigers 59—Leopards 55
5. Panthers 150—Lions 62
6. Lions 43—Leopards 36

For 3rd and 4th place : Leopards 47—Lions 44  
 Finals : Panthers 54—Tigers 41

After winning the tournament, Sharat Sinha, Sinha, captain of the Panthers, said that 'I had full confidence in my team, and we were sure to clinch the championship. But I want to praise the spirit of the Tiger's Team and their sincere Captain Sudhir Agarwal for their strong offensive.'





# Xavier Life



Vol 30 No. 1 ST. XAVIER'S, PATNA March 1981

## कनिष्ठ वर्गीय खेल-कूद प्रतियोगिता



Fr. George with newly elected officials.

आज ७ फरवरी, १९८१ ई० का वह शुभ दिन आ ही गया जिसका हमें बेसुकी से इन्तजार था, खासकर हमारे छोटे भाइयों को जो आज अपनी योग्यता अपनी कार्यकुशलता और अपनी अनुशासन प्रियता का प्रदर्शन करने वाले थे। इस उत्सव का आरम्भ तो ९.३० से था, फिर भी हमारे विद्यालय के होनहार विद्यार्थी बहुत पहले से ही आने शुरू हो गये थे।

आरम्भ में विद्यालय छात्र परिषद की ओर से अध्यक्ष ने अभिवावकों, शिक्षक वृन्द तथा छात्रों का स्वागत किया। इसके पश्चात् श्री ए० पी० ओस्टा तथा विभिन्न सदन के कप्तानों के नेतृत्व में मार्चपास्ट हुआ और सभी सदन के छात्रों ने कवायद का प्रदर्शन किया जोकि बहुत ही प्रशंसनीय था। इसमें हमें अपने छोटे भाइयों की नई चेतना और नया उल्लास देखने को मिला। इसके बाद विभिन्न खेलकूद का आयोजन, जैसे दौड़, रुकावट दौड़, मेडक-चाल दौड़, आदि-आदि खेलों का आयोजन किया गया। विभिन्न सदनों के विभिन्न खिलाड़ियों ने अपने-अपने क्रीडा-कीशल का प्रदर्शन किया। छात्र-परिषद् द्वारा अल्पाहार की व्यवस्था की गई थी, जो प्रशंसनीय रही। सर्वश्रेष्ठ सदन का श्रेय पेंथस को मिला। प्रधानाचार्य महोदय एवं अभिवावकों के पूर्ण सहयोग से पारितोषिक वितरण किया गया। उन अभिवावकों को हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने अनावहमूल्य समय तथा स्नेह खिलाड़ियों को पारितोषिक देकर प्रदान किया। इस अविस्मरणीय खेल-कूद-प्रतियोगिता ने हम लोगों का ध्यान खेल-कूद की ओर ही नहीं, छात्रों के सहयोग सहानुभूति और एकता की ओर भी आकृष्ट किया है।

अन्त में विद्यार्थी-परिषद के अध्यक्ष ने अपना सारगर्भित भावना प्रस्तुत किया। शील्ड पेंथस को हिस्से में रहा। विभिन्न सदनों के अंक इस प्रकार रहे—

प्रथम-पेंथस—६२

द्वितीय-लैपडस—७८, लायन्स—७८

तृतीय-टाइगर्स—६७

## New Executive Committee

It was a fine morning indeed when our principal, Fr Thana, S. J., told us in the assembly that, that day was the election for the executive members of the Student Council. The candidates were joyful, as well as doubtful of their success. To win the posts, canvassing was at its peak.

Anyway, the election began at 12.55 p. m. The candidates orated briefly to clear their eligibility for the posts. At the end of their speeches, they answered the questions or in other words, solved the difficulties of the voters.

Now when the voting was over, the officials counted the votes. The counting was provoking for the anxious candidates. The elected members of the student council are :

**President :** Vinay Sood

**Vice-President :** Avinash Sahay

**Secretary :** Rajesh Verma

**Ass't. Secretary :** Sanjeev Shankar

—Shishir Rajan, X A

—रोगन कुमार शा  
दशम 'अ'



## Fancy Dress Parade



There is no doubt about it—last year's celebration of Children's Day was unique. The competition was held on Nov. 15 instead of Nov. 14, because the 14th was a holiday. Our sunny optimism even dispelled the initial gloomy weather that greeted us that morning. By 10 o'clock, under a canopy of the deepest blue with fleecy white clouds swimming overhead, the ground of St. Xavier's was full of students, participants and parents. The teachers really outdid themselves to give their students a very inspiring and hilarious time.

The boys were gloriously and colourfully dressed. Some were Bruce Lee, Laurel and Hardy, robbers, sadhus, etc. They came on the stage one by one, showed their talents, and went away.

After the programme was over, prize distribution took place. Fr. George then gave a vote of thanks to all the students, parents and teachers, especially to Dr. S. D. Mishra who coordinated the programme very well as announcer—in spite of the electricity failure. We are eagerly waiting for Uncle Nehru's birthday this year, and another great Fancy Dress Parade.

Rajesh K. Sinha, X A

## तीन बातें हमेशा याद रखें।

तीन बातें किसी का इन्तजार नहीं करती।  
समय, मौत और ग्राहक।  
तीन चीजें ज़िन्दगी में एक बार मिलती हैं।  
माँ, बाप और जवानी।  
तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं आती।  
तीर कमान से, बात जबान से और प्राण शरीर से।  
तीन चीजें परदे के योग्य हैं,  
दान, स्त्री और भोजन।  
तीन से बचने का प्रयास करना चाहिये।  
बुरी संगति, स्वायं और निन्दा।  
तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है।  
ईश्वर, मेहनत और विद्या।  
तीन चीजें कभी न भूलनी चाहिये।  
कर्ज, फर्ज और मर्ज।  
इन तीनों का सम्मान करें।  
माता, पिता और गुरु।  
तीन को हमेशा बग में रखें;  
मन, काम और लोभ।  
तीन पर हमेशा दया करें,  
बालक, भूखे और पागल।

—शरत सुधाकर IX A

## अन्धे का दुख

क्या है वह चीज (रोशनी)  
जिसे देख सकता नहीं मैं।  
क्या है वह वस्तु (आलोक),  
जिसे अनुभव कर सकता नहीं मैं ?  
मैंने सुना, सुन्दर होते दृश्य,  
लेकिन देख सकता नहीं उन्हें मैं।  
सुना, सुन्दर पहाड़ों के बारे में  
लेकिन क्यों नहीं पा सकता उन्हें मैं ?  
लेकिन क्यों, क्यों नहीं  
देख सकता उन्हें मैं ?  
सुन्दर दृश्य, सुन्दर पहाड़  
क्यों नयनों से भर सकता नहीं मैं ?  
इसलिए कि मैं हूँ अन्धा,  
अतः देख उन्हें सकता नहीं।  
इसलिए चाहते हुए भी धन्धा  
कुछ कर सकता नहीं।

—सुनिल चन्द्र, VII A



# editorial

## A New Year

The year 1980 has passed and we have advanced into the year 1981. As usual the year started with the election of office bearers of the students' council, and captains and vice-captains of different houses. This year also the election climate was hot. One could see boys running here and there for votes. Posters were often seen on our bulletin boards.

Our senior boys are busy preparing for their matric examination which they have from the 9th of March. When we asked one of them how his preparations were going, he replied 'Fine! It is very easy to prepare for the examinations because we have enough time and also the course of studies is easy.'

The year started with some sad news of four or five deaths. Hemant Sinha, a former Xaverian, captain of the Tigers Team in the year 1978 and the brother of Sharat and Sanjay Sinha, died of brain hemorrhage.

Three new teachers have joined our staff club: Mr Choudhary came in the place of Mr. J. B. Pathak, and Mrs. Urmil Gagroo and Mrs. Meena Singh have also joined our teachers' circle. Fr. Grace is no longer with us. He has gone to Chicago.

Our school is now 40 years old, and it has stepped into its 41st year. Let's pray that our beloved St. Xavier's will live forever.

—Amresh Dhari Singh, X A

—Rajeev Rai, X A



In the November issue under the senior boys' picture, the names of Sudhir Agarwal, Anjan Sinha, Somnath Sen, Ashutosh Pandey and Yuvraj Suri were omitted (coming after Sharat Sinha in the 5th row). On page 10, the names of winners in the Gandhi Sangrahalaya contests did not include Kalyan Shankar (2nd prize, speech) and Ashok Jaiswal (5th prize, painting). On page 2, the name of Sd. Tausifudin Ashraf, V B was wrongly printed as Ahmed. Our apologies to all concerned.

## Letters to the Editors

Sirs,

In the November issue of Xavier Life in the article, 'They Captured the Throne', Somnath Sen forgot to give the names of Ashok Bhaskar Pandey and Vijay Swaroop. Agam Kumar did not take part in the One-Act Play Festival performance.

Sah Ajay Ram, IX B

Sirs,

My recommendation is that, from now onwards, you can also take the interviews of the students of St. Xavier's, like captains and vice-captains, elected members of the student council, boys of standard I, etc. It will be kind of you to do so. Thanks.

Kaushik Talapatra, IX A

Sirs,

Nowadays we are in the age of science, the modern age. Science has developed much. But in our school it is bound to the pages of books only. I mean to say that we must start some science projects to develop our practical experience, aside from those lab experiments which are related to our courses. I think you will take my point as an important point for discussion for our development.

R. Saran, IX B

Sirs,

I would like to criticise the lawlessness in the recent election propaganda. The candidates and their supporters have spoiled the walls in the school premises and have not even spared the bulletin boards in several classrooms. Should we expect such pandemonium from Xaverians?

Deepak Lal Agrawal, IX B

## DEBATES ON MARRIAGE

The intramural English debates of the year 1980 took place on the 21st of November 1980. The topic of the debates was "Love marriage is better than pre-arranged marriage." The debates were held in two rounds. The Leopards and Panthers spoke in favour of the topic, whereas the Lions and Tigers were on the negative side. All the four teams made the debates a great success by using bold words and nice expressions in their speeches.

The Leopards team, comprising Sanjay K. Pandey, Thakur Vikas and Shankar, were declared champions. Abhas Jha of the Lions team emerged as the best speaker of the debates.

—Pranay Sinha, X A

—Alok, X A



# FAREWELL

A tall, slim and very fair-complexioned man, playing excellent basketball on our school court, impressed me a lot that first day I saw him. He was none other than Fr. Jerry Grace. Later when he came to take our English classes, he impressed us even more by his outstanding mode of teaching.

Born in Chicago in 1924, Fr. Grace came to India shortly after Independence, in 1948. He was in Jaipur till 1968. During this time he completed his theology course. After spending about 16 years in Jaipur, he went to Delhi as the rector of St. Xavier's School. Again after 4 years in Delhi, he returned to Jaipur as the rector of St. Xavier's there. He came to Patna in 1979.

Apart from teaching us English, he was the Athletic Director, and gave a new dimension to our school sports. Both as a teacher and a sportsman, Fr. Grace was an affable, witty and charming person. On the field and also in class, he was very jovial, and there was never a dull moment in his presence.

Besides this, and above all, Fr. Grace coached the school basketball team very diligently and efficiently. He was often seen in his shorts on the basketball court, at times jogging and at times playing with the boys, encouraging them and discussing the tactics of the game. It was a wonder to all of us—seeing this kind of agility in a man almost 57 years old.

Now he has gone back to Chicago, his home town, and we here feel sad and miss him a lot. But all the same, we wish him happiness and success for the future.

Vinay Sood, X A

## कप्तानों तथा उपकप्तानों का चयन

हर वर्ष की तरह सन् १९८१ में जनवरी १६ को हमारे विद्यालय में लायन्स, लेपडर्स, पैन्थर्स, तथा टाइगर्स दलों के कप्तानों तथा सहायक कप्तानों के चयन तथा नियुक्ति का दिन था। नववर्ष के इस सोलहवें दिन छात्रों की अपनी-अपनी मतदान क्षमता मध्याह्न-काल के दिवाकर के समान अपनी चरम सीमा पर थी।

सुबह के इंतजार के बाद दोपहर में बारह बज कर तीस मिनट पर इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं तथा मतदान का समय आ पहुँचा।

उम्मीदवार चुनाव क्षेत्र में उपस्थित थे, अब मतदाताओं को अपनी बुद्धि का परिचय देना था। मतदाताओं ने अपने दृश्य रूपी तराजू पर तौल कर हर एक उम्मीदवार के पलड़े के झुकाव को देखा तथा जिस उम्मीदवार के पलड़े का बोझ भारी पड़ा निश्चय ही मतदाताओं ने उसी उम्मीदवार को अपना बहुमूल्य मत दिया। मतदान के पश्चात् मत की गणना शुरू हुई और गिनती के समय हर एक छात्र साँसें रोके अपने मन चाहे उम्मीदवार की विजय की कामना लिए हर एक मत के गिनती को सुनता जा रहा था। गिनती के बाद छात्रों ने अपने-अपने नव निर्वाचित कप्तान तथा उपकप्तान का बड़े गरमजोशी के साथ स्वागत किया। मुझे उम्मीद है कि नये कप्तान तथा उपकप्तान अपने-अपने दलों की मर्यादा को कायम रखेंगे।

कप्तानों तथा उपकप्तानों के नाम इस प्रकार रहे :—

| दल—       | कप्तान—           | उपकप्तान—                |
|-----------|-------------------|--------------------------|
| लायन्स—   | अमीकर दयाल (X A)— | चन्द्रभूषण (IX A)        |
| लेपडर्स—  | मनीश शरण (X A)—   | परवीन कुमार (IX A)       |
| पैन्थर्स— | पंकज कुमार (X A)— | रवीन्द्र नाथ दुवे (IX A) |
| टाइगर्स—  | संजय सिन्हा (XA)— | प्रमोद कुमार (IX A)      |

—इन्द्र प्रताप दशप् 'अ'

—अजय कुमार दशम् 'अ'

## “भारत का औद्योगिकरण : एक समस्या और उसका निदान”

यों तो वाद-विवाद हमारे जीवन में प्रति दिन होता है किन्तु १८ नवम्बर, १९८० को हुई वार्षिक हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता ने अपना एक अलग प्रभाव छोड़ दिया।

१८ नवम्बर, १९८० की उषा की पहली स्वर्णिम किरण फूटने के पहले से ही पक्षीगण चहचहाने लगे थे और दूसरी तरफ भारत की आर्थिक दशा सुधारने को तत्पर, संत जेवियर की वार्षिक हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता के प्रतियोगी अपने भाषणों को याद करने में लगे थे। विषय था, “भारत के लिए औद्योगिकरण हितकर है।” पैन्थर्स एवं टाइगर्स इस विषय के पक्ष में थे और लायंस एवं लेपडर्स विपक्ष में। लगभग १ बजे प्रतियोगिता शुरू हुई। पुस्तकालय में लायंस एवं टाइगर्स अपने तर्क प्रस्तुत कर रहे थे और सभा भवन (आउडिटोरियम) में पैन्थर्स व लेपडर्स। प्रतियोगिता का पहला चरण समाप्त होने पर लायंस को सभा-भवन तथा लेपडर्स को पुस्तकालय भेजा गया।

२० नवम्बर, १९८० को निर्णायकों ने अपने मत प्रस्तुत किये और वे पैन्थर्स के पक्ष में गये। बराबरी। द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान पर क्रमशः लेपडर्स, लायंस और टाइगर्स रहे। सर्वश्रेष्ठ वक्ता का श्रेय पैन्थर्स के कंचन सिन्हा को मिला। दलों के स्थान इस प्रकार रहे :—

१. पैन्थर्स :—४६६/अंक
२. लेपडर्स :—४६३/अंक
३. लायंस :—४५५/अंक
४. टाइगर्स :—३७३/अंक

—शिशिर राजन, नवम् 'अ'



## Well Done, Boys !

Our boys gave a superb performance in the music and art competitions sponsored by the United Posts and Telegraphs Recreation Club for their golden jubilee celebrations on the 8th and 9th of November, 1980. Our school sent ten boys under Mr. Kamal Das, our music teacher, for the music competitions and all the ten got prizes. The other competitions were the quiz and 'on-the-spot' painting contests. In the quiz competition our school placed second, while St. Michael's boys were champions. In this contest our school was represented by Somnath Sen, Kanchan Sinha, Surojit Bose, Abhas K. Jha and Promod Kumar. The names of the boys who got prizes are :

### On-the-Spot Painting

Group 'A' — Second : Ashwani Jaiswal

Third : Amitabh Kumar

P & T Group — First : Parthasarathi Som

Group 'C' — Second : Kaushik Das

Third : Ashok Pandey

P & T Group — First : Abhijit Som

### Vocal Light Music

Group 'A' — First : Subhojit Bose

Third : Surya Vikram

Group 'B' — Third : Kumar Rajoy Sinha

Group 'C' — First : Aniruddha Mukherjee

P & T Group — First : Kaushik Das

Consolation — : Sanjay Kumar

### Vocal Classical Music

Group 'A' — Second : Ashwani Jaiswal

Group 'C' — First : Aniruddha Mukherjee

— Second : Kaushik Das

### Tabla

Group 'A' — First : Sandeep Das

— Second : Manish Jaiswal

### Guitar

Group 'B' — Second : Vishal Anand

*Congratulations to all of you !*

—Pranay Sinha, X A



## PROFILE



Born on the 23rd of January, 1955, she passed her higher secondary in '71 in Delhi. She finished her M. A. (English) in '78 from Himachal Pradesh University and now she also has a B. Ed. to her credit. This Delhi-born, jovial Kashmiri lady who sat opposite to me on one of the library chairs was Mrs. Urmil Gaaroo.

She has joined St. Xavier's this year as biology and English teacher in the high school classes. She was a science student till her graduation, and then switched over to arts for the post graduate course.

She lives in north Shri Krishna Puri with her family. Her husband is an officer in the State Bank of India, and she has a daughter about sixteen months old.

Her hobbies are reading books, music, dramas, tennis, coit, basketball and table tennis. She was a runner-up in her college table tennis team.

She has about six years of teaching experience. She taught in Delhi (Apeejay Public school) and then in Dhanbad (De Nobili School).

We were running short of time, so I put the question to her, "Do you like teaching here?" "Yes, very much," she replied, and after thanking her, I went happily to my class.

Deepak Lal, IX B





## चलचित्र और समाज

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिये हमें तरह-तरह के प्रयत्न करने पड़ते हैं।

समाज में एक तरह के काम करते-करते दिल ऊब-सा जाता है। अतः मस्तिष्क को ठीक से कार्यरत रखने के लिये मनोरंजन की आवश्यकता पड़ती है।

शहरों में यह मनोरंजन चलचित्र द्वारा मिल जाता है। चलचित्र मनोरंजन का एक सस्ता साधन है। विश्व समाज के मनोरंजन के लिये मिस्टर एडीसन द्वारा दी गई देन है। चलचित्र समाज को कई तरह से प्रभावित करता है। सामूहिक सुधार की दृष्टि से चलचित्र का विशेष महत्व है। समाज की कुरीतियों तथा आलोचनाओं को चलचित्र हमारे मस्तिष्क पर स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। कई फिल्मों में ऐसी बनी है जिनमें दहेज प्रथा का नग्न नृत्य, प्रस्तुत किया गया। दहेज प्रथा की हानियाँ तथा उसके परिणामों को देख कर दर्शकगण सिनेमा-गृह में ही आँसू बहाने लगते हैं। अछूतों द्वारा की भावना को लेकर भी कई फिल्मों तैयार हुई। इस प्रकार प्रेम विवाह, बाल विवाह, बेमेल विवाह, इत्यादि समाज की कुरीतियों के बहिष्कार में चलचित्र ने पर्याप्त सहायता प्रदान की है। परन्तु आज सस्ती लोकप्रियता के लिये नग्न, अभद्र, चलचित्र तैयार हो रहे हैं, जो खास कर हमारे युवा वर्ग के मस्तिष्क को कुण्ठित करते हैं। आज चलचित्रों में ऐसे-ऐसे चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं जो हमारे नवयुवकों को पथ से भ्रष्ट करते हैं। फिल्म निर्माताओं से मेरा अनुरोध है कि वे ऐसे चलचित्र बनाएँ जिनको देख कर हमारे युवक-युवतियाँ गौरव का अनुभव करें।

—विवेक जिलोका, IX B

## today's science : bane or blessing?

Starting from the stone age to the present age of sophisticated technology, the history of mankind has essentially been the story of developing science. When I hear something about new inventions of fire-emitting missiles, I start thinking whether today's science is good for us—or is it an obstruction for our existence? According to some of the great Indian philosophers, today's science is like a sword for us, which may be baneful for us in the future. Today every highly developed country, like America and Russia, have their own immense power in the form of nuclear or atomic bombs and missiles. But more important than these is solar power or the laser. Now the scientists are trying to make something more powerful, which I think can blow our entire planet into pieces in a second or two. Think what will happen after World War III breaks out. A wonderful match will start. Instead of cricket balls, nuclear bombs will be thrown, and soon the land masses will slide down into the oceans. Here's what is said: "A monkey sitting on a stack of gunpowder with a burning matchstick in his hand."

Not only this; there are many other things to say. We often see chimneys, and the black and white smoke coming out of them. But we only see them, we don't think deeply about the smoke. The smoke, either from chimneys or burning coal, is creating a big danger for us. The atmosphere is getting polluted day by day because of the large amount of smoke produced. Chimneys are the gift of industries, and industries are the gift of science. We take in impure air, which is very slowly damaging our bodies. Is there any way of stopping this slow destruction? Surely not!

—Anant Pd Singh, X A

## True Leadership

*"The whining school boy, with his satchel*

*And shining morning face, creeping like a snail*

*Unwillingly to school" (Shakespeare, As You Like It)*

A school boy always makes excuses for not going to school. But as he grows older he becomes a mature person, and his tastes, ideas and behaviour change. Then he wants to go to school and he is called a senior boy. Now he is proud of his seniority, and starts showing it to the juniors. But is he doing well? No, obviously he is compelling his juniors to obey him. If any junior hits him, even by mistake, he beats him; and if he hits any junior, fully cognizant of it, he doesn't even apologise for it. In this way, he is leading his juniors on a wrong path. His juniors, when they become seniors, will do the same thing that he is doing now. This is not true leadership. The first thing for true leadership is to show love or affection.

When the juniors find that their seniors have love for them, they will obey their seniors willingly. But the seniors should show them the right way to follow—and that is the way of truth. No one can reach his goal without the truth. "Truth is the most valuable thing we have. Let us economize it." (Mark Twain).

The next thing is to serve them when they are in need. Seniors can help their juniors in studies, in games or in forming their characters. Then the senior will be acclaimed;

*"See the conquering hero comes :*

*Sound the trumpets, beat the drums!"*

—Shishir Rajan, X A



## X-PTA RAFFLE



The great X-PTA raffle took place on 24 November 1980. The lucky winners took away their sparkling prizes, but we cannot forget all the hard work done by the executive members behind the scenes, and the efforts made by so many boys to sell the tickets. The purpose of all this effort is to improve the facilities of the school. The X-PTA has done much in 1980 and plans to do more in 1981. Our sincere thanks to the parents and teachers who gave their time and labour for our benefit.

## श्रद्धांजलि

सैयद जावेद हैदर, अष्टम् 'अ' की माता का देहान्त ६ जनवरी, १९८१ ई० को हो गया।

अनन्त कुमार, प्रथम 'अ' के अनुज तथा अनुजा भी २२ जनवरी तथा २४ जनवरी, १९८१ ई० को परलोक सिंघार गये।

गत १७ जनवरी १९८१ को संजय कुमार सिन्हा दशम् 'अ' के बड़े भाई हेमन्त सिन्हा का देहान्त हो गया। वे हमारे विद्यालय के भूतपूर्व छात्र थे : वे १९७८ में 'टाइगर्स' दल के कप्तान थे। १४ जनवरी, १९८१ ई० को एक क्रिकेट मैच के दौरान उनके सिर में चोट लगी। बाद में डाक्टरों ने बताया कि उनका मस्तिष्क कुटाराघात हो गया था।

ईश्वर उनकी आत्माओं को तथा संतप्त परिवार को शान्ति दे।

—मृत्युंजय कुमार  
दशम 'अ'

## A Silver Lining

It was a dark night; the wind was blowing very gently. Suddenly the clock struck two I was fully prepared for my plan. My plan was to leave my home at once because I was not liked by anyone there. I got up from the bed very silently, gathered some clothes, and from Dad's pocket I took some money, so that I would not have to face any kind of difficulty in the future. I was walking as slowly as a cat. Very silently I opened the door and walked towards the goal of my ambition. I felt that the wind was trying to stop me as if it was telling me, 'Dharam, don't leave home. But I didn't heed those feelings, and moved forward. I

caught the train for Calcutta and..

In Calcutta I began to look for any kind of work by which I could fill my stomach. But no one gave me any kind of work. They wouldn't have appointed me even as a servant. I had very little money and was spending it all. At last I had spent all the money. Then I began to sell my clothes. When they were sold, I had nothing to do so that I could live. I was too ashamed to return home. I decided to kill myself.

That night I was going to kill myself by jumping from a rock into a shallow river, but at that time someone interrupted me. When I moved, I saw that the man was my father. He always was

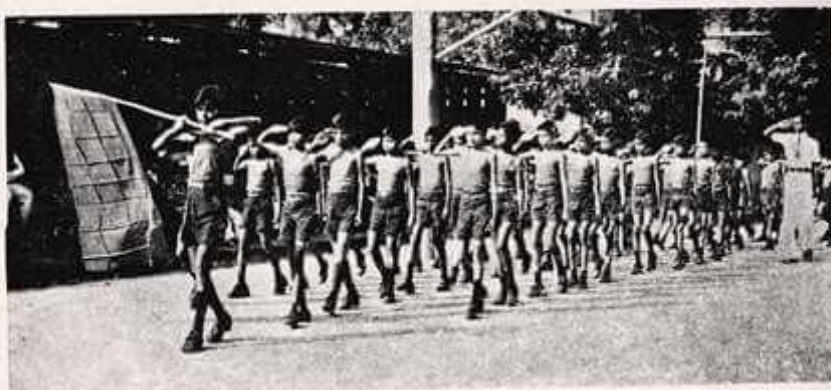
with me, changing his dress and using clever make-up. He had dressed himself as a Muslim. I was very much afraid to see him, but he said, 'Dharam, it was not good to leave home. Your mother is waiting for you. You have taken a very bad decision. In future, please don't take such a dangerous decision. And at last he kissed me. Then I felt how much love my father has in his heart. When I reached home, they felt as happy as if they had got a valuable diamond. Then I felt how wrong I was, how wrong my decision was. So it is the truth that every cloud has a silver lining.

Dharmendra K., XI B



# JUNIOR SPORTS DAY

7 February 1981



After many days of practice under the watchful eye of Mr. A. P. Osta, the march past (above) and group drill provided a wonderful introduction to the Junior Sports. The teachers were all on hand to assist as judges and score-keepers (left), while Vinay Sood and Abhas Jha made the announcements. The juniors were keen to gain points for their teams in all the events, such as the hurdles (below). The boys deserve high praise for their efforts.

## Some First-Place Winners

- Seniore :** 50 m Hurdles : Rajesh Pd.  
50 m Race : Ravi N. Pd. Sharma  
Obstacle Race : Shailesh Kumar  
Relay Race : Panthers Team
- Inters :** 50 m Hurdles : Ranjan Kumar  
50 m Race : Anjani Kumar  
Obstacle Race : Shashi Kant Pandey
- Juniors :** 50 m Race : Ashish K. Mehrotra  
Obstacle Race : Anurag
- Sub-Juniors :** 30 m Race : Shahbaz Nasar  
3-legged Race : Saurabh Alok and Anil Kumar



The Panthers Team (below) won the day.



Fr. Jerry Grace, whose presence on our games fields will long be remem-





# Xavier life

Vol 30 No. 2 ST. XAVIER'S, PATNA May 1981

## Seniors Sports Day

Whenever I start remembering the most entertaining day of my life in this year, through the layers of my mind, I find myself pausing at the afternoon of the 28th of February 1981.

Yes, I remember that sunny afternoon of February 28th very clearly, when the annual athletic meet of my school was to begin. The pandals were packed with teen-agers as well as grown-ups.

The Chief Guest of this occasion was the District Magistrate of Patna, Mr. K.A.H. Subrahmaniam. With the arrival of the Chief Guest the programme started with the 'parade', performed by the members of all the four teams : Lions, Tigers, Leopards and Panthers.

It was a magnificent show and I watched the spectators staring at it with interest, wonder, and of course with pleasure. After the parade the athletic items started. The names of the participants were called on the loud speaker and with the words..... On your mark, get set....go.....!!!, the boys in coloured ganjis seemed to be flying. On one hand the participants were at their best trying to beat the others; and on the other hand the boys sitting in the pandals, tore the heavens in two by their shouts. The winners were greeted with shouts of joys.

In the same manner one after another the events swiftly passed and then came the turn of the 'Fr. Murphy Memorial Relay Race'. In this combat participants from three schools took part. The names of the schools were St. Xavier's, St. Michael's and Loyola. It was a very disappointing one as far as St. Xavier's was concerned. This time the winners were the Loyola School boys.

When all the events were finished then came the time for prize distribution. The winners were given certificates and medals from the Chief guest and with this the great sports day of ours came to an end.

*Sanjeev Snankar, IX A*



Chief Guest, Mr. Mahendra Singh

## All-Patna Inter-School Painting Competition

One of the most eagerly awaited activities by students from all over Patna is the Inter-School Painting Competition, held annually at St. Xavier's. The competition was held this year on the 14th of March. Although they weren't required to be at the school before 12.30 p.m., the enthusiastic contestants had already started to pour in around 11.00 a.m.

The competition started on schedule, and as soon the papers were given out, the young artists started to paint their hearts out. The time allowed for the painting was one and a half hours, but half an hour extra was given to the groups consisting of classes VI to X.

Refreshments were served after that, followed by a movie, 'A Man Called Amen'. When the film ended, the results were announced, and the prizes

(con'd. on p. 2)



## Painting Competition



**Young Artists at Work**

were given by Mrs. Mahendra Singh. Our boys who won the prizes are mentioned on page 2.

### Our Winners

#### Group A :

*Second* : Sanjeev Kumar

*Consolation* : Ashok B. Pandey

Kaushik Dass

Ashok K. Jaiswal

#### Group B :

*Second* : Rajeev K. Srivastava

*Consolation* : Shekhar D'Costa

Ambuj L. Choubey

Kamal Prakash

Vinay Maharaj

#### Group C :

*First* : Siddhi Vinayak

*Second* : Amit K. Sinha

*Third* : Jayant Kumar

*Consolation* :

Amitabh Pandey

Shambhu Pratap

Rajesh Pandey

Pramod Kumar

Rajesh K. Lal

Rakesh Roshan

#### Group D :

*Second* : Anil Kumar

*Third* : Anant Kumar

*Consolation* :

Chiranjee Singh

Pradeep Lal

Neelabh Lochan



**Our Winners with their Art Teachers**



**The Shield goes to St. Xavier's.**

Md. Arshad Bari

Siddhartha Chowdhary

Sanjay Kumar I

Congratulations to all of you. Naturally the championship running shield, the Dr. Sen Memorial Trophy, went to the best artists : St. Xavier's. Three cheers for St. Xavier's !

*Suryakant Rajan, X B*



# सम्पादकीय

‘विद्यालय में अनुशासनहीनता का जिम्मेवार हम या और कोई’

अगर विद्यालय के दोषों का वर्णन किया जाय तो पहला स्थान अनुशासनहीनता को दिया जाएगा। कहानी की शुरुआत इसी से होगी और अंत भी इसी से होगा।

पर इस अनुशासनहीनता का जिम्मेवार कौन है। हम या और कोई! यह प्रश्न कुछ उलझा हुआ सा जान पड़ता है। कुछ हद तक तो हम ही इसके जिम्मेवार हैं। पर क्या केवल हम! यह नहीं हो सकता। ताली एक हाथ से नहीं बजती।

अनुशासनहीनता एक सामाजिक उपज है जो जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में व्याप्त है। ‘अनुशासन ही देश को महान बनाता है।’ यह बसों पर तथा दीवारों पर लिख देने से ही नहीं होगा। जरूरत है इसे अपने जीवन का सिद्धांत बनाने का, इसपर अमल करने का।

हमारा विद्यालय संतजेवियर भी इस चपेट में आता नजर आ रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं। पर उनमें से प्रमुख कारण है हमारी दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था। ‘मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी ही’ अस्तु का यह कथन अगर शत प्रतिशत सत्य है तब तो इस दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव मानव पर जरूर पड़ेगा। यह कथन सही है। अतः हम भी सामाजिक व्यवस्था के कारण अनुशासनहीन हो गए हैं।

विद्यालय को इसकी पकड़ से निकालना अत्यावश्यक है और इसकी प्रगति भी इसी पर निर्भर है। हमसबों का यह कर्तव्य हो जाता है कि हमलोग मिल-जुलकर इसे दूर करने का प्रयत्न करें। आशा है आप सब इस पर कम से कम विचार तो अवश्य करेंगे।

—अमरेश धारी सिंह, X A

—राजीव राय, X A



## Letters to the Editors

Sirs,

In the March '81 issue of *Xavier Life*, we found some mistakes which are as follows: Firstly, on page 4, instead of Panther's captain Pankaj Kumar X A, there should be Pankaj Kumar X B. Secondly, on the same line, Rabindra Dubey IX A should be IX B. Lastly, on page 7, instead of Dharmendra Kumar XI B, it should be IX B. Please correct these mistakes.

Vijay Kumar Pandey, X B

Sah Ajay Ram, X B

Sirs,

I want to say that the “Winterspring Essay Contest” of the year '81 was rather the “Winterspring Debate Writing Competition”. The topics given to both the groups were not for essay writing, but were rather debating topics. I think this matter will be looked into in future. Thanks.

Vivek Lal Agrawal, VII A

Sirs,

As many boys as possible should give their articles for this prestigious newspaper of our school. Only one article of a particular boy should be published. For example, three articles by one boy were published in the March '81 issue—and there was not a single article of a X B boy. I expect this matter will be looked into in the future.

Deepak Lal Agrawal, IX B

# PROFILE



A marvellous personality was born on the 1st of July, 1952 at Gahmar in Uttar Pradesh, Mr. K. N. Pandey. Tall and well built, when he comes on his “Bullet” he is noticed by all.

He joined our school in January, 1972, and taught subjects like maths and physics in the senior classes. He has a thorough knowledge of almost all science subjects. He is indeed a very good drill master and is taking care of the N. C. C. in our school.

He got his B. Sc. in 1971, B. Ed. in 1976 and L. L. B. in 1977. On asking what he did before joining St. Xavier's, he said that he was busy with studies.

He lives in Lohanipur, Kadam Kuan, with his family: a wife and two daughters.

On asking about his hobbies, he said that he liked making electronic models. He is very fond of competition.

He likes many things such as discipline, adventure, friendship, frankness, sociability and leadership. But he has also got some things to dislike: tall talk, back-biting, laziness, frustration and injustice.

Rakesh Chowdhary, X A



## ‘छात्र दिवस’

परम्परागत छात्र दिवस २५ मार्च को मनाया गया। प्रधानाध्यापक महोदय, ने हमलोगों को यह मौका दिया कि हम एक शिक्षक की कठिनाइयों तथा उत्तरदायित्व को समझ सकें।

उस दिन हमारे विद्यालय में गुलिवर तो कोई नजर नहीं आता था, पर लिलि-पुटवासी सभी नजर आ रहे थे।

हमारे छात्र संघ के अध्यक्ष विनय सूद ने प्रधानाध्यापक के पद को सँभाल रखा था तथा सचिव राजेश वर्मा ने उप-प्रधानाध्यापक के पद को। इनके अलावा हमारे कुछ होनहार साधियों ने विभिन्न विषयों के शिक्षकों के कार्य भार को सँभाला। कुछ सहपाठियों ने तो स्वीपर के कार्यभार को सँभालने में भी कोई हिचक नहीं दिखाई। यह एक वैसा दिन था जब कि विद्यालय का पूरा उत्तरदायित्व छात्रों पर था।

मैं मुख्य रूप से प्रधानाध्यापक तथा उप-प्रधानाध्यापक को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने हमें यह अवसर प्रदान किया एक शिक्षक के रूप में उत्तरदायित्व तथा कठिनाइयों के समझने का।

धन्यवाद,

‘प्रशान्त कश्यप’ X A

## विद्यालय में सह-शिक्षा लाने का प्रयास

वर्तमान युग के विद्यालयों के छात्रों की यह माँग है कि विद्यालयों में सह शिक्षा होनी चाहिए। गत २७ मार्च को यह माँग हमारे विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता के रूप में उठ खड़ी हुई। विषय, जैसा कि ऊपर लिखी हुई पंक्तियों से ही परिलक्षित होता है, ‘विद्यालयों में सह-शिक्षा होनी चाहिए’, था। यह प्रथम वरिष्ठ-वर्गीय वाद-विवाद प्रतियोगिता थी और सदन में काफी गरमा-गरमी व्याप्त थी। पक्षधर सदस्यों के अकाट्य तर्कों के बावजूद निर्णायकों को विपक्ष के प्रतियोगियों ने ही प्रभावित किया और विजय का सेहरा उन्हीं के सर बँधा। पक्ष के सर्वश्रेष्ठ वक्ता (दशम ‘अ’ के) अजय कुमार और विपक्ष के (नवम ‘अ’ के) संजीव रहे।

—शिशिर राजन, X A

## फाइन आर्ट्स क्लब के दस वर्ष

सन् १९७१ ई० की सुबह, संत जेवियर्स विद्यालय के प्रांगण में एक अद्भुत आभा भर उठी, जिसके स्रोत थे फादर स्कारिया। उनके हर कदम में जोश, उमंग तथा विश्वास का वास था। ऐसे शब्दों के बड़े भाग्य से ही दर्शन देते हैं।

हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

फादर स्कारिया सभी क्षेत्रों में समान रूप से उन्नत थे। तथा उनकी चाह थी विद्यार्थियों के सार्वभौमिक विकास की। १९७० में ही, विद्यार्थियों की कला के प्रोत्साहनार्थ उन्होंने फाइन आर्ट्स क्लब का बीजारोपण किया। उस बीज को वृक्ष का रूप देने में श्रीमति विमला मेहरोत्रा तथा श्री श्यामा प्रसाद का भी बहुत बड़ा योगदान रहा।

आरंभ में तो इस वृक्ष के ५१ पत्ते थे, किन्तु १९८१ के वसन्त में पत्तों की संख्या २०० के लगभग पहुँच गई। अमरेन्द्र नारायण सौरेंद्र गुप्ता तथा धर्मनाथ पाण्डेय ने इसकी अध्यक्षता की। वर्तमान में अशोक भास्कर पाण्डेय, ‘दशम ब’ अध्यक्ष के पद पर तथा राजीव श्रीवास्तव, ‘नवम् ब’ सचिव के पद पर कार्यरत हैं।

सन् १९७० में ही पटना के विद्यालयों के छात्रों की कला के प्रोत्साहन के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। डा० सेन ने अपने नाम से एक रनिंग शील्ड फाइन आर्ट्स क्लब को भेंट किया।

सन् १९७० में शील्ड अजय प्रकाश विद्यालय को दिया गया। १९७१ में शील्ड संत जेवियर्स में आ गया। १९७२ में शील्ड संत जोसेफ्स विद्यालय ने छीन लिया। १९७३-७४ में शील्ड संत जेवियर्स की शोभा बढ़ाता रहा। सन् १९७५ में भयंकर वाद के कारण प्रतियोगिता स्थगित कर दी गई। १९७६ में शील्ड पर संत माइकेल्स की विजय हुई। ७७ में संत जेवियर्स तथा संत माइकेल्स के बीच शील्ड जीतने की होड़ लगी हुई थी और अंततः फैसला दोनों के पक्ष में रहा। अतः शील्ड छ-छ महीने दोनों विद्यालयों में शोभायमान रहा। १९७८ से अब तक शील्ड हमारे विद्यालय में ही उपस्थित है। ‘७७ के के वाद से मिस कपूर, नाट्रेडेम; अनुपम मजूमदार, अनीता लाल, नाट्रेडेम; तथा माल्विका सिंह, नाट्रेडेम क्रमशः सर्वश्रेष्ठ कलाकार घोषित हुए जिन्होंने फादर स्कारिया सिल्वर मेडल प्राप्त, किया! आरंभ में मात्र १६ विद्यालयों के ३०० विद्यार्थियों ने भाग लिया था। अब विद्यालयों की संख्या ४० हो गई है तथा भाग लेने वाले कलाकारों की संख्या ६०० के लगभग पहुँच गई है। आशा है संत जेवियर्स फाइन आर्ट्स क्लब उन्नति की ओर निरन्तर अग्रसर होगा।

अशोक भास्कर पाण्डे, X B





## Winterspring Essay Contest

After careful selection by our learned judges, the following boys were declared winners of the Winterspring Essay Contest of 1981.

### IX & X Class English:

- First* : Akash Rukhaiyar, X A  
*Second* : Deewakar Srivastava, IX A  
*Third* : Sudipto Roy, IX A  
*Consolation* : Shaheen Akhtar, IX B  
 Bipul Pankaj, IX A  
 Rajiv Lochan, IX B

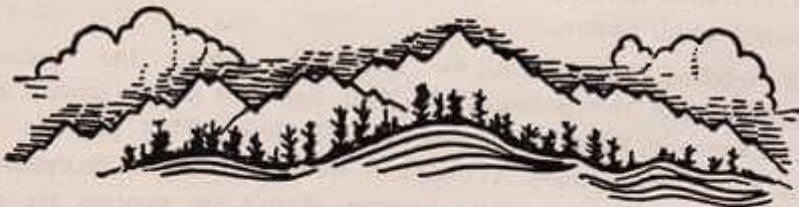
### IX & X Class Hindi :

- First* : Deepak Lal Agrawal, IX B  
*Second* : Pramod Kumar, IX A  
*Third* : Vijay K. Pandey, X B  
*Consolation* : Braj Kishore Mishra, IX B  
 Shishir Rajan, X A  
 Anjani Kumar, X A

### VII & VIII Class Hindi :

- First* : Shahid Amir Hoda, VII B  
*Second* : Amit K. Srivastav, VIII B  
*Third* : Sunit Chandra, VII B  
*Consolation* : Premdeep Arya, VII B  
 Shivendra K. Sahay, VIII A  
 Anand Prakash, VIII A

Congratulations to all the winners, and thanks to our judges : Frs. P. Poovattil, J. Kootinal, A. Herbert, Brs. Martin Samuel and Victor Osta; Mr. Umesh Jha, Mr. K.K. Mishra, Mrs. B. Mehrotra, Mrs. H.G. Sharma, Miss A. Lakra and Mrs. Ira Sinha. The first place winning essays appear in this issue.



## My Accident

Life does not run smoothly. It has many ups and downs. If a thing which is not expected to happen actually happens, then it is called an accident.

Once such an event occurred in my life which was unexpected and horrible. I was going by rickshaw to attend the birthday celebration of my bosom friend. It was getting a little late, so I told the rickshaw puller to drive as fast as he could. The road was not so busy. But all of a sudden a speeding truck appeared on the road after hitting a cyclist whom I saw lying unconscious by the side of the road. The truck driver had lost control and hit my rickshaw. The impact was so great that I fell on the road and the rickshaw was crushed badly. I was severely hurt and due to profuse bleeding I also became unconscious. When I regained my senses, I found myself in the hospital encircled by my parents, friends and all the friends who had gone to attend the birthday celebration. Tears rolled down my cheeks when I saw all my friends encircling me. I thanked God for saving my life.

—Ravi Shukla, IX B

## MEMORIES REMAIN



A teacher is our friend, guardian, and builder of the nation. We were very fortunate to have such an ideal teacher as Mrs. Rekha Srivastava. We were plunged into a deep ocean of knowledge, and a deep ocean of joy too, under her guidance.

She was born in Bombay on 10 Feb. 1951. She also got her education there. She passed the M. A. examination in Ancient Indian History from Bombay University. She was a student of English while preparing for her B. A. degree. Advertising and public relations were also her subjects. All these qualifications show her extraordinary ability. Her hobbies, such as reading novels, music, and dancing, indicate her scholarly and artistic taste. Her husband is an electrical engineer in the Tata Robins Fraser Ltd. She has two children of 4 and 2½ years of age. To her, "life is monotonous, cheerful and pleasant". This shows her optimistic outlook. The future plans of such an optimist are to do her Ph.D., and to be a lecturer.

Miss Rekha joined St. Xavier's in 1971, and after some time she left us for Bombay; then in 1974, she returned as Mrs. Rekha. She taught us skillfully. Her heart is full of love and affection. We bid farewell to such an ideal teacher, who has left us and gone to join Sacred Heart Convent School in Jamshedpur. She left us with a smile on her lips—and a tear in her eye.

Anjani Kumar, X A



## काराने

क...रा...ते...हाँ। हाँ। वही कराते जिसे हम सभी लोगों ने चलचित्रों में देखा है कि नायक हाथों के जोर से ईंटों, तख्तों, तथा कम से कम ५, ६ आदमियों को पलक झपकते ढेर कर देता है। चलचित्रों में यह दृश्य वास्तविकता लिए हुए भी वास्तव में नहीं होता है। लेकिन आप इस अवास्तविक दृश्य को अपने परिश्रम से सच्चाई में जरूर बदल सकते हैं।

यह काराते एक ऐसी जापानी कला है जिससे केवल एक दाव के सहारे हम अपने दुश्मन को अपने कदमों में झुका सकते हैं। इससे हम केवल अपनी रक्षा ही नहीं कर सकते, बल्कि इस कला के द्वारा हम नव-युवकों में आत्म-विश्वास का भी संचार होता है।

जी हाँ, इसी कराते का मात्र ६० मिनटों का एक प्रदर्शन ता० ५ मार्च, १९८१ ई० को संत जेवियर के थियेटर हॉल में प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शन कारियों ने अपने प्रदर्शन से कुछ ऐसा रंग जमाया कि वह सभी के दिलों दिमाग पर छा गया। खास कर फादर जार्जथाना ये. सु. के मस्तिष्क पटल पर और उन्होंने उसी पल एक काराते क्लब विद्यालय में खोलने की घोषणा भी कर दी। उन्होंने केवल घोषणा ही नहीं की अपितु उस कराते क्लब की बुनियाद को डालने हेतु काफी परिश्रम भी किया। मुझे आशा है कि इस कड़ी बुनियाद पर एक अच्छी खासी इमारत खड़ी होगी। खड़ी होगी क्यों? होनी ही चाहिए। खड़ी हो गयी। उसका आरंभ हो गया।

इन्द्र प्रताप X A

## श्रद्धाञ्जलि

गत २२ मार्च, १९८१ को हमारे विद्यालय के छात्र स्वर्ण विजय के पिता का देहावसान जौडिस के कारण हो गया।

हम सभी छात्रगण भगवान् से यह प्रार्थना करें कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

Winterspring Essay Contest: Prize Winnres

## Indiscipline among students is spoiling the educational system in Bihar.

It is not only because of the indiscipline among students that the educational system in Bihar is being spoiled, but because of indiscipline among the parents, the teachers and especially among our politicians. Indiscipline among students is one of the causes...but the credit for even this goes to our parents, teachers and politicians.

The educational system is altered with every change in the government. And in all these systems, there has been a gap between the high school and the intermediate. The students lose one year after their board examination. The students of Bihar are rejected outside Bihar because of the malpractices that are prevalent in the educational system of Bihar.

Parents have become disinterested in whether their children are getting knowledge or not: they are interested in their marks, their degrees only. You can often see parents running to the Board Office and examination centres, trying for their wards to get good marks through malpractices. Parents do not provide good atmosphere for their children; they do not try to evoke in their children love and interest for studies. This lack of interest makes the students not labour hard. And to get high marks without studying they use unfair means.

Then there is the lack of discipline among teachers. Some teachers are not really interested in giving knowledge to the students; they give a sort of guarantee that if you pay the fees, I will make you pass. For this, they too use unfair means.

In spoiling the educational system in Bihar, the greatest contribution is of our politicians. In their fight for power, schools and colleges are also included, and education is the loser. They provoke the students to be indisciplined. At their call, students go out in processions, colleges have lock-outs, etc. And because of this the courses are not completed and there are walk-outs in the exams.

The strictness that is required in Bihar has not been possible because of these politicians. And without strictness, the students go astray.

So it is not justified to blame the students for spoiling the educational system in Bihar; parents, teachers and the leaders who are supposed to be the guides of the students are themselves involved in malpractices...and that is why the educational system in Bihar is being spoiled.

Akash Rukhaiyar, X A





## विद्यार्थियों की अनुशासन हीनता बिहार की शिक्षा-प्रणाली को विकृत कर रही है।

अनुशासन शब्द दो सार्थक शब्दों के मेल से बनता है—अनु और शासन, अर्थात् शासन के पीछे-पीछे चलना और दूसरे शब्दों में उसका पालन करना। किसी भी मनुष्य के लिए उसके जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व होता है। इतिहास के पन्नों को पलटने पर पता चलता है कि सभी महापुरुषों ने सादगी एवं अनुशासन-प्रियता का पालन किया और उसी के बल पर वे सफलता एवं युग के उच्च-शिखर पर शोभित हो रहे हैं। महात्मा गांधी का जीवन इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

‘आज के विद्यार्थी ही कल के भावी शासक बनेंगे’—कथन अन्यथा नहीं है, सत्य है। किन्तु आज के विद्यार्थी बुरी संगति का शिकार हो, बुरे मार्ग का अनुकरण कर न केवल अपने परिवार बल्कि समाज एवं राष्ट्र के लिए कलंक साबित हो रहे हैं। इसी कारण कबीरदास ने कहा है—

मूर्ख संग न कीजिए, लोहा जल न तिराई,  
कदली, सीप, भुजंग मुख, एक बूंद तिहु भाई।

मनुष्य कितना भी सदाचारी क्यों न हो, उसपर बुरी संगति और उसके द्वारा प्राप्त बुरी लतों का प्रभाव जरूर पड़ता है। इस कारण किसी महापुरुष ने लिखा है—

काजल की कोठरी में कैसेह सयानो जाय,  
एक लीक काजर की लागहि पे लागहि जाय।

इसी बुरी संगति का परिणाम यह होता है कि छात्र एवं छात्राएँ स्कूल व कालेज जाने के बजाय साधियों के साथ चलचित्र-गृह की शोभा बढ़ाते हैं, अस्सील गाने गुनगुनाते हैं और सामने से जाती किशोरियों पर सीटी बजाते हैं, हँसी के फव्वारे छोड़ते हैं वगैरह। जो व्यक्ति एक बार इस नशीले संसार में प्रवेश कर जाता है वह क्या चाह कर भी उससे निकल पाएगा?—कदापि नहीं। इसका परिणाम यह होता है कि शिक्षा-संस्थानों में कोई पढ़ना नहीं चाहता और जब विद्यार्थी पढ़ना ही नहीं चाहता तो शिक्षक पढ़ाएँ क्यों?

आए दिन अखबारों में खबर आती है कि—फलाँ कालेज के लड़कों ने बस में आग लगा दी, फलाँ कालेज के लड़कों ने प्रधानाध्यापक या शिक्षकों को पीटा फलाँ कालेज के लड़कों ने राज्य-सभा का घेराव किया एवं पुलिस पर पत्थर फेंके आदि खबरे सुनते-सुनते तो कान पक गए हैं। अंततः सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आजकल छात्र—‘चोरी करना हमारा परम् धर्म है’ वाली कहावत को चरितार्थ बखूबी करते हैं। किसकों अपनी जान भारी है जो उन्हें मना करें?

आजकल छात्र पढ़ाई पर कम और चोरी एवं पैरवी पर अधिक भरोसा रखते हैं। पान चबाते हुए या सिगरेट पीते हुए शिक्षक के सामने से गुजरना तथा परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए उन्हें घूस देना तो आज के छात्रों के लिए साधारण सी बात हो गई है। इसका परिणाम यह होता है कि ‘इष्टर एवं स्नातक’ तक के तमगे प्राप्त कर भी छात्र ‘क से ह’ तक बोलने में भी अटकते हैं। इन बुरे छात्रों द्वारा जो मुट्ठी-भर अच्छे छात्र होते हैं लांछित, अपमानित तथा प्रताड़ित होते हैं, अतः वे कालेज जाने से भागने लगते हैं। क्या ऐसा करना शिक्षा-प्रणाली से खिलवाड़ करना नहीं है? सैकड़ों अच्छे छात्रों का जीवन बर्बाद करना नहीं है? और अन्ततः कुल, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए कलंक नहीं है?

संसार के सभी देशों में भारत ऐसे ‘सपूतों’ को जन्म देने में अपना अनन्य स्थान रखता है और भारत में भी खास कर बिहार का ‘सौभाग्य’ है कि ऐसे कुल-कलंक छात्रों के सृजन में उसका सबसे ऊँचा स्थान है।

अतः देश की प्रगति के लिए सबसे पहले इन छात्रों को सुधारना होगा, मन को बदलना होगा—डाँट-फटकार एवं लाठी-चाज से नहीं अपितु प्यार एवं दूरदर्शिता से।

दीपक जाल अगस्त 1981

## Easy Win for St. Xavier's

St. Xavier's defeated Government School, Shastrinagar, in a one-sided cricket match on March 14. The highlight of the day was Vijay Merchant (under 15) India player Amikar Dayal's score of 33 runs. His cuts, hooks, etc., were the only thing which the spectators enjoyed. Amitabh Sharma also batted well, and scored 39 runs. St. Xavier's scored 227 for 9 declared. Bad luck for Saba Karim, who was adjudged B. W. for 10 runs. Government School boys were too inexperienced. They were all out for only 28 runs. Again, Amikar's spin was too hard for the Government School batsmen to play. Amikar kept 5 wickets for only 8 runs to his credit. Amikar was adjudged 'Man of the Match'.

Sanjay K. Sinha, X A

Deepak Sharma, X A

## The School Magazine

It was a nice day for us when our vice-principal, Fr. Jerry Drinane, distributed the school magazine of 1980 on the 19th of March, 1981. All the boys were interested in seeing what typical things had happened in our school in the year 1980.

In this year book we were given an opportunity to see how the senior boys had managed in preparing it. We were surprised to see that this magazine was well edited, well selected and arranged. We were able to see the various activities which were done last year. Also, we are lucky to see the picture of Sir Edmund Hillary, the conqueror of Everest, who visited our school in 1977. By seeing this magazine, we hope that we will be able to improve even more on the magazine of the coming year.



# भिखारी

धर्मन् कुमार सिंह, IX B

कनिष्ठ वर्गीय पारितोषित निबन्ध

“संत जेवियर्स में पढ़ने के कारण मुझे क्यों खुशी होती है।”

वह,  
जो करुणामयी दृष्टि से  
हार्य फैलाए  
आशा लगाए  
इधर  
मेरी ओर देख रहा है  
क्यों न निकलते उसके कण्ठ से बोल  
बोलो.. बोलो.. हे समाज !  
वह है कौन ?  
तन पर नहीं हैं उसके वस्त्र  
लँगोटी है उसने एक लपेटी  
लज्जा देख जिसे लजाती  
वह,  
वह है क्यों मौन ?  
बोलो.. बोलो.. हे समाज !  
वह है कौन ?  
पेट ने पीठ को मिलाकर  
किया है साम्राज्य स्थापित एक  
सुना था इस दुनिया में  
हैं दयालु अनेक  
छोड़ दो समाज करना अब ढोंग  
बोलो.. बोलो.. हे समाज !  
वह है कौन ?  
आकृति तो धारण  
उसने ऐसा है किया  
जैसे वह हो कोई मनुष्य  
लचीला है बदन उसका ; इतना  
जैसे हो कोई धनुष  
प्रत्यंचा न अब तुम देना तोड़  
बोलो.. बोलो.. हे समाज !  
वह है कौन ?

## New Xavier Officials

For the different posts these boys  
have been chosen for the year 1981 :

English Debating Society :

President : Abhas Jha

Secretary : Mahtab Ahmad Khan

Hindi Debating Society :

President : Shishir Rajan

Secretary : Ashok Bhaskar Pandey

General Knowledge Society :

President : Amresh Dhari Singh

Secretary : Pramod Kumar

Interact Club : President : Rajiv Rai

Secretary : Pranay Sinha

संत जेवियर विद्यालय की स्थापना सन् १९४० ई०, में पटना में गांधी मैदान के पश्चिम में हुई। यह विद्यालय येशू संछियों द्वारा बनाया गया है। इस महान् विद्यालय में पढ़ने के लिए सभी बच्चे उत्सुक रहते हैं। इस विद्यालय में आने के लिए भी एक परीक्षा होती है और जो बच्चा उसमें सफल होता है वही बालक इस महान् विद्यालय में पढ़ सकता है। कितना अच्छा भविष्य है इस विद्यालय में पढ़ने वाले लड़कों का ! इसी वर्ष की बात लीजिए इस विद्यालय के लड़कों ने तो पढ़ाई में कमाल कर दिया। बिहार माध्यमिक परीक्षा में सभी लड़के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। मैं भी अपने आप को एक भाग्यवान् बालक समझता हूँ क्योंकि मैं भी इसी संत जेवियर विद्यालय में पढ़ता हूँ।

आईए मैं आपको इसका परिचय देता हूँ। अच्छा होगा हमें पहले पढ़ाई से ही शुरू करना चाहिए। यह विद्यालय कक्षा एक से लेकर कक्षा दस तक है। इसके लिए सभी वर्गों के अलग-अलग शिक्षक रखे गए हैं। हमारे विद्यालय में लग-भग ३५ शिक्षक तथा शिक्षिकाएँ होंगे। इस विद्यालय में शिक्षकों के पढ़ाने के उपाय इतने सरल हैं कि हमें तो आसानी से समझ में आ जाता है। कोई कठिनाई हो तो चाहे कितने बार ही न पूछो ये महान् शिक्षक हमेशा बता देते हैं। हाँ, मगर नहीं पढ़ने पर कड़ाई होती है। अगर गृह-कार्य नहीं बनाया तो डायरी में अभिभावक गणों को बच्चे के बारे में लिखकर बता दिया जाता है। इस बात को उस समय भी लागू किया जाता है जब वे विद्यालय के प्रागण में कोई शैतानी कर बैठते हैं। उन्हें उनके किए कार्यों की सजा अभिभावक ही दे देते हैं। अगर कोई लड़का अनुपस्थित रहता है तो जिस दिन वह विद्यालय आता है उसे अपने अभिभावक से पत्र लेकर कारण के साथ आना पड़ता है।

सबसे कड़ा नियम यह है कि अगर कोई बालक लगातार दो बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसे विद्यालय से बाहर निकाल दिया जाता है। इससे सभी बच्चे पढ़ने में मन लगाते हैं।

गत् वर्ष की बात है “फादर स्कैरिया” ने बताया की हमारा विद्यालय अन्य सभी विद्यालयों से कहीं अधिक अनुशासित है। सच पूछिये मेरा दिल प्रसन्नता से खिल उठा।

अब हम जरा अपने स्कूल के खेल-कूद के बारे में आपको कुछ बताएँ। देखिए न ! गत वर्ष हमारा स्कूल पटना के सभी स्कूलों को हराकर क्रिकेट चैम्पीयन घोषित किया गया। वो क्या कहते हैं। हाँ ! ‘बास्केट बाल’ में तो हमारा स्कूल मत पूछिए कितना अच्छा खेलता है। देखिए ३ या ४ अप्रैल को हमारे स्कूल से चुने लड़के ‘ऑल इण्डिया’ बास्केट बॉल प्रतियोगिता के लिए जा रहें हैं। अब आप तो मान गए कि संत जेवियर विद्यालय के लड़के जितना अच्छा पढ़ने में हैं उतना अच्छा खेलने में भी। अगर आपको मेरे बातों पर विश्वास नहीं हो तो आप शाम को चार बजे संत जेवियर विद्यालय आइये। आपको यहाँ पर बच्चे फूटबाल, क्रिकेट बास्केट बॉल हॉकी आदि का खेल खेलते मिलेंगे। इन सब के पीछे हमारे “फादर जेरी ग्रेस” का हाथ है जो अब तो संत जेवियर में नहीं हैं लेकिन उनके बराबर हमारे खेलकूद शिक्षक श्री ए० पी० ओस्ता का हाथ है। वे हमेशा बच्चों के खेलों पर ध्यान देते मिलेंगे।

गर्मी का मौसम आ रहा है न ! अब आप देखिएगा हमारे स्कूल में एक “स्वीमिंग पूल” है। आप एक तलाब ही कहें तो ठीक। लेकिन इसका पानी इतना साफ रहता है कि नीचे एक पैसा भी दिख जाए। वाह ! क्या मजा आता है नहाने में ! जब इसका समय खत्म होने लगता है तो इसमें एक प्रतियोगिता देखने को मिलती है। लगता है हम कहीं ऑल इण्डिया तैराकी प्रतियोगिता देख रहे हैं। अब आपको हमारे स्कूल के कुछ ‘टुर्नामेन्ट’ के बारे में बताते हैं जैसे, कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, हैण्ड बॉल आदि। पीछे नहीं है।



अब हम आपको अपने कला के बारे में बताते हैं। कुछ महीने पहले पूरे पटना के सभी स्कूल 'नाटक प्रतियोगिता' में भाग लिए थे। इसमें हमारा स्कूल हिन्दी का नाटक 'सिंहासन खाली है' किया था। इसे सर्वश्रेष्ठ हिन्दी नाटक का इनाम मिला और हिन्दी के श्रेष्ठ अभिनेता का श्रेय हमारे स्कूल के ही 'बालाजी मोहीनीश' को मिला। अरे! मैं आपको एक महत्वपूर्ण बात बताना भूल ही गया। कुछ दिनों पहले 'आल पटना पेन्टींग प्रतियोगिता' हुई जिसमें संत जेबीयर विद्यालय को ही इनाम मिला क्योंकि यहाँ के बालकों ने जो कमाल कर दिखाया वह किसी जादू से कम नहीं है। कल तो मजा आएगा। हमारे स्कूल के ही बच्चे शिक्षकों का भार सम्भालेंगे वे ही पढ़ाएंगे और यहाँ तक कि प्रधानाध्यापक और उप प्रधानाध्यापक का काम भी वहीं करेंगे। अब आप तो हमारे स्कूल के बारे में बहुत कुछ जान गये हैं। आइए अब आपको अपने प्रधानाध्यापक का नाम बता दें। हमारे प्रधानाध्यापक महोदय का नाम श्री फादर जीर्ज थाना यमु संघी है। और उप प्रधानाध्यापक श्री फादर जेरी डायनन हैं।

अब आपको जब सब कुछ बता रहा हूँ तो आप जान जाइए कि हमारे भी स्कूल में गरीब बच्चों के लिए अलग से स्थान सुरक्षित रखे जाते हैं। इसमें सबसे बड़ा हाथ "फादर मानी पूवाकोट का है। वे तो हमेशा गरीब बच्चों को समझाते तथा पढ़ाते ही देखे जाते हैं। कितना महान चरित्र है।

हमारे स्कूल में मनोरंजन के लिए चलचित्र भी दिखाए जाते हैं। और हाँ, हमारे स्कूल में एक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जिसे 'जेबीयर लाईफ' के नाम से पुकारा जाता है। इसे सिर्फ बच्चों और शिक्षकों को दिया जाता है जो इस स्कूल में पढ़ते और पढ़ाते हैं। ये पत्रिका मुफ्त दी जाती है। हमारे विद्यालय में वाक् प्रतियोगिता होती है। अँग्रेजी तथा हिन्दी में सबसे अच्छा वक्ता को पुरस्कार भी दिया जाता है।

आजकल हमारे स्कूल में कुछ बच्चों को आत्म-रक्षा के लिए 'काराते' सिखाया जा रहा है। यह एक विशेष प्रकार की लड़ने की जापानी कला है। इसमें बिना हथियार के दुश्मन का सामना करना पड़ता है।

अब आप इतना जान गए हैं, क्या आप बच्चे होते तो इस विद्यालय में पढ़ने की जिज्ञासा आपको होती की नहीं? वैसे कभी-कभी हमारे स्कूल के छात्र ऐसी खेद-जनक कार्य कर बैठते हैं जिससे शिक्षकों का अपमान होता है। कुछ दिन पहले प्रधानाध्यापक ने उन्हें मना किया था आशा है अब वे ऐसा नहीं करेंगे।

अच्छा फिर मुलाकात होगी तो आप हमें अपना विचार दीजिएगा।

सहीद अमीर होदा, VII B

## A Friend in Need

There is a proverb "a friend in need is a friend indeed." This proverb means that the man who helps his friend in hours of need is really a true friend. True friends are very few and far between in the present day world. As for myself I remember this proverb and try to follow it literally.

I have made it my principle to help others at all costs. From my very childhood, I have picked up the habit of helping others.

One day when I was coming home from school I saw a poor man lying by the side of the road. He

## Staff Picnic



The teachers and staff of the school had a delightful bus picnic to Rajgir on 29 Nov. 1980. The thrill of the day was the cable-chair ride.

was in great distress. He was crying for help but nobody paid any heed to his cry. I went to him and asked why he was crying so bitterly. He told me he was suffering from colic and headache. I felt pity for him and took him to the hospital. There I

took him to the emergency ward. The doctor in charge of that ward was very kind. He at once examined the patient, prescribed medicine and admitted him in the hospital. I used to go to the hospital every day after school hours and enquire about his health, till he recovered from his illness. He was very grateful to me.

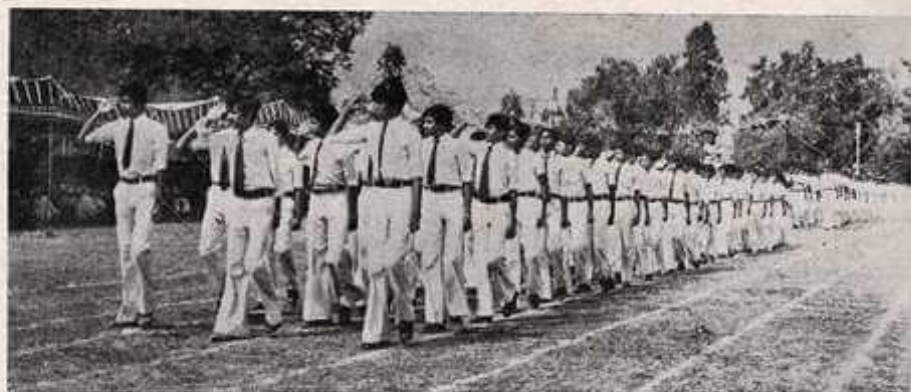
It is said that "God helps those who help others". Jesus Christ always used to tell his disciples to remember the proverb "a friend in need is a friend indeed." There is also a story in The Bible which is known as the "Parable of the Good Samaritan". As for myself I have made it my motto to help others.

—S. M. Nasrullah, VIII A



# SENIOR SPORTS DAY

22 February 1931



March Past



Inter-House Relay Winners



Mr. Subramaniam and Fr. George with the champions Sanjay K. Sinha (Inters), Henry Bernard (Sub-Juniors), Barun Kumar (Seniors), Amarendra Singh (Juniors).

## WHO SAID IT ?

1. Ability is of little count without opportunity.
2. It is too late to look for instruments when the work calls for execution.
3. All that glitter is not gold.
4. Childhood shows the man as morning shows the day.
5. The roots of education are bitter, but the fruit is sweet.
6. Knowledge is power.
7. There is the greatest practical benefit in making a few failures early in life.
8. Pay what you owe, and you'll know what is your own.
9. Give a little love to a child, and you get a great deal back.
10. A liar is always lavish of oaths.

1. Napoleon
2. Samuel Johnson
3. Shakespeare
4. John Milton
5. Aristotle
6. Francis Bacon
7. T. H. Huxley
8. Ben Franklin
9. John Ruskin
10. Cornelle



# Xavier Life

St. Xavier's  
Patna



Vol. 30, No. 3  
September 1981

## THE PLAYS GO ON

The grand function for which not only the students of St. Xavier's but all who are connected with St. Xavier's were waiting, took place on the 14th of August, 1981 in the school theatre hall—the Intramural Drama Competition. Each team chose their play and practised hard till they felt sure they would win.

The dramas were first staged before the junior boys on August 11, the senior boys on August 12, and then in the evening of August 13, before the parents of the junior boys. Finally on the 14th, the plays were presented before the parents of the senior boys, X-PTA member and the judges, who had to choose the best drama among the four.

First the Lions staged a comedy, "Mahabharata men Ramayana". It showed the friction between husband and wife, and the condition of a third person who comes between them.

The next show was presented by the Panthers, "Jatayu". It was a tragedy, and proved that 'a little knowledge is a dangerous thing,' especially for doctors. After a few minutes interval, the Leopards staged their drama, "Silsila", which showed the difficulties of a person who wanted to end corrup-



tion in society. Finally the Tigers presented a comedy of the film world, "Kalavinash Urf Satyanash".

Though all had performed marvellously, someone had to come first. According to the judges, the teams lined up as follows: First: Lions, Second: Leopards, Third: Panthers, Fourth: Tigers.

The best actors in each drama were respectively: Indra Pratap, Braj Kishore Mishra, Manish K. Sharan and Shishir Rajan. The best actor of the festival was Indra Pratap. Congratulations to all.

—Rakesh Choudhary, 10A

—Rajeev Rai, 10A

## SUCCESS

Success, which everyone wants, has given its fullest light to our institution in the 1981 matric examination. About 56% of the students in Patna division have passed, but our students showed 100% results. In spite of many obstacles and hindrances, they worked hard to overcome, and have won the race. They have really shown excellent

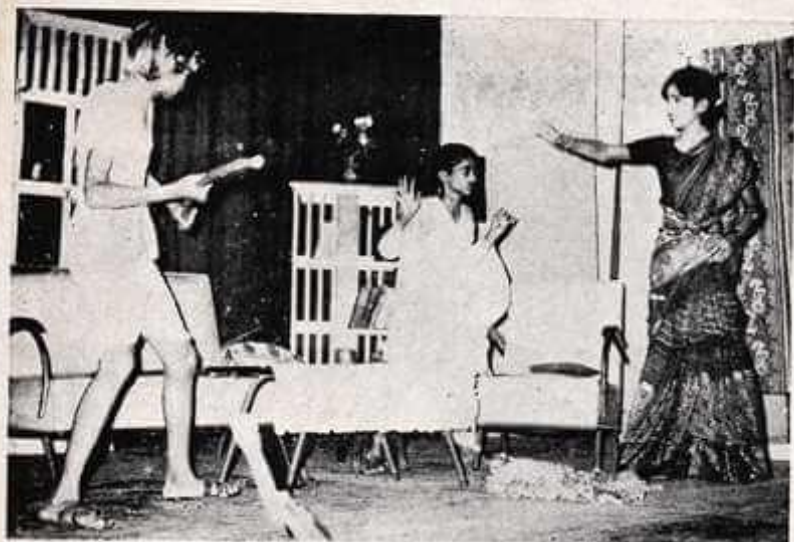
work by beating others who are still running to reach the highest peak.

80 boys appeared from St. Xavier's, out of whom 79 secured first division and one got second. The credit goes to the teachers as well as to the students. Our teachers gave their heart and soul to help the students. In turn, the students

helped themselves. For this, they deserve their success. The students asked and got the blessings of their teachers and fellow Xaverians, and especially almighty God, that they might capture the throne—and they did it. Our continued blessings and good wishes are with them for a bright and prosperous future.

—Rajesh Sinha, 10A





महाभारत में

एकांकी  
नाटक  
समारोह



रामायण



कला विनाश उर्फ  
सत्यानाश



सिलसिला



जटायु





# editorial

## Achieving Success

**Setting a Goal :** As you all know, fortune invariably favours the brave, the bold and the courageous who dare and fight for their chosen goals. In the face of fierce competition, if you wish to win and make a mark, you have to select and decide on your goal first. Having chosen your objective, the next thing to do is to work for it and keep on working with courage and determination till you gain it. To ensure that your efforts and resources are not wasted or frittered away, and to see to it that the goal is attained within a definite time limit, you must work to a plan with proper organisation, co-ordination and control.

**Be Brave :** If you start now and begin in right earnest, you can positively make your mark within the time frame you decide upon. Do not be carried away by such excuses as lack of opportunities, competition, favouritism and so on. These are excuses for the weak, meek, mild, lazy and feeble. Keep away from such mournful company. Success yields to the fighter; she scorns the weak and embraces the bold. If you are enterprising, adventurous, courageous and unyielding, you will find opportunities aplenty.

**Questions To Be Asked :** Have I got the will? Am I really keen on success? How strong is my determination? Do I have the courage? Can I accept the challenge, jump into the fray, and join the battle? Can I fight to the bitter end? If your answers are positive, and if you are resolute and persist in your efforts, victory will be yours as certainly as day follows night.

So the doors of success are always open to the dynamic, keen, confident, courageous youth. Time is also on your side. You need a positive attitude and forceful personality plus the essential knowledge to break the myth of unemployment, make people take notice of you, and find the right opening. The sky is the limit for those who dare and do.

—Rajeev Rai, 10A

—Anresh Dhari Singh, 10A

## Letter To The Editors

Dear Sirs,

Through *Xavier Life*. I want to point out a few things regarding our library.

- (a) In our library we have books which are of our parents' time (i.e., very old).
- (b) We don't have sufficient reference books which are urgently needed by us as well as by our teachers.
- (c) Our science books are out-dated.
- (d) We should have books for a 'question bank' section.
- (e) Some periodicals are simply boring, like *Span*, *Home Life*, etc.
- (f) As we have shifted to the 10+2 system, so we should have magazines like *Junior Science Digest*, *Science Master*, etc., not like *Science Today* which is above our standard.
- (g) Some of the story books have long sexy descriptions, so these books should be removed.

—Rakshit Saran, 9B

Thank you, Rakshit, for your practical suggestions. All of us should take a personal interest in improving our library, so we suggest that every teacher and senior boy (juniors too) should give a list to Fr. Vice-Principal (Librarian) mentioning the following points :

- 1. Magazines which would be most useful for the library and which we are not getting now—please give the address, and if possible show a sample copy.
- 2. New books, particularly reference books connected with the new syllabus, which we could purchase. Emphasis should be on Hindi reference books, since that will soon be the medium of the whole school, and our library is very weak in this line. Also, Hindi literature—books suitable for high school level.
- 3. Names of any magazines which you consider useless, and which could be dropped when the subscription expires. Names of any books which you think are not suitable for our library, and which could be removed.



## A FLOOD OF NEW TEACHERS

This world is not stationary, and there are always some changes. Every day quite a few people depart, and their places are taken by others. Those who leave are sent off with tearful eyes and hearts full of sorrow, but the new ones are received with a joyful smile and a sparkling flash in the eyes. This year five teachers left St. Xavier's : Mrs. Rekha Srivastava, Mrs. G. Brett, Fr. Kuruvilla and Fr. Mani Poovakot, S. J., and the latest, Mrs. Urmill Gagroo. We bid them a sad farewell, and wish them all success in their new work. Their places were taken by four new teachers : Mrs. Meena Singh, Mrs. Geeta Jain, Mr. M. Chaudhary, and Fr. Joseph Kootinal, S. J. In every respect, all are capable teachers.



Mrs. Meena Singh was born on 28 Dec. 1955. She is now living with her husband and four-year-old daughter in Rajendranagar. Her



**Mrs. Geeta Jain** was born on 1 July 1950 and is now living with her husband and two sons in Kankarbagh Colony. Her husband is on the staff of S.K.G. She is an M.A. in Economics, B.Sc. in Biology and won a gold medal in the B.Ed. Before coming to St. Xavier's, she taught for four months in Sanjay Gandhi High School, Kankarbagh. Her hobbies are art, science, dance and sports. Now she is thinking of doing further studies in economics.

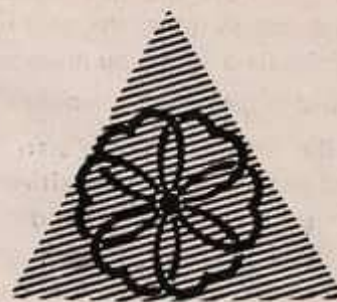


**Fr. Kootinal**

**Fr. Joseph Kootinal, S. J.** was born on 10 March, 1945 in Kerala. He has three brothers and three sisters, all in Kerala. He has an M.A. in English literature from Delhi University. Before coming to Xavier's, he taught in K. R. High School, Bettiah, and St. Michael's. He is very satisfied with his life. We welcome him and all our new teachers to our St. Xavier's family.

—Rajeev Rai, 10A

—Rakesh Chaudhary, 10A



**Mr. Moheshwar Chaudhary** joined our school staff recently, and he has been impressed both by the students and the teachers there. He was born on 23 June, 1954 in Makhanpur village of Darbhanga district. He started his education in Dhanbad, and did his matric at Khalsa High School. Then he studied for the B.Sc. in Mithila University, the M.Sc. and B.Ed. in Patna University. Since

[illegible]

०२ भाग ११८ / अंक ३४ / ७ नवंबर १९५६

काता का जाता है। उन्होंने ही वह प्रशिक्षण कक्षाओं में  
प्रशिक्षण कक्षाओं के लिए हम छात्रों के लिए बहुत लाभदायक थी।  
आधे र छात्रा न इन्हें दूसरे वर्ष की प्रशिक्षण कक्षाओं में नेटवर्क

—अभिमान केनाहू मराम 'अ'





## CONGRATULATIONS

This year again, all the boys of standard 10 have passed the Bihar Board Exam. While offering our sincere congratulations to all, our attention turns to a tall young man, Ashutosh Pandey, who got 738 marks out of 900—the highest among the St. Xavier's boys. Perhaps would like to know more about him.

Ashutosh joined this school in the month of January, 1978. He got the 'best boy' award in his class in 1978 and 1980. He is a boy of good character and has many remarkable qualities. Let's have a little conversation with him.

"How did you achieve this great success?" we asked. After thinking a while, he told us with a typical cheerful smile that it was only because of the blessings of the teachers and Fr. Principal, and the congenial atmosphere of this institution. Besides we should study regularly throughout the year.

"What is your aim in life?", we asked.

"Well, I am still in the formative stage of life, and exploring directions in which I can blossom fully."

"What are your favourite activities?" we enquired.

"Cricket, football, swimming, dramatics, fine arts, elocution, and debating are some of my favourites."

Our last question was, "What is your opinion about this school?"

He said, "It imparts discipline-oriented education, and creates an environment which is conducive to character building. Thus the education given to the children in this institution makes them real men for life."

We do hope that Ashutosh will continue to succeed in the future. God bless him and all the class of 1980.

—Kshitij Mohan, 9A

—Sujay K. Sinha, 9A

## प्रशिक्षण कक्षाएँ

आप हमारे विद्यालय के माध्यमिक परीक्षा का परीक्षाफल देखकर अवश्य चौंकते होंगे। हर वर्ष शत-प्रतिशत। इसका कारण है कि हमारे शिक्षक छात्रों को बचपन में ही उनकी नींव मजबूत कर डालते हैं। फिर भी कुछ बालक पढ़ाई में पिछड़ ही जाते हैं।

इन्हें मजबूत करने के लिये शिक्षक ग्रीष्म अवकाश में कुछ समय देते हैं। वे इन छात्रों का प्रशिक्षण कक्षाएँ लेते हैं। इन्हीं प्रशिक्षण कक्षाओं की एक कड़ी १९८१ की ग्रीष्म अवकाश प्रशिक्षण कक्षाएँ थी। ये प्रशिक्षण कक्षाएँ पहली जून से शुरू होकर २६ जून को समाप्त हुई। इन प्रशिक्षण कक्षाओं को हमारे विद्यालय के छः शिक्षकों ने पूर्ण किया। वे हैं श्री सम्पूर्ण डेविड, श्री आर० ओस्टा, श्री के० एन० पांडेय, श्री सुधीर सराफिम, श्री एम० ए० जाहिदी एवं श्री एस० डी० मिश्रा।

इन प्रशिक्षण कक्षाओं में करीब सौ-दो सौ छात्र आते थे। कक्षा साढ़े सात से शुरू होती थी एवं सवा दस बजे समाप्त। बीच में आधे घंटे का अवकाश छात्रों को दिया जाता था। प्रतिदिन तीन घंटियाँ होती थी। दो घंटियों के बाद आधे

घंटे का मध्यंतर दिया जाता था। फिर तीसरी घंटी पढ़ाई जाती थी।

चूँकि प्रशिक्षण कक्षाओं में कम छात्र होते थे, अतः हमें अपनी मुश्किलें हल करने में दिक्कत नहीं होती थी और हम साधारण कक्षाओं के मुकाबले अच्छे ढंग से पढ़ते थे। अधिक छात्रों में कुछ का मन पढ़ने का होता है तो हो सकता है कुछ का नहीं। परन्तु प्रशिक्षण कक्षाओं में नहीं आते हैं जो पढ़ना नहीं चाहते हैं।

इस वर्ष की प्रशिक्षण कक्षाएँ चलाने का श्रेय श्री एस० डेविड को जाता है। उन्होंने ही इन प्रशिक्षण कक्षा को आयोजित किया। इन प्रशिक्षण कक्षाओं का प्रबंध शुल्क १० रुपये था। अनेक छात्रों ने इसे पूर्ण किया।

वैसी प्रशिक्षण कक्षाएँ के लिए लाभदायक होती हैं परन्तु इस वर्ष की प्रशिक्षण कक्षाएँ हम छात्रों के लिए बहुत लाभदायक थी। अधिक र छात्रों ने इन्हें दूसरे वर्षों की प्रशिक्षण कक्षाओं से बेहतर बताया। शिक्षकों और एक्स० पी० टी० ए० को हार्दिक धन्यवाद!

—अविराम केशव, दशम 'अ'





## श्रद्धाँजलि

गत ५ अगस्त को हमारे विद्यालय के नवम् 'ब' कक्षा के एक नवगंत छात्र जिनका नाम अवधेश कुमार शुक्ला था, ईश्वर ने अपने पास बुला लिया। मृत्यु 'कैंसर' नामक विमारी से हुई। प्रकृति की गोद में खेले, उन्हें केवल बारह वर्ष ही हुए थे कि ईश्वर ने इन्हें हमारे बीच से उठा लिया। आईए हम सब मिलकर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

—प्रशान्त कश्यप, दशम 'अ'



We also extend our sincere sympathy and prayers to the family of **Amit Bansal (4A), Sanjeev (76) and Rajeev (75)** on the sudden death of their dear Father on 4 June 1981. May his soul rest in the peace of God, and the family be consoled.



With great sadness, we heard of the sudden death of the elder brother of **Gurvinder Singh, 10 B**, on 20 Aug. in a scooter accident. We offer our deep sympathy and prayers to the family.



## International Year of the Disabled

The United Nations Organisation has designated 1981 as the International Year of the Handicapped in memory of Miss Helen Keller, an American lady who, despite being blind and deaf from 19 months of age, became a distinguished author and educator. This was really an extraordinary accomplishment and it won world-wide publicity.

People like Miss Keller have qualities of indomitable spirit and have no feeling of self-pity. These people hate being called sub-human, and are happy when they get a chance to fight all odds and contribute something to human society. But this is something which is lacking in most of the disabled persons. Miss Keller once said, "A person who is impaired never knows his hidden strength"—but she added, "until he is tolerated like a normal human being and encouraged to shape his own life."

That is why the main purpose behind the initiative taken by the U.N.O. is to rouse among people the feeling of social awareness and humanity by making them aware of the needs of handicapped persons, most of whom are economically backward and are treated as useless. If we are able to develop the habit of helping these handicapped persons in order to make them useful, their economic condition can improve; if we treat them properly like normal human beings, the purpose will definitely be served.

But this requires a gigantic effort. Six hundred million people in the world are handicapped. During this year, governments are taking various steps to solve this problem, but there is little that they can do alone. The members of society, especially the families of handicapped persons, employment agencies and social welfare organisations can play the most active part in rousing the feeling of security and trust among the handicapped, and give them the courage to face the challenge.

One year is definitely not sufficient for the achievement of this goal but if this one year can vibrate with our deep feeling of humanity, it is possible that in a few years to come, we can give new hope and cheer to those who are suffering due to no fault of their own.

—Kshitij Mohan, 9B



## जीवन का उद्देश्य

जीवन ! जबसे शिशु इस दुनिया में कदम रखता है और बड़ा हो मृत्यु को वरण करता है उस समय तक के इस अन्तराल को जीवन की संज्ञा दी जाती है : जीवन हर मनुष्य जीता है अतः यह हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे फकीर इसे रक़ीरी में और अमीर इसे अमीरी में ही क्यों न गुजारता हो।

हर इन्सान अपने-अपने ढंग से जीवन व्यतीत करता है, परन्तु सवाल यह उठता है कि किस प्रकार का जीवन यापन किया जाय ताकि हमें सुख की अनुभूति हो ?

इस जटिल प्रश्नोत्तर में "चारुकि दर्शन" कहता है—

"यावत् जीवेत्, सुखम् जीवेत्;  
ऋबम् कृत्वा, धृतम् पिबेत्....।"

अर्थात् जब तक जीयो सुख में जीयो। यदि तुम्हारे पास पैसा न हो तो ऋण पीओ। इस दर्शन के अनुसार शारीरिक सुख, भौतिक सुख, ही सब कुछ है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में, मशीनी युग में, मनुष्य अपने आप को भी हाड़-मांस का एक मशीन समझने लगा है, जिसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य, निरंतर दौड़-धूप और कार्य में व्यस्त रहना है। आज मनुष्य थक गया है। अब आधुनिक युग में यह प्रश्न उठता है कि क्या मानसिक और शारीरिक तनाव ही जीवन का एकमात्र सहारा है ? नहीं ! जीवन जीने का तब मजा है जब शारीरिक सुख के साथ-साथ या पहले मानसिक सुख की प्राप्ति हो। जीवन जीने का सही उत्तर कविवर 'कबीर' के दोहे से प्राप्त होता है—

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय

औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होय।

अर्थात्, आप ऐसी मीठी वाणी बोलिये, ऐसा कार्य कीजिए जिससे दूसरों को सुख प्राप्त हो। और आपको भी। अगर मनुष्य दूसरों की मदद करे, तो मददकर्ता को भी सुख की अनुभूति होगी। आज के इस अव्यवस्थित युग में अगर मनुष्य एक दूसरे से प्रेम करे तो उसे परमात्मा रूपी आनन्द प्राप्त होगा क्योंकि हम जानते हैं कि ईश्वर ही प्रेम है।

अतः दूसरों की ददं दूर करते हुए जीवन बिताने वाला ही श्रेष्ठतम जीवन व्यतीत करता है, उसी का जीवन सार्थक होता है।

अन्त में हम इसी निष्कर्ष पर आये कि जीवन जीने का सबसे सुन्दर ढंग अपने भाई-बन्धु, पास-पड़ोस वालों से प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करना है।

—अशोक कुमार, यसवाल, दशम 'अ'

—हरपुनीत सिंह, दशम 'अ'



## MY FAVOURITE NOVEL

*Aananda-Matha* is my favourite novel. It was written by a great Bengali writer, Bankim Chandra. At first it was published in Bengali, and afterwards translated into many languages. It was by chance that I found the Hindi edition in our library. As its name is famous all over India. I wanted to read it. I had consulted the librarian many times, the book was always out. I was overjoyed, as if I had found the treasure of some ancient kings. He asked me to give him back the book after I had read it. When I asked if he had read the book himself, he answered, "Can it be possible that I did not read this book before becoming a librarian ? I want to read it once again because it seems to be always new. It arouses the feeling of patriotism. It criticises the law of the English. They treated us like dogs. The novel describes how the people revolted against them, united, and fought for freedom. The people were learned as well as brave. Some women were also in the movement, which had its centres in the jungles."

I withdrew the book from the library and took it to the class. As I remember, it was the seventh period, which was free. I looked around the class. Some boys were busy in talking to their friends, some were doing their homework, others were reading library books. So I took out '*Aananda-Matha*' and started reading. I had finished one page—what thoughtful lines it contained—and as I was going to start the second someone asked me, "What is the name of the book you are reading, Dharam ?" With great pride, I turned the cover and showed him the book. In a few seconds, it had spread all over the class that I had '*Aananda-Matha*' with me. Many asked me to give them the book when I was finished. I was uncertain to whom I should give the book—the librarian, my friends or someone else. It was my good fortune that I had not finished it in a week, so I renewed it. Oh, what a marvellous novel.

— Dharmendra K. Singh, 9B





## The Red Eye

Some time ago when our school reopened for the second term, I was surprised to see a fair number of boys wearing dark glasses. As I entered my classroom, I saw one of my friends wearing them too. I remarked sarcastically, "Hey! You are looking very smart! What's wrong with you?" He was a bit disappointed, and removed his glasses. I saw his red and watery eyes. It was then that the truth dawned on me, and I realised my friend was suffering from the wide-spread viral disease called 'conjunctivitis'. Later in the afternoon when I went to the staff-room, I saw some of my teachers rubbing their eyes frequently with handkerchiefs. They too were not spared. All through the day I remained in this sort of 'conjunctivital environment' in the school. In the evening when I returned home very tired, my brother opened the door and I saw swollen red eyes, and a handkerchief in his hand. I remarked, "Oh! You also...." This led me to learn about this disease.

Conjunctivitis is the inflammation of the mucous membrane covering the front part of the eye and lining the eyelids. The membrane becomes painful and red, the lids swell, and the eyes water. It may be caused by bacteria which get into the eye by dust or by smoke. It is often accompanied by a cold or influenza, and sometimes goes with measles.

In Patna, according to a newspaper report, about 10,000 people were affected by this disease in the past months. Presumably 100 to 125 boys and teachers of our school also suffered from conjunctivitis. This disease is highly infectious, and spreads through contact with victims. It is an air-borne communicable disease and starts from mild irritation leading to intense itching of the eyes, pain, discharge, and sensitivity to light. Some patients may also have severe headache and other symptoms of upper respiratory infection.

This disease is believed to have reached Patna from Bombay after a lapse of about 7 years. Previously it had spread in epidemic form after the 1971 war, and was popularly known as 'Jai Bangla', as the refugees of Bangla Desh were supposedly the carriers of this disease. This time, the carriers were the 'Bhaiya jees' of Bombay, coming home with the viral infection.

Conjunctivitis may be treated by bathing the eyes with a mild solution of boric acid, but it is better to consult a doctor. The eyes should be rested, and care taken to avoid giving the disease to others by contact.

But, O God! What is this? My eyes seem swollen....I feel as if there are pin pricks in them....Oh! They are watering....have started itching....I can't write any more. I think....You know what.

—Vinay Sood, 10A

## Basket-Ball Show Match

It was a hot afternoon when the basket-ball match started between the 'Best of the Tenth' and 'The Rest of the School'. The players of the tenth, in their red banyans, seemed as if they were showing a 'danger' sign to their opponents.

Just after the game started, the 'Rest' opened their account by shooting a basket. At half time too, the 'Rest' were leading. But just after half time, the 'Best' started playing very well. The clapping of the boys after every basket encouraged the players.

Although the 'Best of the Tenth' won the match, the credit also goes to the 'Rest' who really played well—especially Rajesh Ambastha, Avinash, Praveen and Deveshwar. All Bihar players Sanjay Sinha and Sujay Sinha did a great job for the Tenth. And Mr. A. P. Osta was the efficient referee.

—Manish Sharan, 10A

## Can You Guess?

- 1 Which river links Austria to the sea?
- 2 What type of plant is a crypte?
- 3 In which year was the League of Nations founded?
- 4 What is another name for the game of draughts?
- 5 What is the currency of Zambia?
- 6 Which is the largest shipping company of India?
- 7 What is the currency of Denmark?
- 8 What is the word for 'fox-like'?
- 9 What common mammal washes its food before eating it?
- 10 How many months constituted the original Roman Calendar?

—Contributed by Sandeep Tandon, 10A

Answers:  
1. Danube 2. A plant that grows on ice.  
3. 1919 4. Checkers. 5. The Kwacha.  
6. The Shipping Corporation of India.  
7. Kroner 8. Vulpine. 9. The Raccoon.  
10. Ten.





## L.T.S. Summer Camp

The L. T. S. had its summer camp this year from the evening of 18 May to the morning of 22 May. The venue of the camp was Prabhat Tara High School, Muzaffarpur. A total of thirteen seats were allotted to our school, but only six boys turned up. The ones who attended were Braj Kishore Mishra, Pankaj Kumar, Vijay Gupta, Sujay Sinha, Ranjeev Sinha and Suryakant Rajan.

The theme of the camp was "Know India and Serve India". We had a number of sessions and exercises to promote our enlightenment towards the theme. Special stress was given to our consciousness of the needs of the handicapped for this year.

We were also assigned to go to a nearby village and to interview people of different classes, which was perhaps the most interesting part of the camp. And the charm of it all was that this camp, which was so beautifully and efficiently arranged, was mostly conducted by some of the ex-Xavierians of the '80 batch. These were: Balaji Mohinish, Arvind N. S. Singh, Somnath Sen and Agam Kumar.

—Suryakant Rajan, 10B

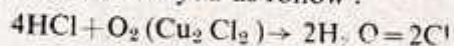
—Ranjeev K. Sinha, 10B

## Q. M. S. Letter

from Mr. Sulphur to Miss Oxygen

Dear Miss Oxygen,

Sweet memories. There is nothing more difficult for an element like me than to write a letter that will tell you how much you mean to me. You are the dearest thing in the world. I felt this when I saw you for the first time in a cylinder in our school laboratory. Now I am sending you a messenger, HCl with  $\text{Cu}_2\text{Cl}_2$ . Please accommodate him, because he may be useful to you as follow:



But be careful of nitric acid, as it will make nitrogen peroxide which is used as a catalyst in the manufacture of sulphuric acid by the lead chamber process. As you well know, con.  $\text{H}_2\text{SO}_4$  is my enemy—it converts me to  $\text{SO}_2$  and  $\text{H}_2\text{O}$ . So I simply advise you to keep him at arm's length.

I love you not only because you are colourless and odourless, but also because of your solubility (to some extent) in water. You generously support the life of animals and plants. If you don't mind, may I meet you at the anode in the voltameter during the electrolysis of water? I know how kind and generous you are.

As regards my own qualities, I beg to say that I am a young man of pale yellow colour, I have no taste and only a faint odour; I am a poor conductor of heat and electricity. You may already know plastic sulphur, which is dark in colour, is very close to me. I am waiting for your early positive response.

Yours sincerely,

*Sulphur*

—Gurvinder Singh, 10B



## Chess Winners

The chess tournaments aroused keen interest. The senior winner was Sd. Anjum Abdin, 10B, who defeated Sd. Jamal Ahmed, 10B (centre in the picture). Sheob Ahmed, 7B, took first place among the juniors (photo, left) and Anand Sinha, 8A came second (photo, right).





## *The Inter-Class Basket-Ball Tournament*

**The winning 10B team are on the left**

It was a splendid afternoon on the 14th of July, 1981, when the inter class basket-ball tournament began. Mr. A. P. Osta, our experienced games teacher, organised this tournament. (But Mr. Osta gives credit to the boys themselves for conducting the tournament so well.—Ed.) All the matches were played on the knock-out basis. Classes from the fifth and above were allowed to take part. At last 10A and 10B reached the finals. The final match was played on the 30th of July. A large crowd of boys gathered on the baby field to see this match and to cheer on the players.

The match started vigorously from the 'jump ball', both teams struggling to get the lead. Sanjay

K. Sinha, Barun Kumar and Mritunjay Kumar of 10A, and Sujay Kumar Sinha and Lawrence Paschal of 10B were highly appreciated by the audience for their performances. The match was so interesting that the audience could not guess which team would win the match. Finally 10B proved to be superior, and won the game by seven points. The final score was 10A—18 points; 10B—25 points. Also on the winning 10B team were Abhijit Som, Alok Jha, Gurmeet Singh, Suryakant Rajan, Ranjeev Sinha, Sudipto Mukherjee, Gurvinder Singh and Prabhat Kumar.

—Narendranath, 10A

—Sanjay K. Sinha, 10A

## **Parent-Teacher Evenings**

Those evenings witnessed the meeting of two creators—the creators of life and the creators of careers. One creator cares for our physical food and needs, the other provides us with the food of wisdom. One creator dresses us in attractive clothes, the other in the clothes of character.

St. Xavier's traditional parent-teacher evenings were worth seeing. On April 17, 18 and 19, from 5 to 7 p.m., it seemed that the sun and moon watched us from the western horizon like an audience—to see

the progress, development and consciousness of their 'stars'. All the teachers were present and were satisfied that they had a part in creating the future scientists; that they were laying the foundation stones of future buildings of art; that they were making the paths of future technology. In a word, they are the builders of the future civilization. The students came on those auspicious evenings with their parents as if they were the stars coming to the sun. Our beloved fathers' cooperation was praise-

worthy, and what can we say about our dear principal's meeting-oriented activities? The students brought their school diaries—a collection of good and bad remarks.

The students' performances were studied, and they were guided in how to perform better. Both parents and teachers were satisfied to know the problems of the students, and their valuable suggestions were problem-oriented. Their guidance on how to perform better was like the light of truth in the unknown darkness.

—Kazhal Jha, 10A



# Xavier's Life

St. Xavier's  
Patna



Vol. 30, No. 4

November 1981



Mr. Kamal Das with Kumar Rajoy, Subhojit Bose and Sandeep Das

## Music Maestros

The Seventh All-Patna Music Competition started at 1.30 p.m. on 19 Sept. 1981. It was a memorable day for St. Xavier's, where the competition was held, and for all the other 18 schools that were participating. The honourable chief guest was Mr. Navin Kumar Das President of ISMA Film Industries, Patna.

The participants sang with competence and held the sizable audience spell-bound. Many members of the audience were heard to comment on the underlying talent in the young artists.

After the young Kishore Kumars and Lata Mangeshkars had finished, the time came for the announcement of the results. The audience along with the participants waited with much expectation as the mark sheets were collected and the individual marks were evaluated. Then came the time when our principal, Fr. G. Thana, announced the results and the chief guest distributed the prizes. The results were as follows :

### JUNIORS

- Bhajan :** I—Subhojit Bose (St. X.)  
II—Papia Chatterjee (St. Jos.)  
III—Elizabeth Harold (St. Jos.)  
Consolation : Vandana Sinha (R.V.M.)
- Tabla :** I—Sandip Das (St. X.)  
II—Dinesh Sinha (St. Mich.)  
III—Pranab Semajdar (G. D. P.)
- Banjo :** I—Lata R. Choudhary (G.G.S.)  
II—Aditya K. Jingal (Mod Sch.)  
III—Deepali (Carm. Sch.)

### SENIORS

- Bhajan :** I—Papia Bose (R. B. V.)  
II—Mausami Das (Car Sch.)  
III—Arunima Sinha (N. D. A.)
- Gazal :** I—Kumar Rajoy Sinha (St. X.)  
II—Pamela Ghoshal (B.G.S.)  
III—Biswadeep Ghosh (St. Mich.)
- Guitar :** I—Ranjit Singh (St. Mich.)  
II—Prerna Kumari (N.K.V.)  
III—Madhuli Sinha (Carm. Sch.)

( con'd on page 2 )

## All Living Things

There is vast difference between theory and experience. This is an old saying, but we had never tested it in our life. The 23rd of October, 1981, was a most remarkable day. It came after a long period of hard work, put in by each and every high school boy under the superb guidance of Mrs. Meena Singh. Parents were cordially invited by the high school boys. The biology exhibition started around 10.30 a.m. and lasted till 4 p.m.

During this period, perfect discipline was maintained. Models diagrams connected with biology were displayed in our theatre hall. Cooperation among the boys was evident. The special attractions were the display of slides and the electronic board showing the circulation of blood. Each group gave a clear explanation. The exhibition was conducted in parts, the first from 10.30 to 12 noon and the second from 1 to 4 p.m. The most cheerful person on this occasion was Fr. George Thana.

Moving clockwise around the hall, we saw models of frog dissection, the heart, circulation, the nervous system, blood transfusion, and fish in an aquarium. The lighting arrangements were impressive. Special thanks to Mrs. Meena Singh and Fr. Principal.

—Classes 8A and 8B

( Picture on page 5 )



(Con'd)

## Music Maestros



The prizes having been distributed, the Chief Guest made a speech and praised the participants for their excellent performance. Student Council President, Vinay Sood, proposed a vote of thanks. St. Xavier's once again won the first place under the able guidance of Mr. Kamal Das. The function will be remembered by one and all for its excellence and thus ended the memorable music competition.

Jayesh Rajan, 9B



Students organised a grand "Housie" game for the teachers on 5 Sept.

## Teachers' Day Celebration

The 5th day of September has a very significant place in Indian history because on that day our late president, Dr. Radhakrishnan was born. To commemorate his services, we observe this day as Teachers' Day, and it is celebrated all over India, especially in educational institutions.

It was a rainy afternoon on the 4th of September when our school auditorium was packed with students as well as teachers, all eagerly waiting for the performance to start. As soon as the clock struck 1 p.m., the the function started with a speech by Mr. Umesh Jha. Then came the turn of the jokers, who entertained the teachers a lot with their fine jokes and style. After the comedians had lightened the atmosphere, the turn of the singers came.

Little Surojit Bose sang a 'Bhajan' and two others sang film songs which kept the listeners entranced. Then our tabla master, Sandeep Das took the stage, and with his fantastic skill on the tablas kept us spell-bound. After this magnificent item, some boys played some tunes on the guitar and banjo. Then came the turn of the skit, "Adhunik Ramayana", the main item of the Teachers' Day celebration. It was an excellent instrumental cum vocal performance, which was admired by one and all. After the programme had ended, the teachers were given presents on behalf of the students of St. Xavier's. And with that, the eventful celebration of Teachers' Day came to an end.

—Sanjeev Shankar, 9A



# editorial

## Labour— for Success in Life

'Nothing should be prized more highly than the value of each day.' We are all familiar with this famous saying. Each second of our life is unique and priceless. If we have lost a second, we have lost the most valuable thing in the world. So the value of time should be known to every person who really wants to do something. Every day is not Sunday. One should work according to his ability. Zeal will bring happiness. By tireless efforts, many have done what others wouldn't think of doing. Success comes to those who dare and act. Every man who works hard will get good results.

But the result is not the only thing which a man should look for. In the Bhagavadgita, Lord Krishna said that one should work according to his ability for the good of others. One should not look only for results.

'Fortune favours the bold.' Persons who look for their fortune may sometimes avoid the effort required. They will not be able to do anything which will be appreciated. Great men of science, literature and art, apostles of great thoughts, have belonged to no exclusive class or rank in life. They are all men as we are. But that is the key of their success? Nothing but hard labour. The poorest have sometimes taken the highest places nor have difficulties even the most insuperable, proved obstacles in their way. Those very difficulties were their best helpers, by evoking their powers of labour and endurance and stimulating into life faculties which might otherwise have lain dormant. Will is the mother of invention. Whenever man has a will, he tries to satisfy it by his labour. So labour is the key to success in life.

—Amresh Dhari Singh, 10A

—Rajiv Rai, 10A

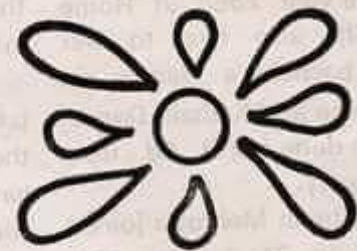
## Letters to the Editors

Dear Sirs,

I want to draw the attention of the school authorities to the questions which we are getting in our weekly tests. These questions are not of the Board type. So I would suggest that the questions of the weekly tests, especially for the 9th and 10th classes, should be according to the Board Pattern. This way, we will get enough practice with such type of questions before appearing in our matric examinations. This will certainly improve the standard of teaching and our students will get much better marks than they are getting today.

If the school authorities and teachers would take positive steps in this regard, I would be grateful.

—Avinash Kr. Sahay, 9A



प्रिय महोदय,

गत ४ सितम्बर १९८१ को शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित किये गये मनोरंजक कार्यक्रमों को हम देख रहे थे। कार्यक्रम के अन्त में दर्शकों को एक बहुत ही अच्छा "प्रोग्राम" दिखाने का प्रबन्ध किया गया था जिसके आयोजक मुख्यतः "दशम् अ" के छात्र ही थे। इस मनोरंजक कार्यक्रम का नाम था "आधुनिक रामायण"। किन्तु इस नाटक को देख मैं बहुत दुखित हुआ। यह बात मैं स्वीकार करता हूँ कि नाटक के कलाकारों ने इस नाटक के लिए पहले ही माफ़ी मांग ली थी किन्तु यदि हम किसी व्यक्ति को यह कहें कि मैं तुम्हें जान से मार देता हूँ, इसके लिए तुम मुझे माफ़ कर देना तो क्या यह उचित होगा? एक बात और भी कही जा सकती है कि यह नाटक दर्शकों, विशेषकर शिक्षकों को मनोरंजित करने के लिए किया गया था। कई शिक्षकों एवं छात्रों को यह नाटक देखकर बहुत दुःख हुआ।

इस नाटक के आयोजन में न ही इसके आयोजकों का दोष है, और न ही कलाकारों का बल्कि दोष है, आज की "आधुनिकता" का।

—सदीप गुप्ता, 9B



# PROFILE



Mrs. Muditman Mehrotra, who is a marvellous personality both amiable and hard-working, was born on 26 January 1949, at Kanpur.

She got her early education at Bishop Corton School, Nagpur. She graduated from Nagpur University in the year 1968 in Home Science. She also has to her credit a bachelor's degree in Library Science and Kathak Dance. She has also done her B. Ed. from Patna University.

Mrs. Muditman Mehrotra joined St. Xavier's on 24 August 1981, but she had taught English here, for one year, at the beginning of the 70s.

On being asked about her hobbies, she said that she likes gardening and making dresses.

About her aim in life, she said that she wants to learn as much as she can.

## All Patna Interact Night

The Interact Clubs of several schools presented a marvellous programme, "Interact Nite", on 21 September, organised by the Rotary Club of Patna. The different units which took part were: St. Xavier's, St. Michael's, St. Joseph's, Notre Dame, Bankipore Girls' School and Raghunath Kanya Uchcha Vidyalaya. A few members from each unit showed their talents. Some Interactors of our school also participated. They were, Kumar Rajoy, 8A, Rnjeev Sinha, 10B, Vinay Maharaj, 8A, Shishir Rajan, 10A, Saiful Haque, 8A. Our Fr. Principal was very pleased on hearing Vinay Maharaj's song, 'My Heart Is Beating'. At that moment, Fr. Principal began to think of having a 'Talent Night' in our school.

The programme started at 6.30 p.m. and ended at 9.30 p.m. All the Interactors showed good behaviour and co-operation. At the end of the whole programme, the Chief Guest gave each and every participant a certificate and prize. All the Interactors were also rewarded with some refreshments. Finally, I would like to thank the moderators, Fr. Scaria and Mr. Sudhir Seraphim, who really worked hard for the success of the programme.

—Vivek Jeloka, 9B

## श्रद्धांजलि

गत् ३ सितम्बर, १९८१, को हमारे विद्यालय के एक वरिष्ठ शिक्षक 'फा० थोथोबिलिल' के बड़े भाई 'आर्गस्तिन थोथोबिलिल' का देहान्त हो गया। गत् ८ सितम्बर, १९८१, को हमारे विद्यालय के एक पुराने छात्र '४४ (बैच) 'श्री रणजीत सिन्हा' का हृदय गति रुक जाने के कारण देहान्त हो गया।



विवेक कुमार, प्रथम कक्षा के छात्र का निधन हुआ। पूजा के अवकाश में अपने ही गाँव के किसी तालाब में डूब जाने से हो गयी। ईश्वर ने उसे आठ वर्ष की अवस्था में ही अपने पास बुला लिया।

हम सभी छात्र-गण भगवान से यह प्रार्थना करें कि वे उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करें।

—विवेक जिलोका 9B

—राजीव रंजन, 9B

## E. V. S. Seminar

Environmental Studies is not a subject but an approach to education. It is a process of 'learning together', recognising values clarifying concepts in order to develop skills and attitudes necessary to understand and appreciate the inter-relativeness between man his culture, and his biophysical surroundings.

E.V.S. was introduced in our school about two years ago. On the 11th and 12th of September, we had a two day seminar conducted by Fr. N. Harland. All the primary teachers attended. This seminar was of great help, because it gave us a clear idea as to how E.V.S. should actually be introduced to the children. With this greater

understanding of E.V.S., the topics were chosen for the year, and all the teachers have already begun working on it.

E.V.S. as a subject should not be confined to the primary school, but should be taken up seriously by the high school too.

—Mrs. Ira Sinha



# निडाल

## Biology Exhibition

धीरे-धीरे दीवार के सहारे वह उठ खड़ा हुआ और घर की ओर चल पड़ा। एक बार मन में आया कि आत्महत्या कर ले, मगर उसे अपने घर की स्थिति पर दया आ गई। एक ही तो बुढ़िया माँ बची थी घर में, उसे इस तरह छोड़ कर जाना ठीक नहीं था।

धीरे से उसने घर की कुण्डी खटखटाई। बुढ़िया ने जैसे इसी पल का इन्तजार कर रही हो, जल्द ही किवाड़ खोल दिया। 'बेटे—बेटे, कैसा रिजल्ट हुआ?' कितनी ही दुआएँ माँगी थी बेचारी ने कि बेटा पास भर हो जाए तो सवा किलो लड्डू चढ़ाएगी।

उसकी आँखों में आँसू आ गए, हाथ से रिजल्ट नीचे गिर पड़ा। लपक कर बुढ़िया ने उसे उठाया किन्तु देखते ही गण खाकर गिर पड़ी। उसका 'सपूत' फेल हो गया था। उसकी अंतिम आशा भी बालुओं के ढेर की भाँति डह गयी थी। ओह! सोलह-सत्रह पेपर्स हैं। वह कैसे पढ़े? एक-एक किताब की कीमत मानो आसमान पर हों। वह गरीब पेट काट कर पढ़ने वाला भला कैसे खरीदता। सबों के पास तो विशिष्ट बुद्धि नहीं होती है न, फिर भी उसने जी-तोड़ मेहनत की थी, परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। इतने भारी बोझ से दबा वह न ही अपनी जिम्मेदारियों को आंक सका था न ही सफलता को। उसकी नैया मँझधार में ही डगमगा गई थी।



Mrs. Meena Singh, with students showing their models.

वह रात उसके लिए कालिमा की गहरी परत लिए आई थी जबकि बुढ़िया के धड़कते दिल ने इस गहरे सदमें से प्रताड़ित हो उसका साथ देना छोड़ दिया था। गहने-ज्वेवर बेचकर उसने जितना हो सका था, किया था। अब वह क्या कर सकती थी? कोई उपाय ही नहीं बचा था, फिर जीकर क्या करती?

उसकी आँखों के दो बूँद आँसू बुढ़िया के चरण पर आ गिरे जैसे यह कहते हों कि इस 'निडाल' के कारण ही तेरी यह दशा हुई है; यह क्षमा का प्राची है माँ।

अब उसके पास आत्महत्या के सिवा कोई चारा न था। पापी पेट मुँह बाये खड़ा था, फिर जिसके लिए वह अब तक जी रहा था जब वह ही नहीं रही तो फिर उसके जीने से क्या फायदा?

छपाक... ! रात की खामोशी को चीरती हुई एक स्वर लहरी वातावरण में गुँज उठी और इस निस्सहाय मानव ने जल-समाधि ले ली। हाय रो नई शिक्षा पद्धति....।

—धर्मेन्द्र कुमार सिंह, 9B

## Intramural and Inter-School G. K. Contests

Breaking the monotony of regular classes, at last came the auspicious day of 3 September. This was the long-awaited day of the Intramural General Knowledge Quiz Contest.

As in previous years, the competition between the four houses started soon after a brief introduction by Fr. Principal and the Quizmaster, Mr. Rajeev Bansal. As for the members of the various houses, they showed their excellent team work by vain attempts at prompting the answers. But this year the hard-to-satisfy Xaverians were both interested and impressed by the quick answers of the participants and also by the Quizmaster. The whole contest was very interesting, but the most engrossing part was the prolonged and breath-taking fight between the Tigers, Leopards and

Lions for the crown. The Panthers were lagging behind; hope they will make it next year. At last the Lions took the cup by a very narrow margin of 4 points above the Tigers. The final scores were: Lions—44; Tigers—40; Leopards—39; and Panthers—27.

A few days before the Intramural Quiz Contest, we had the Inter-School G. K. Quiz Contest. Akash Rukhaiyar (Tigers), Abhas Jha (Lions), Amresh Dhari (Leopards) and Pramod Kumar (Tigers) took part. But following the tradition of previous years, our school could not regain the long lost shield. The results: St. Michael's, Mount Carmel, St. Joseph's, St. Xavier's and Notre Dame.

—Subhendu Mukherjee, 9B





## नवीन पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के हेतु अत्यन्त कष्टदायक हैं।

आज की शिक्षण-पद्धति काफ़ी हद तक दोषपूर्ण है। यदि किसी मनुष्य पर जरूरत से अधिक बोझ लाद दिया जाए तो वह उसके लिए असहनीय सिद्ध होगा एवं उसे शारीरिक कष्ट भी होगा। ठीक इसी तरह आज की नयी शिक्षण-पद्धति ने हमलोगों के ऊपर अतिरिक्त बोझ डाल दी है जिसके कारण हम सभी को शारीरिक नहीं तो मानसिक कष्ट अवश्य हो रहा है।

यह नयी शिक्षण-पद्धति एकदम बेकार है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी यह सिद्ध है कि जिज्ञासा ही साधक को साध्य तक पहुँचाने की माध्यम है। पर जिज्ञासा की सीमा होती है। सीमान्त जिज्ञासा अन्यमनस्कता एवं अथाह की रुचि पैदा करती है।

फिर पाठ हेतु जितने भी अध्याय हैं उन सबों के स्तर कुछ-न-कुछ उच्च है ही। उदाहरणार्थ हम विज्ञान का विषय लेते हैं। इस क्षेत्र में मेरा यह मत है कि जितने भी अध्याय हैं वे सब आई०एस०सी० के कोर्स से तादात्म्य रखता है। भौतिक विज्ञान के हिसाब, रसायन विज्ञान के कुछ अध्याय जैसे रासायनिक बन्धन, तत्वों का आवर्ती वर्गीकरण, हैलोजीन इत्यादि सब-के-सब आई०एस०सी० कोर्स या प्राचीन बी०एस० सी० के कोर्स से मिलता-जुलता है।

इसके अतिरिक्त नये पाठ्यक्रम के अन्तर्गत व्यवहारिक शिक्षा को कोई महत्व नहीं दिया गया। सब-के-सब सैद्धान्तिक रूप में है जबकि विज्ञान एक ऐसा विषय है जो कि पूर्ण रूप से व्यवहारिक शिक्षा पर ही आश्रित है। संस्कृत साहित्य के अगाध पंडित आचार्य विनोबा भावे के मतानुसार भी शिक्षण का सही उद्देश्य तब तक फलीभूत नहीं होगा जब तक कि उसे व्यवहारिक जीवन में परिणत नहीं कर दिया जाता।

कला के क्षेत्र को लीजिए, प्रथम तो कला के क्षेत्र को एक मामूली तालाब की भाँति फँसी रहनी चाहिए थी या तो फिर एक छोटी नदी के समान, परन्तु आज की शिक्षण-पद्धति इसे विकराल रूप देकर इसे समुद्र में परिणत कर दी है, जिसके कारण कला की पूर्णतः जानकारी प्राप्त करना समुद्र के नीर के बूंद गिनने के समान है।

उदाहरण हेतु भूगोल को बेकार का तीन भागों में विभक्त कर तिल को ताड़ बना दिया गया है। प्रथम भाग में “प्राकृतिक भूगोल” का, दूसरे भाग में “संसाधन भूगोल” का एवं

तृतीय भाग में “आर्थिक क्रियाओं का भूगोल” का अध्ययन होता है।

फिर अर्थशास्त्र की पुस्तक के सभी अध्याय विद्यालय स्तर से ऊपर के हैं जिन्हें माध्यमिक स्तर में परिणत कर दिया गया है।

द्वितीयतः जो विद्यार्थी विज्ञान में रुचि रखते हैं उन्हें कला भी पढ़नी पड़ती है एवं जो कला में रुचि रखते हैं उन्हें विज्ञान जिस कारण कला के विद्यार्थी विज्ञान को एवं विज्ञान के विद्यार्थी कला को एक असहनीय बोझ समझते हैं।

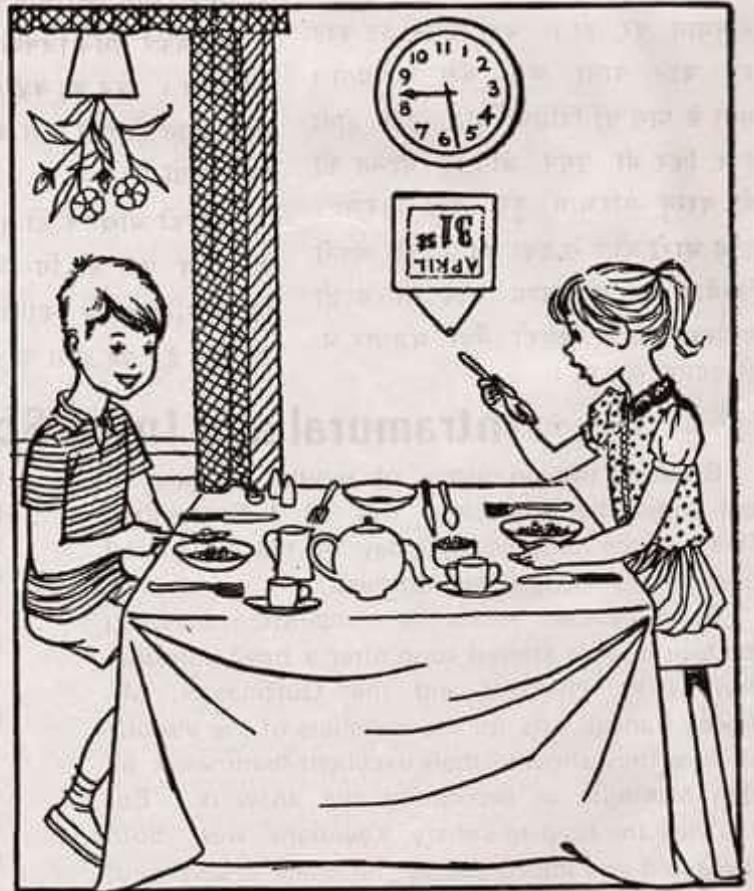
हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए अंग्रेजी का स्तर ठीक है और साथ ही हिन्दी और संस्कृत का उस हिसाब से ठीक है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वालों के लिए अंग्रेजी अत्यन्त ही सहज है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इन तीनों भाषाओं को छोड़कर अन्य सभी विषय बोझ बन गया है।

—शित्तिज मोहन, 9A

## FIND THE MISTAKES

and colour the picture



There are eleven mistakes in this picture. How many can you find ?



## संगीत प्रतियोगिता

दिनांक २६ अगस्त, शनिवार का दिन। दोपहर के लगभग एक बजे होंगे। हम सब 'ओडियोटोरियम' में वार्षिक अन्तरदलीय संगीत प्रतियोगिता को देखने हेतु एकत्रित हुए थे। हमारी निगाह अनायास ही मंच पर टिकी हुई थी और हमारे कर्ण पट पर कुछ सुनने को व्याकुल थे।

तभी हमारे छात्र संघ के अध्यक्ष वित्त सूर ने मंच पर आकर सबों का स्वागत किया और कार्यक्रम का शुभारम्भ कनिष्ठ दल के गायक कलाकारों से किया। इस दल का मुख्य आकर्षण था चतुर्थ 'अ' के सूर्य विक्रम का संगीत। उन्होंने अपने गजल द्वारा दर्शकों का दिल जीत लिया। कनिष्ठ दल के बाद मध्य दल का गायन कार्यक्रम था। इस दल के मुख्य आकर्षण थे सुबोजित बोस। विशाल आनन्द और राजेश वात्स्यायन के भी भजन पसन्द किये गए। इस दल में ऐसे भी दो गायक कलाकार थे; जिन्होंने लीक से दूर हटा कर शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया। उन्होंने (अश्विनी कुमार और जार्ज मिलिप)। राग मालकौश में ख्याल प्रस्तुत किया। अश्विनी कुमार ने तो द्रुत की बन्दिश में दर्शकों का मन ही मोह लिया। इसके बाद वाद्य-वादन का कार्यक्रम था। इसमें रंजीव सिन्हा ने बँसुरी पर और विशाल आनन्द ने विद्युत् गिटार पर फिल्मी धून बजाये जो कि काबिल-ए-तारीफ है। संदीप दास का तबला-वादन हम भूल कर भी नहीं भूल पाये हैं। वह लय और ताल का मधुर संगम अवर्णनीय है। वे वास्तव में एक प्रतिभा सम्पन्न तबला-वादक हैं।

इसके बाद वरिष्ठ दल का गायन कार्यक्रम शिवेन्द्र सहाय द्वारा शुरू हुआ। रजय सिन्हा का वह भाव-भीनी गजल और कौशिक दास का वह दिल हिला देने वाला भजन भुलाये नहीं भूलता। प्रशान्त कश्यप और सत्यजीत सहाय के गायन को भी पसन्द किया गया।

तारीख अनवर के गजल के उपरान्त ही चिरस्मरणीय प्रतियोगिता राष्ट्र गीत के साथ सम्पन्न हुआ।

—शिवेन्द्र सहाय, 8A

—आनन्द प्रकाश, 8A

*Well Done !*

This year, for the first time, our seniors of 1980 won many scholarships in the National Talent Search Examination. Those who were successful will get about Rs. 2,000 per year in grants up to the post-graduate level, and other helps. Congratulations to Surojit Bose, Surendra Rajeev, Kanchan Sinha, Gyanendra Harshwardhan, Ashutosh Pandey, Atan Kumar, Jyoti Swaroop, Binay K. Sinha, Mulya K. Sinha, Devanand Sahay, Agam Kumar and Anjan K. Sinha.

## मेरा सुन्दर सपना टूट गया

मेरी इस छोटी-सी जिन्दगी में ही इतने सारे सपने टूटे कि मुझे सपनों से नफरत-सी हो गई। मैंने शपथ खाई कि कभी सपने देखूंगा ही नहीं जिससे फिर उनके टूट जाने का सदमा न पहुँचे; पर इसके बावजूद भी मैं भला कब तक भीष्म-प्रतिज्ञा को सही सलामत देख पाता। सपने की रंगीन दुनिया का शहंशाह बनना भला किसे नहीं भाता, कुछ क्षणों के लिए ही सही।

हाँ, उस दिन मैं आगामी भारत-इंग्लैंड क्रिकेट सीरिज के बारे में बात कर रहा था। बड़ी गरमागरम बहस चल रही थी। जल्दी ही दिवा-स्वप्न, निद्रा-स्वप्न में परिवर्तित हो गया।

भीनी-भीनी धूप बिखरी थी। हरी-भरी घास फैली थी। स्टेडियम खचाखच भरा था। छोटे-छोटे रंगीन रेडियो अभी इधर-उधर की बातें बता रहे थे। अम्पायर्स अभी फील्ड पर आये थे।

हर ओर शोरगुल-सा छाया था। अधिक लोग आगे की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे थे। विचारों का आदान-प्रदान भी हो रहा था। कुछ मनचले जोर से फिल्म गानें अलाप रहे थे।

मेरा हृदय उत्सुकता तथा प्रसन्नता से धड़क रहा था। यह मेरे जीवन में टेस्ट मैच देखने का पहला अवसर था। यूं कमेट्री सदैव ही सुना करता था।

तभी दर्शकों का बड़ा समूह हमारे आगे से जाने लगा। शेष दर्शक जोर-जोर से ताली बजाने लगे। मैं मन-ही मन भूँसला रहा था—हूँ, आना ही था तो ठीक हमारे ही आगे से?

दोनों अम्पायर्स तथा कप्तान टॉस के लिए एक ओर चले गये थे। सिक्का उछला और बस! टप...।

मेरा चेहरा पानी से भीग गया। मैं बिल्कुल हड़बड़ा कर उठ बैठा। सामने भैया खड़े खीज रहे थे, "वाह, क्या नींद है। उठाते-उठाते थक गया, अब पानी के छींटे पड़ने पर ही उठे।"

मैंने रुआंसी आवाज में कहा...। काश! ये तो देखने दिया होता कि टॉस किसने जीता।

अब तो भाई आदी हो चुका हूँ इन टूटते बिखरते सपनों का। पर काश! उस दिन का टेस्ट मैच देख लिया होता तो स्कोर अवश्य बता देता।

—द्विजेन्द्र कश्यप, 7B





# एक अविस्मरणीय दिवस

## हिन्दी वाक्-पटुता प्रतियोगिता

संत जेवियर विद्यालय की यह परम्परा रही है कि छात्रों के बीच ऐसे वातावरण उत्पन्न किए जाएँ जिनसे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। गत वर्षों की भाँति हमारे विद्यालय में वाक्-पटुता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके द्वारा यह परखा जाता है कि हमारे छात्र वाक्-पटुता में कितने निपुण हैं तथा वे अपने भावों की अभिव्यक्ति में कितने सक्षम हैं।

हमारे छोटे भाइयों के लिए यह प्रतियोगिता दिनांक २५-८-८१ को आयोजित हुई। परिणाम इस प्रकार रहे—

प्रथम कक्षा से : प्रथम—शहबाज नसर (1A), द्वितीय—नीयान लीयाओ (1B), तृतीय—राकेश रंजन (1A) तथा शरद झुनझुनवाला (1B)।

द्वितीय कक्षा से : प्रथम—अश्विनी पांडे (2A), द्वितीय—आलोक (2A) तथा राजेन्द्र कुमार (2B), तृतीय—सुभाष जोसेफ (2B)।

तृतीय कक्षा से : प्रथम—सुमित ओस्मण्ड (3B), द्वितीय—नीरज यादवेन्दु (3A) तथा कार्नेलियस डेविड (3B), तृतीय—विपुल राज (3A) तथा संजीत चन्द्र (3A)।

चतुर्थ कक्षा से : प्रथम—ज्ञानेन्द्र पांडे (4A), द्वितीय—सुमित रंजन (4A) तथा जयन्त कुमार (4B), तृतीय—अजय कुमार (4B) तथा मिनोई कुरुविल्ला (4B)।

इसी तरह उच्च कक्षा के विद्यार्थियों ने भी दिनांक ८, सितम्बर को अपने-अपने गुण प्रदर्शित किये। अभिव्यंजनाएँ आकर्षण उत्पन्न कर रही थी। डा० सर्वदेव मिश्र के लघु वक्तव्य के पश्चात् इसका श्री गणेश हुआ। प्रत्येक प्रतियोगी अपने-अपने उच्च से उच्चतम सिद्ध करने से नहीं चूका। सचमुच वह दिन भी सन् १९८१ का एक अविस्मरणीय दिन की भाँति हमें सदा स्मरण रहेगा। परिणाम इस प्रकार रहे।

कनिष्ठ वर्ग से—प्रथम—चेतनानन्द सिंह (6A), द्वितीय—अमित रंजन (5A), तृतीय—सुबोजित बोस (6B)।

मध्य वर्ग से—प्रथम—रमण मदन, (7A) द्वितीय—श्यामल गुप्त (8B), तृतीय—गीतम मोदी (7A)।

वरिष्ठ वर्ग से—प्रथम—ब्रज किशोर मिश्र (9B), द्वितीय—अरविन्द कुमार (9B), तृतीय—क्षितिज मोहन (9A)।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि यह काफी सफल समारोह था जो कि भूत की भाँति एक बार फिर से वर्तमान को उजागर कर गया। विजेताओं को हमारी बधाइयाँ।

—धर्मेन्द्र कुमार सिंह, 9B

# THE N.C.C. CAMP

There are some unforgettable moments in our life, and the N.C.C. Camp is one of them. We departed from Patna at 8.55 p.m. on 25 September, and enjoyed our journey. We reached Ranchi at 9 a.m. It was raining heavily there, but somehow we reached the glider hangar. Due to the rain, we were not able to go to our camp site. After enjoying ourselves there for three or four days, we were sent to our camp site. We had a hard time making our tent homes.

We used to wake up daily at 5 a.m., and we had P. T. and drill from 6.30 to 7.30 a.m. After having our breakfast, again from 9 a.m. till noon we had parade, and then lunch was distributed. From 3 to 5 p.m. we had aero-modelling classes. After that we were free. We played games and enjoyed ourselves during this time. After having dinner at 9 p.m., we went to sleep, leaving two boys awake as guards. This was our daily routine.

We learned many things from this camp, like living away from home in strict discipline.

Sgt. Cadet. Rakshit Saran, 9B.



Senior Champion Shekhar D'Costa receives his medal.

# SWIMMING FESTIVAL

It was a rainy day when, with splashes of water, our swimming festival began on 22 August. Our contestants were shivering due to the cold. In the beginning, the Leopards scored one point, while the Panthers and Tigers were having a tough fight between them. After a keen struggle, the swimming festival ended with the Tigers emerging as the champs of the year 1981. The final scores were : Tigers—78; Panthers—56; Lions—7; and Leopards—3. We are very grateful to our teachers, especially Mr. A. P. Osta, for the success of our swimming festival.

—Rakshit Saran, 9B



# PICTORIAL



The winners of the Junior English Elocution with Fr. Principal



Victorious Tigers Swimming Team



G. K. Quiz Winners (Lions Team) :  
Abhas Jha, Sd. Anjum Abdin, Pranay Sinha  
and Alok with Fr. George and  
Quizmaster Rajeev Bansal.



Senior Hindi Elocution winners  
with Fr. Principal and Judges.



N. C. C. Camp Boys



## Great Kickers



Winning Tigers are on the right.

### Tigers Upset Panthers

On 17 September, the basketball fans surrounded the court to see the battle for the intramural basketball crown after class. This tournament was organised by Mr. A. P. Osta. These were the same teams which reached the finals last year, 1980, and again this year the battle was between the Panthers and Tigers. Last year the Panthers led at the interval, and won the tournament 54 to 41. And this year again, they were leading by 21 to 20 at the half time. All thought that it would be the Panthers again, but nobody knows the future.

After the interval there was a good fight. Both teams were trying to seize the cup, but the good performance shown by Sanjay Sinha and Lawrence Paschal on the Tigers team finally won the cup for them. Although the Panthers lost, the perfect shots of Sanjay Sinha and the fantastic rebounds of Pankaj were remarkable. The final score was Tigers—51 and Panthers—37. Congratulations to the Tigers team.!

—Deveshwar Sharan, 9B



Jubilant Tigers Football team

This time the inter-class football tournament started amidst great excitement and enthusiasm. The ball finally started rolling in the month of August, under the watchful eye of Mr. A. P. Osta, who organised the tournament tactfully. This time the favourites were certainly 10A, the champions of last year. The matches were played on the knock-out basis.

After much excitement and unexpected upsets, 9A and 9B entered the finals, after defeating the star-studded 10B and 10A teams respectively. Both the teams, 9A and 9B, started as the underdogs, but ended up being joint winners. The shoe was on the other foot. The finals were scheduled to take place on 26 August. In the finals, a brilliant display to soccer was seen by the spectators, who were spell-bound by the dazzling feet of the players.

The match started with 9A putting pressure on their opponents but in the dying minutes of the first half, 9B got control of the ball—yet they failed to score. In the second half, 9B gained supremacy over their opponents, and repeated attacks were made, only to be thwarted by the efforts of the 9A goalkeeper, Praveen.

Both the teams failed to score in the stipulated 90 minutes, and so achieved the distinction of being declared joint winners. Overall, 9B played better and would have romped home by at least 2 or 3 goals, but for the excellent defense of the 9A backs, and of course sheer bad luck. 9A salvaged some pride because of Praveen who did a marvellous job for his team.

—Syed Saba Karim, 9B